ज्ञान-प्रवाह

1738

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पुस्तक-प्राप्तिके स्थान

१—श्रीकृष्ण निवास आश्रम, कनखल (हरिद्वार)
जिला सहारनपुर

२—श्रीज्ञानी जयकिशनजी शर्मा,
पता—अखबार 'बजरंग' कार्यालय, अमृतसर (पंजाब)

३—श्रीस्वामी भगवान् चैतन्यजी महाराज,
पता-पृथ्वीनाथ मन्दिर, आढ़त बाज़ार, जि० देहरादून

४—श्रीमदनलालजी कौड़ा,
पता-ब्लाक नं० ६ E, क्वाटर नं० ६, ईस्ट पटेल नगर,
नई दिल्ली १२—फोन नं० ५१०१६

५—श्रीसुखानन्द वेदप्रकाश,
पता-कटड़ा बरियान, कोहनूर बिल्डिंग, फतेहपुरी
दिल्ली, फोन नं० २७६६२

६—श्रीसन्तरामजी पुरी, १५ पार्कएरिया, करौलबाग, दिल्ली

७—पं० किशोरीलालजी जोशी शास्त्री,
पता-श्रीसनातनधर्म कन्या महाविद्यालय,
फगवाड़ा (पंजाब)

८—श्रीसेठ छोटाभाई, वागजीभाई पटेल,
पता-जेठाभाई गोविन्द बिल्डिंग नं० २७ फ्रैंच रोड,
चौपाटी, बम्बई ७ / फोन नं० २५३३४८

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chandigarh

ॐ

* श्रीशङ्करो विजयतेतराम् *

भारतवर्ष के सम्मानित आत्मवेत्ता, वीतराग और
अनुभवी महापुरुषों का

ज्ञान-प्रवाह

अर्थात्

श्रीकृष्ण निवासाश्रम, कनखल (हरिद्वार) में वैशाखी के
शुभावसर पर आश्रम के अध्यक्ष महामण्डलेश्वर
श्रीस्वामी पूर्णानन्दजी महाराज द्वारा आयोजित
एवं महामण्डलेश्वर श्रीस्वामी मोहनगिरिजी
महाराज द्वारा सत्कृत—"अखिल
भारतीय षष्ठ वेदांत-सम्मेलन" में
पधारे हुए महापुरुषों के
प्रवचनों का अपूर्व
संग्रह

सम्पादक

नरहरि भट्ट वेदान्ताचार्य्य, कनखल,
किशोरीलाल जोशी शास्त्री, फगवाड़ा.

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रकाशक—
स्वामी भुवनेश्वरानन्द कोठारी,
स्वामी शिवचैतन्यपुरी कोठारी,
श्रीकृष्ण निवासाश्रम, कनखल (हरिद्वार)

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं

प्रथम मुद्रण, २०००—मेष संक्रान्ति सम्वत् २०१७ विक्रमी
पुनः छपवाने के लिए लागतमात्र मूल्य १।।) रु०
डाकखर्च अलग

मुद्रक—
देवेन्द्र विज्ञानी,
विज्ञान प्रेस, ऋषिकेश

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ॐ

प्रकाशककी ओरसे

अत्यन्त हर्षका अवसर है कि हम लोग 'श्रीकृष्ण यतीश्वर' ग्रन्थमालाके तृतीय पुष्पके रूपमें "ज्ञान-प्रवाह" नामक पुस्तक पाठकोंकी सेवामें उपस्थित कर रहे हैं। परमपिता परमात्माकी अपार कृपा है कि गतवर्ष 'अध्यात्म-प्रसाद' द्वितीय भागके प्रकाशनको हमारे श्रद्धालु सत्सङ्गिओं और विचारशील पाठकोंने बड़े आदरसे अपनाया। इस वार "अखिल भारतीय वेदान्त-सम्मेलन" के षष्ठ अधिवेशन पर पधारे हुए महापुरुषोंके २५ व्याख्यानोंका संग्रह भेंट किया जा रहा है।

श्रीकृष्ण निवासाश्रम-कनखलके वर्त्तमान अध्यक्ष-माननीय महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्दजी महाराजने अपने पूज्यपाद गुरु—श्रीकृष्ण निवासाश्रमके संस्थापक, ब्रह्मलीन श्री १०८ स्वामी कृष्णानन्दजी महाराज, महामण्डलेश्वरकी पुण्य-स्मृतिमें इस ग्रन्थमालाका प्रकाशन आरम्भ कराया है।

हमें आशा है कि, भारतवर्षके धर्मप्रेमी लोग पहलेसे भी अधिक उत्साहके साथ इस प्रकाशनको अपनाकर हमारा उत्साह बढ़ाते हुए इससे अधिकाधिक लाभ उठाएँगे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ॐ

अखिल भारतीय वेदान्त-सम्मेलनके सम्बन्धमें

आजसे छः वर्ष पूर्वसे श्रीकृष्ण निवासाश्रम—कनखल (हरिद्वार) में आश्रमके वर्त्तमान अध्यक्ष परमहंस परिव्राजकाचार्य महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्दगिरिजी महाराजके नेतृत्वमें प्रतिवर्ष वैशाखी (मेष संक्रान्ति) के पुण्य अवसर पर अखिल भारतीय वेदान्त-सम्मेलन, महान् समारोहसे सम्पन्न होता है। इस वर्ष भी १०, ११, १२, १३ अप्रैल १९६० को इस सम्मेलनका छठा वार्षिक महाधिवेशन बड़ी धूम-धामसे सम्पन्न हुआ ।

इस सम्मेलनको सफल बनाने और धर्मप्रेमियोंको निमंत्रित कर लाभ पहुंचानेके लिये माननीय महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्दगिरिजी महाराजने देशभरके मुख्य-मुख्य स्थानों पर पधारकर सम्मेलनका सन्देश पहुंचाया। सब जगह आपके उपदेशामृतको पान करनेके लिए सहस्रों लोग एकत्रित होते थे। सम्मेलनके अवसर पर शहरों और ग्रामोंके सहस्रों नर-नारी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्रद्धापूर्वक हृदयसे विद्वान् महात्माओंके उपदेश सुनकर मंत्रमुग्ध होजाते थे। आध्यात्मिक समारोहमें इतनी बड़ी संख्यामें जनताका एकत्रित होना यह सिद्ध करता था कि भारतीय जनता अपने पूर्वजोंके परम पावन सन्देशको सुननेकेलिए अभी भी अत्यन्त लालायित और उत्सुक है और इससे शान्ति प्राप्त करती है। आश्रमका विशाल स्थान यात्रियों केलिए थोड़ा प्रतीत होता था। पण्डालका स्थान पिछले वर्षोंकी अपेक्षा बढ़ा दिये जाने पर भी नर-नारियोंकी भीड़से भरा रहता था। आगामी सम्मेलनके लिए पण्डालके स्थानको और बढ़ाकर विशाल बना दिया गया है, जिससे जनताको असुविधा नहीं होगी। अमृतसर-वेदान्त निकेतनके संस्थापक एवं संचालक, वेदान्त केसरी श्री १०८ निर्मल स्वामीजी महाराजने सम्मेलनका उद्घाटन किया। सम्मेलनके अवसर पर भारतके प्रत्येक भागसे पधारे हुए महा-मण्लेश्वरों, तपःपूत महात्माओं, सन्तों और प्रख्यात विद्वानोंके दर्शनों और प्रभावशाली प्रवचनोंसे जनताने महान् लाभ उठाया।

प्रभु प्रेमी भक्तोंकी हरिनाम संकीर्त्तनकी पावन ध्वनियों और मधुर संगीत धारासे आश्रमका कण-कण आनन्दमग्न हुआ दीखता था। १२ अप्रैल १९६० को भारतके प्रकाण्ड विद्वान, कुशल प्रशासक, मेधावी राजनीतिज्ञ, परमराष्ट्रभक्त, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलनके कार्यकारी अध्यक्ष पंजाब के यशस्वी राज्यपाल, माननीय नरहरि विष्णु गाडगिलने "गीता-सम्मेलन" की अध्यक्षताका काय सम्पन्न किया। अपनी सुयोग्य

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

धर्मपत्नी, श्रीमती डाक्टर अनसूया गाडगिलके साथ आश्रममें पधारने पर स्वागत समितिके पदाधिकारियोंके गण्यमान्य नागरिकों तथा भारतभरसे आए हुए प्रतिष्ठित सद्‌गृहस्थवृन्दने आपका महान् उल्लाससे हार्दिक स्वागत किया। पुष्पमालासे लदे हुए गाडगिल दम्पतीके पण्डालमें पहुंचने पर संस्कृतके विद्वानोंने श्री पं० खरैतीराम जी शास्त्री और पं० धृतरामजी शास्त्रीके नेतृत्वमें वेदके पावन मंत्रों और संस्कृतके मनोहर श्लोकोंसे आपका अभिनन्दन करते हुए मंगलकामनाएँ अर्पित कीं। छोटी-छोटी आयुके बालक-बालिकाओंके मधुर कण्ठोंसे श्रीमद्‌भगवद्‌गीताके श्लोकोंका पाठ सुनकर राज्यपाल महोदय पुलकित हो रहे थे। महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्दगिरिजी महाराज, महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी सर्वानन्दजी महाराज तथा वेदान्त केसरी श्री १०८ स्वामी निर्मलजी महाराजके गीता सम्बन्धी प्रवचनोंसे आप बहुत प्रभावित हुए और आपने इस आनन्दका अधिक लाभ उठाने केलिए अपने निश्चित समयसे दो घण्टे अधिक समय प्रदान करके अपने को और जनताको कृतकृत्य किया।

आपने इस अवसर पर एक सारगर्भित, वैदुष्यपूर्ण और प्रभावशाली भाषण द्वारा जनताको भारतके महर्षियों एवं तपस्वियोंके ज्ञान-प्रवाहमें डुबकियाँ लगाते रहनेकी प्रेरणा की। आपने इस आश्रमके व्यवस्थित संचालन और लोकोपकारी कार्योंकी हार्दिक सराहना करते हुए आश्रमके वर्त्तमान अध्यक्ष

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्रीस्वामी पूर्णानन्दगिरिजीको श्रद्धाञ्जलि अर्पित करके उनसे आश्रमका प्रसाद ग्रहण किया तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियोंके साथ बैठकर जलपान किया।

हम स्वागत समितिकी ओर से—माननीय राज्यपाल महोदय के सौजन्यपूर्ण कृपाकेलिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं। भगवान् आपको सुदीर्घ सुखी और यशस्वी जीवन प्रदान करें।

अबके सम्मेलनके अवसर पर भारतवर्षके प्रख्यात साहित्यकार और राष्ट्रहितैषी, भारतीय लोकसभाके प्रतिष्ठित सदस्य माननीय सेठ गोविन्ददासजी भी पधारे। आपने विद्वत्तापूर्ण भाषणसे जनताको कृतार्थ किया। आश्रमके कार्योंकी जी खोलकर सराहना की और विश्वशक्तिकेलिये वेदान्तके प्रचारको एक महान् साधन बताया। सम्मेलनके इस षष्ठ अधिवेशनको सफल बनानेकेलिये जिन महानुभावोंसे हमें सहयोग मिला, उनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। इस सम्बन्धमें भारतके प्रख्यात महात्मा वेदान्तकेसरी श्री १०८ स्वामी निर्मलजी महाराजका हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं। आपने सम्मेलन आरम्भ होनेसे पूर्व भी भाटिया भवनमें अपने वेदान्त सम्बन्धी भाषणों द्वारा जनताको लाभ पहुंचानेकी कृपा की। भाटिया भवनके संचालक रायबहादुर सेठ जस्साराम तथा प्रबन्धक श्री-सूर्यप्रकाशजी त्रिखाके सहयोगकेलिए हम हृदयसे कृतज्ञ हैं।

देहली तथा मेरठकी मुलतानी सेवासमिति, गोपाल संकीर्त्तन मण्डल देहलीके श्रीकृष्ण यतीश्वर अध्यात्म मण्डल तथा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सनातनधर्म सत्संग सभा २४ दरियागंज देहलीके सुयोग्य कार्यकर्त्ताओं द्वारा की गई निष्काम सेवाओंके लिये हम उनका बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं। जालन्धरके प्रख्यात विद्वान् पं० धृतरामजी शास्त्री तथा श्री पं० खरैतीरामजी शास्त्रीके प्रभावशाली सहयोगसे सम्मेलन को महान् बल मिला है। हम आपके अत्यन्त कृतज्ञ हैं

डा० बालकृष्ण गोस्वामीने चिकित्सा सम्बन्धी सेवासे जनताको लाभ पहुँचानेकी कृपा की।

श्रीस्वामी केशवानन्दजी गीता तथा रामायण सम्बन्धी चित्रावली दिखाकर उपदेश देते रहे।

श्रीराजरानी सूरी (देहली) ने अपनी मण्डलीके साथ भोजन सम्बन्धी व्यवस्थाका बहुत सुन्दर, सन्तोषजनक और सराहनीय संचालन किया।

आश्रमके उत्साही कार्यकर्त्ता, महात्मा लोग सम्मेलनकी सफलताके लिये दिन-रात दौड़-धूप करते रहे। हम इन सबका हार्दिक धन्यवाद करते हैं। भारतके प्रसिद्ध "हिन्दी दैनिक", देहलीके "नवभारत टाइम्स", "हिन्दुस्तान", "वीर अर्जुन", जालन्धरके "वीर प्रताप" तथा "हिन्दी मिलाप" ने प्रकाशन कार्य में हमें जो अमूल्य सहयोग दिया, उसके लिये हम इन पत्रोंके संचालकों तथा सम्पादकोंका हार्दिक धन्यवाद करते हैं। हम "इङ्गलिश" और "उर्दू" के उन पत्र संचालकोंके भी कृतज्ञ हैं जो हमें इस कार्यमें सहायता देते रहे हैं और भी जिन-जिन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

व्यक्तियोंने तन-मन या धनसे हमारी सहायता की है, हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं।

निवेदक

मलावाराम हांडा (फगवाड़ा), सन्तरामपुरी (रिटायर्ड
एस० डी० ओ०, देहली)
स्वागताध्यक्ष।

मदनलाल कौड़ा (पटेलनगर—देहली)
महामन्त्री, स्वागत समिति।

किशोरीलाल जोशी शास्त्री, (फगवाड़ा)
मन्त्री, स्वागत समिति।

मोहनलाल मैत्रेय, एम० ए०, साहित्य रत्न
सहायक मन्त्री, स्वागत समिति।

ज्ञानी जयकृष्णदास शर्मा, (अमृतसर)
प्रचार मन्त्री।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ॐ

आश्रम-परिचय

मायापुरके पाससे श्रीगङ्गाजी नहरके रूपमें कनखलकी ओर बह रही हैं। इस नहर पर पुल है। यहींसे सड़क कनखलको गई है। इस सड़कके पूर्व दिग्भागकी ओर छोटी सड़क जाती है। उसका नाम "संन्यास रोड" है। इसी छोटी सड़क पर देश भरमें प्रख्यात "श्रीकृष्ण-निवास आश्रम" का विशाल भवन है।

आश्रमकी स्थापना ब्रह्मलीन यतीश्वर श्री १०८ स्वामी कृष्णानन्दजी महाराजके करकमलोंसे हुई और इनके वर्त्तमान यशस्वी अध्यक्ष महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्दजी महाराजके समर्थ हाथोंसे इसका सफल संचालन होरहा है।

माननीय श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्दजीने इस आश्रमका चहुँमुखी विकास किया है। आश्रममें सैकड़ों कमरे हैं। बिजली है। स्थान-स्थान पर नलके भी लगे हैं। फ्लशके शौचालय हैं। पुष्पवाटिका है। आश्रमसे सटकर भागीरथी प्रवाहित हो रही हैं। उसपर महिलाओं, पुरुषों और महात्माओंके लिए

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अलग-अलग घाट हैं। शिशुओंके लिए क्रीडाङ्गण और क्रीडाके साधन हैं। विशाल पुस्तकालय, विद्यालय और गोशाला है।

इसी आश्रममें प्रतिवर्ष वैशाखी (मेष संक्रांत्ति) के अवसर पर, "अखिल भारतीय वेदान्त-सम्मेलन" के विराट् अधिवेशनमें उपस्थित होकर सहस्रों नर-नारी भारतवर्षके प्रख्यात विद्वान् महात्माओंसे अध्यात्मज्ञानका प्रसाद प्राप्त करने आते हैं। भारतीय शासनके गण्यमान्य संचालकनेता एवं प्रशासक भी इस अवसर पर पधारकर महात्माओंका आशीर्वाद ग्रहण करते हैं। गतवर्ष पञ्जाबके राज्यपाल, महामाननीय श्रीनरहरि विष्णु गाडगिल यहाँ पधारे। इससे पूर्व केन्द्रीय सरकारके गृहकार्य मन्त्री माननीय श्रीवलवन्त नागेश दातार, श्रीगुलजारीलालजी नन्दा (योजना मन्त्री), डाक्टर सम्पूर्णानन्दजी (मुख्य मन्त्री उत्तर प्रदेश), लोक सभाके अध्यक्ष माननीय श्रीअनन्तशयनम् आयंगर महोदय भी यहाँ पधार चुके हैं। सभीने महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्दजीके कार्योंकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

पिछले तीन वर्षोंसे "अखिल भारतीय वेदान्त सम्मेलन" के अवसर पर पधारे हुए महात्माओंके प्रवचन भी आश्रमकी ओरसे पुस्तकाकारकर प्रकाशित किये जाते हैं। इनसे जनता महान् लाभ प्राप्त करती है।

आश्रममें हर समय २५-३० महात्माओंका निवास रहता है। अद्वैत शांकर सिद्धान्तके मर्मज्ञ विद्वान् पद-वाक्य-प्रमाणपारावारीण श्री १०८ श्रीरामलालगिरिजीके नेतृत्वमें शास्त्रोंका अध्यापन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

होता है। आश्रमवासी महात्माओं और देशभरसे आनेवाले यात्रियोंके भोजन, निवास आदिकी व्यवस्था आश्रमकी ओर-से है

आश्रममें श्रीलक्ष्मीनारायण, भगवान् शङ्कर तथा आद्य जगद्गुरु श्रीशङ्कराचार्यके विशाल मन्दिर हैं। भगवान् पातालेश्वर महादेवजीका मन्दिर भी है, जो स्वयं प्रकट हुए हैं। ब्रह्मलीन श्री १०८ स्वामी कृष्णानन्दजी महाराजका भी मन्दिर है। आश्रमके इस नियमित, प्रशस्त संचालनके लिए महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्दजी महाराज जनताके हार्दिक धन्य-वादके पात्र हैं।

—:o:—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

— ॐ —

कृतज्ञता-प्रकाश

आदरणीय पाठकवृन्द !

यह "ज्ञान-प्रवाह" आप लोगोंकी अध्यात्म पिपासाकी शान्तिके लिए प्रकाशित हुआ है। करुणा-वरुणालय, भगवान्‌की अपार कृपासे यह कार्य सम्पन्न हुआ। भगवान्‌का बहुत धन्यवाद है। इस कार्यमें सहयोग देनेवाले महानुभावोंके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

वेदान्तकेसरी, माननीय श्री १०८ निर्मलस्वामीजी महाराजका हम जितना भी धन्यवाद करें, थोड़ा है। वेदान्त-सम्मेलनकी प्रत्येक गति-विधिको सफल बनाने और प्रकाशन कार्यके लिए उनका सत्परामर्श और क्रियात्मक सहयोग हमारी सफलता-का सबसे प्रधान साधन सिद्ध हुआ है।

वेदान्त सम्मेलनकी स्वागत समितिके महामन्त्री, श्रीमदन-लालजी कौड़ा (पटेलनगर—देहली) इस ग्रंथमालाके प्रकाशनके प्रथम प्रेरक और प्रमुख सहयोगीके रूपमें हमारे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इस वर्ष "षष्ठ वेदान्त-सम्मेलन" के अवसर पर पधारे हुए महापुरुषोंके रिकार्ड किए हुए भाषणोंको व्यवस्थित रूपमें लिखकर प्रकाशनयोग्य बनानेका कार्य ब्रह्मचारी श्रीशिवचैतन्यजी तथा ब्रह्मचारी श्रीनिजानन्दजीने महान् परिश्रमसे किया है। हम उनका हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

श्रीमोहनलालजी मैत्रेय, एम०ए० साहित्यरत्न, सहायक मंत्री स्वागतसमिति, ज्ञानी जयकृष्णदासजी, प्रचार मन्त्री (अमृतसर) का हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

पुस्तकका सम्पादनकार्य श्रीसनातनधर्म कन्यामहाविद्यालय फगवाड़ाके प्रधानाचार्य (प्रिंसिपल) श्री पं० किशोरीलाल जोशी, शास्त्रीके द्वारा हुआ। आपने अनेकों कार्योंमें आपादमस्तक व्यस्त रहते हुए भी अपना अमूल्य समय प्रदान किया। उनकी इस सहायताके लिये हम हृदयसे आभारी हैं। उनका धन्यवाद करते हैं।

वेदान्ताचार्य श्रीनरहरि भट्टजीने सम्पादन कार्यको बड़े मनोयोग एवं बुद्धिकी प्रवणतासे सम्पादन किया। लेख-प्रूफ-संशोधन आदिके कार्यमें वे दिन-रात लगे रहे हैं। उनके इस सराहनीय कार्यके लिए हम अत्यन्त कृतज्ञतापूर्ण शब्दोंमें उनका भूरि-भूरि धन्यवाद करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

विज्ञान प्रेस ऋषिकेशके मालिक श्रीदेवेन्द्र विज्ञानी मुद्रणकला-कोविदजी के प्रति हम अपना हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आपने विशेष मनोयोगसे पुस्तक मुद्रण करने एवं अल्प समयमें प्रकाशित करनेमें जो सहयोग दिया है और जिस सौजन्यके साथ इस कार्यको पूर्ण किया है, उसके लिए वे हमारे हार्दिक धन्यवादके परम अधिकारी हैं।

स्वामी भुवनेश्वरानन्द (कोठारी)
स्वामी शिवचैतन्यपुरी (कोठारी)
श्रीकृष्ण-निवास-आश्रम, कनखल।

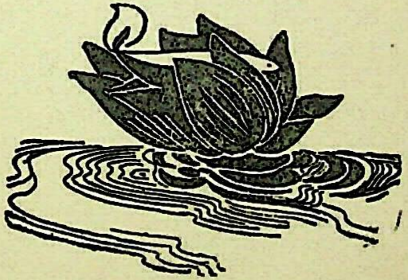

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
श्रीकृष्ण निवासाश्रम, कनखल (हरिद्वार) के

संस्थापक

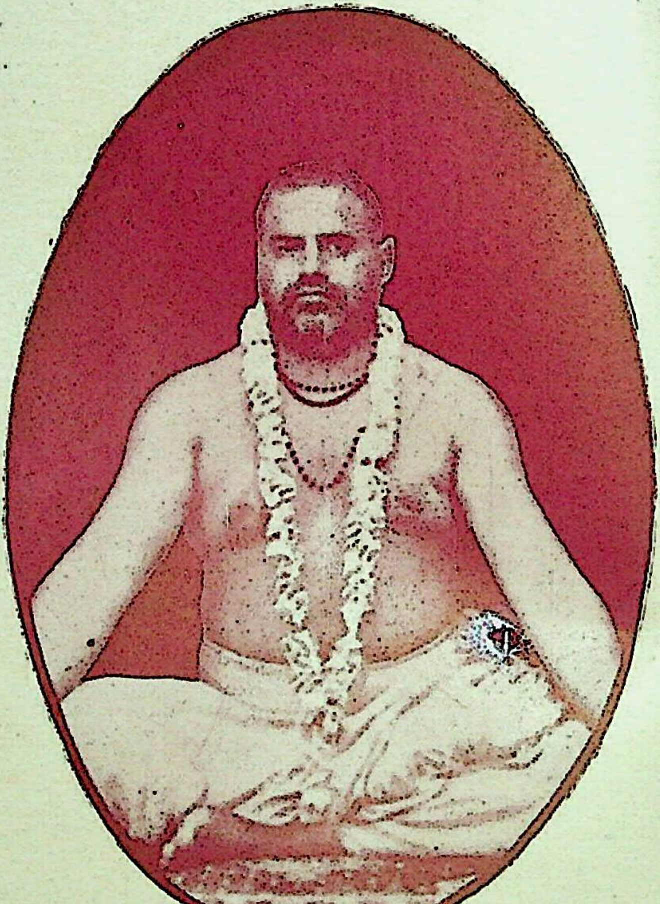

ब्रह्मलीन श्री १००८ महामण्डलेश्वर

श्रीस्वामी कृष्णानन्दजी महाराज (यतीश्वर)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचनानुक्रमणिका

भूमिका (सम्पादकीय) १६
१. श्री स्वामी पूर्णानन्दजी महाराज महामण्डलेश्वर १
२. श्री स्वामी निर्मलजी महाराज १७
३. श्री स्वामी सर्वानन्दजी महाराज महामण्डलेश्वर ... २४
४. श्री स्वामी मोहनगिरिजी महाराज महामण्डलेश्वर ... ३५
५. श्री स्वामी हरिगिरिजी महाराज ४५
६. श्री स्वामी गुरुचरणदासजी महाराज महामण्डलेश्वर ५६
७. श्री स्वामी गोविन्दप्रकाशजी महाराज महामण्डलेश्वर ७५
८. श्री स्वामी कृष्णानन्दजी महाराज महामण्डलेश्वर ८४
९. श्री स्वामी रामलालगिरिजी महाराज ९८
१०. श्री स्वामी रामस्वरूपजी महाराज महामण्डलेश्वर ... १०५
११. आचार्य्य श्रीनरहरि भट्टजी (सम्पादक) ... ११६
१२. श्री स्वामी पूर्णानन्दजी महाराज महामण्डलेश्वर ... १४५
१३. श्रीमान् नरहरि विष्णु गाडगिल महोदय–राज्यपाल (पंजाब सरकार) १५५
१४. श्रीमान् सेठ गोविन्ददासजी (लोकसभा–सदस्य) ... १६४

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१५. श्री स्वामी प्रेमपुरीजी महाराज महामण्डलेश्वर ··· १७१
१६. श्री स्वामी त्रिवेणीपुरीजी महाराज ··· ··· १७६
१७. श्री स्वामी सत्यानन्दजी महाराज सरस्वती ··· १८६
१८. श्री स्वामी गणेशानन्दजी महाराज ··· १६७
१६. श्री स्वामी विद्यानन्दजी महाराज ··· ··· २०३
२०. श्री स्वामी विज्ञानानन्दजी महाराज ··· २०६
२१. श्री स्वामी सोमेश्वरानन्दजी महाराज ··· २१७
२२. श्री स्वामी ओङ्कारानन्दजी महाराज ···· २२५
२३. श्री स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज ··· २३२
२४. श्री स्वामी ईश्वरानन्दजी महाराज सरस्वती ··· २३८

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवाह-परिमल

"यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैति स कृपणः"

याज्ञवल्क्य गार्गीके संवादमें यह प्रसंग आता है। ब्रह्मवित् याज्ञवल्क्य कहते हैं—"हे गार्गी! जो कोई भी मनुष्य इस अक्षर महद् ब्रह्मको विना जाने इस लोकसे मरकर जाता है, वह कृपण (दीन) है।"

शास्त्रमें इस जीवकी तीन गतियाँ बताई गई हैं। प्रथम कर्म-मार्ग (दक्षिणमार्ग), दूसरा उत्तरमार्ग (ज्ञानमार्ग) और दोनोंसे अतिरिक्त तृतीयमार्ग अन्तिममार्ग है। इसमें जीव "जायस्व"—"म्रियस्व" की गतिको प्राप्तकर दीन दुःखी होता है और नाना-प्रकारकी यातनाओंको सहता हुआ लखचौरासीके चक्करसे उन्मुक्त नहीं हो पाता।

प्रथम कर्ममार्गकी भी अन्तिम सीढ़ी हिरण्यगर्भभावापत्ति है। इससे बढ़कर जीवकी कोई कामना नहीं हो सकती। कर्मका यहीं तक अन्त हो जाता है। कर्मीको ही दीन (कृपण) कहा है, क्योंकि वह पणीकृतदासवत् कर्मफलका ही भोक्ता होता है। मोक्षका नहीं। यह क्रियापथ-कर्ममार्ग-प्रवृत्तिमार्ग अभ्युदयका करनेवाला है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इसको ही "प्रेयमार्ग" भी कहा है। इस मार्गका पथिक संसारके नानाप्रकारके क्षणिक सुखप्रद पदार्थोंका उपभोगकर अपने आपको कृतकृत्य समझ उसीमें संलग्न रहता है। इसमें सुख-स्वल्प और दुःख भूयिष्ठ हैं अतः इस मार्गको निवृत्तिमार्गके पथिक नहीं चाहते हैं। सुदूरदर्शी, विवेकशील, ज्ञानी निःश्रेयस (मोक्ष) ही को चाहते हैं। मोक्षशास्त्रमें इसकी अत्यन्त प्रशंसाकी है क्योंकि "विमुक्तश्च विमुच्यते" ज्ञानवान् जन्म-बन्धनसे रहित होकर सदाकेलिए मुक्त हो जाते हैं और कर्मी जन्म-मरणके चक्करमें पड़े झुंझलाते रहते हैं यही दोनों मार्गोंमें भिन्नता है।

तृतीय मार्ग तो अत्यन्त निकृष्टमार्ग है। जिसमें पड़कर निकलना ही कठिन-सा हो जाता है। वहाँ पर सुप्त संस्कार रहते हैं। जीवको पनपनेका अवसर बहुत ही कठिनतासे संप्राप्त होता है।

शास्त्र और लोकमें यह बात अति प्रसिद्ध है कि ब्रह्महत्यासे बढ़कर कोई पाप नहीं और अश्वमेधसे बढ़कर कोई पुण्य नहीं। अध्यात्म अधिकारमें आत्मज्ञानसे बढ़कर कोई पुण्य नहीं और आत्माको न जाननेसे बढ़कर कोई अज्ञान नहीं। अत एव आत्म-जिज्ञासु मोक्ष ही की सदा अभिलाषा करते हैं। मोक्षसे अतिरिक्त धर्म-कर्ममें भी उनकी लेशमात्र भी आस्था नहीं होती। शास्त्रमें लिखा है—

ब्रह्मादीनां शरीराणि श्वसूकर शरीरवत्।
यतो जिह्वासितान्येव तस्माद् धर्मेऽपि पाप्मगीः॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यदि शास्त्रीय पुण्यकर्मके प्राचुर्यसे ब्रह्मादिकोंका दिव्य शरीर मिल भी जाए, तब भी कालान्तरमें, देशान्तरमें, शरीरान्तरमें श्व-सूकर शरीरकी तरह शरीरान्तरमें आना ही पड़ेगा; अतः धर्ममें भी पापबुद्धि ही उदित होती है। इसलिये शरीरान्तर ग्रहणकी अपेक्षा मोक्षकी ही इच्छा सर्वश्रेष्ठ और अविपरीत बताया है। आचार्य शङ्कर अपने बृहदारण्यक भाष्यमें सूत्ररूपसे लिखते हैं—"अविपरीतार्थप्रतिपत्तेः श्रेयः प्राप्त्युपपत्तेर्लोकवत्" और अविपरीतार्थके विज्ञानसे ही श्रेयस्‌की प्राप्ति निश्चित सम्भव है। इसी बातको लक्ष्यकर दृढतापूर्वक ब्रह्मनिष्ठ याज्ञवल्क्य गार्गीसे कहते हैं—"अथ य एतदक्षरं गार्गि विदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैति स ब्राह्मणः"

हे गार्गि! जो इस अविनाशी आत्माको जानकर इस लोकसे मरकर जाता है वह ब्राह्मण ब्रह्मीभूत मुक्त हो जाता है। अतः वही मोक्षमार्ग अवश्य अन्वेष्टव्य है। इसके बिना मानवका कल्याण कदापि नहीं हो सकता। अमूल्य मनुष्य जीवनकी सफलता शास्त्रसम्मत, सन्तजनानुमोदित, मुख्य अभिप्रेत पदार्थ—परमतत्त्ववस्तुका साक्षात्कार है, जो तत्त्ववस्तुको न जानकर क्षणिक आपातरम्य विषयसुखोंमें व्यापृत होकर परब्रह्म परमात्माको भुला देते हैं। वे इन्द्रिय+आराम हैं, अधम हैं, पामर हैं। वे ही "कृपण" पद-संबोधनीय हैं। "पणेन क्रीताः—इति कृपणाः" वे सांसारिक ऐश्वर्यके दास हैं। उनके लिये श्रुति कहती है—"इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह मानव जन्म सुदुर्लभ है। जन्म-जन्मान्तरके पुण्यपुञ्जकी प्रचुरतासे प्राप्त हुआ है। ऐसे अमूल्य मनुष्य देहको पाकर यदि उसके साक्षात्कारके लिये सतत प्रयत्न नहीं किया तो पुनः जटिल जन्म-मरणके भँवरमें पड़ना-सड़ना पड़ेगा। अतः बुद्धिमान्को उसी एक आत्माके जाननेका अनवरत प्रयत्न करना चाहिए। बृहदारण्यक उपनिषद्में लिखा है—

तमेव धीरो विज्ञाय प्रज्ञां कुर्वीत ब्राह्मणः।
नानुध्यायात् बहून् शब्दान् वाचो विग्लापनं हि तत्॥

एक चिन्मात्र आत्मवस्तुको ही समझकर उसीमें बुद्धि लगानी चाहिए। बहुत शब्दोंका निरन्तर चिन्तन-अनुशीलन (अनुष्ठान) न करे। वह तो केवल वाणीका श्रममात्र है। यहाँ तृतीय पादमें "बहून् शब्दान्" दिया है। इसका अभिप्राय यह है कि "कर्म-मार्ग" अति विस्तृत एवं विपरीत है और वह उत्पथ है। वेदके समस्त मन्त्र एक लक्ष हैं। ८० हजार मन्त्र कर्मकाण्डपरक हैं। १६ हजार मन्त्र उपास्तिपरक हैं और चार हजार मन्त्र ज्ञानकाण्ड-निवृत्तिपरक हैं। अतः छियानवे हजार मन्त्रोंकी अपेक्षा ४ हजार मन्त्रार्थके अभिप्रायसे संयुक्त निष्कण्टक राजमार्गका ही अनुसरण सुकर एवं सुसाध्य है। यही उपर्युक्त दो पदोंका अन्तर्हित आशय है। अतः वह राजमार्ग परम कल्याणप्रद अविपरीत मोक्षमार्ग है। उसी सुपथ घण्टापथका पथिक बननेमें लाघव विशेष है और मनुष्य जन्मकी परम सफलता है। इस दुःख बहुल संसारसे छूटनेका एकमात्र साधन आत्मज्ञान है। उसीसे साक्षात्कार सम्भव है। ज्ञानसे अतिरिक्त

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

साधनका संग्रह करना बुद्धिकी मन्दताका परिचायक है। ज्ञान बहुत पवित्र वस्तु है। बार-बार इस बातको बोधित किया गया है। यह आत्मवस्तु अत्यन्त दुरुह है, अतः पुनः-पुनः कहनेकी आवश्यकता पड़ती है। ऐसे बीहड़ विषयमें पुनः-पुनः कथन भी अलंकार ही होता है। दोषाधायक नहीं। अतः ऐसे पवित्र ज्ञानकी उपलब्धि कहाँ ? कैसे हो सकती है ? यह भी एक प्रविचयबुद्धिसे विचारणीय विषय है। इस ब्रह्माण्डगोलकमें नानाप्रकारके मनुष्य हैं। प्रत्येकके समीप अपनी-अपनी कलाएँ विद्यमान हैं। किसीकी आकृति किसीसे नहीं मिलती। किसीकी विद्या-बुद्धि किसीसे नहीं मिलती। प्रत्येक की प्रतिभा भिन्न है। प्रत्येकका अध्ययन-अध्यापन-प्रकार पृथक् है। यही विधाताकी विचित्रता है। ऐसे विचित्र विश्वमें एक-से-एक बढ़कर कलाकुशल विद्यमान हैं। बीसवीं सदी है। बुद्धिवादका प्राबल्य है। प्रातिभशक्तिके द्वारा कलाविशारद नवीन सूझ-बूझसे विश्वको विस्मितकर मुग्ध कर रहे हैं। समुन्नत प्रत्येक राष्ट्रके दार्शनिक एवं वैज्ञानिक विविध-विचित्र उपकरणोंके निर्माणसे विपुल विश्वको चकित प्रायः कर रहे हैं।

हर एक वस्तुओंके शिक्षणशालाओं, प्रयोगशालाओं एवं निर्माणशालाओंके जहाँ-तहाँ केन्द्र स्थापित किये जा रहे हैं। कल-कारखानों (फैक्टरियों) की निर्माण योजनाएँ बनाई जा रही हैं। योगाश्रम एवं औषध-उपचारके द्वारा कायाकल्पकी भी योजनाएँ तैयारकी जा रही हैं। ठीक है, ये सब बीसवीं सदीकी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देन है। तर्कका प्राधान्य है। बुद्धिवादकी प्रकर्षता है। भौतिकवाद पूर्ण यौवन पर है। विज्ञानका बोल-बाला है।

परन्तु तत्त्वचिन्तक, धीधन, परीक्षक, तपोधन, आत्माराम महापुरुषोंका कथन है कि चाहे मानव अपनी बौद्धिक विकासकी चरम सीमातक क्यों न पहुँच जाए? चाहे भौतिकवादके अभिनव आविष्कारों द्वारा सूर्य-चन्द्रलोक तक क्यों न पहुँच जाए? चाहे विज्ञानके विविध-विचित्र साधनों द्वारा विपुल विश्वको आश्चर्य-चकित क्यों न कर दे? परन्तु यह निश्चित सत्य है कि बिना अध्यात्म ज्ञानके आत्मतत्त्वकी प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती और आत्मसाक्षात्कारके विना पूर्ण-आनन्द एवं शाश्वत शान्तिकी उपलब्धि कदापि नहीं हो सकती। अतः साक्षात्कारके लिये ज्ञान प्राप्त करना ही होगा। बिना आत्मज्ञानके ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्रत्याशा करनी गगनकुसुमके समान अनघड़ भ्रान्तिसंभिन्न कल्पना है।

लोगोंने भौतिक विज्ञानकी अभिवृद्धिके लिये प्रयोगशालाओं-का निर्माण किया है परन्तु वेद-वेदान्तपारग, ब्रह्मनिष्ठ महात्मजनोंने आध्यात्मिक ज्ञानके परमजिज्ञासुओंके लिये ज्ञान प्राप्तिके साधन-क्षेत्र खोल दिये हैं। वेदान्त-सम्मेलनोंमें सन्त वीत-राग महापुरुष उपस्थित होकर अपने शास्त्रीय अनुभवोंसे पूर्ण प्रवचनों, मनोहर अमृतोपम उपदेशों, सुन्दर सम्वादोंके द्वारा जनता-जनार्दनका कल्याण करते हैं। केवल उपदेशों द्वारा ही नहीं अपितु विद्वानोंने वेद-वेदान्तके परमतत्त्वको विचारबद्ध कर, अध्यात्मज्ञानके प्रवीण

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवक्ताओंके प्रवचनोंका प्रवाह प्रवाहितकर समस्त आत्म-जिज्ञासुओंका परम कल्याण करनेका सुन्दर आयोजन सोच निकाला है। इस युगकी यह एक नई चीज़ है। है यह प्राचीन, परन्तु समयके प्रभावसे यह परिपाटी कुछ लुप्त प्रायः हो गई थी, पर अब पुनः सन्तोंके सत्संकल्पसे प्रचार-प्रसारका कार्य बड़े जोरों से हो रहा है। आध्यात्मिक ग्रन्थों द्वारा सुन्दर साहित्यका सृजन कर देशका कल्याण कर रहे हैं। अद्वैत वेदान्तके प्रचार-प्रसारका यह भी एक रोचक मार्ग है। यही आत्मज्ञान-प्राप्तिका क्षेत्र है। इसी आत्मज्ञानसे मानवमात्रका कल्याण सम्भव है। शाश्वत सुख-शान्ति और निःशेष दुःखकी निवृत्तिका प्रशस्त राजमार्ग आत्म-ज्ञान द्वारा आत्मप्राप्ति है। यही मोक्ष है। इससे यह निष्पन्न हुआ कि आनन्दरूप आत्मवस्तुका साक्षात्कार मोक्ष है। वह मोक्ष ज्ञानके बिना और किसी साधनसे साध्य नहीं है। संसार और संसारके समस्त भूत-भौतिक, भव्य-अभव्य पदार्थजन्य ज्ञान-अज्ञान क्षणिक सुखप्रद, अल्प, तुच्छ, विनाशी एवं दुःखप्रद हैं अतः सर्वथा सर्वदा संन्त्याज्य हैं। अतः आत्मज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ है यह निष्पन्न हुआ। गीतामें लिखा है—

"ज्ञा"+"न विज्ञान तृप्तात्मा"—वेद-वेदान्तवेत्ता गुरुके समीप बैठकर विधिपूर्वक स्वाध्यायका नाम "ज्ञान" है और शास्त्र एवं गुरुमुख द्वारा निर्विचिकित्सितरूपसे प्राप्त ज्ञानका स्वानुभवकी दृढतासे अपरोक्ष करनेका नाम "विज्ञान" है। अर्थात् परोक्ष-अपरोक्ष ज्ञान-विज्ञानके द्वारा तृप्त हुआ मानव ही स्थिरचित्त,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विशुद्ध अन्तःकरणयुक्त होकर आत्मतत्त्वको समझनेके योग्य बनता है। मुण्डक श्रुति कहती है—"ज्ञानप्रसादेन विशुद्ध-सत्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः" विशुद्ध अन्तःकरण-युक्त साधनसम्पत्सम्पन्न साधक ही निरन्तर ध्यान करता हुआ निर्मल ज्ञानसे सूक्ष्म आत्माका साक्षात्कार कर पाता है। वह सूक्ष्म आत्मा सरल साध्य नहीं है। इसीलिये इस मार्गको महान् कठिन कहा गया है, जो इस मार्ग पर चल पड़ता है उसके सब दुःख निवृत्त हो जाते हैं। श्वेताश्वर उपनिषद्में लिखा है—"ज्ञात्वा देवं सर्वपाशापहानिः" उस दिव्य देवका साक्षात्कार कर-लेने पर समस्त संसार बन्धनोंसे मुक्त हो जाता है और मुक्त होने के लिये ही जीवका अनादि अनन्तकालसे निरन्तर प्रयास हो रहा है। जब तक अपने लक्ष्य विन्दु तक नहीं पहुँच पाता तब तक चैन नहीं मिल सकता। कैवल्य श्रुति भी यही कहती है—"ज्ञात्वा तं मृत्युमत्येति" वेद-वेदान्त प्रसिद्ध आत्माको जानकर ही मानव जन्म-मरणके कठिन भव-बन्धनसे मुक्त होकर प्रसन्न होता है। इससे अतिरिक्त दुःखसे छुटकारा पानेका अन्य कोई सुगम मार्ग नहीं है।

"न"+"बिभेति कदाचन" तैत्तिरीय श्रुति कहती है, वह साधक समस्त संसार-बन्धनोंसे निर्मुक्त होकर भय रहित हो जाता है। वही अभय पद है। संसारी जीव संसारमें बड़ेसे बड़े पदको ग्रहण करनेके लिये कितना जी खोलकर प्रयास किया करता है और उस पदको प्राप्त करनेके लिये—सैंकड़ों, हजारों, लाखों रुपये भी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पानीके समान बहा देता है। पर ये सब लौकिक पद भयप्रद ही हैं। इन पदोंमें पद-पदमें भय बना रहता है वस्तुतः वही एक अभय पद है। उसी पदको पानेका सतत सद्उद्योग करना चाहिए। श्वेताश्वतर उपनिषद्में लिखा है—"न तत्सश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते" उस महान् आत्माके समान और उससे बढ़कर भी कोई देखनेमें नहीं आता। वही सबसे महान् है। सबका अधिष्ठान है। सबका केन्द्रस्थल है। अभय-अजर और अमर है। वही ज्ञातव्य है।

"प्र"+"ज्ञानं ब्रह्म" वह चिन्मात्र वस्तु है। स्थूल साधनोंसे साध्य नहीं है। न वहाँ तर्ककी आवश्यकता है न शारीरिक बलकी आवश्यकता है। केवल ज्ञानके बलसे ही प्राप्तव्य है। कठश्रुति कहती है—"प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्" वह सूक्ष्मज्ञानके साधनभूत निदिध्यासनादिके द्वारा सूक्ष्म आत्माका साक्षात्कार कर सकता है। स्थूल, वाह्य उपकरणोंकी वहाँ आवश्यकता नहीं। आजकल बड़े-बड़े विज्ञानवेत्ता विद्यमान हैं परन्तु उनकी प्रकृष्ट मति भी आत्माके विषयमें कुण्ठित हो जाती है। हाथ टेक देते हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मणमें लिखा है—"न अवेदविन्मनुते तं बृहन्तम्" वेद-वेदान्तके बिना उस सूक्ष्म एवं बृहद् आत्मतत्त्वका ज्ञान नहीं हो सकता। अतः प्रज्ञानकी आवश्यकता है। वेद-वेदान्तसे ही वह प्रज्ञान प्राप्त हो सकता है, ज्ञानातिरिक्त साधनकी यहाँ आवश्यकता नहीं। इसलिये बृहदारण्यक उपनिषद्में कहा है—

"वा"+"चो विग्लापनं हि तत्" अतिरिक्त साधनमें प्रयास

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करना केवल वाणीका श्रममात्र है। अतः हितबुद्धिको रखती हुई अन्य श्रुति कहती है—"वाचो विमुञ्चथ" वेद-वेदान्त शास्त्रसे अतिरिक्त अपर-भूत-भौतिक पदार्थवादको छोड़कर एक आत्मतत्त्व-को ही जाननेका सदुद्योग कर जीवनको सफल करनेका प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा करने पर ही मानवका परम कल्याण है और वही धीर-वीर जन्म-मरणके साथ उत्पन्न होने वाले—

"हृ"+"र्षशोकौ जहाति" हर्ष और शोकको सदाके लिये मुक्तकर परम ज्योति, बृहद् ब्रह्म-आत्माके साक्षात्कारसे कृतकृत्य हो जाता है और उसके अन्तःकरणमेंसे हर्ष-शोकोपलक्षित निखिल विकारसमूह समूल छिन्न-भिन्न हो जाते हैं और स्वच्छ अन्तःकरणमें ज्ञानका निरन्तर निर्मल प्रवाह प्रवाहित होने लगता है। यह है—ज्ञान-प्रवाह—

आर्ष शास्त्रके अनुसार संसारमें चार प्रकारके पुरुषार्थ निश्चित हैं, उनका निष्कृष्ट-निर्गलित अर्थ भोग एवं मोक्ष है। भोगसे जन्म-मरणरूप संसारकी प्राप्ति होती है। संसार दुःख बहुल है। सुख स्वल्प है। वेदान्त मोक्षशास्त्र है। वहाँ संसार नहीं, न संसारमें होनेवाले जन्म-मरण एवं तज्जन्य सुख-दुःख हैं। पूर्ण-आनन्दरूप प्रज्ञानघन, चिन्मात्रवस्तु अधिष्ठानभूत भूमा ब्रह्म ही अवशिष्ट रह जाता है। "अधिष्ठानावशेषो हि नाशः कल्पित वस्तुनः" उससे अतिरिक्त अविद्या-कल्पित वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यही सारभूत "वस्तुतत्त्व" ब्रह्म वेद-वेदान्तवेत्ता, ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों-से उपलब्ध होता है।

अन्न-वस्त्र आदि दान देनेका महान् फल शास्त्रमें बताया है। दीन-दुखियोंकी उपयुक्त समयमें उपयुक्त सेवाका भी अपूर्व फल कथन किया है। पर दुःखरूप संसारके अज्ञानकूपसे निकालकर आनन्दरूप, शान्तिमय, सद्रूप, परात्पर, परब्रह्म परमात्माके दिव्य आलोकका साक्षात्कार कराकर जन्म-मरणके जटिल जञ्जालसे सदाके लिये मुक्त करा देना अल्प महत्त्व नहीं रखता है। समस्त वेद-वेदान्तादि शास्त्रोंका सारभूत अभिप्राय चिन्मात्र आत्मवस्तुका साक्षात्कार है। जीवमात्रका चरम अभिप्रेत पदार्थ चिद्बिन्दुसे निकलकर चित्सिन्धुमें समा जाना है। इसीका नाम मोक्ष है। इसीको परम पुरुषार्थ कहते हैं। मोक्षश्रुति भी यही कहती है— "न पुनरावर्त्तते न पुनरावर्त्तते" "ब्रह्म सम्पद्यते परम्" परब्रह्म परमात्माको साक्षात्कर तन्मय-चिन्मय होकर आवागमनके भयप्रद भवबन्धनसे सदाके लिये निर्मुक्त हो जाता है। आगे श्रुति कहती है—"विमुक्तश्च विमुच्यते" विमुक्त जीव ही मोक्षभाक् होता है। यही प्राणीमात्रका मोक्ष है।

यह "ज्ञान-प्रवाह" पुस्तक श्रीकृष्ण यतीश्वर ग्रन्थमालाका तृतीय पुष्प वेदान्तके परम जिज्ञासुओंके सम्मुख प्रसरित हो रहा है। इसमें विगत "षष्ठ वेदान्त-सम्मेलन" के शुभ अवसर पर पधारे हुए वीतराग, विद्वान् अनुभवी महापुरुषोंके प्रवचनोंका संग्रह है-।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आजकलके नव शिक्षित एवं धार्मिक विचारोंके लोगोंमें वेदान्तके प्रति विशेष उत्साह उत्पन्न हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति वेदान्तके सिद्धान्तको समझनेके लिये अत्यन्त उत्सुक दीख पड़ता है। कोई विरला ही मनुष्य होगा जो वेदान्तके अद्वैत विचारोंसे सहमत न होगा।

वेदान्तका वास्तविक मौलिक सिद्धान्त "जीव-ब्रह्मकी एकता" है। विश्वमें एकात्मताका परिपोषक और विश्वशान्तिका मूल कारण वेदान्त है। वेदान्तमें रुचि रखनेवालोंके विशेष आग्रहसे यह संग्रह पुस्तकबद्ध कर श्रद्धालु, सत्संगिओंके सम्मुख समुपस्थित किया जा रहा है।

इसका अभिधान "ज्ञान-प्रवाह" है ज्ञानके विषयमें प्रथम बहुत कुछ विचार प्रस्तुत किया गया है। मनुष्यको किसी भी कार्यमें सफलता तब मिलती है जब वह निरन्तर उस कार्यको करता रहता है। इसी प्रकार इस "प्रवाह" में विद्वानोंने अपने प्रवचनोंमें यह सिद्धकर बताया है कि आत्मप्राप्तिके लिये निरन्तर ज्ञानके अभ्यासकी आवश्यकता है। सतत अभ्यासके बिना आत्माका साक्षात्कार नहीं हो सकता। अतः अन्वर्थ नाम होनेसे प्रस्तुत संग्रहात्मक पुस्तक अत्यन्त उपादेय है। जो वेदान्त के जिज्ञासु हैं अथवा वेदान्तके सिद्धान्तको सरलतासे समझनेके अभिलाषुक हैं, उनकेलिये यह प्रवचन-संग्रह संग्राह्य है। इससे वेदान्तके वास्तविक सिद्धान्तोंका सरलतासे परिचय प्राप्त हो सकता है। वेदान्त अत्यन्त क्लिष्ट होनेसे जल्दी समझमें नहीं आता, पर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अनुभवी ब्रह्मवेत्ताओंने कठिन विषयको भी सरल-सुन्दर रीतिसे समझानेका प्रयास किया है और जहां कहीं कठिनता समझी, वहां पर रोचक दृष्टान्त एवं आख्यायिका द्वारा विषयको सरस एवं सरल बनाकर समझानेका विशेष प्रयत्न किया। अद्वैत वेदान्तके सिद्धान्तको "हस्तामलकवत्" करनेके लिये "ज्ञान-प्रवाह" अत्यन्त उपादेय हो सकता है।

महामण्डलेश्वर श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्रीस्वामी पूर्णानन्दजी महाराजने "वेदान्त-सम्मेलन" के आयोजनको संचालित कर लुप्त परिपाटीको उज्जीवित करके वेदान्तके सिद्धान्तके संपोषण, संवर्द्धन एवं प्रतिष्ठापन द्वारा सम्भ्रान्त मानव-निकायको जीवनदान देनेका श्लाघनीय प्रयास किया है। इसके द्वारा जिज्ञासु साधक-के मानसमें तत्त्व-जिज्ञासाको समुत्पन्नकर श्रवण-चिन्तन एवं निदिध्यासनके लिये प्रचुरमात्रामें अनुपम सामग्री प्रस्तुतकी है। अतः महाराजजीका सदुद्योग स्तुत्य है। यह ज्ञान-प्रवाह इसी प्रकार चलता रहा तो मेरा सुदृढ विश्वास है कि वेदान्तके अद्वैत सिद्धान्तका प्रचार-प्रसार समस्त संसारमें अतिशीघ्र हो जाएगा और मानवके अन्तस्तलमें निरन्तर ज्ञान-प्रवाहके प्रवाहित हो जानेपर शाश्वत सुख-शान्तिका आविर्भाव निश्चित सम्भव है। इसी पदकी सबको आकांक्षा है। यही सबको अभिप्रेत है। यही प्राणीमात्रका मोक्ष है।

—नरहरि भट्ट (सम्पादक)

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्रीकृष्ण निवासाश्रम, कनखल (हरिद्वार)
के वर्त्तमान संचालक अध्यक्ष

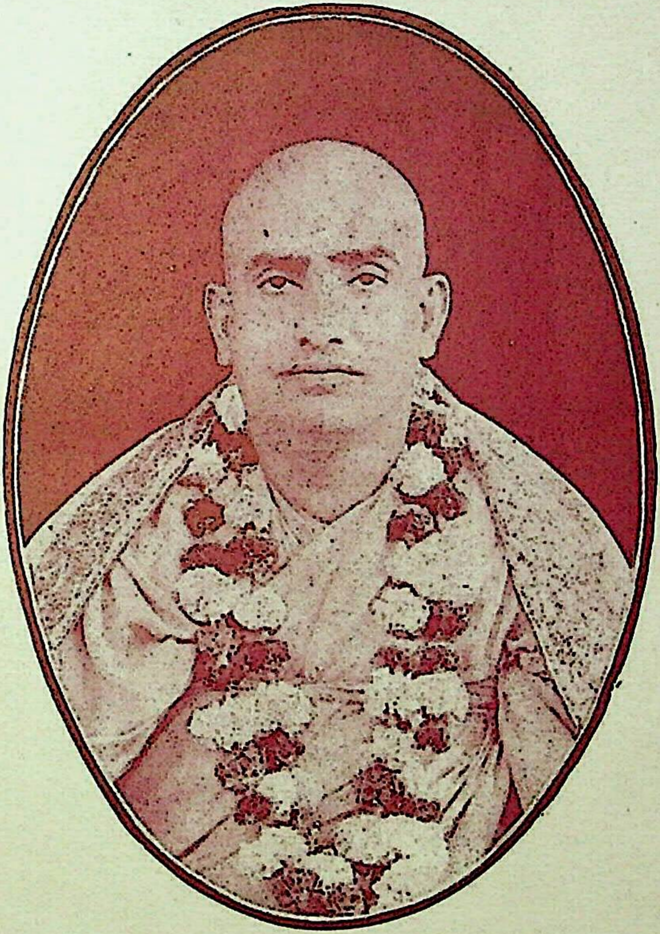

महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्दजी महाराज

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

* श्रीशंकरो विजयतेतराम् *

अथ

ज्ञान-प्रवाह

प्रवचन

वेदान्त-सम्मेलनके आयोजक

श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्दजी महाराज महामण्डलेश्वर

श्रीकृष्ण निवास आश्रम, कनखल (हरिद्वार)

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

परम श्रद्धेय विद्वन्मण्डली, सद्गृहस्थ, स्नेहवती माताओं तथा बहिनों !

आज बड़े ही हर्षका शुभ अवसर है। प्रति वर्षकी भांति इस वर्ष भी आप श्रद्धा-भक्तिपूर्वक अधिक संख्यामें उपस्थित होकर पूर्ण आनन्दरूप आत्मा, जो अपना आप है, परन्तु

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अज्ञानसे जिसका प्रतिबोध नहीं होता है, जिसको गीतामें "क्षेत्रज्ञ" कहा है—उस खोई हुई आत्मवस्तुको जाननेकी उत्कट जिज्ञासाको लेकर आये हैं। आप बड़े धन्य भाग्य हैं।

यह मानव-जीवन अत्यन्त अमूल्य जीवन है। अमूल्य जीवन-को प्राप्तकर यदि अपने वास्तविक स्वरूपका परिज्ञान नहीं प्राप्त किया तो यह मानव-जीवन व्यर्थ हो जाएगा और पुनः जन्म-मरणके चक्करमें ही पड़ना पड़ेगा। भक्तप्रवर तुलसीदासजी ने कहा है—"बड़े भाग मानुष तनु पावा"। शास्त्रमें भी लिखा है—"मनुष्यत्वं दुर्लभं लोके"। अतः प्रत्येक मनुष्यका परम कर्तव्य है कि वह क्षेत्रज्ञ जो आत्मा है, उसको समझनेका प्रयत्न करे। श्रुति कहती है—"इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः"—जबतक यह दुर्लभ मानव-शरीर विद्यमान है, भगवत्कृपासे प्राप्त साधन सामग्री उपलब्ध है, तभी तक शीघ्र-से-शीघ्र क्षेत्रज्ञको जान लिया जाय तो मनुष्य-जीवनकी परम सार्थकता है। यदि इस जीवनमें क्षेत्रज्ञका ज्ञान न प्राप्त किया तो महान् विनाश ही विनाश है अर्थात् जन्म-मरणकी कठिन यातनाओंको भोगना पड़ेगा। अत एव मुण्डक श्रुति कहती है—"तमेवैकं जानथ आत्मानम्"—वही एक आत्मा (क्षेत्रज्ञ) ज्ञातव्य है। इसी बातको लक्ष्यकर भगवान् अर्जुनको कहते हैं—

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः॥

जरा ध्यानसे सुनिये—भगवान् कहते हैं—'हे अर्जुन! यह

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शरीर क्षेत्र है और इस शरीरको जाननेवाला है क्षेत्रज्ञ'। कहने का अभिप्राय यह है कि "क्षेत्रं जानातीति–क्षेत्रज्ञः" अर्थात् जो इस स्थूल शरीरको जाने, इन्द्रियोंको जाने, प्राण-मन-बुद्धि-चित्त और अहंकारको जो जाने अथवा इनकी स्थितिको तथा अवस्था-को जो समझे वह क्षेत्रज्ञ है। अब यहां यह प्रश्न उपस्थित होता है कि कौन क्षेत्रज्ञ है? क्या जो कुछ है वह संघात ही है? तो आप कहेंगे कि जो कुछ है, संघात ही है। यही ज्ञाता है। इसके अतिरिक्त कोई और देखनेमें आता ही नहीं—तो संघातके बीच-में कौन ज्ञाता है? क्या यह स्थूल शरीर ज्ञाता है? इन्द्रियां ज्ञाता हैं? प्राण ज्ञाता है? मन ज्ञाता है? बुद्धि ज्ञाता है? चित्त ज्ञाता है या अहंकार ज्ञाता है? यदि ये ही ज्ञाता हैं ऐसा सामान्य वचन कहें तो विशेष जिज्ञासा होगी कि इनमें कौन ज्ञाता है? या समुदायका मुख्य संघात यह ज्ञाता है। यदि आप कहें कि स्थूल शरीर ही ज्ञाता है। यदि यह जो दीखता है, यही ज्ञाता हो तो सुषुप्तिकी ओर, निद्राकी ओर, ऊँघनेकी ओर प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए। सोनेकी इच्छा करते हो कि नहीं? ऊँघनेकी इच्छा करते हो कि नहीं। यदि यह संघात ही ज्ञाता हो तो सोनेकी प्रवृत्ति, ऊँघनेकी प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिये। हां जी—एक बात और है। यदि हम इसीको ज्ञाता मानें और कहें कि इसके अतिरिक्त और कोई ज्ञाता नहीं, तो भाई यह तो उत्पत्ति-वाला है, नाशवाला है, जन्मनेवाला है, मरनेवाला है। अतः यहां दो दोषोंकी प्राप्ति होती है। अकृताभ्यागम और कृतनाश।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यदि स्थूल शरीरको ज्ञाता मान लें तो अकृताभ्यागम दोषकी प्राप्ति होगी। इसका अर्थ यह हुआ कि इसके अतिरिक्त और कोई ज्ञाता नहीं—तो फिर यह सुखी है। यह दुःखी है क्यों? सुख-दुःख तो कर्मोंके विषय हैं। स्थूल शरीर ही इनका भोक्ता है। इसलिये यहांपर अकृताभ्यागम दोषकी प्राप्ति होती है। यदि स्थूलको ज्ञाता मानलें तो दूसरे दोष कृतनाशकी प्राप्ति होगी। इसका मतलब यह है कि जो कार्य आज किया, उसका फल आज भोगलें और जो कार्य कल किया है उसका फल कल ही भोगलें। यह नियम नहीं है। जिस जन्मका फल है उसी जन्ममें भोगलें, ऐसी बात नहीं। जितने कर्म दूसरे जन्ममें किए उनका फल दूसरेमें ही भोगलें। श्रुति भगवती कहती है—महापापका फल सात जन्मोंतक चला जाता है। उपपाप कर्मका फल पांच-पांच जन्मोंतक तथा साधारण पापका फल भी तीन जन्मतक चलता है जैसे—

महापातकचिह्नं हि, सदा जन्मनि जायते ।
उपपापोद्भवं पञ्च, त्रीणि पाप समुद्भवम् ॥

कृतनाश—यदि स्थूल शरीरको ही ज्ञाता मानें तो—वह नाशवान् है, नष्ट हो जायगा तो इन कर्मोंका फल कौन भोगेगा? विना भोगे ही कर्म समाप्त हो जाएँगे, ऐसी बात नहीं है। चाहे हजारों कल्प क्यों न बीतें, परन्तु किये हुए कर्मोंका फल तो भोगना ही पड़ेगा, स्थूल शरीरसे दो दोषोंकी प्राप्ति होगी। यदि स्थूल शरीरको ज्ञाता मानें तो सुषुप्तिकी ओर और ऊँघने-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

की ओर प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिये। इसलिये यह स्थूल शरीर भी ज्ञाता नहीं, क्षेत्रज्ञ नहीं।

यदि इन्द्रियोंको ही ज्ञाता मानलें तो लौकिक व्यवहारमें जो यह देखनेको आता है कि मेरी आंख ठीक नहीं देखती, मेरी वाणी अच्छी नहीं, मेरा कान अच्छी तरहसे सुनता नहीं। यह दृश्य है तथा मैं द्रष्टा हूँ। 'द्रष्टा' से 'दृश्य' जुदा है। यह मेरा मकान है, यह मेरी घड़ी है। मेरे मकानका मतलब यह नहीं कि मैं मकान हूं। मेरी घड़ीका मतलब यह नहीं कि मैं घड़ी हूं। इसमें जो—'मेरा' कहनेवाला जुदा है और जिसको मेरा कहा जाता है वह जुदा है। यदि इन्द्रियां ही आत्मा होतीं, यदि इन्द्रियां ही ज्ञाता होतीं तो—बहिनों! और भाइयो! 'द्रष्टा' मैं और 'दृश्य' मेरा यह व्यवहार नहीं हो सकता था। घड़ेको देखनेवाला घड़ा नहीं बन सकता। मकानको देखनेवाला मकान नहीं बन सकता। मकान जुदा है और मैं द्रष्टा जुदा हूं। इन्द्रियां दृश्य हैं, जुदा हैं। मैं देखनेवाला जुदा हूं। इन्द्रियां ज्ञाता हैं, यह लौकिक दृष्टिसे भी असिद्ध है।

तीसरे स्थानपर है 'प्राण'। यदि कहें कि प्राण ही ज्ञाता है तो वह भी ज्ञाता नहीं। यदि प्राण ज्ञाता होता तो सुषुप्ति अवस्थामें भी जब कि यह मौजूद होता है तो हम घरपर आए मित्रका सम्मान नहीं करते। यदि चोर कोई चीज़ चुराकर ले जाता है तो मना नहीं करते, तो इसको आए मित्रका तथा चोरका भी पता होना चाहिये था। परन्तु न आएका पता है और न गएका पता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इसलिए मैं कह रहा था कि प्राण भी ज्ञाता नहीं हो सकता। यदि मन-बुद्धि-अहंकारको ज्ञाता कहें तथा मानें कि इनके अतिरिक्त कोई ज्ञाता नहीं—यह बात भी गलत है। क्योंकि, इन सबको भी 'मेरे' शब्दसे पुकारा जाता है। मेरा कहनेवाला जुदा होता है और जिसको मेरा कहा जाता है वह भी जुदा होता है। ये मन-बुद्धि-अहंकार दृश्य हैं, जुदा हैं और इनका द्रष्टा जुदा है। मेरे कहनेका अभिप्राय यह है कि स्थूल शरीर भी ज्ञाता नहीं। यदि आप कहें कि यह संघात (समुदाय) ज्ञाता है—तो यह भी नहीं बन सकता। जैसे एक लकड़ी जड़ है, वैसेही पांच-दस-बीस-पचास काष्ठका समुदाय भी जड़रूपही है। स्थूल शरीर, इन्द्रियां-प्राण-मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार जैसे संघातके बीच एक-एक चीज़ जड़ है, इसी प्रकार समुदाय-संघात भी जड़रूप है। ये सब जड़रूप ज्ञाता नहीं। वह ज्ञाता कोई जुदा ही है। इनकी अवस्थाको जाननेवाला, इनकी स्थितिको जाननेवाला ज्ञाता है, जो पांच भूतों, पांच कोशोंसे जुदा है। ये पांच कोश ज्ञाता नहीं बन सकते।

चार्वाक अन्नमय कोशकोही मानते हैं। बुद्धिकी तरहसे चार्वाक मतानुयायी पृथ्वी-तेज-जल और वायु ये चार भूत मानते हैं। आकाशको नहीं मानते। चार्वाक स्थूल शरीरको आत्मा मानते हैं। चार्वाकके मतमें 'अहं' का विषय जो स्थूल शरीर उसकोही आत्मा अङ्गीकार करते हैं। "मैं काणा हूँ" "मैं गोरा हूँ" "मैं ब्राह्मण हूँ" "मैं क्षत्रिय हूँ" और "मैं वैश्य हूँ"—ये रूप-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रंग, जाति, अहं आदि सब स्थूल शरीरकेही विषय हैं और चार्वाक दर्शनमें आया है—

यावज्जीवेत्सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् ।
भस्मीभूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कुतः ॥

देहकोही आत्मा माननेवाले चार्वाकका यह सिद्धान्त है ।

दूसरे मतवालोंका कहना है कि स्थूल शरीर ज्ञाता नहीं, क्षेत्रज्ञ नहीं । मैं देखता हूँ, मैं सुनता हूँ, यह व्यवहार होता है, अतः इन्द्रियां आत्मा हैं । जिनके रहनेपर यह स्थूल शरीर जीवित रहे । जिसके न रहनेपर मृतक हो जाए, उसीको आत्मा समझो । इन्द्रियोंके निकल जानेपर यह मृतक हो जाएगा । अतः इन्द्रियांही आत्मा हैं । कहो भाई, विषय शुष्क तो नहीं ? यह ऊँघनेवाली कथा है । पर क्या करूँ, मुझे तो क्षेत्रज्ञकी कथा-व्याख्या करनी है । इस कथाको मैं सुन्दर-सरल दृष्टांतके द्वारा सरल और रोचक बनाऊँगा जिससे आप लोगोंकी समझमें आ जायगा ।

इन्द्रियोंके विषयमें प्रश्नोपनिषद्‌में आख्यायिका आई है । वह इसप्रकार है—इन्द्रियोंमें एकबार आपसमें कलह हो गया कि हममें कौन बड़ा है ? कान कहता है—मैं बड़ा हूँ, नेत्रेन्द्री कहती है मैं बड़ी हूँ और जिह्वा कहती है मैं बड़ी हूँ । अन्ततोगत्वा (आखिर) में यह फैसला हुआ कि—हम सबके अधिपति ब्रह्माजी हैं, उनके पास चलें । सब मिलकर ब्रह्माजीके समीप

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गईं और पूछा कि स्वामिन् हममें कौन बड़ा है ? तो ब्रह्माजीने कहा कि आप सब बारी-बारीसे एक-एक करके निकल जाओ। जिसके निकल जानेपर यह स्थूल शरीर जीवित न रहे, वही बड़ा समझो। तो सबसे पहिले नेत्रेन्द्रिय निकलकर गई। जब नेत्रेन्द्री एक सालके बाद वापिस आई तो सबने देखा कि स्थूल शरीर वैसेका वैसाही खड़ा है। तब नेत्रने पूछा कि भाई ! तुम मेरे बिना अबतक जीवित कैसे रहे ? तब स्थूल शरीरने उत्तर दिया कि जैसे अन्धा मनुष्य जीवित रहता है। फिर कर्णेन्द्रिय निकलकर गई और एकवर्ष बाद वापिस लौटकर आई तो स्थूल शरीर वैसेका वैसाही खड़ा था—तब कर्णेन्द्रीने पूछा कि मेरे बिना तुम अभीतक जीवित कैसे हो ? तो स्थूल शरीरने उत्तर दिया कि जैसे बहिरा पुरुष जीवित रहता है। इस प्रकार बारी-बारीसे सब इन्द्रियां अपनी हार मानकर बैठ गईं, तब अन्तमें प्राणेन्द्री-की बारी आई। जब प्राणेन्द्रीने बिस्तरा गोल किया तो सबकी सब इन्द्रियां घबरा गईं, तब सब इन्द्रियां इकट्ठी होकर कहने लगीं कि भाई ! "त्वमेव ज्येष्ठोऽसि, त्वमेव श्रेष्ठोऽसि" अर्थात् तुम-ही हम सबमें बड़ी और श्रेष्ठ हो। जिस प्रकार रथके चक्रके नाभिके आधारपर अरे स्थित होते हैं, उसीप्रकार सब इन्द्रियां प्राणोंके अधीन हैं।

हिरण्यगर्भका उपासक प्राणकोही आत्मा मानता है। श्रुतिका प्रमाण है। दूसरा अहं प्रत्ययका प्रमाण है। अन्य अन्तरात्मा प्राणमय कोशही आत्मा है। भूख-प्यास प्राणका

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विषय है। जब प्राणने विस्तर गोल किया तो तमाम इन्द्रियां घबरा गईं। इसलिये इन्द्रिएँ आत्मा नहीं। प्राण आत्मा है, यदि प्राण आत्मा हो तो निद्रावस्थामें भी और सुषुप्ति अवस्थामें भी चोरको चोरी करनेसे मना करना चाहिये था। आए हुए मित्र-का सम्मान करना चाहिये था, अतः प्राण आत्मा नहीं, मन आत्मा है। प्राण जड़ है, जड़ पदार्थ आत्मा नहीं हो सकता। शास्त्र तथा उपनिषद् प्रमाण हैं। अन्य अन्तरात्मा मनोमयकोष जो अहं प्रत्ययका विषय है, आत्मा है। मैं संकल्प-विकल्प पैदा करता हूँ। मुझमें बुरे-बुरे संकल्प पैदा होते हैं। मुझमें अच्छे-अच्छे संकल्प पैदा होते हैं 'अहं' प्रत्ययका विषय होनेके कारण मनही आत्मा है।

विज्ञानवादी बौद्ध विज्ञानमयकोश बुद्धिको आत्मा मानते हैं, बुद्धि आत्मा है। अन्य अन्तरात्मा विज्ञान जो है वही विज्ञानमयकोश आत्मा है, क्योंकि मन कार्य है और उसपर विज्ञान अर्थात् बुद्धि कारण है। कार्य कारणके अधीन होता है। विज्ञानवादियोंका सिद्धान्त है कि मन विज्ञानके अधीन है। मन करण है तो बुद्धि कर्ता है, करण हमेशा अधीन होता है। पहिला विज्ञान पैदा होता है फिर दूसरा पैदा होता है तो पहिला विज्ञान जो क्षणिक होता है, वह समाप्त हो जाता है। तीसरेके पैदा होनेपर दूसरा समाप्त हो जाता है। चौथेके पैदा होनेपर तीसरा नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार क्षणिक विज्ञान होनेके कारण एकके बाद दूसरा, तीसरा फिर चौथा पैदा होता है तथा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

क्रमशः समाप्त होता रहता है। इस प्रकार विज्ञानकी धाराएँ चली आ रही हैं। ये धाराएँ नदीके प्रवाहकी भांति चली आ रही हैं। धाराएँ दो प्रकारकी हैं—एक आलय विज्ञानधारा तथा दूसरी प्रवृत्तिमयविज्ञानधारा। १—आलय विज्ञानधारा—जो 'अहं' 'अहं' का विषय है, जो विज्ञानका विषय है अर्थात् कारण होता है। २—प्रवृत्तिमयविज्ञानधारा जो 'इदम्' रूपसे मनीराम प्रवृत्तिके अधीन होता है। इसलिये मन आत्मा नहीं। मनीराम करण है जो कि बुद्धि कर्ताके अधीन है। क्या करूँ, "क्षेत्रज्ञ" की व्याख्या करने जा रहा हूँ। समझदार सज्जन समुपस्थित हैं। जरा समझिए कि कर्ता किसे कहते हैं और करण किसको कहते हैं। कर्ता जो कार्यको करनेवाला हो। करण जिसके द्वारा कार्य किया जाए। उदाहरणके द्वारा समझिये। मैं लकड़ी को काटता हूँ। इसमें कर्ता "मैं" और करण कौन हुआ ? मैं लकड़ी को शस्त्रद्वारा काटता हूँ। इसमें शस्त्र करण है। काटना क्रिया है। मैं चश्मेको उठाता हूँ। इसमें "मैं" कर्ता है और उठाना क्रिया है। मैं चश्मेको हाथसे उठा रहा हूँ। तो यहां "हाथ" करण है। अतः सिद्ध हुआ कि करण कर्ताके अधीन है।

शून्यवादी बौद्ध कहते हैं—शून्यही आत्मा है। वेदान्ती कहते हैं, शून्य नाम अभावका है, जो उस अभावका भी अनुभव करनेवाला है, वही आत्मा है। जो अज्ञातरूप शून्य है उसको जो जाननेवाला है, वही आत्मा है। इसी विषयमें एक दृष्टान्त सुनिये—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक जिज्ञासु किसी महापुरुषके पास गया—तो महापुरुषका द्वार बन्द था। महात्मा बिस्तरेपर लेटे हुए थे। जिज्ञासुने दरवाजा जोरसे खटखटाया—तो अन्दरसे महात्माने लेटे-लेटे कहा—"तुम कौन हो"। जिज्ञासुने उत्तर दिया कि महाराज—यही तो मैं जानता नहीं कि मैं कौन हूँ? इसीको जानने आया हूँ। महात्माने उत्तर दिया—भाई! जो यह कहता है कि मैं नहीं जानता हूँ कि मैं कौन हूँ? इसको प्रकाश देनेवालाही आत्मा है। इस चीज़को समझनेवालाही आत्मा है। महात्माने पांच-सात मिनिटतक लेटे-लेटे यह विचार किया कि इतनी सर्दी पड़ रही है, वह प्रेमी कहीं दरवाजेपरही तो अभीतक नहीं खड़ा है? जब महापुरुषने उठकर देखा तो वह जिज्ञासु बहुत दूरतक जा चुका था। महापुरुषने आवाज़ दी कि ओ! प्रेमी आ जाओ! तो जिज्ञासुने उत्तर दिया कि मैं जो कुछ जानने आया था, जान गया हूँ। अब मुझे वापिस आनेकी आवश्यकता नहीं।

ये पांचकोश आत्मा नहीं बल्कि जो इनकी अवस्था तथा स्थितिको जाननेवाला है, वही आत्मा है। वही सत्-चित्-आनन्दरूप ब्रह्म है। वही क्षेत्रज्ञ है। अब अधिक समय न लेकर एक दृष्टान्तद्वारा अपने वक्तव्यको समाप्त करूँगा। ज़रा ध्यान-से श्रवण कीजियेगा।

दृष्टान्त—एक राजा अपने महलमें बैठा था। उसने बैठे-बैठे संकल्प किया कि एक बड़ा सुन्दर बगीचा बनवाना चाहिए। संकल्पके अनुसार बगीचा बनकर तैयार हो गया। उसमें पांच

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तत्त्वोंकी—रूप-रस-गन्ध-स्पर्शादि सामग्री रखवादी। उसमें एक गुफा बनवाई। उसमें एक सुन्दर बुर्ज बनवाया तथा उसीमें वह छिपकर स्वयं बैठ गया और उस बगीचेके बाहर उसने एक 'साईन बोर्ड' लगा दिया कि जो मुझको इस बगीचेमें ढूँढ लेगा, उसको मैं राजा बना दूँगा। तो एक व्यक्तिने विचार किया कि मामूली बात है। भला! राजाको बगीचेमें ढूँढना भी कोई बड़ी बात है। इसलिये ढूँढकर क्यों न राजा बन जाऊँ।

जब उसने बगीचेमें पांव रक्खा तो सरस राग कानमें पड़ने लगा तो कर्णेन्द्रीको तृप्त करनेके लिये वह खड़ा हो गया। थोड़ा आगेको बढ़ा तो बड़े सुन्दर दृश्योंसे नेत्रेन्द्रीकी तृप्तिके लिए ठहर गया। थोड़ा और आगे बढ़ा तो बड़ी सुगन्धि थी। नासिका इन्द्रीने रोक लिया। ज़रा आगेकी ओर बढ़ा तो त्वचा इन्द्रीने स्पर्शके लिये मजबूर किया। वहां पर बड़े सुन्दर गद्दे बिछे हुए थे, तो वह लेट गया। इतनेमें वहांसे एक अन्धा जाता है—तो वहांके पहिरेदार प्यांटवाले आ जाते हैं तो हन्टरोंसे पीटते हैं। ओ! भोग-विलासके लिप्सु! क्या तू राजाकी खोज करेगा? गीतामें भगवान् कहते हैं—

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥

इस प्रकार एक-दो-पांच-दश-सौ-हज़ार बारी-बारीसे आए पर राजाको कोई ढूंढ न सका। एक सच्चा जिज्ञासु एक दिन उस

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बगीचेके सामनेसे गुजरा तो उसने देखा कि अभी भी बोर्ड लगा हुआ था। तो वह बगीचेमें गया। वहाँ सुन्दर-सरस रागके गाने हो रहे हैं। कर्णेन्द्रीने कहा—'रुको तो।' जिज्ञासु कहता है कि ओह! कर्णेन्द्री, जब जन्म-जन्मान्तरोंतक सुनते-सुनते तुम्हारा मन नहीं भरा तो अब क्या भरेगा? इस प्रकार सब इन्द्रियोंपर विजय प्राप्त करके जिज्ञासु गुफातक पहुँचा। परन्तु वहाँपर तो एक मिट्टीका पाया ही था, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं था। जिज्ञासुने विचार किया कि राजा बगीचेमेंही है। इसके बाहर तो कहीं नहीं है? तो वह उस मिट्टीको एक ठोकर मारता है, तो एक पर्दा टूट जाता है। फिर चोट मारता है तो एक और पर्दा टूट जाता है। नीचे तीसरा पर्दा कांचका होता है। जब उसको तोड़ता है तो इन तीनोंका अधिष्ठान राजा जो है वह नीचे बैठा हुआ है। राजाने कहा—"कस्त्वम्" अर्थात् तुम कौन हो? तो जिज्ञासुने कहा—"अहं राजा अस्मि" अर्थात् मैं राजा हूँ। राजाने पूछा—'तुम कैसे राजा हो, राजा तो मैं हूँ।' तो जिज्ञासुने कहा कि आपके शब्दोंके अनुसारही मैं राजा हूँ। आपकी घोषणा थी—"जो मुझे इस बगीचेमें ढूँढ लेगा, वही राजा होगा।"

राजाने कहा—'मैं तो हजारों वर्षोंसे यहां छिपा बैठा हूँ। हजारोंने प्रयत्न किया, परन्तु कोई मुझको न ढूँढ सका। इस दृष्टान्तका भावार्थ क्या है? सज्जनों और बहिनों! जरा ध्यान दीजियेगा। ईश्वररूपी राजाने संसाररूपी बगीचा लगाया,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जिसमें पांचों विषयोंको स्थापित किया। मिट्टीका पर्दा नर-नारीका शरीर बनाया। इसके अन्दर वह स्वयं छिप गया। वेद भगवान्‌रूपी बोर्ड लगा दिया कि जो आत्माकी खोज करेगा वही ब्रह्मरूप-आत्मरूप हो जायगा। पांचों विषयोंको भोगते-भोगते आयुरूपी दिन समाप्त हो गया तो यमरूपी सार्जेन्टने हन्टरोंसे मारा। इस प्रकार एक आया, दूसरा आया, परन्तु कोई न पा सका। इस प्रकार एक सच्चा जिज्ञासु, जिसने सत्सङ्गमें श्रवण कर रक्खा था; वह सुख-दुःखकी निवृत्तिके लिये आत्माकी खोजमें चला तो रस-रंग-रूप-शब्द-स्पर्शको पार करके आत्माको खोजकर आत्मरूपही हो गया। अतः सज्जनों! इन्द्रियोंको विषय मिलनेसे उनकी इच्छा बढ़तीही जायगी। कई जन्म भोगते-भोगते समाप्त हो गये, परन्तु इनकी तृप्ति नहीं हो सकी। इस अवसरपर भर्तृहरिका श्लोक याद आता है—

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः,
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याता-,
स्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ॥१॥

यदि कोई यह कहे कि इन विषयोंका भोग करके तृप्त हो वापिस आ जाएँगे, तो यह बात बिलकुल गलत है। इसको दृष्टान्त द्वारा समझियेगा—

एक व्यक्तिने ऐलान करवाया कि जो इस बकरीको सुबहसे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शामतक खिलानेके बाद पेट भर देगा उसको सौ रुपये इनाम दिये जाएँगे। एक व्यक्ति सुबहसे शामतक बकरीको खिलाता था, पर शामको जब वापिस लाता था तो उसके सामने हरीघास रखी जाती थी तो वह बकरी फिर मुँह मारने लग जाती थी तो वह व्यक्ति शर्त हारकर वापिस चला जाता था। इसी प्रकार एक-के बाद दूसरा प्रयत्न करता था पर सब हार जाते थे। आखिर एक जिज्ञासु आया और उसने देखा कि अभीतक किसीने शर्त पूरी नहीं की तो वह बकरीको लेजाकर हरीघासपर छोड़ देता था, जब खाने लगती थी तो एक डण्डा जोरसे मुँहपर मारता था। फिर और भी कई अच्छे पदार्थ उसके सामने रखता था, वह मुख मारने लगती थी तो एक डण्डा दे मारता था। आखिर शामको बकरी वापिस लाकर फिर हरीघासपर छोड़ी जाती है, तो वह घासपर मुख नहीं लगाती; क्योंकि उसको यह भय है कि कहीं घासपर मुख रखतेही पहिलेकी तरह डण्डे न बरसने लगें। इसी चिन्तासे उसने अपनेको भरे पेटवाला जाहिर किया। भूखकी भी परवाह न की। कहनेका भाव क्या है? इन्द्रियांरूपी बकरी तबतक विषयोंसे न हटेंगी, जबतक इनको विषयोंसे हटाया न जायगा। कहनेका अभिप्राय है कि पहिले स्थूल शरीरको हटाया, फिर सूक्ष्म शरीरको हटाया, फिर बुद्धि-रूपी पर्देको तोड़ा तो इन सबका अधिष्ठान "पूर्ण-आनन्द" रूप पाया। ब्रह्मवेद ह्मैव भवति" अर्थात् ब्रह्मको जाननेवाला ब्रह्म-रूपही हो जाता है। जैसे—घटाकाश महाकाशमेंही समा जाता

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। जो क्षेत्रकी स्थिति—अवस्थाको पहिचाने वही क्षेत्रज्ञ है। अतः भगवान् कहते हैं—

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥

इतना कहकर अब मैं अपने प्रवचनको यहीं समाप्त करता हूँ।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

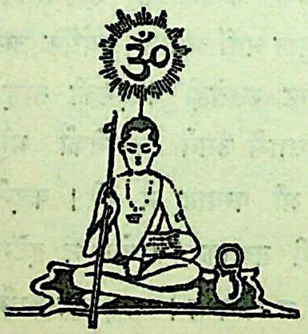

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

उद्‌घाटन-भाषण

वेदान्तकेसरी श्री १०८ स्वामी निर्मलजी महाराज

जाग ! सोए मानव जाग ! जीवन ज्योति जाग !
जाग ! जाग ! जाग ! अब तो मनुआ जाग !
सोए मनुआ जाग !
तूने आंख बन्दकी . काए नात सो गई ।
हुस्न खुद पसन्दकी दिनसे रात हो गई ।
जरद पड़ गया सुहाग ! सोज़े दरद जाग !
अब तो मानव जाग !
आंख ज़रा लगी तेरी यह जहान सो गया ।
यह ज़मीन सो गई, आसमान सो गया ।
सो गया प्रेमका सुहाग, सोज़े दरद जाग !
अब तो मानव जाग !

परम आदरणीय ! अर्चनीय-वन्दनीय ! पूज्य श्री उपस्थित श्रोत्रिय-ब्रह्मनिष्ठ-यतिवृन्द तथा जनता जनार्दनके रूप-में निज आत्माओ !

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मैं इन सभी महापुरुषोंका हार्दिक धन्यवाद करता हूं जो इस महान् ज्ञानयज्ञमें आत्मज्ञानकी दिव्यताका निरूपण करनेके लिये पधारे हैं। वह आत्मज्ञान जिसको जाने विना मानवको वास्तविक सुख-शान्तिकी उपलब्धि नहीं हो सकती और जिसकी प्राप्तिपरही मानव जीवन सफल माना जाता है। इसी एक प्रक्रियाको विभिन्न प्रकारोंसे ये आत्मवेत्ता आपको सुनाएँगे। जैसे सम्पूर्ण मिठाइयोंमें एकही खाण्डका ज़ायका है, मिठाई-के आकार चाहें भिन्न-भिन्न हैं, बुद्धिमान् पुरुष समझता है कि भिन्न-भिन्न नामों और रूपोंके कारण भेद होनेपर भी खांड सब मिठाइयोंमें ओत-प्रोत है, जिसकी वजहसे ये सब स्वादिष्ट और अच्छी लग रही हैं। इसी प्रकार विद्वान् भी एकही आत्मज्ञान-की महत्ताको विभिन्न तरीकोंसे कहते हैं, जिससे कि यह मानव अपनी जन्म-जन्मान्तरोंसे खोई हुई दिव्यताको फिरसे सम्भाल-कर चिरन्तन शान्तिके साम्राज्यमें प्रवेश पा सके। कहनेको वे क्या कर्मकाण्ड नहीं कह सकते ? परन्तु वे जानते हैं कि बगैर इस अध्यात्म विद्याके मानवको अपनी अभीष्ट वस्तु नित्यानन्द-की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती। धूपको रोकनेवाले वृक्षके पत्ते झाड़ देनेपर, फल नोच लेनेपर, टहनियां काट देनेसे उसका नाश नहीं होता, बल्कि समय आनेपर वह फिर उसी तरह हरा-भरा हो जायगा। इसी तरह हम जिन दुःखोंकी अत्यन्त निवृत्ति करना चाहते हैं, कर्म और उपासना द्वारा वे दुःख एक निश्चित समयके लिये शान्त हो जाते हैं। परन्तु उनका बीज

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अज्ञान नष्ट नहीं होता। इसलिए आवश्यकता इस बातकी है कि यदि हम इन दुःखोंसे सदाके लिये मुक्त होना चाहते हैं तो हमें इन दुःखोंका मूल कारण जो अज्ञान है, उसकी निवृत्ति करनी होगी। उस अज्ञानकी निवृत्ति सदा ज्ञानसे होती है, जैसे अन्धकारकी निवृत्ति एकमात्र प्रकाशसे ही होती है। यह महान् पुरुष उसी एक ज्ञानके दीपकको प्रज्वलित करनेके लिए यहां आए हैं जो एक बार जलकर फिर कभी नहीं बुझता। "मैं वह परवाना नहीं, जो एक क्षणमें जलकर भस्म हो जाऊं। मैं तो ऐसी शमां हूँ, जो रात-भर जलती रहती हूँ।" इन विद्वानोंकी यही महानता है कि यह एक ऐसे तत्त्वतक पहुँचा देते हैं जिसे पाकर मानवके लिये फिर कुछ भी पाना शेष नहीं रह जाता।

आर्टिस्टका आर्ट, आर्टमें है,—अपनेमें नहीं, जैसे—वह पृथ्वी पर पड़ी हुई मिट्टीको उठाकर उसमें जान-सी डाल देता है, जिसे देखकर लोग वाह! वाह! कर उठते हैं और बरबस उसके चरणोंपर भक्तोंका मस्तक झुक जाता है। ठीक उसी प्रकारसे महान् पुरुष भी गिरी हुई रूहोंको अपने ज्वलन्त सदुपदेशोंद्वारा अपनाही नहीं, बल्कि, अपना-सा बना लेते हैं। शवसे शिव, नरसे नारायण-सा बना देते हैं।

आरफको जिस विद्याने शान्तिका पैग़ाम दिया, वह उसी दिव्यताके दर्शन सभीको करा देना चाहता है, उस एक तत्त्वका अपरोक्ष करनेके लिए उसने और भी कई अनुभव किए जिनको आपके समक्ष रखकर उसे प्रसन्नता होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हम लोगोंकी प्रत्येक क्रिया तथा प्रयत्न अब आप लोगोंके लिये है, अपने लिये नहीं और आपको हम अपनेसे भिन्न नहीं बल्कि अपनाही स्वरूप समझते हैं। माताके स्तनोंका दूध जैसे बच्चोंके लिये है, माताके अपने लिये नहीं, इसी तरह ये आत्मदर्शी भी वेद-शास्त्रोंका अध्ययन करके आप लोगोंको इस पावन ज्ञानका सन्देश देते हैं। वह आपकेही आत्मोन्नतिके लिये है। इनके अध्यात्म-सन्देशसे गणिका, अजामिल, वाल्मीकी जैसे सद्गतिको पाकर निज स्वरूपको प्राप्त हुए। कहांतक कहें, गिरे हुए रद्दीके टुकड़ोंको उठाकर सन्तोंने किस तरहसे चमका दिया। आज उन कागज़की तस्वीरोंपर फूल चढ़ाए जाते हैं। "एक हम हैं कि लिया अपनीही सूरतको विगाड़, एक वे जिनको कि तस्वीर बना आती है।"

महात्मा लोग पतनके गढ़ेमें गिरते हुए मानवको उठाकर उसका जीवन पलट देते हैं। इसी अध्यात्मविद्याके सन्देशको सुनकर सोई हुई मानवतामें नव-जीवनका संचार हो जाता है। यदि जिज्ञासाभरे दिलोंको लेकर उनके एक-एक शब्दको सुनोगे तो यह कभी नहीं हो सकता कि आपको आत्मज्ञान न हो। जीवनमें ऐसे सु-अवसर बार-बार नहीं आते।

फिर न मिलेंगे यह दीवाने, फिर न मिलेगा इनका त्याग।
जल-उठ,जल-उठ,अरी धधक उठ, महानाश-सी मेरी आग॥

यह अध्यात्मविद्या तो सभी कुछ प्रदान करती है। यह एक से तत्त्व तक पहुँचा देती है, जिसे पा लेनेपर सभी कुछ प्राप्त हो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जाता है। वृक्षोंको खरीद लेनेपर जैसे—छाया मुफ्तमें मिल जाती है, उसी प्रकार यह सारी प्रकृति ब्रह्मज्ञानीकी दासी बन जाती है। जब ऐसे तत्त्वको जाननेकी प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है तो मुमुक्षुको अपने आप रास्ता मिलने लगता है—

"कदम उठें तो मंज़िल हम कदम है,
मुसाहिब हैं यह सब अज़्ने सफ़र तक।"

खुद निकल जाती है काले बादलों को चीरकर।
चाँदकी किश्ती का कोई नाखुदा होता नहीं॥

जब यह अध्यात्मविद्या हृदयमें जोश भर देती है तो मुमुक्षु चिल्ला उठता है—

इतना लिहाज़ कर लिया दुनियाँ तेरा, परे भी हट!
नाचूं हूं साथ रामके, शर्मोहयासे कार क्या?
मुझे रोक सकता है तो कोई रोके।
कि छुपके नहीं बरमिला जा रहा हूं॥

कोई दीवाना दरियामें डूबनेके लिये जा रहा था, जब किनारेपर पहुँचा तो मल्लाहोंको पता चल गया। उन्होंने दूर-दूर तक दरियामें नावें खड़ी करदीं। वह आशिक बोला—

मुझे रोकेगा क्या ऐ नाखुदा! तू गर्क होने से।
जिन्हें हो डूबना वह डूब जाते हैं सफीनों से॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह जिज्ञासाकी कमी है, जब तुम कहते हो कि मुझे अमुक-अमुक परिस्थितियोंने रोका हुआ है, मेरी परिस्थितियाँ मेरे अनुकूल नहीं, इत्यादि। मैं आपसे एक बात पूछता हूँ कि तुम किसी मित्रके विवाहमें जानेकी तैयारी कर रहे हो। घरमें व्यापारी आये हुए हैं, उनसे बातचीत कर रहे हो। हाथमें सिनेमा जानेके लिए पास पकड़ा हुआ है। इतनेमें यदि नौकर आकर कहे कि दुकानको आग लग गई है, तो फिर सबसे पहिले क्या करोगे? आग बुझानेकोही दौड़ोगे,—उस समय यदि एक व्यापारी हाथ पकड़कर कहे—'भाई! इतनी जल्दी क्यों कर रहे हो, मैं एक रहस्य-की बात तुम्हें बताता हूँ जिससे तुम्हें हजारों रुपयोंका लाभ होगा तो फिर सुन लोगे उसकी बातको? कदापि नहीं! तबतो क्रोध-से उसके हाथको झटका देकर एकदम सीधा दुकानकी ओरही भागोगे। ऐसी तीव्र लगन जिसके हृदयमें आत्मप्राप्तिके लिए जागृत हो चुकी है उसको फिर दुनियाँकी बड़ी-से-बड़ी रुकावट भी नहीं रोक सकती। कहा भी है कि—"आशिकका दिल और दरियाका प्रवाह किसीके रोकनेसे नहीं रुकता"—क्योंकि—

मुहब्बत की नहीं जाती, मुहब्बत हो ही जाती है।
यह शोला खुद भड़क उठता है, भड़काया नहीं जाता॥

गालिब लिखते हैं—

इश्क पर ज़ोर नहीं है, यह वह आतिशे गालिब।
जो लगाए न लगे, और बुझाए न बुझे॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह तीव्र आत्मजिज्ञासाकी आग सम्पूर्ण शोक और मोहके अम्बारोंको जलाकर राख कर देती है। अर्जुनके दिलमें बान्धवोंका मोह उत्पन्न हुआ और वह कहने लगा—'हे कृष्ण! मैं तीन लोकोंमें कहीं भी इन इन्द्रियोंको तपायमान करनेवाले शोककी निवृत्तिका उपाय नहीं देखता, जिसके द्वारा मुझे शान्ति मिल सके' तो उस समय भगवान् श्रीकृष्णने शोक-पीड़ित अर्जुनको इसी ब्रह्मविद्याका उपदेश दिया, जिसे सुनकर अन्तमें उसने कहा कि—

"नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत।"

जब अर्जुनका महान् शोक इस अध्यात्मविद्याके श्रवणसे दूर हो सकता है तो तुम्हारा क्यों नहीं होगा? अवश्य ही होगा। हाँ! यदि भावनामें कमी रह जाय तो बात अलग है—

फासिला कूचाए महबूब का क्या पूछते हो?
जैसा मुश्ताक हो, नज़दीक भी है दूर—भी है॥

मुश्किलकी भावना करो तो मुश्किल हो जायेगा, यदि आसानकी भावना करोगे तो आसान हो जायगा। इसलिए जो कुछ भी इन महान् विभूतियोंसे इस सम्मेलनमें आप श्रवण करेंगे, उसको दृढ़तासे दिलमें स्थान देंगे। अब इन महापुरुषोंके सदुपदेशोंका श्रवण तथा मनन करते हुए जीवनको सार्थक करें; यही इस सम्मेलनका उद्घाटन है।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् १०८ महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज

(रामधाम-हरिद्वार)

ॐ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

समुपस्थित पूज्य सन्तमण्डल एवं विद्वन्मण्डल, प्रधान अतिथि राज्यपाल महोदय! धर्मानुरागी बन्धुओ, माताओं तथा बहिनों !

आज आप सब पुण्यसलिला जाह्नवीके तटपर लगातार कई दिनोंसे "अध्यात्म-तत्त्व" के सम्बन्धमें विचार श्रवण कर रहे हैं। आज 'वेदान्त-सम्मेलन' के अन्तर्गत "गीता-सम्मेलन" प्रारम्भ हो रहा है।

गीता क्या है? भगवान् का गाया हुआ एक गीत है। इसलिये इसे गीता कहते हैं। वह "गागरमें सागर" है और आज तक जितने भी आचार्य हुए या जितने भी सन्त हुए या जितने राष्ट्रीय नेता हुए सभीने गीतापर अपने विचार प्रकट किये हैं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

और गीतासे कुछ सीखा है। आद्य जगद्गुरु शंकराचार्यसे लेकर क्या शांकर सिद्धान्त, क्या विशिष्टाद्वैत, क्या शुद्धाद्वैत, क्या द्वैताद्वैत, क्या द्वैत—लोगोंने गीतासे ही लिया है। आगे आनेवाले स्वर्गीय तिलकजीने अपना वह "कर्मयोग" "गीता-रहस्य" इसी गीतासे लिया और महात्मा गान्धीने अपना "अनासक्ति योग" इसीसे प्राप्त किया। इसलिये यह भगवान्-का गाया हुआ गीत है। गीत होनेके कारण उसमें हरेक तरह-के सिद्धान्तोंकी प्राप्ति या उपलब्धि मानवको होती है। गीता किस स्थितिमें मानवको मानवताकी ओर आकर्षित करती है? जब वह अपने कर्त्तव्यको भूल जता है और कर्त्तव्यको भूल जानेकाही नाम 'प्रमाद' है। 'प्रमाद' का नाम 'मृत्यु' है। महाभारतमें कहा है कि प्रमाद क्या है? "प्रमादो वै मृत्युरि-त्यहं ब्रवीमि"—कर्तव्यानवधान ही प्रमाद है। प्रमादसे मनुष्य-में विषाद आता है और वह प्रमाद आनेसे प्रमादी बन जाता है अर्थात् उन्मादी हो जाता है। इसलिये प्रमादीसे—कर्तव्यानवधानता और कर्तव्यानवधानतासे विषाद और विषाद-से उन्मादी होगा, और जब उन्मादी होगा तो रोएगा-चिल्लाएगा। इसलिये अर्जुनको कर्तव्यानवधानता हुई तो केवल अर्जुनको-ही नहीं—मानवमात्रको कर्तव्यानवधानता होती है, तब वह अपने कर्तव्यको भूल जाता है। उस समय वह अवश्य विषादी बन जाता है। पर विषादका चिह्न क्या है? इसपर भगवान् कहते हैं कि—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ।
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ॥

यह प्रमाद आनेके बाद जब विषाद आता है, उस समय रोना चिल्लाना-शोक-मोह आदि सब व्याप जाते हैं । इसलिये यह जीव जब "अर्जुन" बनता है—तो "रोता" है और "कृष्ण" बनता है तो—"गाता" है । यदि हम अर्जुन बनेंगे तो अवश्य-ही रोएँगे और कृष्ण बनेंगे तो अवश्य गाएँगे । अर्जुनका सम्बन्ध विषादसे है और कृष्णका सम्बन्ध "पुरुषोत्तमयोग" से है । इसलिये गीताका थोड़े शब्दोंमें यह अर्थ हुआ कि—"भगवान्‌का गाया हुआ गीत" । विषादकी दशामें मानवको इस विषादसे ऊपर जानेके लिये भगवान्‌ने यह गीतारूपी गीत गाया है । इसलिये तुम अर्जुन न बनो । अर्जुन बनोगे तो दुःख पाओगे ।

अर्जुन उसे कहते हैं जो—अर्जन करता है, संकलन करता रहता है । आपने देखा होगा कि मधुमक्खियां मधु बहुत अर्जन करती हैं, वे अर्जुन बनती हैं । 'अर्ज' 'सर्ज' अर्जने धातुसे अर्जुन शब्दकी निष्पत्ति होती है । इसलिये वे बगीचोंसे, खेतोंसे रंग-बिरंगे पुष्पोंसे मधु लाकर इकट्ठा करती हैं और कुछ लोग उनकी आंखों में धूल झोंककर मधुको छीनकर लेआते हैं—तो मधु-मक्खिओंको रोना पड़ता है । अगर यह जीव अर्जुन बनता जाएगा, परिग्रही बनता जायगा या संग्रही बनता जायगा तो योग अर्जनसे ही होगा अर्थात् विषादसे होगा । उसका धन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चोर ले जाएँगे। आग लग जाएगी। मित्र अपहरण कर लेंगे। तो अर्जुनको रोना होगा,—और कृष्णको गाना है।

तो गीता कहती है कि अर्जुन मत बनो। परिग्रही मत बनो। संग्रही मत बनो। तुमतो पुरुषोत्तम बनो। दूसरी बात गीताने बतलाई है उसको मैं दो शब्दोंमें बतलादूँ—गीता मानवके सामने बड़ी-से-बड़ी चीज़ यह रखती है कि आत्मा अजर है, अमर है और गीताने एक बड़ा सिद्धान्त आपके सामने यह रखा कि उस अजर-अमरके साथ धर्मका निरवच्छिन्न नित्य सम्बन्ध है और संसार विनश्वरता। आपके सामने तीन बातें रखीं। १—आत्माकी नित्यता। २—आत्माके साथ आत्माका नित्य सम्बन्ध। ३—संसारकी विनश्वरता और उसके साथ बड़े-से-बड़ा मन्त्र यह बतलाया—"सर्वभूतहिते रताः"। आप लोग "सर्वभूतहितेरताः" बनें। जबतक "सर्वभूतहिते रताः" का भाव मानवमें नहीं होता, तबतक वह संकीर्णताके घेरेसे नहीं निकल पाता। वह संकुचित हृदय बना रहता है और उसके हृदय-पटलमें देहात्मवादकी भावना जाल बिछाए रहती है या कुछ पारिवारिक—कौटुम्बिक भावनाएँ बनी रहती हैं या सामाजिक या राष्ट्रीय भावनाएँ बनी रहती हैं। गीता भगवती कहती है—"सर्वभूतहिते रताः"—का सिद्धान्त केवल मानवके लिये नहीं, अपितु चींटीसे लेकर ब्रह्मा पर्यन्त उसके हृदयमें उदार भावनाएँ रहनी चाहिए। यह गीताका दूसरा मन्त्र है।

आज मानव अकर्मण्य बनता है, आलसी बनता है, परन्तु

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गीता कहती है—उद्धरेदात्मनात्मानं, नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥

यह गीताका उद्घोष है, मूलमंत्र है। तुम अपने उद्धारक स्वयं बनो। मानव कभी-कभी सोचता है कि सरकार हमारा कल्याण करेगी, हमारा उद्धार करेगी या गुरु हमारा कल्याण करेंगे। कोई व्यक्ति हमें रास्तेमें मिल जायगा और हाथ पकड़कर मुझे ले जायगा, परन्तु भगवान् कहते हैं—"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्" अपने आपको ऊपर ले जाओ। छान्दोग्य उपनिषद्में आता है कि उस परमात्माका नाम "उत्" है। 'उत्' क्यों है ? तो "उदेति ह वै सर्वेभ्यः पापेभ्यः"। वह सब पापोंसे ऊपर है और उसकी ओर तुम अपने आपको ले जानेकी कोशिश करो। जिसके लिये भगवती श्रुति कहती है कि—

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गंपथस्तत्कवयो वदन्ति ॥

इसलिये उठो, जागो और महापुरुषोंकी शरणमें जाकर अपने स्वरूपको पहिचानो। व्यवहारमें और परमार्थमें तुम आपको तभी उन्नतिशील कर सकते हो, प्रगतिशील बन सकते हो और उन्नत राष्ट्रोंकी पंक्ति (लाइन) में खड़े हो सकते हो। इसलिये आप अपने स्वयं सुधारक बनो।

शेर जंगलमें रहता है। वह अपना उद्धारक स्वयं है, वह कभी-भी नहीं सोचता कि मेरा उद्धारक कोई और बने। गीता पढ़ने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वालोंको यह कभी चिन्ता नहीं होती कि मेरा उद्धार कोई और करेगा। सिंह कभी नहीं सोचता है कि—"एकोऽहम्" "असहायोऽहम्" "दुर्बलोऽहम्" "खिन्नोऽहम्" इत्यादि। "अपरिच्छिन्नदः स्वप्नेऽप्येवं विधा चिन्ता सिंहस्य नोपजायते।" तो गीता कायरको भीरुको, दुर्बलको, नपुन्सकको वीर बनाती है। शेर बनाती है। जब अर्जुन ऐसी स्थितिमें आगया, उस समय गीताका गान, गीताका ज्ञान आरम्भ हुआ। उसने कहा–'तू गीदड़ नहीं। तू शेर है और शेरको यह कभी भी चिन्ता नहीं होती है कि मैं अकेला हूँ, असहाय हूँ, मेरा कोई साथी नहीं है, मैं दीन हूँ। यदि तुम अकेले हो और अपने कर्तव्य पर, अपने सिद्धान्त पर चलते हो तो तुम अपनेही उद्धारक क्या, सम्पूर्ण विश्वके उद्धारक भी बन सकते हो। इसलिए गीताने कहा—"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्"। यह दूसरा मन्त्र बतलाया कि यह मन्त्र मानवके कानमें गूँजता रहना चाहिए। अपने उद्धारक स्वयं बनें और अपने आपको संसाररूपी कीचड़से निकालें। व्यवहारमें भी हम प्रगतिशील बनें और अध्यात्ममार्गमें भी हम प्रगतिशील बनें।

गीताका तीसरा मन्त्र आपके सामन यह ह कि—

"आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः॥"

गी० ६।३२

तो ऐसा कोई भी काम मत करो जो शास्त्रविरुद्ध हो। लोकविरुद्ध हो। ठीक अनुभवमें न उतरती हो। नित्य भागवत पाठ

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करो। गीता-पाठ तथा गीताका अध्ययन करो। वेदोंका स्वाध्याय करो। भगवान् कहते हैं कि तुम अपनाही उदाहरण लो। बाहरका दृष्टान्त मत लो। युधिष्ठिरके लिए मत सोचो। अर्जुन के लिए मत सोचो। तुम अपने आपके लिए सोचो। जिन क्रियाओंसे, जिन व्यवहारोंसे मुझे कष्ट होता है, उन क्रियाओंसे, उन व्यवहारोंसे दूसरोंको भी होगा। ऐसी क्रियाओंको नियन्त्रण करनेके लिए गीताने बड़ेसे बड़ा उदाहरण आपके सामने यह रखा कि ऐसा कोई व्यवहारही मत करो, जिससे दूसरोंके उदाहरणकी आवश्यकता हो। इसलिए अपने आपकाही उदाहरण लो। जैसे कि—"आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन"। जहाँ गीता आपको आत्मज्ञानका उपदेश करती है, वहाँ संसारमें रहनेका सन्देश भी देती है। इसलिए मैं दो शब्द कहकर समाप्त करूँगा। वे दो शब्द ये हैं कि गीताका रहस्य चार अक्षरोंमें जानना चाहें तो अठारह अध्याय, सात सौ श्लोकोंकी संख्या है। कभी-कभी हम सोचते हैं कि ये अठारह चीजें क्या हैं? उनका विवेचन इस प्रकार है कि—हमारे यहाँ अष्टादश पुराण हैं। अष्टादश महाभारतके पर्व हैं। अष्टादश गीताके अध्याय हैं। अठारह हजार भागवतके श्लोक भी हैं। तो अठारह अध्याय और सात सौ श्लोकोंका अर्थ (रहस्य) आदि "चार अक्षरोंमें" समझना चाहें तो गीताका आरम्भ "धर्मसे" होता है। धर्म एक व्यापक शब्द है और कर्म एक उसका पर्यायवाचक शब्द है। गीताने कर्मकी ओर ही विशेष जोर दिया है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तुम कर्मशील बनो। पर हाँ! कर्म बन्धनका कारण बनता है। अगर पानीके पास जाओगे तो गीला करेगा। अग्निके पास जाओगे तो उष्ण करेगा या जलेगा। जहरका सेवन करोगे तो मर जावोगे। तुम्हारी मृत्यु हो जायगी। परन्तु हाँ! अगर जहर-को भी तरीकेसे खाया जाय तो मृत्यु नहीं, बल्कि अमृत हो जाता है। रबरका आवरण यानी कोट पहिन जलमें जाओ, तो अन्दर पानी प्रवेश नहीं करता है। कर्म बन्धनका कारण है, परन्तु कर्म, वह कर्म जो—

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥

गी० २।४८

इस अवस्थाका कर्म बन्धनका हेतु नहीं बन सकता। इसीको महात्मा गान्धीने "अनासक्तियोग" के नामसे बताया है। महात्मा गाँधी कहते थे कि मैं कभी-कभी कठिन समस्याओंसे विचलित हो निराश हो जाता था। तो—यह श्लोक मेरे कर्णकुहरों-में गूँजने लगता था और उसके द्वारा मुझे मार्ग-प्रदर्शन होता था। सफलताके पीछे मत भागो। यदि सफलताके पीछे दौड़ोगे और यदि तुम्हें सफलता प्राप्त नहीं होगी तो विफलतासे तुम निराश हो जाओगे। इसलिए सफलता और विफलता इन दोनोंको छोड़-कर अपने लक्ष्यकी ओर अग्रसर होओ। गीता आपके जीवनको संतुलित बनाती है। वह तराजूके पलड़ोंकी तरह बराबर जीवन-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

का संतुलन कर बताती है—"सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।" जीवनमें सफलता-विफलता आनेपर, एकसी स्थिति रहनी चाहिए। "उदेति सविता रक्तं रक्तमस्तं तथैव च।" सूर्य उदय होता है उस समय भी रक्तवर्ण रहता है और जब दोपहर होता है तब भी रक्तवर्ण रहता है और अस्त समयमें भी रक्तवर्ण रहता है।

सम्पत्ति-विपत्ति, सुख-दुःखमें हमारे जीवनका संतुलन एक-सा होना चाहिए। यही गीताका मूलमन्त्र है। यह कब आएगा, जब गीताके चार अक्षर सीख लोगे। गीताका आरम्भ "धर्म" से होता है। "धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः" यहाँसे गीता आरम्भ होती है। "यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः" यहाँपर आकर गीताकी समाप्ति होती है। अन्तिम जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं, जहाँ ज्ञान है, जहाँ क्रियाशक्ति है, ज्ञान और क्रियाशक्तिका जहाँ मिलन होता है, वहाँ सम्पत्ति और विजय होती है और वहीं लक्ष्मी रहती है, ऐसा मेरा निश्चित सिद्धान्त है। ऐसा उत्तर संजयने उन्हें अन्तमें दिया। ये गीताके सातसौ श्लोक न पढ़ते हुए, अगर पढ़ सको तो अच्छा है, आरम्भसे ले लो "धर्म" और अन्तमें ले लो "मम" इन दोनोंको जोड़नेसे क्या बन जायगा? "धर्म मम"—बस गीता यही सिखलाती है कि—"धर्म मम" "धर्ममम" धर्म मेरा है, धर्म मेरा है, धर्म मेरा है। धन मेरा है, स्त्री मेरी है, पुत्र मेरा है, मकान मेरा है, मोटरकार मेरी है, ये नहीं। ये तुम्हारा साथ नहीं देंगी। अगर कोई चीज साथ दे सकती है

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तुम्हारा, तो वह धम। धर्मही तुम्हारे साथ जायगा। युधिष्ठिरके साथ द्रौपदी नहीं गई। अर्जुन, भीम आदि भी नहीं गये। उसके साथ गया एक कुत्ता। वह कुत्ता क्या ? वह धर्म था, यह बात हिमालयके वर्णनकी कहानी बताती है। युधिष्ठिरको लेनेके लिए जब स्वर्गके दूत आये तो उसने कहा कि यह कुत्ता भी साथ जायगा। दूतोंने कहा 'तुम्हारे लिए आज्ञा है जाने की, कुत्ते के लिए नहीं।' तो युधिष्ठिरने कहा 'तो मैं भी नहीं जाऊँगा।' वहीं पर कुत्ता धर्मके रूपमें प्रकट होता है, तो साथमें जानेवाला एक "धर्म" है,—न कि सांसारिक धन आदि वैभव, स्त्री, पुत्र आदि। केवल धर्मही साथ जाता है। गीता यही चीज़ बतलाती है। ये चार अक्षर तुम्हारे कानमें गूँजते रहें "धर्म मम" "धर्म मम" 'धर्म मेरा है' 'धर्म मेरा है'। अगर हमने ये सीख लिया तो गीताका वास्तविक अर्थ हमने सीख लिया। "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः" 'यदि धर्म मेरा है' नहीं, सीखा पुत्र मेरा है, स्त्री मेरी है—तो आप भलेही सारे दिन गीता पढ़ें, कुछ नहीं होगा। यदि इन चीज़ोंमें हमारी आसक्ति है तो उस पढ़नेका कोई महत्त्व नहीं। वह गीताका ज्ञान, वह गीताका उपदेश हमारे किसी कामका नहीं। इसलिए अधिक न कहते हुए सिर्फ़ इतना ही कहूँगा कि गीतासे आप यह सीखें—"सर्वभूतहिते रताः।" गीतासे आप यह सीखें—"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्" यह सीखें—"आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन" और गीतासे आप यह सीखें—"धर्म मम" "धर्म मम"। यदि ये चार मन्त्र आप गीतासे सीख लेते हैं तो ब्रह्म-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्वरूप होते हुए, आवरण और अज्ञानको दूर करते हुए, आत्माकी अजर-अमरताको समझते हुए, उस मृत्यु, उस मौतसे "वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि" सदा उससे निर्भय-निडर होकर सारे विश्वमें शान्तिका सन्देश दे सकते हो। "सर्वभूतहिते रताः" इससे अहिंसाका सन्देश विश्वको दे सकते हैं कि गीतामें यह बात बतलाई। इसलिए गीता विश्वधर्म है। मानवधर्म है। गीताने आजतक न केवल हिन्दुओंको अपितु मुसलमान, क्रिश्चियन, जैन, बौद्ध आदि सबको शान्तिका सन्देश दिया है। यदि इन सन्देशोंपर आज मानव चलता है तो आज-ही विश्वमें शान्ति स्थापित हो सकती है। ऐसा पूर्ण विश्वास है। यही गीताका अमर सन्देश है। इतना कहकर मैं अपने वक्तव्यको यहीं समाप्त करता हूँ।

सर्वे कुशलिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

ॐ शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

महामण्डलेश्वर श्री १०८ स्वामी मोहनगिरिजी महाराज

नाभा (पंजाब)

ॐ

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

परमादरणीय महात्मवृन्द ! विद्वन्मण्डली ! कल्याणाभिमुखी माताओ तथा बहिनों !

आजका महान् पवित्र दिन है। वैशाखीके इस शुभ-अवसर-पर आप सब यहाँ उपस्थित हैं। यह षष्ठ "वेदान्त-सम्मेलन" महामण्डलेश्वर स्वामी पूर्णानन्दजी महाराजके पूर्ण प्रयत्नसे आयोजित किया गया है। यह उत्तराखण्डकी पवित्रभूमि, भागी-रथीका परमपावन निर्मल उपकण्ठ। आप लोगोंका महान् सौभाग्य

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। श्रीगङ्गाजीके दर्शन-स्नानसे परम सुखका अनुभव तो होता ही है, परन्तु यहां आये हुए महापुरुषोंके पुण्य दर्शन एवं उनके मुखारविंदसे निकले हुए ज्ञानामृतके पानसे भी आपको पूर्ण आनन्दका अनुभव होगा। ऐसा शुभ-अवसर पुण्योंके प्रतापसे ही प्राप्त होता है। यह गङ्गाजीके दर्शन-स्नानका दृष्ट फल है जो कि ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषोंके मुखसे निकले ज्ञानगङ्गामें अवगाहन करनेका शुभसमय सम्प्राप्त हो रहा है। अस्तु।

सज्जनो! अब मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि 'वेदान्तका क्या सिद्धान्त है?' और 'जीवका कल्याण कैसे हो सकता है?' यह मनुष्य जीवन अत्यन्त कठिन जीवन है। इस जीवनमें आकर, वेदान्तशास्त्रके लक्ष्यार्थको समझना भी महान् कठिन है। वेदान्तशास्त्रका अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष है। मोक्षके बिना जीवको पूर्ण आनन्दकी प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती। बृहदारण्यकमें यह आख्यायिका आई है कि जिस समय याज्ञवल्क्यजी विरक्त होकर अरण्यमें जानेके लिये तैयार हुए उस समय उन्होंने अपनी पत्नीसे कहा कि हे मैत्रेयि! अब मैं इस स्थानसे संन्यास आश्रममें जानेवाला हूँ। अतः तेरी अनुमति लेता हूँ और चाहता हूँ इस दूसरी पत्नी कात्यायनीके साथ तेरा बँटवारा करदूँ। उस समय मैत्रेयीने कहा—'भगवन्! यदि यह धनसे सम्पन्न सारी पृथ्वी मेरी हो जाए, तो क्या मैं उससे किसी प्रकार अमर हो सकती हूँ?' तब याज्ञवल्क्यने कहा—"यथैवोपकरणवतां जीवितं तथैव ते जीवितं स्यादमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेनेति" हे मैत्रेयि! नहीं, भोग्य-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सामग्रियोंसे सम्पन्न मनुष्योंका जैसा जीवन होता है, वैसा ही तेरा भी जीवन हो जायगा। धनसे अमृतत्त्वकी तो आशा कदापि नहीं करनी चाहिये। पुनः मैत्रेयीने कहा—"सा होवाच मैत्रेयी येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्यां यदेव भगवान्वेद तदेव मे ब्रूहीति" जिससे मैं अमर नहीं हो सकती, उन भोगोंको लेकर मैं क्या करूँगी? भगवन्! जो कुछ अमृतत्त्वका साधन जानते हों, वही मुझे बतलावें। मैत्रेयी की इस बातको सुनकर याज्ञवल्क्यजी अत्यन्त प्रसन्न होकर वेदान्त प्रतिपाद्य आत्माके साक्षात्कारका उपदेश करते हैं—"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्" अरी मैत्रेयि! यह आत्मा अपने आप-ही दर्शनीय, श्रवणीय, मननीय और ध्यान किये जाने योग्य है। मैत्रेयि! इस आत्माके ही दर्शन, श्रवण, मनन एवं विज्ञानसे इस सबका ज्ञानहो जाता है।

जीवतो सांसारिक विविध वैभवजन्य क्षणिक सुखके अनुभवसे कृतकृत्य अपने आपको समझता है। उस पूर्ण आनन्दस्वरूप शाश्वत सुखको भुला देता है। अज्ञानकी परम्परामें पढ़कर क्षणिक सुखको ही बहुत मानता है। यह सब संसार मायाका चमत्कार है। मायासे कल्पित वस्तुओंमें वास्तविक सुख कहां है? जीव, अविद्या-वशात् क्षणिक सुखमें आसक्त होकर आत्मपदार्थको नहीं देख पाता। यह दुःख बहुल संसार है और सुख स्वल्प है। परन्तु अज्ञानका आवरण जीवके अन्तःकरणके ऊपर ऐसा आया है कि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वह—उसी क्षणिक सुखको ही परम सुख मानता है। यह शोभनीय संसार जिसमें रंग-बिरंगे पुष्प, रंग-बिरंगे लोग, नाना-प्रकारके आकर्षणकारी रोचक-सुन्दर दृश्य दिखाई देते हैं। यह परमात्माकी वगीची है। मायाके द्वारा सुन्दर-लोभनीय बना रक्खा है।

सुन्दर वगीचीमें जब आप कभी भ्रमण करने जाते हैं तो वहां पर नाना प्रकारके सुगन्धित गुलाब, चम्पा, केवड़ा वेला, चमेली—हरे, पीले, सफेद, सुनहरे रंग-बिरंगे नाना प्रकारके सुरभित पुष्पोंकी सुन्दरताको देखकर चकित होते हैं और मनही मनमें मुस्कराते हुए यह कहते हैं कि धन्य! वह बागवान जिसने ऐसा खूबसूरत बाग़ लगाया उसकी प्रशंसा करने लगते हैं—धन्य! वह माली है जिसने अत्यन्त परिश्रमसे इस उद्यान को खूब सजाया है। ऐसे फूल लगाया है जिनकी सुगन्धीसे चित्त मोहित होजाता है। इसी प्रकार यह संसाररूपी परमात्माकी प्रेरणासे माया द्वारा निर्माण किया गया एक सुन्दर-चित्ताकर्षक उद्यान है। इसमें नाना प्रकारके रंग-बिरंगे साज़ बने हुए हैं। सुखकी विविध सामग्रियां विद्यमान हैं।

जो स्थूलदर्शी मनुष्य हैं, ऐसे मायाके बने वगीचेको देखकर उसमें आसक्त हो जाते हैं और जो विवेकी हैं वे रूपमाधुरी को देखकर उस परात्पर परमात्माके कारीगरीकी प्रशंसाकर उसको समझनेका प्रयत्न करते हैं। सुन्दरता देखने और समझनेकी वस्तु है। उपभोग करके बिगाड़नेकी वस्तु नहीं है। दृश्यको

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देखकर द्रष्टाका अनुसन्धान करनेवाला व्यक्तिही विवेकी प्रकृतमें इष्ट है। अन्य नहीं।

बच्चा नादान होता है। उसकी बुद्धि थोड़ी होती है। उसको मां-बाप जब स्कूलमें दाखिल करते हैं। स्कूलके मास्टर बच्चेको नादान समझकर रंग-बिरंगे चित्र या पदार्थ दिखाकर पढ़ाना आरम्भ करते हैं। इस रोचक शैलीसे उसका मन आगे बढ़ने लगता है—जैसा-जैसा वह बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे उसकी शिक्षाका स्तर बढ़ाया जाता है। इसी प्रकार जीवके ज्ञान सम्पादन करनेका एक सुन्दर-चित्ताकर्षक ढंग है। जिस ढंगसे स्थूलदर्शी मनुष्य भी शनैः-शनैः अपने ज्ञानके स्तरको बढ़ाकर उस मायाके अधिष्ठानको भी सरलतासे समझ सकता है। वस्तुतः आत्मा-परमात्माको समझनेका सुन्दर साधन यह दृश्य प्रपंच है। शास्त्रभी यही कहते हैं कि बिना साधनके साध्य वस्तु जो आत्मा है उसका साक्षात्कार नहीं होता है। आत्मातो अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थ है। आत्माकी सूक्ष्मताको श्रुतियां स्वयं कहती हैं—"नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मम्" "अणोरणीयान् महतो महीयान" "विरजं ब्रह्म निष्कलम्" "तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिः" "यदणुभ्योऽणु" वह आत्मा नित्य-शाश्वत रहनेवाला, व्यापक, सर्वगत सर्वमें स्थित है, अणुसे भी अणु और महान्से भी महान् है, अत्यन्त निर्मल, अवयव रहित, बृहत्, समस्त ज्योतियोंका भी ज्योति है, सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म है। उसीका यह सब पसारा दीख पड़ता है। "तस्य भासा सर्वमिदं विभाति" "तदेतदक्षरं ब्रह्म" वही यह अविनाशी ब्रह्म है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"तमेवैकं जानथ आत्मानम्" उसी एक सूक्ष्म आत्माको जाननेका प्रयत्न करना चाहिये। वेदान्तप्रतिपाद्य उस आत्माको जाने विना जीवका कल्याण कदापि नहीं हो सकता। मनुष्य जीवनकी सफलता लक्ष्यार्थको समझनेमेंही है। आत्मासे अतिरिक्त ज्ञातव्य कोई वस्तु नहीं है। श्रुति स्वयं कहती है—"अन्या वाचो विमुञ्चथ" ज्ञातव्य आत्मासे अतिरिक्त सब मिथ्या एवं तुच्छ है। उस सूक्ष्म-पूर्ण-आनन्दस्वरूप आत्माको जान नहीं सकते। तो भाइयो! शास्त्रोंमें जाननेकेलिये साधन बताए गये हैं। सूक्ष्म वस्तुको जाननेकेलिए सूक्ष्म साधनोंकी आवश्यकता होती है और स्थूल पदार्थों को समझनेकेलिए स्थूल उपकरणोंकी आवश्यकता होती है। हमारी आत्मा तो अत्यन्त सूक्ष्म है उसको हम स्थूल कर्मोंसे नहीं समझ सकते अपितु सूक्ष्म ज्ञानके द्वाराही समझ सकते हैं। उसको समझनेकेलिये ज्ञानसे अतिरिक्त कोई साधन नहीं है। गीता में लिखा है—"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" ज्ञानही पवित्र एवं सूक्ष्म वस्तु है। इसीसे अन्तःकरण निर्मल बन सकता है। और भी कहा है—"सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि" जीवके अन्दर नाना जन्मोंके पाप बैठे हैं। इसके-कारणसे शीघ्र ज्ञान नहीं हो पाता। ज्ञान प्राप्तिमें भी कई विघ्न उपस्थित होजाते हैं। जन्म-जन्मान्तरोंमें नानाविध पाप किये हैं। वे पाप अन्तःकरणमें बैठे हैं और शीघ्र ज्ञान नहीं होने देते। शनैः शनैः योग्य साधनोंके अभ्याससे पापरूप मल-विक्षेप एवं आवरणका क्रमशः अपाकरण होजाता है। पुनः अन्तःकरण

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

निर्मल होजाता है। अन्तःकरणका निर्मल होना ही ज्ञानका सूचक है। अच्छे कर्मोंमें प्रवृत्ति होनेकी जो भावना है, यही अन्तःकरणके नैर्मल्यका विशेष कारण है। जबतक अन्तःकरणमें प्रचुर अज्ञान होगा—तो वह अज्ञान श्रेष्ठ कर्ममें आनेसे रोकता रहेगा और कोई श्रेष्ठ कर्म होने ही नहीं देगा। अतः योग्य साधन द्वारा अन्तःकरणको स्वच्छ करना अत्यन्त आवश्यक है। योग्य साधनका अभिप्राय यह है—शरीरमें होनेवाले मलकी निवृत्ति कर्मसे, मानसिक विक्षेपकी निवृत्ति उपासना (भक्ति) से और अन्तःकरणके शोधन केलिए दो प्रकारके साधन बताए गये हैं। एक बाह्य साधन, दूसरे आन्तरिक साधन। आन्तरिक शोधन में बाह्य शोधन करण है। जबतक बाह्य शुद्धि नहीं होगी तबतक आन्तरिक शुद्धि नहीं हो सकती। याज्ञवल्क्यजीने मैत्रेयीको आन्तरिक साधनका कथन किया था कि आत्मदर्शनके लिए श्रवण-मनन-निदिध्यासन है। इनका उचित अनुष्ठान करनेसे आत्माका साक्षात्कार होता है। श्रवण—शास्त्र अध्ययन-सत्संग एवं गुरुके द्वारा उपनिषद् वाक्योंका तात्पर्य अद्वितीय ब्रह्ममें है इस प्रकारके निश्चयको 'श्रवण' कहते हैं। मनन-श्रुतिमें प्रतिपादित आत्मा युक्तिसे सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार अनुकूल वृत्तिसे अनवरत चिन्तनही 'मनन' कहलाता है। इस प्रकार मनन से श्रवण किये हुए अर्थ प्रत्यक्ष रूपसे उपस्थित कराता है। अर्थात् मननसे श्रवण किया हुआ अर्थ स्पष्ट प्रतीत होता है। निदिध्यासन-में विजातीय प्रतीतिका त्याग होकर ब्रह्माकार सजातीय प्रतीतिकी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अनुवृत्ति जो कि निर्वात दीप कलिकाके समान अटूट बनी रहती है। ऐसी स्थितिमें जो नैर्मल्य आता है वह अपूर्व अर्थका द्योतक होता है। ऐसीही स्थितिमें आत्मवस्तुका अपरोक्ष होता है। परन्तु जबतक ऐसी स्थिति न होजाय तबतक श्रवण और मननके पुटकी आवश्यकता होती है। तीनों साधनोंकी परिपक्वताही साक्षात्कारमें कारण है। साक्षात्कारके लियेही संसारमें मानव-का समस्त उद्योग हो रहा है। समस्त वेद-शास्त्र उसी एक आत्मा-के अवबोधनमें पर्यवसित होते हैं। इसी सूक्ष्म आत्माके जाननेके लिये नचिकेताने यमराजके समीप जाकर प्रार्थनाकी थी और अन्तमें यमराजको सूक्ष्म आत्मतत्त्वका उपदेश करनाही पड़ा। वही यह आत्मा है, जिसको समझनेके लिये आप सब यहां उपस्थित हुए हैं। कठ श्रुति कहती है—

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वन्तोऽपि बहवो यं न विद्युः।
आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाऽऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः॥

सूक्ष्म आत्मतत्त्वको समझना सरल बात नहीं है। संसारमें ऐसे हजारों-लाखों-करोड़ों मनुष्य हैं जिनको आत्मविषयक चर्चा तक श्रवण करनेको नहीं मिलती। ऐसे वातावरणमें रहते हैं जहां प्रातःकालसे लेकर शयनपर्यन्त केवल सांसारिक विषय-वासनाकी-ही चर्चा होती रहती है। जिससे उनका मन आठों पहर विषय-चिन्तनमें ही डूबा रहता है। उनके विषयासक्त मनमें आत्मतत्त्व-को सुनने-समझनेकी कभी इच्छाही नहीं उत्पन्न होती और भूले-भटके यदि ऐसा कोई प्रसङ्ग आ जाता है तो उन्हें विषय-सेवनसे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अवकाशही नहीं प्राप्त होता। उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सुनना-समझना चाहते हैं, परन्तु उनके विषयाभिभूत मनमें उसकी धारणा नहीं हो पाती अथवा बुद्धिमान्द्यके कारण वे उसे समझ नहीं पाते, जो तीक्ष्ण बुद्धिवाले पुरुष समझ लेते हैं, उनमें भी ऐसे आश्चर्यमय महापुरुष कोई विरलेही होते हैं जो उस आत्म-तत्त्वका यथार्थरूपसे कथन करनेवाले समर्थ वक्ता हों। ऐसे पुरुष भी कोई एकही होते हैं, जिन्होंने आत्मतत्त्वको प्राप्त करके जीवन-की सफलता सम्पन्नकी हो। कहनेका अभिप्राय यह है कि यह आत्मतत्त्व अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु है। इसके कहनेवाला एवं समझनेवाला भी दुर्लभ है और सुननेवाला भी अत्यन्त दुर्लभ है। परन्तु सज्जनो! आप अत्यन्त धन्य हैं जो ऐसे पवित्र अवसर-पर आये हैं और दुरुह आत्मपदार्थको समझनेका प्रयासकर रहे हैं। श्रुति जगा-जगाकर कहती है—

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति॥

हे आत्मजिज्ञासुओ! तुम जन्म-जन्मान्तरसे अज्ञान निद्रामें सो रहे हो। अब तुम्हें परमात्माकी दयासे यह दुर्लभ मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है। इसे पाकर अब एक क्षणभी प्रमादमें मत खोओ! शीघ्र सावधान हो जाओ? श्रेष्ठ ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष, वेदान्त शास्त्रके सूक्ष्म रहस्यको जो भलीप्रकार जानते हैं, उनके उपदेश द्वारा अपने कल्याणका मार्ग और परमात्माका रहस्य समझ लो। यह आत्मतत्त्व अत्यन्त गहन है। उसके स्वरूपका

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ज्ञान, उसकी प्राप्तिका मार्ग महापुरुषोंकी सहायता और परमात्माकी कृपाके बिना वैसाही दुस्तर है, जिस प्रकार छुरेकी पैनी धारपर चलना। ऐसे दुस्तर मार्गसे सरलतापूर्वक पार होनेका सरल उपाय ये अनुभवी सन्त-महात्माही बता सकते हैं जो स्वयं इसे पारकर चुके हैं। यदि आप अपने जीवनमें पूर्णसुख, पूर्णशान्ति और पूर्ण-आनन्दका वास्तविक रूपसे अनुभव करना चाहते हैं तो एकमात्र "बुद्धौ शरणमन्विच्छ" बुद्धि योगका अर्थात् ज्ञानका अवलम्बन कर "तमेवैकं जानथ आत्मानम्" उसी—लोक-वेदोपनिषत् प्रसिद्ध—सर्वजनीन—सर्वतोभद्र—सर्वांगपूर्ण—सर्वोत्तम—सर्वात्मा—"पूर्ण-आनन्दरूप आत्मा जो अपना आप है उसको समझनेका प्रयत्न करो। जीव-ब्रह्मकी एकताही वेदान्तका सिद्धान्त है। आत्मैक ज्ञानके प्राप्त करनेमें ही जीवका परम कल्याण है। अब मेरा समय समाप्त हो रहा है, मैं यहीं अपने प्रवचनको समाप्त करता हूँ।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

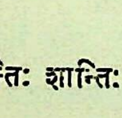

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

वेदान्तवारिधि श्री १०८ स्वामी हरिगिरिजी महाराज

वकलोह—छावनी (पंजाब)

परमादरणीय उपस्थित सन्तमण्डली ! वेदान्तके जिज्ञासु भाइयो और बहिनों !

आज लगातार कई दिनोंसे दत्तचित्त होकर वेदान्तके विषयमें महापुरुषोंके अमृतमय उपदेश श्रवणकर रहे हो । मैंने भी प्रस्तुत विषयपर ही आपसे कुछ एक बातें करनी हैं ।

हम सब प्राणी एक जन्मसे नहीं, बल्कि अनेक जन्म-जन्मान्तरोंसे एक मसलेको हल करनेके पीछे पड़े हैं और सोते-जागते, उठते-बैठते, वह मसला कभी भी हमारे नेत्रों एवं दिल-दिमाग़से ओझल नहीं होता है । भाई ! आप जानते हैं वह मसला क्या है ?

प्रत्येक मनुष्य यह चाहता है कि दुःखोंकी निवृत्ति हो जाय और परमानन्द प्राप्त हो जाय और वह दुःखोंकी अत्यन्त निवृत्ति

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इस हदतक हो जाय कि फिर इस जन्म-मरणके चक्करमें न आएँ और सदाके लिये परमानन्दका अनुभव करते रहें। ऐसा संसारमें कोई भी प्राणी नही है जिसके हृदयमें ऐसी इच्छा-अभिलाषा न उत्पन्न होती हो। बेशक प्रकृतिके विवश होकर कोई पुरुष कहता है कि मुझे दो घण्टे आराम मिल जाए। लेकिन उसकी हार्दिक अभिलाषा यही है कि दुःखोंकी अत्यन्त निवृत्ति और परमानन्द-की प्राप्ति और वह आनन्द इतना प्राप्त होना चाहिये कि वह हमसे कभी जुदा—पृथक् न हो। यह है पुरुषार्थ। यह इच्छा स्त्री-पुरुषों और तमाम प्राणियोंमें पायी जाती है। वैसी इच्छाएँ बहुत-सी होती हैं। अनेक हैं। लेकिन वे इच्छाएँ इस बड़ी इच्छा-के अन्तर्गत आ जाती हैं और बाकी इच्छाएँ वे हैं जो किसी टाइम पर उत्पन्न होती हैं अर्थात् हृदयमें किसी कारणसे उत्पन्न होती हैं। लेकिन यह इच्छा जो है कि दुःखोंकी अत्यन्त निवृत्ति और परमानन्दकी प्राप्ति हो जाए, यह इच्छा प्राणियोंमें हर-समय नहीं होती है।

मसालके तौर सभी जानते हैं कि पुत्रकी इच्छा सभीको होती है। परन्तु बचपनमें किसीको नहीं होती है। छोटे-छोटे बालकों और छोटी-छोटी बालिकाओंको उस वक्त पर पुत्र-प्राप्तिकी इच्छा नहीं होती है। इतनाही नहीं, पति-पुत्रकी इच्छा छोटे-छोटे बालक-बालिकाओंमें भी नहीं होती है। लेकिन एक टाइम आता है तो सबको होती है। ऐसे ही धनकी इच्छा सबको सब कालमें नहीं होती है। जब हम बच्चे थे तो सौ रुपयेका नोट कोई

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हमारे हाथ देता था तो हम फाड़कर फेंकनेके लिए तैयार हो जाते थे। उस समय हमें उसका कोई दुःख महसूस नहीं होता था कि फट जायगा या जल जायगा कि हमारा कुछ नुकसान हो जायगा। तो धनसे प्यार करना हमने कुछ अवस्थामें आकर ही सीखा और भी ऐसी इच्छाएँ हैं। भाईसे प्यार करना, बहिनसे प्यार करना और उससे कोई दूसरा है तो वह है जो आप लोगों के हृदयमें आकर उत्पन्न होता है। बल्कि ये सब प्यार एक तरफ रख दिए जाएँ तो सबसे बड़ा प्यार कहा जाता है—तो वह परमात्माका ही प्यार कहा जाता है। जिसको हम अपनेसे जुदा मानकर (जानकर) किसी मन्दिर या गुरुद्वारेमें और कहीं जाकर उसकी पूजा-वन्दना करते हैं। वह प्रेम भी जन्मसे नहीं था। वह भी किसी समय पर आकर हुआ है। यहाँ पर हम एक बातका निश्चय कर लें कि जो बात उत्पन्न हुआ करती है वह भावरूपा होती है। अभाव पदार्थका तो बस एक ही कारण होता है केवल निमित्त कारण ही। लेकिन भावरूप पदार्थकी उत्पत्तिमें दो कारण हुआ करते हैं, तो जो प्यार उत्पन्न होता है पितासे, पत्नीसे, पुत्र-से वैसे ही भाईसे, बहिनसे अथवा ईश्वरसे तो उसकी उत्पत्तिमें भी कोई कारण कहना होगा। क्योंकि उत्पन्न हुआ है तो बताना होगा कि क्यों उत्पन्न हुआ ? इसलिये कहना होगा कि ये इच्छाएँ जो हैं वे किसी टाइम पर उत्पन्न होती हैं। पुत्रसे प्यार करने की, पत्नीसे प्यार करनेकी, ईश्वरसे प्यार करनेकी और उनकी प्राप्ति की इच्छाएँ किसी टाइम पर लोगोंके हृदयमें आकर होती हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अर्थात् किसी अवस्थामें आकर ही होती हैं। लेकिन दुःखोंकी निवृत्ति और परमानन्दकी प्राप्ति होजाय तो यह इच्छा अगर किसीसे पूछा जाय कि कब हुई और क्यों हुई तो शायद इसका उत्तर देना मुश्किल होजाय जैसे—किसीसे पूछा जाय कि पानी तो ठण्डा होता है फिर हाथ क्यों जलाता है ? तो आप उसका उत्तर यही देंगे कि जबसे अग्निका सम्बन्ध हुआ है तबसे जलाना शुरू किया है। अग्निके संयोगसे ही जलाना गुण इसमें आगया है। लेकिन जब हम आपसे पूछते हैं कि अग्नि क्यों जलाती है तो उसका उत्तर कहना होगा कि इसका स्वभाव है—तो ठीक इसी तरह कुछ इच्छाएँ हैं जो किसी टाइम पर आकर उत्पन्न होती हैं और एक ऐसी बड़ी इच्छा है जो स्वभावतः प्राणियों के हृदयमें उत्पन्न होती है, तो वह स्वभाविक इच्छा कौन है ? दुःखोंकी निवृत्ति और परमानन्दकी प्राप्ति।

पुत्रकी इच्छा किसी सोसायटी के लोगोंसे प्रभावित होकर उत्पन्न हुई। धनकी इच्छा भी आपको सोसाइटीके लोगोंसे मिलकर हुई—तो क्या ईश्वरसे मिलनेकी इच्छा किसी सोसाइटीके लोगोंसे मिलकर हुई ? नहीं। ईश्वरप्राप्तिकी इच्छा किसी सोसाइटी के लोगोंसे मिलकर या प्रभावित होकर नहीं, बल्कि प्राणियोंके हृदयमें स्वभावतः होती है। वही स्वाभाविक इच्छा है। इसलिये हम साफ़ कहना चाहते हैं जो हमारी तरफसे कही जा रही यह नहीं, यह आप सब जानते हैं और मानते हैं, इसको छोड़कर हम कुछ और कहना चाहते हैं तो आप उसे ग़लत कह सकते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हम और कुछ नहीं चाहते, हमतो एकही बात चाहते हैं और एकही इच्छा रखते हैं। दुःखोंकी अत्यन्त निवृत्ति और सुख अर्थात् परमानन्दकी प्राप्ति। वही पुरुषोंकी इच्छाका विषय है पुरुषोंकी तमाम इच्छाएँ हैं। वे इसलिये ही हैं तो जो पुरुषार्थ है जिसकी हमने पहिले दिनके उपदेशमें प्रतिज्ञाकी थी कि, दर्शनकी सुन्दरता और सफलता इसी बातमें है कि, वह पुरुषार्थसे मेल खा जाए—तो अब विचारकर देखें कि, वह कौनसा दर्शन है। वह कौनसा सिद्धान्त है। वह कौनसी फिलासफी है, जो हमारी इच्छा-के मुताबिक है, उस इच्छाके अनुसार सब लोग जानते हैं कि, वह हमसे अलग है और हम उससे बिछुड़ गये हैं। ऐसा कुछ लोगोंका कहना है। उसे पानेके लिए हमें प्रयत्न करना चाहिए। प्रयत्न करनेसे हम उस तत्त्वतक जा सकते हैं। उस मूल तत्त्वतक पहुँच सकते हैं। हम उस मूलतत्त्वसे बिछुड़ गये हैं। तो यहाँ पर प्रश्न होता है कि हम किस वजहसे बिछुड़ गये हैं और आज फिर प्रयत्न करके मिल जाएँ। वहाँ पहुँच जाएँ। महात्माओंके वरदान-से अथवा किसी और संगतसे अथवा जो भी बड़े-से-बड़ा यत्न हो, उसे लेकर और यत्नको करके अगर हम बिछुड़े हुए आज मिल जाएँ तो मैं नहीं समझता हूँ कि, वह कौनसी वजह है जो फिरसे पैदा न होजाए। फिर यदि दुबारा कहीं उससे जुदा होजाय, अगर अभी जुदा रह चुके हैं तो फिर जुदा क्यों न हो जाएँगे—तो इस-लिए दर्शनकी युक्तिकी कसौटी पर इस तर्कसे यह सिद्धान्त नहीं मिलता है। उस पुरुषार्थसे मेल नहीं खाता, जबकि हम चाहते हैं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कि, ऐसा आनन्द प्राप्त हो जो इससे जुदा न हो, तो हम यत्न करके आज इससे मिल जाते हैं तो मिले हुए फिर बिछुड़ गये तो हमें परमानन्दकी प्राप्ति नहीं हुई और दुःखोंकी अत्यन्त निवृत्ति भी नहीं हुई। इसलिए ऐसी फिलासफी, ऐसा सिद्धान्त हमारे अनुकूल नहीं, वह हमारे पुरुषार्थसे मेल नहीं खाता, तो फिर वह कौनसा सिद्धान्त है। वह कौनसी फिलासफी है जो हमारे सिद्धांत (पुरुषार्थ) से मेल खाती है। कई तो कहते हैं कि, हम समुद्रके कतरा हैं और वह मूलतत्त्व पूर्ण समुद्र है। लेकिन कतरा आपने देखा होगा, कतरा सभी समुद्रमें नहीं होता है। बूँद जो होती है वह समुद्रमें नहीं होती। वह समुद्रसे अलग होती है। इसलिये हम कतरा हैं। उस परमात्माके उस मूलतत्त्वके कतरा होनेके नाते उस परमात्मासे दूर कहीं अलग होने चाहिये। जहाँतक वह है उसमें तो कतरा नहीं होना चाहिये। उससे बाहर कहीं होवे, वह बात भी समझमें नहीं आती है। कई लोग कहते हैं कि, यह अलग है, तो कई दूसरी तरहसे बतलाते हैं और कहते हैं कि, हम तो तैरकर पहुँच जायेंगे। हमको यत्न करना चाहिये। लेकिन यत्नकी बात समझमें नहीं आती है। क्योंकि यत्नसे हम कुछ करके बनेंगे और जो बनाया जाता है वह असलमें बिगड़नेके लिए होता है। हमारा जो मूल सिद्धान्त इच्छा है, उससे कोई बात मेल नहीं खाती है। यदि कोई बात उससे मेल खाती है तो वह वेदान्तदर्शन। वेदान्तदर्शन एक ऐसी फिलासफी है जो हमें हमारी मनकी इच्छाके अनुकूल ले जाना चाहती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वेदान्तका तो यह कहना है कि, परमानन्दकी प्राप्ति कहीं बाहर नह होगी। बल्कि इसका अपना स्वरूपही परमानन्द है और दु:ख उसमें है ही नहीं। उनकी तो स्वरूपमें अत्यन्त निवृत्ति है। इसलिए परमानन्दकी प्राप्तिका कोई प्रश्नही नहीं उठता। बल्कि मैं सच्चीवात कहूँ कि यहाँ हम यत्न करनेके लिए जो लगे यही एक बड़ी रुकावट है। सबसे बड़ा यदि कोई प्रतिवन्ध अगर है तो यही है। लोग कहते हैं कि, मनके अन्दर उस आत्मज्ञानको लानेके लिए अथवा मनके अन्दर बैठानेके लिए अन्त:करणमें दोप हैं। जबतक वह दोष अच्छी तरहसे निवृत्त नहीं होजायेंगे तबतक यह सिद्धान्त अच्छी तरहसे नहीं बैठता। यह बात ठीक समझमें नहीं आती, इसका असर नहीं होता। आदमी भूखेका भूखा रह जाता है। इसलिये उन दोपोंको दूर करना चाहिए तो उन दोपोंको बतलाते हुए कहते हैं कि, अन्त:करणमें मलदोप है।

मलदोषोंकी व्याख्या लोगोंने भिन्न-भिन्न प्रकारसे की है। पाप का नामही मलदोष है तो प्रश्न होता है कि वे पाप कौनसे हैं जिन्हें हम मलदोष कहते हैं। वे सञ्चित पाप हैं, या प्रारब्ध पाप हैं अथवा आगामी पाप हैं? तो इस पापरूपी मलको हमने दूर करना है। वे पाप कौनसे हैं अगर कहें कि आगामी हैं तो उन्हें दूर करनेका प्रश्नही नहीं उठता और प्रारब्ध जो वे भोग बिना नष्ट नहीं होंगे। रहे सञ्चित तो वे सञ्चित पाप कहाँ हैं जिनको निवृत्त करना है तो कहना होगा कि, वे आवरणमें रहते हैं अथवा अज्ञानके कारण शरीरमें रहते हैं। जिन कर्मोंसे उन मलदोषोंको

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दूर करना चाहते ह वह निष्कामकर्म यही क्यों न हों, तो उन निष्काम कर्मोंका उस मलरूपी पापसे क्या सम्बन्ध होगा, वे तो आवरणमें रहते हैं और कर्मका आवरण (अज्ञान) के साथ कुछ सम्बन्ध नहीं होता, तो निष्कामकर्मके द्वारा पापोंको दूर कर देंगे यह कोई माननेकी वात सिद्ध नहीं होती। पता नहीं कि, हम मल-को पाप कैसे कह सकेंगे। मल पापका नाम नहीं है। यदि मल दोषको पाप कहेंगे तो वह निवृत्त नहीं होता है और खास करके सञ्चित पापोंका ज्ञानके विना निवृत्तही मुश्किल है और ज्ञानसे पहले निवृत्ति हो गई तो उसका कोई महत्त्व नहीं। इसलिए हमें इसपर विचार करना है कि, वे मल पाप हैं या और कुछ—तो मैं आपके सामने एक चीज़ रखना चाहता हूँ। वह चीज़ है इच्छा जो मनके अन्दर उठ रही और उस स्वाभाविक इच्छा जिसकी पूर्तिके लिए इर्द-गिर्दके वातावरणसे प्रभावित होकर बैठे हैं। एक इच्छाही वड़े ज़ोरकी है। यह बड़े ज़ोरकी इच्छा हर प्राणीके अन्दर है। हमारे पास जब कोई आदमी आता है तो हम उसे कहते हैं कि तू ब्रह्मस्वरूप है। तेरेमें दुःख नहीं है तो वह कहता है कि, मैं दुःखसे पीड़ित हूँ और पता नहीं ये क्या कह रहे हैं। ये क्या समझ रहे हैं। ये भाँग पिये बैठे हैं। क्या कोई नशामें है ? ये किस तरह कहते हैं कि दुःख है ही नहीं। दुःख प्रत्यक्षरूप-में दीखते हैं और ये कहते हैं कि तू आनन्दस्वरूप है, दुःख तेरेमें है नहीं। वह आदमी हमारी बातपर विश्वास नहीं करता है। उसके अन्दर मलदोष हैं। इसलिये विचारा हमारी बातको मानने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

से लाचार हैं—तो इस बातपर विचार करना है कि मल क्या है? इर्द-गिर्दके वातावरणसे या पूर्वजन्मके संस्कारों से हमारे अन्दर यह इच्छा होरही है कि विना किए कुछ प्राप्त नहीं होता। हम देखते हैं कि, एक मज़दूर शामको दो रुपये जेवमें जभी डालता है कि जब वह सारे दिन मेहनत करता है। हमभी मुकाम पर पहुँच गये हैं और चलनेसे ही पहुँचते हैं। वग़ैर क्रियाके वग़ैर कियेसे कहीं भी कोई दिखाई नहीं देता। जिसने कुछ प्राप्त किया हो। जो कोई भी किसी सिद्धिको प्राप्त करता है। किसी चीज़को पाता है—तो वह करनेसे ही पाता है। वग़ैर कियेसे कोई भी कुछ प्राप्त किये हमें नज़र नहीं आता है। इसीलिये हम प्रभावितहो गये हैं और उस स्वाभाविक इच्छाकी पूर्तिके लिये हम प्रभावित हुए हैं। वह स्वाभाविक मनकी इच्छा मैंने पहिले कही है कि दुःखों-की अत्यन्त निवृत्तिहो जाए और परमानन्दकी प्राप्तिहो जाए, यही स्वाभाविक इच्छा है जिसकी पूर्तिके लिये हमारे पास क्या है? हम किसी पढ़े-लिखेसे पूछे वग़ैर यह मानलें और साधनमें जुट जाएँ कि विना कुछ किये वह हमें प्राप्त नहीं होगा। उस परमानन्दकी प्राप्ति और दुःखोंकी अत्यन्त निवृत्ति यत्न साध्य है और यत्नसे ही उसको सिद्धि होगी। क्रिया करकेही हम उसे पाएँगे और क्रियासे ही दुःख दूर होंगे। यह इच्छा जो प्राणियोंके अन्दर है, यह मल दोष है। यही भारी रुकावट है। यही वजह है कि, वहुत सारे लोग जिनको हम विचार सुनाते हैं। वादमें वे कहते हैं ये तो हुआ न ज्ञान। कुछ करनेकी वातभी वतलाओ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ये कौन लोग हैं ? ये वे ही लोग हैं जिनके हृदयमें मल दोष भरा पड़ा है। मल दोष क्या है ? वही जो करनेकी इच्छा है कि करके हम कुछ प्राप्त करेंगे, बिना किये कुछ नहीं होगा। यह जो हृदयके अन्दर इच्छा है उस मूल इच्छाकी पूर्तिके लिये हो रही है। यही मल दोष है।

—तो इसकी निवृत्ति कैसे होगी ?। इस मल दोषकी निवृत्ति करनेके लिये शास्त्रने क्या कहा है ? उसने कहा कि, निष्काम कर्म-में प्रवृत्ति करो। देखिये हिन्दुशास्त्र एक बड़ी अद्भुत शैली रखता है। बड़ा अजीब ढङ्ग रखता है। ऋषिओंने एक ऐसी प्रणाली हमारे लिये रखी है। वह बहुत सुन्दर और अद्भुत है। आपको पताही होगा कि, वेदान्तिओंके यहाँ थोड़े आदमी हैं और यहाँ सम्मेलनमें अभी और मुझे तकरीबन पता है कि, उन महा-पुरुषोंके पास जानेवाले रात-दिनके सत्संगी तो आप सुनतेही होंगे। किसी महापुरुष वेदान्तीके पास जब आप जाते हैं और पूछते हैं कि सृष्टि कैसे हुई ? यह जगत् कैसे उत्पन्न हुआ ? और क्यों उत्पन्न हुआ ? तो पहले उनका सुन्दर जवाब यही होता है कि सृष्टि हुई ही नहीं तो फिर आप उसकी बात यकीन नहीं कर पाते हैं। ऐसा होता है मैंने कहा मल दोषके और विक्षेपके प्रभावसे आपके अन्दर विश्वास करनेकी शक्ति नहीं होती तो किसी महापुरुषसे जाकर फिर पूछो कि महाराज ! जगत् उत्पन्न कैसे हुआ ? तो उन्होंने झट-से जबाव दिया कि जगत् है ही नहीं फिर तुम किसके विषयमें प्रश्न करते हो ? उसने समझा महात्माने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भाँग पीली है या नशा कर लिया है। बहुतोंकी आँख तो साबित होती हैं पर देखनेकी रोशनी नहीं होती है। देखनेकी शक्ति नहीं होती है तो उसने देखा कि शायद इनको दीखता नहीं होगा। आंख अन्धी होगी। इसलिये कहता है जगत् है नहीं। तो उसने अंगुलीको उनकी आंखकी तरफ किया तो महात्माने कहा— अरे! क्या करता है! क्या तुमको दीखता है? तो क्या मैं अन्धा हूँ—तो विश्वास नहीं बनता कि जगत् है और ये कहते हैं कि, है ही नहीं और शास्त्रभी सृष्टिका वर्णन करता है।

एक बात समझनेकी है। जहाँभी शास्त्रमें सृष्टिका प्रकरण कहा है, वहाँ उसका तात्पर्य सृष्टिकी उत्पत्ति दिखानेमें नहीं है। याद रखिये वह तो तुम्हारे मनमेंसे सृष्टिको निकालनेकी सारी बातें कह रहा है। असलमें बात ऐसी ही है। जैसे रात्रिमें जब छोटा बच्चा नहीं सोता और माता उसे सुलाना चाहती है, तो वह क्या करती है लोरियाँ (गाना) शुरू करती है। राजा-रानीकी कहानी शुरू करती है। तो तुम्हारे लिये यह राजा-रानीकी कहानी सुनाई जा रही है। जहाँ सृष्टिका वर्णन है वह शास्त्रका सिद्धान्त नहीं है। सिद्धान्त तो एक अपने आपमें स्थित है कोई वस्तु नाश नहीं होती है बल्कि प्रत्येक वस्तु अपने आपमें कायम होती है— जैसे कि—"नहीं पैदा होता नहीं कुछ फना है।

नहीं होता फनाका फना भी।

हुआ इससे साबित बकाही बका है॥"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तत्त्व तो एक ज्योंका त्यों है। उसमें कोई वस्तु उत्पन्न नहीं होती है और न घटती है और न बढ़ती है वह अपनेमें पूर्णरूपसे स्थित है—तो आपको समझाना है, लेकिन कैसे समझाएँ। आपके अन्दर सृष्टि बैठी हुई है तो इसलिये शास्त्र कृपा करता हुआ, श्रुति भगवती दयालु होती हुई, बुद्धिका तरजुमा करना शुरू करती है। आपकी बुद्धिका तथा जिज्ञासुकी बुद्धिका अनुवाद करती है और तुम्हारी बुद्धिके अनुसार कहती है कि सृष्टि उत्पन्न हुई है। पहले एक ईश्वर था उसमें इच्छा हुई, उस इच्छासे माया-के आकाशादि हो गये, आकाशसे वायु, वायुसे तेज, तेजसे, जल और जलसे पृथ्वी, लो पञ्चभूत सृष्टि उत्पन्न हो गई। ऐसा वर्णन उपनिषदोंमें बतलाया गया है। एक ढङ्गसे नहीं आया बल्कि भिन्न-भिन्न ढङ्गसे आया है। पुराणोंमें और ही ढङ्गसे आया है जो वेदकी सृष्टिक्रमसे मेल नहीं खाता है। उपनिषदोंके ढङ्गसे मेल नहीं खाता है। दन्तकथाएँ और ही हैं। सचमुचमें सृष्टि उत्पन्नही नहीं हुई। तो मैं कह रहा था कि तुम्हारे मनकी सृष्टिको-निकालनेके लिये सृष्टिकी उत्पत्तिका प्रकरण शास्त्र कहता है। इसलिये उत्पत्ति बतलानेमें उसका तात्पर्य नहीं है बल्कि मूलतत्त्व-को बतलानेमें उसका तात्पर्य है। ऐसेही तुमको जो कर्ममें प्रवृत्त कराता है। शास्त्रतो निष्काम भावसे कहता है तुम्हारे अन्तः-करणका मलदोष तभी निवृत्त होगा, जब तुम शास्त्रकी आंखोंसे देखोगे। अभी तुम्हारी आंखें शास्त्रकी आंखोंसे नहीं देख रहीं हैं। उसके साथ मेल नहीं खा रही हैं। तुमको शास्त्रकी आंखें

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्राप्त करनी हैं और उस दृष्टिसे देखोगे तो बात बन जाती है। दूर नहीं जाना पड़ता। लम्बा-चौड़ा, वाद-विवाद नहीं। बात छोटी-सी है। वह तुम्हारे पुरुषार्थसे मेल खाती है। तुमको कुछ करके प्राप्त करना है। ये जो तुम्हारे अन्दर इच्छा है इस इच्छा-की निवृत्ति कैसे हो। इसलिये तुमको शास्त्र कहता है कि निष्काम-भावसे कर्म करो और निष्काम काम करते-करते मनकी इच्छाएँ निवृत्तहो जाती हैं फिर उसके बाद ज्ञानका महत्त्व प्रकट होता है। कर्मकी निन्दा करनी शुरू करोगे तो जब कर्मसे उपरामहो जाओगे तब ज्ञानका यज्ञ रचानेकी इच्छा बनी तो फिर मार्ग दूर नहीं, फिर मंजिलपर पहुँच गए और सिद्धि हमको हो गई। इसलिये ज्ञानका महत्त्व प्रकट करना है और इसीका नाम अन्तःकरणकी शुद्धि है कि ज्ञानकी इच्छाहो जाना।

बन्धनका साधन जो कर्म है वह बन्धनके लिये नहीं बल्कि साधनसे उपराम होनेके लिये है। शांकरमतमें अगर कोई परमा-कर्षणीय बात है, दुनियाके लोगोंके मनोंको खींचनेवाली यदि कोई बात है, तो एकही बात है कि, साधन बन्धनके लिये नहीं होता है बल्कि बन्धनसे मुक्त होनेके लिये होता है। इसलिये कर्मशास्त्र जो तुम्हारी प्रवृत्ति कराता है कर्मसे उपराम होनेके लिये कराता है ताकि तुम्हारा चित्त कर्मसे उपरामहो जाए। तुम्हारे हृदयकी जो इच्छा और जो कर्मका महत्त्व बना हुआ है कि कुछ करकेही हम उसे प्राप्त करेंगे यह भावना चित्तमें आ जाए और ज्ञानका महत्त्व प्रकट हो जाए तब काम बना हुआ ही है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तो वेदान्त-सम्मेलनसे ही हमें इन बातोंका पता लगता है और इन्हीं बातों पर हमें विचार करना है। इन्हीं बातों पर और बहुत-से महापुरुष विचार उपस्थित करेंगे। आप सावधान होकर अपने मनको ठीक रखते हुए अगर सुनेंगे तो आपको बहुत लाभ होगा। यह सम्मेलन जो दरसाल होता है और जिससे आप लोगोंको यहाँ बड़ी-बड़ी बातें सुननेका सु-अवसर प्राप्त होता है। यह सम्मेलन आपके लिये बहुत लाभदायक होगा। मैं बहुत न कहता हुआ यहीं पर विश्राम लेता हूँ। फिर कभी मौका मिला तो इस विषय पर विक्षेप क्या है? मल क्या है? रोशनी डालूंगा।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

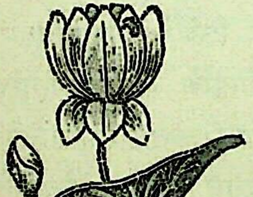

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् १०८ महामण्डलेश्वर स्वामी गुरुचरणदासजी महाराज—(अवधूत मण्डल—कनखल)

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
नारायणं नमस्कृत्य, नरञ्चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीं व्यासं, ततो जयमुदीरयेत् ॥
ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अभ्यर्चनीय-वन्दनीय-महात्मवृन्द ! श्रद्धेयास्पद-सच्चरित्र-गृहस्थवृन्द ! माताओ और बहिनों !

एक वर्षके बाद जाह्नवीके पवित्र तटपर, इस पवित्र आश्रममें इस वेदान्त-सम्मेलन पर आप लोगोंके दर्शन कर रहा हूँ । यह आश्रम एक अपने ढङ्गका निरालाही है, जिसके अधिष्ठाता बारहों

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

महीने भारतके कोनें-कोनेंमें भ्रमण करते हुए यह संदेश देते हैं कि, वैशाखीके सु-अवसर पर "वेदान्त-सम्मेलन" होगा—हरिद्वार आप लोग जरूर पधारें।

सारे भारतवर्षके अन्दर और कोई सन्देश नहीं दिया। दुनियाँके धन्धोंके सन्देश नहीं दिये। ये अनथक परिश्रम करते हैं और संस्थाओंके साथभी इनका प्रेम-सम्बन्ध बना है। ये बड़ेही सुहृत् व्यक्ति हैं। लोग कईबार इनसे पूछ बैठते हैं कि हरिद्वारमें ही "वेदान्त-सम्मेलन" क्यों मनाया जाता है? देहली-मेरठ आदिमें क्यों नहीं········? तो मेरी समझमें यह आया कि—शहरोंके अन्दर और गाँवोंके अन्दर वह पवित्र भूमि नहीं। वह पवित्र स्थान नहीं। शुद्ध वातावरण नहीं······तो मैंने "वेदान्त-सम्मेलन" के सम्मेलनकी भूमि, उसका उपयुक्त स्थान यहीं समुचित समझा। सज्जनो! ऋषियोंके दर्शनोंमें—वेदान्त दर्शन—छठा दर्शन है। पहली कक्षा, दूसरी कक्षा इस प्रकार क्रमशः पांचों कक्षाएँ समाप्तहो जाती हैं। उसके बाद छठी कक्षा आती है। उसके अन्दर कई डिग्रियाँ खत्महो जाती हैं तो यह वेदान्त दर्शन है। यह छठी कक्षा है। इसका समझना यहीं पाया जाता है। ब्रह्मचर्य आश्रमके बाद गृहस्थाश्रम, गृहस्थाश्रमके बाद वानप्रस्थाश्रम और वानप्रस्थाश्रमके बाद संन्यासाश्रम। तो यह संन्यासाश्रम ही है। महर्षि वेदव्यासने कहा है कि, वेदान्त दर्शन वह चीज है कि लाख, दो लाख, करोड़ों व्यक्तियोंमें से एक व्यक्ति वेदान्तका अनुशीलन कर लेता है तो समझो वह बड़ा भारी विद्वान् है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जहाँ शब्द न हो, कोई चिड़िया न चहकती हो, मनुष्यका तो कहनाही क्या है ? जिनकी इन्द्रियोंके अन्दर वासनाओं-भोग-लिप्साओंके संस्कार शून्य हो जाएँ और केवल देखने मात्रके लिये शरीरका ढाँचा रह जाए, तो वह प्राणी वेदान्त समझनेका अधिकारी है। इसलिये यहाँ महामण्डलेश्वर स्वामी पूर्णानन्दजी महाराजका "वेदान्त-सम्मेलन" हरिद्वारमें करना बहुत उपयुक्त है। वेदान्त हमें बहुत कुछ सिखाता है।

वेदमें कहा है कि "भस्मात ँ ् शरीरम्" कहाँसे वेदान्त शुरू होता है। किसी छोटे बच्चेको कहो, किसी करोड़पतिको कहो कि वेदान्त सुनो, तो उसकी दिलचस्पी इसमें नहीं होगी। क्योंकि वह उपनिषद् नहीं पढ़ा, दर्शन नहीं पढ़ा। वह क्या समझेगा कि वेदान्त क्या है ? परन्तु दर्शन शास्त्र आपको धीरे-धीरे बताता है कि "भस्मान्त ँ ् शरीरम्" कहाँसे शुरू करते हैं। लोग वेदान्त समझानेमें कहते हैं कि ओह ! संसारमें आनेवाले जीव ! इन्द्रियों सहित इस शरीरको देखता है और वाचाल बनता है, चंचल होता है केवल इसलिये कि इस शरीरको पक्का समझता है। लेकिन मैं कहता हूँ कि, इस शरीरको भस्म समझो, खाक समझो। अगर किसीको कहा जाए कि यह शरीर खाक है तो वह समझ-ही नहीं सकता है। अरे ! मैं भाषण देता हूँ। व्याख्यान करता हूँ और भाषणके अन्दर कला-कौशल, छन्द-अलंकार, दृष्टान्त-दार्ष्टान्त भी देता हूँ फिर आपका मन नहीं लगता है। महर्षि वेदव्यासने भागवतमें कहा है कि—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"भक्त्या ज्ञान वैराग्येन युक्तेन चेतसा ।
पश्यत्युदासीनं प्रकृतिं हतो शम् ॥"

अर्थात् वह मनुष्य वेदान्तका अधिकारीहो सकता है 'भक्त्या' यानी जिसके अन्तःकरणमें भक्तिसहित वैराग्यभी हो। यहाँ 'चेतस्' शब्द जो है वह अन्तःकरणका उपलक्षण है। मन-बुद्धि ये भक्तिसे युक्त हो। जब अन्तःकरण ज्ञान-वैराग्यमें लगा हो तो— "ज्ञानवैराग्येन भक्तियुक्तेन चेतसा" अर्थात् भक्तिभी साथ हो। "पश्यत्युदासीनं प्रकृतिं हतो यशम" भक्ति-ज्ञान-वैराग्य जब ये तीनों हो जाएँ तब वेदव्यासजी कहते हैं कि—दुनियाँके लोगो ! "प्रकृतिं हतो यशम्" जो ओज तेरे अन्दर है, जो चंचलता इन्द्रियोंकी है जिससे विषयोंकी ओर प्राणी दौड़ता है। कभी रूपके पीछे, कभी रसके पीछे, कभी स्पर्शके पीछे, कभी शब्दके और कभी घ्राण इन्द्रियके वश होकर सुगन्धित वस्तुकी ओर दौड़ता है। यह क्यों दौड़ता है ? तो कहना होगा कि, प्रकृतिकी इच्छा बलवती है और वह विषयोंकी ओर प्रवृत्त कराती है। जब तेरे अन्दर भक्ति होगी, ज्ञानका उदय होगा। "प्रकृतिं हतो यशम" जो तेरा ओज है, उसे नष्टकर डालेगी। अर्थात् उसका नाशहो जाएगा, तब जाकर कहीं वेदान्तमें मन लगता है। तो दृष्टान्त देता हूँ कि किस प्रकार प्रकृतिके ओज तथा कर्म-तेजादिका भक्ति-ज्ञान-वैराग्य नाश करेंगे तो कहते हैं कि—"भर्जितः क्वथितो धानः पुनर्बीजाय न कल्पते" आप देखते हैं कि, कृषक खेतसे एक-एक कण उठाकर इकट्ठा करता है और फिर खेतमें फेंकता है, लेकिन कब फेंकता है ? जब

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ज़मीनमें तीन बार हल चलाता है और उसे साफ़ कर लेता है। उनमेंसे कङ्कर-पत्थर निकालकर बाहर फेंक लेता है और पानी देकर भूमिको समतल बना लेता है और फिर उसमें वायु, चन्द्रमा और सूर्यका किरणोंरूपी खाद पड़ता है। यह उसका खाद है। तब उस साफ़ भूमिमें बीज वपन करता है फिर तब उसमें अंकुर पैदा होते हैं। आपका शरीरभी यह पृथ्वी है, क्षेत्र है और आत्मा क्षेत्रज्ञ है। तो आपको खेतीको साफ़ बनाना है। उसमें से कंकर-पत्थर निकालकर दूर करने हैं। वे कंकर-पत्थर आदि क्या हैं? तो बतलाते हैं कि, राग-द्वेष-काम-क्रोध-लोभ-मोह-अभिमान आदि इस अन्तःकरणरूपी क्षेत्रमें कंकर-पत्थरोंकी तरह पड़े हैं। जबतक ये साफ़ नही होवेंगे वैराग्य आदिके द्वारा दूर नहीं होंगे, तबतक वेदान्तरूपी बीजका वपन करना और उसके अंकुरादि पैदा होना मुश्किल है। इसलिये शास्त्रकार कहते हैं कि—"अथातः कर्म जिज्ञासा" पहले कर्मके द्वारा इस भूमिको साफ़ करो। कर्मकाण्डके द्वारा अन्तःकरणकी शुद्धि करो फिर "अथातो ब्रह्म जिज्ञासा" यह छठा वेदान्त दर्शन आता है कि, ब्रह्मको समझो। उस समय वेदान्तका एक छींटाभी तुम्हारे अन्तःकरणमें पड़ेगा तो तुम्हारी इन्द्रियाँ तुरन्त पकड़ लेंगी। परन्तु कब "प्रकृतिं हतो यशम्" जब-एक प्रकृतिका ओज-इच्छा-लालसा-वासना आदि दोष दूर नहीं हो जाते तबतक वेदान्त दर्शन संसारको अधिकारी नहीं बनाता। इसलिये दूसरा कर्म कहा है कि—"भर्जितो क्वथितो धानः पुनर्वीजाय न कल्पते" भाड़में भुजा हुआ बीज अंकुरके उत्पादनकी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शक्ति नहीं रखता है फिर संसारकी प्रकृति तुम्हारे सामने सज-धज-कर आ रही है। कहींतो रूपकी शकलमें, कहीं स्पर्शकी शकलमें, कहीं मधुर रसकी शकलमें, कहीं सुगन्धिके रूपमें और कहीं कल्पनाकी शकलमें, तुम्हारे सामने उपस्थित हो रही है फिर तुम्हारे ऊपर उसका कोई असर नहीं होगा। क्यों नहीं होगा? भट्टी (भाड़) के अन्दर भुने हुए चनोंमें अंकुर उत्पादनकी शक्ति नहीं है। वह नष्ट हो चुकी है। "पुनर्बीजाय न कल्पते" इस प्रकार यह वेदान्त क्या करता है? भक्ति क्या करती है? और ज्ञान क्या करता है कि, जन्म-जन्मान्तरोंसे यह जीव प्रकृतिके वशमें होकर जन्मता और मरता है "मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति" एक मृत्युके बाद दूसरी मौत खरीदता है। फिर जन्मता है फिर मरता है। यह प्रश्न पैदा होता है कि दुनियाँके अन्दर कौन मरता है? तो हमारे यहाँ मरना माना ही नहीं गया है और मौत किस चिड़ियाका नाम है। प्रकृतिके पाँच 'तत्त्व' परमाणु इकट्ठे हो गये तो जन्म और अलग-अलग हो गये तो मृत्यु और तो कोई मरता नहीं है जैसे—एक-एक घासके तिनकेको इकट्ठा करनेसे और बाँध देनेसे उसका नाम झाड़ू पड़ जाता है और फिर वह सफाई करनेके काममें आता है और अलग-अलग तिनके कर देनेसे न उसको कोई झाड़ू कहता है और न वह कुछ काम आता है। ठीक इसी प्रकार पृथ्वीके परमाणु, जलके परमाणु, तेजके परमाणु, वायुके परमाणु और आकाशके परमाणु और छठी चेतन सत्ताके मिल जानेसे इसका नाम पुरुष पड़ जाता है। इसके अन्दर अदृष्ट

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

या चेतन सत्ता अलग हो जाती है तो इसका नाम हो जाता है "मृत्यु" और इनका संग्रह होनाही "जन्म" संज्ञा है। तो यहाँ हिन्दु शास्त्रोंमें मृत्यु कोई चीज़ नहीं मानी गई है। यह तुम्हारे देशकी कितनी बड़ी फिलासफी है। कितना बड़ा और कितना ऊँचा सिद्धान्त है। यह मौत-मौत क्या कहते हो। इसे समझा करो।.

मृत्यु क्या चीज़ है। "नानेव पश्यति" जो इसको नाना प्रकारसे देखता है, वास्तविक तत्त्वको नहीं समझता। जिसने ढाई मनकी शरीररूपी बिल्डिङ्गको उठा रखा है। जो इन्द्रिओंको क्रियाकी शक्ति देता है जिसके लिए श्रुति कहती है—

श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद्वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः।
चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति॥
के० उ० २।

तो भारतीय दर्शनकी पद्धतिके अनुसार कहा गया कि, वेदान्त श्रवणका अधिकार कहाँसे है? "भस्तान्त ँ शरीरम" यहाँसे वेदान्त शुरू हुआ। हमारे शङ्कर भगवान् कैलासपति माने गए हैं। उनकी अर्द्धाङ्गिनी भगवती उमादेवी हैं और उनके कई पुत्र हैं और वे उनके पिता माने जाते हैं। परन्तु उनको देखो कि उनके शरीरमें कौनसे कपड़े हैं? कौनसी पोशाक है? श्मशानकी खाक—भस्म लपेटे हुए हैं। हम भी (संन्यासी) भी भस्म लगाते हैं। नांगे साधुओंको आप देखते हैं कि, वे अपने शरीरमें कभी लकड़ीका

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भस्म और कभी गोबरकी राख लगाते हैं। यह मर्यादा हज़ारों नहीं, लाखों-करोड़ों वर्षोंसे चली आ रही है। यह शाङ्कर सिद्धान्त है। भगवान् शङ्कर प्रकृतिका संहार करनेवाले हैं। विष्णु उसके पालक हैं और ब्रह्माजी उसके उत्पादक हैं। इसलिये पहिलेही शङ्करजीने पार्वतीसे बताया—यह समस्त ब्रह्माण्ड भस्मरूप है और जो "भस्मान्तं शरीरम्" के अनुसार इस शरीरको भस्म-ही समझता है उसे संसारकी चमक-दमक तथा उसके हाव-भावादि कभी आकर्षित नहीं कर सकते। जब आसक्ति नहीं होगी, तो कामना भी नहीं होगी। वासना भी नहीं होगी, फिर यह बना-बनाया संसार और ये योग्य पदार्थ उनके प्रति तुम्हारी जो आसक्ति है वह भी दूर हो जायगी। भगवान् गीतामें कहते हैं—हे अर्जुन!

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥

गीता २। १८।

जिस शरीरको तू बचाना चाहता है, जिस शरीरको तू भोगों-की तरफ़ लेजाना चाहता है और उपस्थित युद्धको छोड़ जंगलोंमें जाकर साधु-संन्यासिओंकी तरह भिक्षाके अन्नसे इस शरीरका निर्वाह करना चाहता है और जिस शरीरको तू फल-फूल-रस आदिके द्वारा पालकर सुन्दर-सुन्दर वस्त्रोंमें लपेटकर आरामसे सुरक्षित रखना चाहता है, लेकिन इसका नाश अवश्यम्भावी है। इस शरीरको कोई बचा नहीं सकता है। मैं समझता हूं कि, इस

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"वेदान्त-सम्मेलन" में बड़े-बड़े वक्ता, बड़े-बड़े व्याख्यानदाता और बड़े-बड़े विद्वान् बैठे हैं पर मैं कहता हूँ कि,प्रकृति की तरफसे वेदान्त-की हमें सूचना बढ़िया मिलती है। वह क्या है ? मैं अपनीही बीती सुना रहा हूँ कि, इसी कनखलके अन्दर मैं, बचपनमें घूमा, फिर जवानीमें घूमा, अब मेरे बाल श्वेत हो गये और अब बूढ़ोंमें आकर कूदने लगा। अब पता लगता है कि हमको भी कहीं जाना है तो शरीरकी दशाको देखकर प्रकृति आज हमें नोटिस देती है कि, अपने बोरिये-बिस्तरे बांधलो और यमराजके पास मेहमानी करनेको चलो। टिकट कट रही है। बगीचेमें आज छोटा-सा पौधा लगा है और उसे पानी देते हैं तो वह कल बड़ा हो जाता है और फूल देने लगता है। फल देने लगता है और एक दिन ऐसा आता है कि नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार यह ब्रह्माण्ड देखते-देखते नष्ट हो जाता है। जिसे तुम बाहर देखते हो और अन्तःकरणमें भी बना रखा है। विश्वके इतिहासमें बड़ी-बड़ी चीज़ोंके नाम देखे। बड़े-बड़े महापुरुषोंके इतिहास देखे। बड़ी-बड़ी आक्रमणकारी जातियोंके इतिहास देखे, वे भी एक दिन नष्ट हो जाएँगे। यह बात हमें वेदान्त-सम्मेलन बताता है कि, जो कुछ देख रहे हो, सब नष्ट हो जाएगा, क्यों इसे पकड़े हुए हो ? इनका अन्त होगा। कृष्ण चल दिये। राम चले गये। राजा रघु चले गये। उस समयकी प्रजा चली गई। वे नगर, वे गलियाँ, वे दुकानें और वे वन-अरण्य आदि सब चले गए। फिर तुम नहीं समझ रहे हो। विचार करो। सोचो और समझो। प्रकृति तुम्हें

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ज़बरदस्ती जोत देती है फिर भी तुम बाहरके रूप-रंगमें मस्त बने हुए हो। वह प्रकृति भी नहीं रहती है जिसमें तुम भूले हो।

वेदान्त एक छोटा सिद्धान्त है पर समझमें आजाय या हृदयमें बैठ जाय। केवल विद्वानोंसे ही विवेचनीय विषय नहीं है। यह प्रत्यक्ष देखे जानेवाला संसार हमें साफ बताता है कि पहिले ऋषि-महर्षि लोग इसे समझानेके लिए अपने आश्रमोंमें बुलाया करते थे। वे आश्रमोंमें क्यों बुलाते थे ? घरोंमें यह वेदांत सिद्धांत ठीक रूपसे नहीं समझाया जा सकता । क्योंकि घरोंमें कहीं बच्चे चिल्लाते हैं, कहीं यह लाओ। इस प्रकारके अशान्तिके वातावरणमें प्रकरण ठीक नहीं बैठता। प्रसङ्ग गड़बड़ हो जाता है। इसलिये कहा कि, एकान्तमें सत्सङ्ग करो तो स्वामीजीने हरिद्वार (कनखल) के अन्दर इस पवित्र श्रीकृष्ण आश्रममें वेदान्त सुननेके लिये आप लोगोंको आमन्त्रित किया। इससे एक निश्चय तो हो जायगा कि, जीव ब्रह्मकी एकताको बतानेवाले वेदांत दर्शन-के प्रति कितने लोगोंकी आस्था है। यह वेदान्त दर्शन हमेशाके लिये जीवको साम्राज्य प्रदान कराता है। आत्मा (ब्रह्म) को जानने-के लिये बड़ी रुकावटें आकर खड़ी हो जाती हैं। वे रुकावटें कौन-कौनसी हैं ? तन्द्रा-आलस-दीर्घसूत्रता-काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य आदि और सबसे बड़ी अज्ञानता, ये ही रुकावटें हैं। जिससे आत्माका अपरोक्ष दर्शन नहीं होने पाता है। ओह! संसारके प्राणिओ ! अपनी-अपनी इन्द्रियोंसे पूछो। अपने मनसे पूछो। अपनी बुद्धि देवीसे पूछो कि तेरा क्या विचार है। एक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

घंटा एकान्तमें गङ्गाजीके किनारे बैठकर और कुछ सोचकर अन्तर्हृदयसे पूछना चाहिये। बाहरसे क्या पूछते हो? पूछनेका तरीकाभी सीखो। फिर कमरेके अन्दर बैठ जाओ, अपनी आंखें बन्द करलो। मनको एकाग्र करते जाओ, फिर पूछो अपने अन्दर बैठे हुए मनरूपी बापू—पितासे कि तू दस-पांच मिनिट शान्त होकर बैठ सकता है? इच्छा होती है कि, मैं भी अन्दर उस आत्मासे मुलाकात करूँ? तो तुरन्त अंदरसे एक आवाज आई कि दिल नहीं लगता। यह काम मेरा नहीं। यह तो साधु-संन्यासियोंका है। चल तू बाजारमें, चल तू दोस्तोंके घरमें, चल तू सिनेमा-हालमें। तो अन्दरसे यह आवाज आयेगी और पीछेकी आवाज तुम्हें नहीं आयेगी तो फिर वेदान्तके अधिकारी कैसे बन सकते हैं? तो फिर दूसरी आवाज खड़ी होगी कि फैसला ठीक नहीं। कोई दूसरा वकील गुरु करो। यह मुकदमा मेरेसे नहीं जीता जायगा। तो वकील सबने किये। मैंने भी किया। राम-कृष्ण आदि सबने वकील किये हैं तो सच्चे वकील ब्रह्मनिष्ठ गुरुही हैं, जो शास्त्रीय मर्यादाके ऊपर चलनेवाले ब्रह्मनिष्ठ गुरु हैं। जिन्होंने आत्माका करामलकवत् अपरोक्ष किया है उनके चरणोंमें जाकर इस ढाई मनके मल-मूत्रसे भरे गन्दे थैलेको पटक दो। यह बात तुम प्रत्यक्ष रूपमें देखते हो कि मामूली-सा कपड़ा हम दर्जीके यहाँ पर डालते हैं तो वह काट-छांटकर और उसे बढ़िया बनाकर हमें देता है। ठीक इसी प्रकार तुम्हारे अन्दर भरे हुए काम-क्रोध आदिको ब्रह्मनिष्ठ गुरु दूर कर तुम्हें बढ़िया कपड़ेकी तरह बना

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

देगा। तुम कुछ बन जाओगे। मामूली-सी लकड़ी बढ़ईको दे दो तो वह काट-छांटकर बढ़िया मेज-कुर्सी बनाकर दे देता है। दुनियाके लोगो! शरीररूपी बर्तनमें सामान बड़ा चोखा है पर जब तुम निकालोगे तो पता चलेगा। यह जीव कहाँ ब्रह्मलोकसे चला और कैसे दौड़ता हुआ आया और माँ के पेटके अन्दर बिना बुलाया चला गया। संसारमें जन्म लेनेकी तुम्हारी क्या बहुत जरूरत थी? क्यों आये? किसलिये आये? यहाँ तो रहनेके लिये मकान भी नहीं मिलते हैं। फिर क्यों दौड़े चले आये? तो कहना होगा कि, तुम अपनी वासनाओंके अनुसार चले आये हो। "वासना बद्धो हि जीवः" जो तुम्हारे संकल्प-विकल्प बीजरूपमें पड़े थे उन्हींके कारण तुम्हारे अदृष्टने, तुम्हारे कर्मने भेजा और तुम उन्हें भोगनेके लिये चले आये। मैं अच्छा व्याख्यान देता हूं अगर तुम्हारे हृदयमें (अन्तःकरणमें) बैठ जाय या तुम्हारी समझमें आजाए तो फिर तुम उसे जल्दी नहीं निकाल सकते हो। यह तबतक नहीं निकालेगा जबतक तुम इस अन्तःकरणमें दूसरे व्याख्यानके संस्कार नहीं डालोगे। भाषण रिकार्डिङ्ग हो रहा है। यह तबतक नहीं मिटेगा तबतक कि दूसरा भाषण रिकार्डिङ्ग न कर दिया जाए। जबतक दूसरा व्याख्यान नहीं सुनोगे तबतक पहिला व्याख्यान नहीं निकलेगा। इसी प्रकार इस शरीरमें दुनियाके जितने पदार्थोंका संसर्ग होता है उनमें अच्छे पदार्थोंको रखना और बुरोंको निकालना मुश्किल है। वेदान्त दर्शनही एक ऐसा दर्शन है जो प्रकृति और मायावादके पदार्थोंको

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक तरफ ढकेल देता है। ब्रह्म और आत्माके संस्कार डाल देता है और खराब संस्कारोंको निकालकर फेंक देता है।

यह भारतवर्ष है और हम इसके निवासी हैं। जिस ब्रह्मविद्याके लिये ऋषि-महर्षियोंने अमूल्य समयको लगाकर खोजकी थी। उस ब्रह्मविद्यासे आज हम विमुख हुए जा रहे हैं। जिसके लिये विदेशोंसे लोग आकर यहाँ पड़े हैं और इसकी खोजमें लगे हैं विश्वके अन्दर कहीं भी चले जाओ इस प्रकारकी व्यवस्था कहीं नहीं मिलेगी। इस प्रकारके आश्रम, जहाँपर कमरा भी मिले, झाड़ू भी मिले, सत्सङ्गहाल भी मिले। कथा-लेक्चर-व्याख्यान मुफ्तमें सुननेको मिलें और कोई भूखा-प्यासा हो तो उसे भोजन-पानी भी मिले। ये सब यहीं मिल सकते हैं। इस प्रकार वेदान्त समझाता है कि, यह शरीर तेरा नहीं। ये इन्द्रियाँ तेरी नहीं जिनका तू मालिक बना बैठा है। यदि आप थोड़ा-सा ध्यान देकर अवलोकन करो तो इन सबके मैंनेजर अलग-अलग हैं। नेत्रेन्द्रियके सूर्य भगवान्, मनका चन्द्रमा, पैरोंका विष्णु, बुद्धिका बृहस्पति इत्यादि, तत्-तत् इन्द्रियोंके तत्-तत् देवता हैं। फिर तुम कैसे कहते हो कि, हमारा शरीर है। इसमें तुम्हारा अपना कुछ नहीं है। "देख पराई चोपड़ी क्यों जिय ललचाय" वाली कहावत है। यह प्रकृतिका बना हुआ सारा ब्रह्माण्ड एक महल है। एक धर्मशाला है। इसका मालिक वही परमात्मा है। कहीं पर सूय बन बैठा, कहीं पर इन्द्र और कहीं पर ब्रह्मा, कहीं पर विष्णु। इसे वेदान्त बतलाता है कि, इसका मालिक एक परब्रह्म परमात्मा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। यह कितनी बड़ी फ़िलासफी है, कितना बड़ा सिद्धान्त है। यदि तुम इसको अच्छी तरह समझ जाओ तो तुम्हारी झंझटें दूर हो सकती हैं।

घरमें सास-बहुका झगड़ा, भाई-भाईका झगड़ा, पिता-पुत्रका झगड़ा, किसीका किसीके साथ नहीं हो सकता। पर यह वेदान्त अधिकारी भेदसे समझाया जाता है। जो जैसा अधिकारी होता है वैसा उसे उपदेश करता है। इसके समझनेके लिये आपको स्थितप्रज्ञ बनना पड़ेगा। स्थितप्रज्ञ किसको कहते हैं? जो वाणी-के द्वारा कोई बात प्रकट करें और सारी बातोंको अन्दरही हज़म कर जाए। जो इन्द्रियोंके अन्दर दोष हैं, जो वाचालता, छल-कपट, राग-द्वेष, हिंसा आदि भरे पड़े हैं और मल-मूत्रसे भरे इस गन्दे थैलेको जबतक किसी तत्त्वदर्शीके पास या शास्त्रोंके चरणमें नहीं फेंकोगे। तबतक यह नहीं सुधरेगा। वर्षके तीन सौ साठ लम्बे-लम्बे दिन गुज़ार देते हो। कभी समय निकाल इन महा-पुरुषोंके पास आकर बैठो। इन गेरुआ वस्त्रधारियोंको देखकरही तुम्हारा बेड़ा पारहो जायगा।

एक समयकी बात है कि भगवान् रामचन्द्र जब हनुमान्को देखते थे तो उनकी आंखोंसे आँसू टपकने लगते थे। क्यों टपकते थे? लालवस्त्रधारी हनुमान्को देखकर उन्हें याद आ जाती थी कि—इसने सीताकी खोजकी। यहाँ संजीवनीको लाया। इसने शत-योजन समुद्रका लङ्घनकर लङ्काको जलाया। इसने हमारे सम्पूर्ण कार्य किये। इसके ऋणसे हम कभी उऋण नहीं हो सकते

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हैं। इसलिये उनके सारे चरित्रोंको देखकर भगवान् रामकी आंखों-में आंसू आ जाते थे। इन महात्माओंका पठन-पाठन, चलना-फिरना, सत्सङ्ग-भजन-पूजन आदि क्रियाएँ और उनके चरित्रोंको देखनाही तुम्हारे लिये वेदान्त है। जब इन्द्रियोंके अन्दर ग्लानि आ जाती थी तब धर्मकी स्थापना होती थी। भारतवर्ष ऋषियोंका देश कहलाता था। लोग कहते हैं महाराज भगवान्के दर्शन कराओ, तो क्या तुम दर्शनोंसे मुक्तहो जाओगे? रामचन्द्र अयोध्यामें ग्यारह हज़ार वर्ष तक घूमते रहे। क्या दर्शनसे मुक्ति होगी? नहीं—"ज्ञानादेव मुच्यते" ज्ञानसे ही मुक्ति होती है। राजा अम्बरीषको किसी कारणवश दुर्वासा ऋषि श्राप देनेके लिये आए। भगवान् विष्णुने उनके पीछे सुदर्शनचक्र दौड़ा दिया। दश-हज़ार शिष्योंके गुरु, त्रिकालदर्शी दुर्वासा एक मिनिट और खड़ाहो जाता तो उसका नाशहो जाता। पर बचे कैसे? उनको बचाना था। भगवान् शङ्करकी शरणमें गये। "शङ्करो लोकोवीक्षते ततः किम्?" शङ्करजी को प्रणाम करके बैठ गये और बोले–भगवान् मेरी रक्षा करो। यह सुदर्शन-चक्रने मुझे भस्म कर देगा। शङ्करजीने साफ जवाब दे दिया मैं तुम्हें बचा नहीं सकता। तुम ब्रह्माकी शरण जाओ तो वे दौड़े-दौड़े ब्रह्माजीके पास गये और बोले मुझे बचाओ नहीं तो मैं भस्म हो जाऊँगा। उन्होंने भी जवाब दे दिया कि मैं तुम्हें बचा नहीं सकता। तुम विष्णुकी शरणमें जाओ। विष्णुके पास भी गये उन्होंने भी जवाब दे दिया किमैं भक्तद्रोहीको नहीं बचा सकता हूँ। उन्होंने कहा कि मैं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दुर्वासा ऋषि हूँ। मेरी भी पुकार सुनो। तो भगवान् बोले ऋषियों-की तो मैं सुनताही हूँ पर कोई मेरे अनन्य आ जायँ तो उनकी पहले सुनता हूँ। तूने परम धार्मिक मेरे भक्तका अपमान किया है तुम उसीके चरणोंमें जाकर पड़ो तभी इस चक्रसे बच सकते हो, नहीं तो भस्महो जाओगे। वह अम्बरीषकी शरणमें गया और उनसे क्षमा याचनाकी। तब उनकी प्राण रक्षा हुई। तीनों लोकोंमें घूमनेसे भी शान्ति नहीं मिलेगी। इसीलिये ऋषियोंने कहा "ज्ञाना-देव मुच्यते" ज्ञानसे ही मुक्ति होती है, दर्शनोंसे कुछ नहीं होता है।

वेदान्त बतलाता है कि जबतक अपने आत्माके स्वरूपको नहीं पहिचानोगे, तबतक प्रकृतिकी लम्बी-लम्बी डाढ़ोंके अन्दर दबे रहोगे। कभी मुक्त नहीं होओगे। जब भी मुक्त होओगे तो ज्ञानके द्वारा ही। इसलिये यह "वेदान्त-सम्मेलन" हरिद्वारमें किया जा रहा है कि तुम्हारे पीछे दुर्वासाकी तरह विषयवासना-रूपी चक्र लगे हुए हैं और जिस लोकमें भी जाओगे तो ये संकल्पोंके चक्कर नहीं छूटेंगे। इसलिये विद्वान् महात्माओंके पास बैठोगे तो उनकी छाप लगेगी, तभी जाकर इस जीवनका दुःखोंसे पिण्ड छूटेगा। श्रवण-मनन-निदिध्यासन द्वाराही यह जीव प्रकृतिकी लम्बी दाढ़ोंसे बच सकता है और कोई उपाय नहीं। इतना कहते हुए अपने वक्तव्यको समाप्त करता हूँ।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् १०८ महामण्डलेश्वर स्वामी गोविन्दप्रकाशजी महाराज (रामतीर्थ मिशन—राजपुर—देहरादून)

अशुभानि निराचष्टे, तनोति शुभसन्ततिम् ।
स्मृतिमात्रेण यत्पुंसां, ब्रह्मतन्मङ्गलं परम् ॥१॥
अतिकल्याणरूपत्वान्नित्यकल्याणसंश्रयात् ।
स्मर्तृणां वरदत्वाच्च, ब्रह्म तन्मङ्गलं विदुः ॥२॥

आदर्शरूपमें विराजमान तत्त्वदर्शीमण्डल ! एवं जनता-जनार्दनके रूपमें उपस्थित प्रभु-प्रेमिओ !

"वेदान्त-सम्मेलन" में आये हुए प्रभु-प्रेमी अगर एकबार भी अपने जीवनकी ओर निहारलें तो उसके रहस्यको समझ जाएँगे। जो वक्ता वेदान्तके विचारोंको कह रहे हैं। कई लोगोंने इस प्रकार-की भ्रान्तियाँ फैला रखी हैं कि वेदान्त मानवको कर्महीन बनाता है। भक्तिहोन बनाता है। बल्कि सच्चे मायनेमें यहाँ तक कह देते हैं कि नास्तिक बना देता है और इस भ्रान्तिकी निवृत्ति-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वेदान्तका पहला कर्त्तव्य है और इन महानुभावोंकी छत्र-छायामें आकर आप निश्चय समझें इनसंशयों की निवृत्ति करके जाएँ। इस वेदान्तके मंच पर बैठे हुए कई एक विद्वानोंके भाषण आपने श्रवण किये—कि जबसे वेदान्तका यह प्रकार इस देशमें आया तो लोगोंने मन्दिरोंमें नमस्कार करना छोड़ दिया। तीर्थों पर स्नान करना छोड़ दिया और ईश्वरकी आराधना करना भी छोड़ दिया। "अहं ब्रह्मास्मि" मैं ब्रह्म हूँ। इस चीज़को आत्मा तकही सीमित रखनेवाले प्राणी वेदान्तके सच्चे अनुयायी कहलाने पर भी शरीर तकही सीमित रहे हैं कि यह शरीरही ब्रह्म है। तो इस बातकी निवृत्ति, इस भ्रान्तिकी निवृत्ति यदि ठीक वेदान्त मतानुसार वेदान्तानुयायी इन आचार्य प्रवरोंके द्वारा आप ठीक रूपसे वेदांतके तात्पर्यको सुन लेंगे तो—सुननेवालो! आपकी भ्रान्तिकी निवृत्ति स्वतःही हो जायगी। पर जिस मंचसे ऐसी आवाज़ आयेगी कि वेदान्तके अनुयायी कर्महीन-भक्तिहीन और धर्महीन किस प्रकार नास्तिक कहलाएँगे। उनकी ज़बान बन्द करनेकी शक्ति आपमें आ जायगी।

वेदान्तके आचार्य महाज्ञानेश्वर आनन्दकन्द भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने अर्जुनको ज्ञानका उपदेश देनेके बाद आपकी गीता इस बातका अन्तमें समर्थन करती है। वही इसमें प्रमाण है कि अर्जुन सच्चे मायनेमें वेदान्तानुयायी था, जिसकी ज़बानसे यह स्वयं निकल चुका था कि, वह भ्रान्ति मेरे हृदयमें जो पहिले थी, वह आपके सुमधुर उपदेशको सुननेसे सम्पूर्ण निवृत्त हो चुकी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। अब मैं उस ज्ञानकी महिमाको जान चुका हूँ। जहाँ पर आत्म-स्वरूपकी अनुभूति होती है। अब आप अर्जुनसे यह देखकर अनुमान लगा सकते हैं कि अर्जुनके कर्तव्यमें कितनी कर्महीनता थी और कितनी भक्ति। कितनी आराधना-उपासना और भक्तिका क्या भाव था। यह आप स्वयं जान सकते हैं। इसलिये वेदान्त सच्चे मायनेमें स्वरूपकी पहिचान और कर्मप्रवीण बनाता है कर्म में शूरवीर बनाता है और वास्तविक कर्मके स्वरूपकी परिस्थिति को समझाता है। वेदान्त अर्जुनकी तरह संसारमें आत्माके विषयमें इतना जान लेनेके बाद शरीरोंकी परिक्षीण अवस्थाका दर्शन कराता है।

दूसरी ओर जिनकी यह भ्रान्ति है कि वेदान्त नास्तिकवत् कर देता है। उस नारदको सनत्कुमारके उपदेश सुननेके बाद जो कि सामवेदकी छान्दोग्य उपनिषत्के सप्तम अध्यायमें महर्षि सनत-कुमारने नारदको उपदेश दिया था, जिस नारदने यह स्वयं कहा था कि—"तरति शोकमात्मवित्" वह आत्मानुभूति करनेवाला संसारके शोक-मोहसे पार होजाता है। वह नारद आत्मानुभूति करनेके बाद भक्तिसूत्रका निर्माण करता है। ईश्वरके स्वरूपका, जीवके स्वरूपका, आराधनाकी व्यवस्था, भगवान्की भक्तिका— इन तीनों व्यवस्थाओंको बनानेके लिए भागवत् रहस्य सुननेवालों में बतलाइये कि भक्तिका निर्माण करनेवाले महर्षि नारद वेदान्तकी ज्योति हृदयोंमें जगानेके बाद बतलाओ किस बातका निराकरण कर गये और किस बातकी वे नास्तिकता प्रकट कर गये। किन्तु

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आजका जो वेदान्त जिसको हम सुनकर भ्रान्त होजाते हैं सच्चे मायनेमें यदि देखा जाए, तो हमने वेदान्त सुननेमें मनही नहीं लगाया। अपने स्वरूपकी ओर, अपनी जीवात्माकी ओर जो ब्रह्मके अन्दर नैष्ठिक बननेवाला जिज्ञासु है, वह जिज्ञासु इस प्रकारकी भ्रान्तियोंको पैदा करले, तो समझो कि उसने सच्चे अर्थों में वेदान्त-श्रवण नहीं किया। तीसरी-ओर आचार्यप्रवर भगवान् जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जिनकेकी जीवनकी दिनचर्य्यामें आपने पढ़ा होगा। कई बार सुना होगा कि, वे प्रातःकालसे लेकर सायँ काल तक भारतके कोनें-कोनेंमें वेदान्तका प्रचार करते रहे और रात्रिको ग्रन्थोंका लेखन करते थे। इसी हरिद्वारके पवित्र तीर्थ पर जब जगद्गुरु शंकराचार्य पधारे, तो उन्होंने क्या कहा—आज उनके ग्रंथ आपको प्रमाण देते हैं कि—उनके पवित्र मुखारविन्दसे शब्द निकलते हैं—"भगवती तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं विगतविषय-तृष्णा कृष्णमाराधयामि। सकलकलुषभंगे स्वर्गसोपानसंगे। तरल-तर तरंगे देवि गंगे प्रसीद।" हे माता! हे गंगे! हे त्रिपथगामिनि! आपके इस चरणामृत भगवान् विष्णुके इस चरणामृतको पानकरने जगद्गुरु शंकराचार्यके हृदयसे आवाज़ निकलती है कि कलियुगके सम्पूर्णपापोंको ध्वंस करनेवाली भगवती गंगे! मेरी यही मनो-कामना है कि आपके इस चरणामृतको, इस पवित्रजलको पानकर लेनेके बाद मेरे हृदयमें वे भाव जागरित हो जाएँ। वह भक्ति आ जाय। वह धारणा होजाय कि मेरा मन आनन्दकन्द श्रीकृष्ण-चन्द्रके चरणोंमें लीन होजाय। उसके बाद वे कहते हैं, उत्तराखण्ड

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

के बीच पहुँचनेवाले श्रीमदाद्य जगद्गुरु शङ्कराचार्य जिस समय जगदम्बाके मन्दिरके सामने खड़े होते हैं। वहीं उनके मुखारविन्दसे निकले हुए शब्दोंकी वाक्य-योजना जो आपके सामने स्तोत्रवादके अन्दर जगद्गुरु शङ्कराचार्यका प्रकरणवाद, स्तोत्रवाद, प्रस्थानत्रयवाद आपने पढ़ा होगा। वे उन्हींके अपने शब्द हैं कि—

पृथिव्यां पुत्रास्ते, जननि बहवः सन्ति सरलाः।
परं तेषां मध्ये, विरलतरलोऽहं तव सुतः॥
मदीयोऽयं त्यागः, समुचितमिदं नो तव शिवे।
कुपुत्रो जायेत, क्वचिदपि कुमाता न भवति॥

हे मातः! हे जगदम्बे! तेरे इस जीवनकी एक उत्पत्ति, स्थिति, लय संसारका निर्माण इशारे से होता है। उस माँ का यह संसार। यह विश्व सन्तानके रूपमें है। किन्तु यह परिवार ये पुत्र भलेही अपनी अज्ञानताके कारण, अपनी भ्रान्तियोंके कारण, उसकी वजहसे पुत्र अपने कर्तव्यका निर्वाह भलेही न करे। बल्कि विपरीतमार्ग में भी चले जाय, कुपुत्रके आचरण करने लग जाय। हे जगदम्बे! हे मातः! तू ऐसा काम नहीं करती है, तू मातृधर्मका पालन करनेवाली, तू हमारे उस मोहको नष्ट कर दे, जिससे मेरे हृदयमें तेरी अलौकिक भक्तिका उदय हो।

मातस्त्वदीय पदपङ्कज भक्तियुक्ता,
ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ते निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण,
भूवह्निवायुगगनाम्बु विनिर्मितेन ॥ १ ॥
मोहान्धकारे भरिते हृदये मदीये,
मातः सदैव कुरु वासमुदार भावे ।
कीर्तिप्रदेऽखिल मनोरथदे महार्हे,
विद्याप्रदायिनिसरस्वति नौमि नित्यम् ॥ २ ॥

इत्यादि प्रमाणोंसे सिद्ध होता है और इससे भी आगे बढ़ना होता है। केदारनाथके उच्च शिखरोंमें जहाँ भगवान् शङ्कराचार्यने आशुतोष भगवान् शिवकी मूर्तिकी प्रतिष्ठा की है। वहाँ स्वयं उनके ये वचन हैं कि—

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम् ।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ॥
वन्दे सूर्य शशाङ्क वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम् ।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥

कहनेका अभिप्राय क्या है कि जिन आचार्योंके प्रमाण सुनानेके लिये मैं यहाँ पर उपस्थित हुआ हूँ। वास्तवमें वेदान्त इस संसारमें रहनेवालोंको कर्मवीर बनाता हुआ, ईश्वरका सच्चा भक्त बनाता हुआ, अपने स्वरूपकी ओर प्रेरणा करनेवाली शक्ति वा वेदान्तकी ज्योति विश्वके सामने एक अन्तिम ज्ञान-मार्गका प्रदर्शन कराती है। वेदान्त किसीको कर्महीन नहीं बनाता। वह भक्तिहीन नहीं बनाता। इन तीर्थोंके सेवनसे नास्तिक नहीं बनाता बल्कि सच्चे मायनेमें वेदान्त जीवनकी वह ज्योति है जो मानवसे एक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

महामानव, नरसे नारायण बना करके, जीवसे जगदीश्वर बनाकर संसारके जितने व्यवहारिक धर्म उनमें एक इतनी उत्तमता-पवित्रता एक सचाई लाकर जीवनका श्रेयमार्ग-प्रेयमार्ग जिसके अन्दर आप जा रहे हैं। वह प्रेयमार्गसे उठाकर श्रेयमार्गकी ओर ले जाता है। भौतिकवादसे उठाकर आध्यात्मिकवादकी ओर ले जाता है। छल-कपटके द्वारा हमारा अन्तःकरण मलिन हो जाता है तो वेदान्त उन साधनोंको बताता हुआ साध्यकी ओर ले जानेका प्रयास करता है।

इसलिये प्रिय बन्धुओ! यह भ्रान्ति अपने हृदयमें जिन भ्रांत वक्ताओंके द्वारा या किसी एक अनभिज्ञ, शास्त्राकुशलोंके द्वारा हमने सुनी हुई है। उसकी निवृत्ति सदाके लिये हो जाए। इस वेदान्तके छठे अधिवेशनमें हमें यह सन्देश मिलता है कि वेदान्तका सच्चा अनुयायी साधनकी अवस्थाके अन्दर कर्मवीर भी है, भक्त भी है। ज्ञानावस्थामें आरूढ होनेके लिये प्रयत्न कर रहा है। वह कभी भी नास्तिक नहीं, बल्कि वह सच्चा आस्तिक कहलाता है। दूसरी ओर वेदान्तके सच्चे मायने जिन्होंने यह समझा है कि वेदान्तका अन्तिम भाग उपनिषद् जो ज्ञानकाण्ड है। उसमें इन बातोंकी चर्चा ही नहीं है। यह भी गलत बात है कि उपनिषद्के प्रत्येक प्रकरणके अन्दर कर्मका विवेचन है। उपासनाका भी और ज्ञानकी चर्चा भी साथ-साथ आई है। कोई ऐसा उपनिषद् नहीं, जिसके प्रत्येक मन्त्र केवल आत्मज्ञानके अन्दर इस प्रकारकी निष्ठा करानेके बाद कर्मका निराकरण करता

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हो। कर्म करनेवाला जो हमें दिखलाई दे रहा है वह लोकसंग्रहके लिये है। परोपकार परायण हो–तो क्या वह प्राणी वेदान्तानुयायी नहीं? क्या वह आत्मनिष्ठ नहीं? जो ईश्वरके चिन्तन—एक द्वैताद्वैत भावको लेकर एकसे अनेककी उपासनाको माननेवाला प्राणी क्या वह वेदान्ती नहीं हो सकता? ये सब विचारकी न्यूनता है। यह बात जरूर है कि, एकत्वका ज्ञान हो जानेके बाद जिस ज्ञानीके विषयमें जो लक्षण गीता शास्त्रके द्वितीय अध्यायमें और भक्तके लक्षण बारहवें अध्यायमें किये हैं उनका सामञ्जस्य और उनका समन्वय उनकी एकता भी देखनी हो तो जो भक्तके लक्षण हैं वही ज्ञानीके लक्षणोंमें पाये जाते हैं। जैसे कि—

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःख सुखः क्षमी॥

गीता १२–१३।

इस श्लोकसे भिन्न-भिन्न रूपोंमें जो भगवान्ने अर्जुनको भक्तके लक्षणोंमें बतलाया है वे स्थितप्रज्ञके लक्षण दूसरे अध्यायमें मिलते हैं। अगर इस स्थितिके अन्दर प्रवेश करते हुए आप वेदान्तके विचारोंको ठीकसे अनुभव करने लग जाएँगे। सच्चे मायनेमें सुनने लग जायँगे—तो आप इस बातका विश्वास करने लग जाएँगे कि तीर्थ सेवन करते हुए, संसारके सब कर्म करते हुए परमात्माकी आराधना करते हुए हमारी आत्मनिष्ठामें कभी भी कमी नहीं आ सकती है। बल्कि इन साधनोंके करनेवाला जिज्ञासु आत्मनिष्ठ बननेके लिये और भी तीव्र मार्गमें चलनेके

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लिये उसको मार्ग साफ़ और सुथरा मिलेगा। इसलिये व्यवहारकी कमजोरियाँ छल-कपट-अत्याचार-अनाचार हैं। इनकी निवृत्तिके लिये हमें शुभ-कर्मोंकी ओर प्रेरित करना वेदान्तके उपदेश देने-वालोंका एक लक्षण है। जिस व्यवहारके करनेसे हमारे अन्तः-करणमें विक्षेप एवं चंचलताका आविर्भाव हो रहा है। उसकी निवृत्ति अत्यावश्यक है और यह कार्य ज्ञानकी ज्योति जगानेवाले ईश्वर आराधनाकी ओर प्रेरित करनेवाले उन ब्रह्मनिष्ठ महात्माओं-के वेदान्तके अमृतमय उपदेशसे ही सम्भव हो सकता है। यही वेदान्तका अन्तिम, जिज्ञासुओंके लिये सन्देश है।

"अहं ब्रह्मास्मि" इस प्रकार अखण्ड समाधीका समाधान या निदिध्यासन या अनुभूति यह वेदान्तकी ज्योति, यह वेदान्तकी लाइट, वेदांतकी रोशनी, आपके हृदयको आगे बढ़ाती हुई आगेकी ओर अग्रसर करती ले जायगी। इन शब्दोंके साथ सच्चे मायनेमें वेदान्त किसीको नास्तिक नहीं बनाता है, बल्कि सच्चा आस्तिक बनाता है, कर्मवीर बनाता है, भक्त बनाता है और ज्ञानी बना-कर इस जगत्में रहते हुए मानवको कमलकी तरह निर्लेप कर देता है। यही वेदान्तका अन्तिम लक्ष्य है। इतना कहकर मैं अपने वक्तव्यको समाप्त करता हूँ।

॥ सच्चिदानन्द भगवान्‌की जय ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् १०८ महामण्डलेश्वर स्वामी कृष्णानन्दजी महाराज न्याय-वेदांताचार्य (भगवद्धाम—जस्साराम रोड—हरिद्वार)

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु, सह वीय करवावहै ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

आपनको आपन हि बिसर्यो ।
जैसे श्वान कांचि मन्दिरमें भ्रमि-भ्रमि भूंकि मर्यो ।
हरि सौरभ मृगनाभि बसत है द्रुम तृण सूंघि मर्यो ॥
ज्यं केहरि प्रतिबिम्ब देखिकर आपन कूप पर्यो ।
ज्यूं सपनेमें रङ्क भूप भयो तिसकरि अरि पकर्यो ॥
मर्कट मुट्ठी छाड़ि नहीं दीन्ही गृह-गृह द्वार फिर्यो ।
सूरदास नलिनीको सुभटा कहु काहुने पकर्यो ॥

उपस्थित समादरणीय यतिवृन्द ! तथा विद्वद्वृन्द ! एवं जनता-जनार्दनके रूपमें उपस्थित मेरी आत्माओ !

बन्धुओ ! मैं आप लोगोंके सौभाग्यका क्या वर्णन करूँ ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जहाँ पूज्यचरण महामण्डलेश्वर स्वामी पूर्णानन्दजी की अनुकंपा-से आप लोग कलिमलनाशिनी, परमपुण्य सलिला, भगवती भागी-रथीके पावन तटपर विराजमान हैं। यहाँ तीन दिनसे वेदांतकी मन्दाकिनीमें आप स्नानकर रहे हैं। महापुरुष वेदान्तके तत्त्वोंको बहुत सुन्दर रीतिसे आपके हृदयमें बैठा रहे हैं। बन्धुओ! श्री-वार्त्तिककारजी लिखते हैं—

देहात्मज्ञानवज्ज्ञानं देहात्मज्ञानबाधकम्।
आत्मन्येव भवेदस्यद्यनिच्छन्नपि मुच्यते॥

व्यवहारकालमें अगर तुमसे पूछा जाए कि तुम कौन हो? तो कहोगे मैं अमुक हूँ। कहाँसे आये तुम? तो आप उत्तर देंगे कि, मैं अमुक स्थानसे या अमुक शहरसे आया हूँ। बन्धुओ! "यथा व्यवहार काले समेषां जनानामीदृशोऽध्यासो वर्त्तते" यदि कुछ आगे और पूछा जाए तो फिर वैसेही आगे उत्तर मिलेगा कि मैं अमुकका पुत्र हूँ और अनेक प्रकारके सम्बन्धोंको प्रकट कर देगा। ब्रह्मका मायासे क्या सम्बन्ध है? संयोग सम्बन्ध नहीं हो सकता। समवाय सम्बन्ध भी नहीं है। स्वरूप सम्बन्ध भी नहीं है। आधार-आधेयभाव सम्बन्ध भी नहीं है। अरे भाई! कोई सम्बन्ध न होने पर मायाकी प्रतीति हो रही है। जो माया "पादो-ऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि"। एक निरंशमें अंशकी कल्पना करते हुए वेदान्तिओंने मायाका आरोपण किया है। जैसे कि पञ्चदशीकारने पञ्चदशीमें बतलाया है कि—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तुच्छाऽनिर्वचनीया च वास्तवी चेत्यसौ त्रिधा ।
ज्ञेया माया त्रिभिर्बोधैः श्रौतयौक्तिकलौकिकैः ॥

कुछ भी उसका स्वरूप नहीं है। माया ब्रह्मको ढाँकेगी तो कैसे ढाँकेगी ? एक बड़ी विचित्र बात है कि विदेशमें एक वैज्ञानिकने चोर पकड़नेका एक यन्त्र बनाया। तुमको यदि कहीं बाहर जाना हो तो जाते समय इस यन्त्रको लगा दो। लगाने पर जब चोर आयेगा और किवाड़में हाथ लगाएगा। वह यन्त्र एक अजीब ढङ्गका है। उसमें एक जञ्जीर निकलती थी। वह चोरोंके पैरोंको पकड़ लेती थी। दूसरा जञ्जीर उसमें निकलता था वह उसकी छातीको पकड़ता था, तीसरा उसके गलेको पकड़ लेता था। जब वह पकड़ा जाता था तो फिर उसके अन्दरसे एक डण्डा निकलता था और चोरके शिर प्रहार करता था। कुछ क्षणके बाद फिर उसकी मृत्यु हो जाती थी। ध्यान देना, वैज्ञानिकने यन्त्र बनाया। उस देशमें मानों एक फिल्म आयगी। महापुरुष आपके अन्दर वह फिल्म भर रहे हैं। यह वेदान्तकी फिल्म तुम्हारे अन्दर भरी है। तुम वकील हो, तुम व्यापारी हो और कुछभी क्यों न हो। लेकिन एक वेदांतकी फिल्म तुम्हारे अन्तःकरणमें यदि भर गई तो मैं तेरा हूँ। मैं तेरा हूँ। तराजू हाथमें होगा और मुखसे "शिवोऽहम्" "शिवोऽहम्" की ध्वनि निकलेगी। परन्तु संसारकी फिल्मों-को देखनेके लिये भागा-भागा फिरता है कि—"अखियाँ न रजियाँ बरिरंग तमाशे" ध्यान देना कि—उपनिषद् क्या कह रही है—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूस्तस्मात्पराङ् पश्यति नांतरात्मन्।
कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्त्वमिच्छन्न ॥

कठोपनिषद् ।

ये इन्द्रियाँ बहिर्मुख हैं। इन्हें अन्तर्मुख बनाओ। जबतक इन्हें बहिर्मुखतासे अन्तर्मुख नहीं बनाओगे तबतक तुम्हें आत्माकी अनुभूति नहीं होगी। आपके सम्मुख एक बात कह रहे थे कि, वैज्ञानिक एक फिल्म आई। पति-पत्नीने सोचा कि चलो यहाँ आज फिल्म देखने जाएँगे। घरमें कोई नौकर नहीं था। फिर कैसे फिल्म देखनेको चला जाए। वैज्ञानिकजीने कहा—नहीं फिल्म देखने अवश्यही चलेंगे। हमारे पास यन्त्र है उसको लगा देवेंगे। चोर आयगा तो अवश्य पकड़ा जाएगा। पति-पत्नी दोनों ताला लगाकर फिल्म देखने चले गए। रातको बारह बजे फिल्म देखकर सिनेमाहालसे लौटे। बाबूजीको ख्याल नहीं रहा कि हमने यंत्र लगाया है। वे उस बातको बिलकुल भूल गये। आपही बाबूजीने अपना हाथ तालेमें लगा दिया। यन्त्र खुला और उसमें से एक जञ्जीर निकली और बाबूजीके हाथ उस जञ्जीरने जकड़ लिये। दूसरी जञ्जीर निकली उसने छातीको जकड़ लिया और तीसरी जञ्जीरने कमरको बांध लिया और डण्डेने बाबूजी की मरम्मत करना शुरू किया। बाबूजी जोर-जोरसे चिल्लाए, हाय! मुझे बचाओ! उस समय उन्हें बिलकुल ख्याल नहीं रहा कि यंत्र मेरा लगाया हुआ है और किस प्रकार छूटता है। बाबू साहबने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अपनी पत्नीको पुकारा। वह भी डरकर दूर भाग गई। किसी कविने बड़े सुन्दर ढङ्गसे कहा है कि—

प्रीतम जानत ही मन माहिं।
अपने सुखको सब कोई सब जग पूछे कोई काहूको नाहीं।
सुखमें आन बहुत मिल बैठत रहित चहुँ दिशि घेरे॥
विपत परत सबही सब छांड़त कोई नहीं आवत नेरे।
घरकी नारि बहुत दिन जोड़ेत रहित सदा सङ्ग लागी॥

घरकी नारि खड़ी पुकार रही है। आओ मेरे पतिदेव आओ। उनका हल्ला सुनकर पड़ोसवाले बीस-पचीस आदमी इकट्ठे हो गये। तब डण्डोंकी ऐसी मार पड़ी कि बाबूजी "राम-राम सत्य है" कहते हुए सत्यलोकको पधार गये। बाबूजीने स्वयं यंत्र बनाया था और स्वयं उसीमें फँसकर मर गये। यह अज्ञान कहाँसे आया। रोज वेदांतदर्शनको पढ़ते हो। गीताका पाठ करते हो। रामायण सुनते हो। ईश्वरका ही अंश जीव है। "ममैवांशः" वह सुखस्वरूप है। सुखकी खान है। दुःख उसमें लेशमात्र भी नहीं है। गोस्वामी-जी रामायणमें लिखते हैं—

ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुखराशी।
सो मायावश भयो गोसाई, बंध्यो जीव कीर मर्कटकी नाईं॥

—तो प्रकृतमें देखिये कि, जीवरूपी एक वैज्ञानिक कलाकार है और अविद्यारूपी एक यंत्र बनाता है जो कि दूसरोंसे रक्षाका साधन था। जो माया दूसरे पर चलानेकी चीज थी उससे वह

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्वयं ही ढँका जाता है। पहिला बन्धन निकलता है। 'अस्मिता' उसके बाद 'राग' फिर 'द्वेष' यह मनुष्य इन तीनोंमें जकड़ा जाता है। उसके बाद 'अभिनिवेश' ममतारूपी मरनेका डण्डा जो जन्म-मरणरूपी इसके शिरके ऊपर सवार होजाता है। इसलिये जीवकी मौत हो जाती है। वस्तुतः देखा जाए तो अपनाही बनाया यंत्र अपने बन्धनका कारण बन रहा है। वेदान्त-दृष्टिसे देखा जाए तो माया और ब्रह्मका कोई सम्बन्ध नहीं है। केवल आध्यासिक सम्बन्ध है। कुछ लोग कहते हैं कि, भागवत-वेदान्त और है। वेदान्त-दर्शनका वेदान्त और है। उर्दू का वेदान्त और है। रामायण का वेदान्त और है। पर सज्जनों! ध्यानसे समझना। सबका समन्वय बता रहा हूं जो वेदान्त दर्शनका वेदान्त है वही वेदव्यासका वेदान्त है। वही भागवतका, वही रामायणका, वही गीताका और वही उर्दू के शैरोंसे समन्वित स्वामी रामका वेदान्त है। वस्तुतः हम उसके तत्त्वको न समझकर भूल-भूलैयामें पड़ जाते हैं।

श्रीमद्भागवतके एकादश स्कन्धमें आनन्दकन्द भगवान् श्यामसुन्दर उद्धवकी कथा सुनाते हैं कि आत्मा शुद्ध-बुद्ध-मुक्त स्वरूप है। तीनों कालमें अविद्याका ब्रह्मके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। जब इस प्रकारकी बातें भगवान् उद्धवको सुना रहे थे तो एक संदेह पैदा हो गया कि "नित्य-मुक्तो नित्यबद्धः एक एवेति भ्रमः" महाराज आत्मा न बद्ध है, न मुक्त है—आत्मा नित्य मुक्त है या नित्य बद्ध है? भगवान् बोले उद्धव पूछना क्या चाहते

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हो ? अपने प्रश्नको खूब मजबूत करके कहो। उद्धव बोले महाराज ! "एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा" "एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म" "एक ॐकार सत् नाम कर्ता" आत्मा एक है, नित्य बद्ध है तो उसके बन्धनकी निवृत्ति कैसे हो सकती है। अगर आत्मा नित्य मुक्त है तो बन्धन किसके लिए ? यह "वेदांत-सम्मेलन" किसके लिए ? ध्यान दीजिये—बन्धन है—नहीं तो मोक्ष किसका ? भगवान् बोले उद्धव बहुत अच्छा। प्रश्न किया ठीक है। वेदान्त-प्रक्रिया भी यही है कि:—

न निरोधो न चोत्पत्ति, र्न बद्धो न च साधकः।
न मुमुक्षुर्न वै मुक्तः, इत्येषा परमार्थता ॥

भगवान् कहते हैं कि बन्धन किसमें है ? "मुक्तो बद्धः" इति व्याख्या। "न तु मे वस्तुतः" बन्धन और मोक्ष तो केवल गुणोंमें है, न कि आत्मामें है। बन्धुओ ! माया त्रिगुणात्मिका है। उसका बन्धन-मोक्ष गुणोंमें है। परमार्थ रूपसे आत्मामें बन्धन है न मोक्ष है। वस्तुतः देखा जाय तो गुण आत्माको नहीं बांधते हैं। आत्मा पर कोई बन्धन नहीं। कोई मोक्ष नहीं। इसका बन्धन और मोक्ष देखना हो तो गीताकी ओर चलिये—

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥

गी० १४–५।

भगवान् कहते हैं—अर्जुन ! सत्त्व-रज-तम ये तीनों गुण

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रकृतिसे पैदा होते हैं और इनकी साम्यावस्थाका नाम प्रकृति है। जब ये विषम अवस्थामें आजाते हैं तो मनुष्यको बन्धनमें बाँध देते हैं। सत्त्वगुण प्रकाशक है, परन्तु फिर भी "सुखं संयोगेन बध्नाति, ज्ञानं संयोगेन मुच्यते।" सुखमें आसक्ति पैदा करा करके क्योंकि सुखस्वरूप हमारा आत्मा है। ज्ञानस्वरूप हमारा आत्मा है। परन्तु बाह्य विषयोंके संसर्गसे जो हमें सुख प्राप्त होता है। उसमें आसक्ति उत्पन्न करा करके जीवको बन्धनमें डाल देता है। सत्त्वगुण भी हमें बन्धनमें डालनेवाला है।

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम्।
तन्निबध्नाति कौन्तेय, कर्मसंगेन देहिनम्॥

गी० १४-७।

रजोगुण भी बाँध देता है, तृष्णाको पैदाकर देता है। आसक्तिको पैदाकर देता है। कर्ममें प्रवृत्ति कराकर रजोगुण भी बाँध लेता है।

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत॥

गी० १४-८।

तमोगुण मोह पैदा करता है। आलस्य-निद्रा-प्रमाद इत्यादिओंको पैदा करता है। उन होनेवाले गुणोंमें "सत्त्वं लघु प्रकाशकम्" सत्त्वगुणका रङ्ग सफेद, रजोगुणका रङ्ग लाल और तमोगुणका काला होता है। बन्धुओ! शास्त्र बताता है कि तीनों गुण मनुष्य को बन्धनमें डाल देते हैं। आत्मा शुद्ध-बुद्ध-मुक्त

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्वभावस्वरूप है। बन्ध और मोक्षका मुख्यकारण मन है। देखिये—

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तये निर्विषं मतम् ॥

अध्यासके बलसे इसने अपने आत्माके बीच बन्धन आरोपणाकर लिया है।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति
कुतोऽयमग्निः ।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥
कठ उ० २–१५ ।

बन्धुओ ! स्वरूपवाली वस्तु हो तो उसे प्रकाशित करे। जिसका कोई स्वरूप नहीं उसे कौन प्रकाशित कर सकता है।

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥

इतनाही नहीं गुरु नानकजी कहते हैं—

रूप न देखो न रङ्ग कछु त्रिगुण ते प्रभु भिन्न ।
तिस बुझाएँ नानक जिस होवे प्रसन्न ॥

कठोपनिषन्में भी कहा है—

"अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरसं नित्यमगन्धवच्चयत् ।"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इसमें कोई गुण नहीं। वह किसीका विषय नहीं। वह गुणातीत है। विषयातीत है। बन्धुओ! "वेदान्त-सम्मेलन" आपको बताता है कि, आपके अन्तःकरणमें रहनेवाली तामसी वृत्तिओंको राजसी वृत्तिओंसे दबा डालो और राजसी वृत्तिओंको सात्त्विक वृत्तिओंसे दबा डालो। सात्त्विक वृत्तिओंकी पराकाष्ठा जब ज्ञानाकार अवस्थामें पहुँच जायेंगी तो अज्ञानका नाशकर डालेगी और वह आत्माका प्रकाश नहीं, वह अपने स्वरूपमें लीन हो जाएगी। आत्मा न बद्ध है, न मुक्त। महावीर जब सीताकी सुध लेने चले, तो देखकर देवताओंको संशय हो गया। उन्होंने सर्पोंकी माता सुरसाको भेजा, तो उसने देखा कि हनुमान् उड़ते हुए चले जा रहे हैं। उसने कहा देखो मेरे मुखमें प्रवेश करो। मुझे भगवान् ने भोजन भेजा है। उन्होंने उसके मुखके दुगुने आकारका शरीर बना लिया। उसने देखकर उससे और अधिक बड़ा बना दिया। तो तुरन्त हनुमान् जी ने छोटा-सा रूप धारणकर उसके मुखमें प्रवेशकर कहा कि मैंने तेरे मुखमें प्रवेश किया है और मैं सीताकी सुधी लेनेको लङ्का जा रहा हूँ। मुझे शुभ आशीर्वाद दीजिये। उसने कहा—बेटा मैं ऐसा आशीर्वाद देती हूँ कि तू लङ्कामें जाकर विजयी बनेगा और आगे सीताकी सुध ला सकेगा। आगे जब महावीर समुद्रके बीचो-बीच आकाशमार्गसे गुजर रहे थे तो एक समुद्रमें रहनेवाली छायाग्राहिणीने महावीरकी छाया दबाकर नीचे उतारनेका प्रयास किया। हनुमान्जीने उसे लात मारकर वहाँ ही दबा दिया। आगे जब लङ्कामें प्रवेश करने लगे तो लङ्किनी नामकी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक राक्षसीने आ घेरा। उसे भी उन्होंने मुक्का (घूंसा) मारकर खत्म किया। "अहंग्रह उपासको महावीरः" अब अशोक वाटिकाके अन्दर बैठी हुई ब्रह्माकारवृत्ति सीतासे मुलाकात करने चलते हैं तो महावीररूपी उपासकको विघ्न डालनेके लिए लङ्किनी नामकी तामसीवृत्ति है उसको घूंसे मारकर खत्मकर डालो। क्योंकि आलस-प्रमाद-नींदको उत्पन्न करनेवाली वृत्ति है। छायाग्राहिणी राजसीवृत्ति उसको भी लातमारकर नीचे दबा दो। क्योंकि राजस गुण बढ़ जायगा, तो लोभ आदिमें प्रवृत्ति बढ़ेगी। परन्तु सुरसा को नहीं मारना, क्योंकि "सत्त्वात् संजायते ज्ञानं, रजसो लोभ एव च। प्रमाद मोहौ तमसो, भवतोऽज्ञानमेव च॥ गी० १४-१७॥ उसको अनुनय विनय करके अपने वसमें करलो। क्योंकि सात्त्विक वृत्ति बढ़ते-बढ़ते ऋतम्भरा प्रज्ञारूपमें आ जायगी, तो अशोकवाटिका में बैठी हुई ब्रह्माकारवृत्तिरूपी सीतासे मिल जायगी। अज्ञानरूपी लङ्काको जलाकर महावीररूपी उपासक अपने आत्मारामसें लीन हो जाएँगे।

बन्धुओ! इतनाही कहूँगा कि आत्मामें बन्धन-मोक्ष कुछ भी नहीं है। गुणोंके सम्बन्धमें बन्धन और मोक्ष है। भगवान् सुन्दर रीतिसे भागवतमें इस चीजको बतलाते हैं और रामायण आदि सभी शास्त्र इस चीजको बतला रहे हैं कि आत्मा किसी वृत्तिका विषय नहीं है। सूर्य सबको प्रकाश करता है। उसे दीपकका प्रकाश क्या प्रकाशित कर सकता है? यहाँ पर राम—ब्रह्मरूप और लक्ष्मण जीव कोटिमें है। सीता योगमाया है। अरे भाई! योगमाया सीता

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ज्ञानरूपी बुद्धि आ करके बीचमें जीवके विघ्न डालनेवाली न होती तो जीवरूपी लक्ष्मणकी रामजुदाई कभी भी नहीं होती। राम-लक्ष्मण-सीता वनवास जाते समय एक गाँवके पाससे गुज़रते हैं तो वहाँके नर-नारि उनके रूपकी सुन्दरताको देखकर और उनकी सुकुमारताको देखकर उनके पास आ जाते हैं। वे लोग सोचते हैं, कैसे सुन्दर राजकुमार और राजकुमारी। इनके माता-पिताने इन्हें कैसे वनवास भेज दिया। ये वनके योग्य नहीं हैं। इस प्रकारकी वे आपसमें अनेक प्रकारकी बातें करते हैं। फिर उनमें वहाँ भी वनदेवियाँ सीताजीके पास आती हैं और उनसे बड़े सुन्दर ढङ्गसे प्रश्न करती हैं कि, आपके साथ एक सुन्दर श्यामवर्णवाले और दूसरे गौर वर्णवाले ये तुम्हारे कौन हैं ? "कोटि मनोज लजावनि हारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे" तब भगवती सीता कुछ असमञ्जसमें पड़ जाती हैं कि क्या इनको उत्तर दूँ। क्या न उत्तर दूँ।

सुनि सनेहमय मंजुल बानी।
सकुचि सीय मन महुँ मुसुकानी॥
तिनहि बिलोकि बिलोकति धरनी।
दुहुँ सकोच सकुचति वर बरनी॥
सहज सुभाग सुभग तन गोरे।
नामु लखनु लघु देवर मोरे॥

इस प्रकारसे अयोध्याकाण्डमें कहा है। सीताजीने पहिले लक्ष्मणका संकेत करते हुए बड़े सुन्दरतासे उत्तर दिया। जहाँ इस

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रकार पति-पत्नी जीवनरूपी गाड़ीके पहिये बनकर चलते हैं तो घरको वैकुण्ठ बना डालते हैं। भगवती सीता जहाँ साक्षात् माया हैं, राम ब्रह्मरूप हैं और लक्ष्मणजी जीव कोटिमें हैं। सीता ब्रह्माकारवृत्ति लक्ष्मणरूपी जीवको बतला सकती है। पर रामको नहीं बतला सकती है।

राम सच्चिदानन्द दिनेसा। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा॥
सहज प्रकासरूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना॥
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू॥
जासु सत्यता तें जड़ माया। भास सत्य इव मोह सहाया॥

दोहा—रजत सीप महुँ भास जिमि, जथा भानु कर बारि।
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ, भ्रम न सकइ कोउ टारि॥

राम ब्रह्म हैं। वह ब्रह्माकारवृत्ति सीता है। "यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।" वह वृत्ति मायाका कार्य होते हुए भी ब्रह्मके स्वरूपको बताएगी। "अध्यारोपापवादाभ्यां निष्प्रपंचं प्रपंच्यते" कोई भी ऐसी वृत्ति नहीं है, जो ब्रह्मके स्वरूपको बता सके। वह तो स्वयं प्रकाशरूप है। उसीसे सृष्टिकी उत्पत्तिका क्रम है। "तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नात्पुरुषः" यह सृष्टिका क्रम है।

बन्धुओ! किसीका अध्यारोप नहीं करोगे तो अपवाद किसका करोगे। ब्रह्माकारवृत्तिही अज्ञानका नाश करनेके लिए योग्य

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मानी जाती है। ब्रह्मको प्रकाश करनेके लिए नहीं मानी जाती है। क्योंकि ब्रह्म तो स्वयं प्रकाशस्वरूप है। उसके प्रकाशके लिए किसीकी आवश्यकता नहीं है। इतना कहते हुए मैं अपने वक्तव्य को समाप्त करता हूँ और भगवान्से प्रार्थना करता हूँ कि, यह "वेदान्त-सम्मेलन" आगे उत्तरोत्तर उन्नति करता रहे और इससे श्रद्धालु जनता लाभ उठाती रहे।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

❋ प्रवचन ❋

वेदान्त वाचस्पति श्री १०८ स्वामी रामलालगिरिजी महाराज, श्रीकृष्ण निवास आश्रम, कनखल (हरिद्वार)

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

वक्तारमासाद्य यमेव नित्या,
सरस्वती स्वार्थसमन्विताऽऽसीत् ।
निरस्त दुस्तर्क कलंक पङ्का,
नमामि तं शङ्करमर्चिताङ्घ्रिम् ॥

परमादरणीय ! विद्वद्वृन्द ! सद्गृहस्थ ! देवियो तथा बहिनों !

आज हमारे सम्मुख "षष्ठ वेदान्त-सम्मेलन" का आयोजन प्रस्तुत है। आप सब सराहनीय एवं धन्यभाग्य हैं। प्रतिवर्ष इस "वेदान्त-सम्मेलन" में उपस्थित होकर अपने अन्तरात्मामें उमड़ती हुई आध्यात्मिक ज्ञानकी पिपासाको दूर करनेके लिये समयका

CC-0. Vinit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अनतिक्रमणाकर समुचित समय पर समुपस्थित होजाते हैं। इससे मालूम होता है कि आप वेदान्तज्ञानके परम जिज्ञासु हैं और अपने चरमलक्ष्य मोक्षके आसादन करनेकी आपके अन्दर अत्यन्त उत्कण्ठा है। अन्तःकरणमें सदिच्छाका उदय होना भी पूर्वसञ्चित पुण्योंका ही महान् फल है।

आज "वेदान्त-सम्मेलन" के अन्तर्गत "गीता-सम्मेलन" का कार्य-क्रम प्रस्तुत है। अतः मैं भी आपको गीताके सम्बन्धमें कुछ अपने विचार रखूंगा। आप दत्त-चित्त होकर स्वच्छ अन्तःकरणसे श्रवण करें।

"श्रीमद्भगवद्गीता" में जहाँ पर करन्यासका आरम्भमें उल्लेख है, वहाँ पर यह आया है कि—"अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः" इति कीलकम्। श्रीमद्भगवद्गीताको पढ़नेके लिए हम उन तीन बातोंका स्मरण करते हैं—"अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे" इति बीजम्। आप जानते हैं कि बीज उत्पत्तिस्थानको कहते हैं।

भगवद्गीता शास्त्रके उत्थानका मूल कारण क्या है? जो बीज है वही उस भगवद्गीता शास्त्रके उत्थानका मूलकारण है और वह "अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे" इस श्लोकसे ही गीताशास्त्रका उत्थान होता है। उत्पत्तिके अनन्तर उसकी स्थिति कैसे होती है? उत्पत्तिके अनन्तर उस शक्तिको स्थिति कहते हैं और कीलक अर्थ होता है 'कीलपरिसमाप्तौ' कीलक अर्थात् उत्पन्न यह गीताशास्त्र है, उसका पर्यवसान (समाप्ति) किसमें जाकर होगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जब हम देखते हैं कि—अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे। गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥

गीताशास्त्रके उत्थानका यही कारण है और हमें अवश्यमेव इसपर विचार करना चाहिए। इतने भारी गीताशास्त्रका जो कि समस्त वेदोंका सारभूत है। इसप्रकार वेदोंके तीन कांड हैं—१. कर्मकांड २. उपासनाकांड ३. ज्ञानकांड। ये तीन कांड हैं। गीताके छह-छह अध्यायोंमें एक-एक कांड विशेषरूपेण संयोजित है। प्रथम छह अध्यायोंमें भगवान् कृष्णने 'त्वम्' पदार्थका कथन किया है। इसको 'अहम्' पदार्थ भी कह सकते हैं। इसमें जीवके स्वरूपका दिग्दर्शन मार्मिक शब्दोंमें किया है। यह जीव अनेक प्रकारके शोक-मोहसे ग्रस्त होनेके कारण किस प्रकार से अपने अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच सकता है। इसका सम्पूर्ण विवेचन इसमें मिलता है। द्वितीय छह अध्यायोंमें 'तत्' पदका विवेचन किया गया है। तृतीय छह अध्यायोंमें············जीव क्या है? ईश्वर क्या है? और दोनोंका परस्पर क्या सम्बन्ध है? इसका विशदरूपसे निरूपण किया गया है। इस प्रकारसे यह गीताशास्त्रका विशेष अभिप्राय है। बृहदारण्यकोपनिषद्में "अहं ब्रह्मास्मि" यह महावाक्य आया है। इसका ही पुष्पित एवं उपबृंहित अर्थ गीताशास्त्र है। अर्थात् समस्त गीताशास्त्रका निष्कृष्यत अर्थ "अहं ब्रह्मास्मि" है और प्रथमके छह अध्यायोंमें "अहम्" पदका निरूपण किया है।

जीवका वाच्यार्थ क्या है? लक्ष्यार्थ क्या है? और ईश्वर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पदका वाच्यार्थ क्या है ? लक्ष्यार्थ क्या है ? और इन दोनोंका परस्पर सम्बन्ध 'असि' शब्दसे ऐक्य प्रतिपादन करते हुए पर्यवसान कर दिया। इसलिए मनुष्य जब शोकाकुल होजाता है। अनेक प्रकारके शोक और मोहसे ग्रसित होता है तब उसे इस गीताके अध्ययन और गीताज्ञानकी आवश्यकता होती है। मैंने आपसे कहा था कि—गीताशास्त्रका उत्थान, आरम्भ (उपक्रम) वहाँसे होता है—"अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे"।

यह देवासुर-संग्राम हमारे हृदयमें प्रतिक्षण चल रहा है और तामसी वृत्तियों और आसुरी वृत्तियोंके नामसे कही जाती हैं। प्रतिक्षण उनकी प्रतिद्वन्द्विता और विरोध हमारे हृदयमें निरन्तर हुआ करता है। हमारे हृदयमें तामस वृत्तियाँ जिनको कहते हैं, सात्त्विक वृत्तियाँ भी इनको कहते हैं। शान्तिकारिकामें ईश्वरकृष्णने इसे संक्षेपसे दो विभागोंमें हमारी वृत्तियोंका विवेचन किया है।

"अध्यवसायो बुद्धिर्धर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्।
सात्त्विकमेतद्रूपं तामसमस्माद्विपर्यस्तम्॥

हमारे हृदयमें रह-रहकर दो प्रकारकी वृत्तियाँ तामस और सात्त्विक वृत्तियाँ सदा उदय हुआ करती हैं। जितनी भी सात्त्विक वृत्तियाँ हैं वे "धर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्" धर्ममें हमें जोड़नेवाली वृत्ति है। वह जो ज्ञानकी ओर, वस्तुतत्त्वकी ओर ले जानेवाली वृत्तियाँ हैं, वे तथा हमें संसारके भोगोंसे हटानेवाली, इसमें दोष-दर्शनपूर्वक उससे हटानेवाली हमारी चित्तवृत्तियाँ हैं। वे और

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दूसरा ऐश्वर्य है, स्वातन्त्र्य है कि किसीकी अधीनताको स्वीकार न करना वह ऐश्वर्य है। ये भी सात्त्विक वृत्तियाँ हैं। "सात्त्विकमेतद्रूपम्" "धर्मो ज्ञानं विराग ऐश्वर्यम्" धर्म, ज्ञान, विराग, ऐश्वर्य स्वतन्त्र ये जो चार वृत्तियाँ हैं, ये सात्त्विक वृत्तियाँ हैं और उनसे अतिरिक्त जो तामस वे कौन हैं? "तामसमस्माद्विपर्यस्तम्" अधर्मकी ओर प्रवृत्ति होनेकी इच्छाएँ और अज्ञानकी ओर झुकाव होना अनेक प्रकारके सांसारिक पदार्थोंकी ओर हमारी वृत्ति होना और हमारे अन्दर दीनताका भाव आजाना ये तामस वृत्तियाँ होती हैं। जब तामसका उद्रेक प्रबल होता है, तो सात्त्विक वृत्तियाँ दब जाया करती हैं और यही देवासुर-संग्राम है जो हमारे अन्दर अनवरतरूपसे चलता रहता है, तो जब इसमें मनुष्य मोहित हो अनर्थकी ओर प्रवृत्त होने लगता है। उस समय हमें गीताज्ञानकी आवश्यकता होती है। उस गीताज्ञानके द्वारा हम 'सत्' और 'असत्' का कर्तव्य मालूम करें कि कौन कर्तव्य है? कौन अकर्तव्य है?

संसारके पदार्थोंमें मोहित होकर हम बार-बार अनेक प्रकारके अनर्थ करते हैं और उन अनर्थोंकी जड़ हमारे हृदयमें प्रबलरूपसे हो जाती है। परिणाम यह होगा कि हम उसके चंगुलमें फँस जाएँगे। हमें कभी दैवी सम्पत्तिके उदयका अवसर नहीं देगा जब तामसी वृत्तियाँ अत्यन्त प्रबल हो जाएँगी तो सात्त्विक वृत्तियाँ दब जाएँगी। हमारी दशा क्या हो जायगी? वही दशा हो जायगी हमें अभी बहुत अन्दर घुसकर वस्तुतत्त्वकी खोज करनी है। हमें

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह देखना कि, वास्तवमें वह जो शोक-मोह जिसने इतने भारी भगवान् साक्षात् अन्तर्यामीको भी बोलनेके लिए प्रेरित किया, वह शोक और मोह जमकर बैठा हुआ है। छान्दोग्यमें एक श्रुति आती है कि—

"तद्यथापि हिरण्यनिधिं निहितमक्षेत्रज्ञा उपर्युपरि संचरन्तो न विन्देयुरेवमेवेमाः सर्वाः प्रजा अहरहर्गच्छन्त्य एतं ब्रह्मलोकं न विन्दन्त्यनृतेन प्रत्यूढाः"

हमें हृदयकी ग्रन्थिका अन्वेषण करना ह। हमारे इस अहं-भाव और ईश्वरभावके मध्यमें जो अन्धकार घुस गया है उसकी खोज हमें करनी है और उसे हटाकर इस अहंभावको ईश्वरभाव-के साथमें एक कर देना ही हमारा अन्तिम लक्ष्य है और वही कीलक है।

आपके घरमें खज़ाना पड़ा हुआ है आप उसके ऊपर घूम रहे हैं। परन्तु दाने-दानेके लिए मुहताज़ हैं। ग़रीब हैं। दूसरोंके पीछे एक-एक पैसेके लिए हाथ उठाये रहते हैं और आपके घरमें वह हिरण्यनिधि निहित है। परन्तु "अक्षेत्रज्ञाः नैनं विन्दन्ति" जो अक्षेत्रज्ञ है, जो क्षेत्रज्ञ नहीं है, जो क्षेत्रज्ञको नहीं जाननेवाले हैं। घरके अन्दर क्या निधि है। पिता हमें बताकर नहीं गये। ऐसी अवस्थामें अत्यन्त निधि होने पर भी वह दाने-दानेको मुहताज़ हुआ है। सचमुच यही हाल यहाँ पर भी हो रहा है कि, वह सुखराशी हमारे हृदयमें सदा विराजमान है कि जिस भगवानने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अपने श्रीकंठसे—श्रीमुखसे वर्णन किया है कि—

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ।।

गी० १०-२० ।

समस्त प्राणियोंका जो आत्मा है, वह है परमात्मा । तमाम उपाधियोंका, दोषोंका उसमें लेशमात्र गन्दगी उसके साथ नहीं है और वह प्रत्यग् वृत्ति जो ज्ञान है उसका साक्षीस्वरूप सदा विद्यमान है ।

आप देख रहे हैं कि शङ्ख बज रहा है । वीणा बज रही है । भेरी शब्द कर रही है । परन्तु आप कह सकते हैं कि ये शब्द कहाँ से आ रहे हैं । यदि आकाश न होता तो भेरी शब्द नहीं कर सकती थी । शङ्ख-वीणा आदि शब्द नहीं कर सकते थे । इस प्रकार से गीताशास्त्रका अर्थ उपक्रममें मालूम होता है कि शोककी निवृत्ति और पर्यवसान भी ईश्वरात्मभाव रहनेमें ही संसारमें सुखी जीवन व्यतीत होता है और अन्तमें "सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः" इसमें पर्यवसान करनेसे ही उसे निःश्रेयस यानी निरतिशय ज्ञानकी प्राप्ति होती है । अब समय मेरा समाप्त हो रहा है मैं इतना ही कहकर अपने वक्तव्यको समाप्त करता हूँ ।

❀ हरिः ॐ तत्सत् ❀

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् १०८ महामण्डलेश्वर स्वामी रामस्वरूपजी महाराज वेदान्ताचार्य (श्रीगुरुमण्डल आश्रम—हरिद्वार)

परम श्रद्धेय महामण्डलेश्वरजी महाराज! एवं उपस्थित महात्मवृन्द तथा भक्तिमती देविश्रो !

आज बड़े सौभाग्यकी बात है कि, यहां पर आकर मुझे आप सब महापुरुषोंके दर्शन हुए और साथ-साथ अपने विचार प्रकट करनेका अवसर मिला। ईश्वरकी अपार कृपा है और सबसे बढ़कर उस अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायकका धन्यवाद करना है कि, जिसने स्वामी पूर्णानन्दजी महाराजको सचमुच इतनी अपूर्वशक्ति प्रदानकी है कि स्वयं बीमार होते हुए भी ऐसी परिस्थितिओंके अन्दरसे गुजरते हुए भी लेकिन वेदान्त-सम्मेलनकी सच्ची निष्ठाका जो परिचय दिया। उसके लिए हम बार-बार धन्यवाद करते हैं इनके बलका—जिस बलके सम्बन्धमें उपनिषदोंमें कहा है—"न बलहीनेन आत्मा लभ्यः" उसका स्वरूप उनके अन्दर प्रत्यक्ष देखा जाता है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हमें दो-या-तीन महात्माओंके व्याख्यान सुननेको मिले हैं। वे बहुत सुन्दर थे। महापुरुषोंकी पवित्र वाणीसे कुछ न कुछ जरूर मिलता है। सुनानेकी अपेक्षा सुननेवाले अधिक लाभ उठाया करते हैं। यह स्वाभाविक बात है और इसी वास्ते हमारे उपनिषदोंमें एक मन्त्र आता है—"श्रुतं मे गोपाय" तैत्तिरीय उपनिषद्का अध्ययन करनेवाले वेदान्तके जिज्ञासु यहाँ बैठे हुए हैं। वहाँ यह मन्त्र आया है—"श्रुतं मे गोपाय" मैं सुनता हूं। लेकिन वह सुनी हुई चीज़ पाससे चली न जाय, अतः मैं उसका रक्षक हूँ। घी चाहे जितना पीजिये। लेकिन वह कितना हजम हो सकता है। यह विचारणीय है। जिह्वाका रस, कानका रस, यह वेदांत-सम्मेलनकी सच्ची व्याख्या नहीं बन सकती है। वेदांत-सम्मेलनकी सच्ची व्याख्या सचमुच—

"यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥"

के० उ० १–४।

जिसके द्वारा वाणीको सत्ता-स्फूर्ति प्राप्त होती है। वह पवित्र वस्तु, वह अमूल्य वस्तु, जिसके लिये बत्तीस-बत्तीस वर्ष ही नहीं कई दांतोंकी बत्तीसियोंका पीरियड् किया। ख्याल करना। वह विधि उसीके लिये कह रहा था कि—"श्रुतं मे गोपाय" भगवान् मुझे सुनानेकी आदत मत डालो। लेकिन जितना सुना है उतने-की पचानेकी शक्ति प्रदान करो। "श्रुतं मे गोपाय" इसीकी रक्षा करनेकी शक्ति दो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सज्जनो ! "वेदांत-सम्मेलन" का यह छठा अधिवेशन हो रहा है। भगवान्‌की कृपा है। सचमुच "षड्भावविकारा भवन्ति" वेदांतके ग्रन्थोंमें पढ़ा और सुना होगा। "अस्ति" "जायते" "वर्द्धते" "विपरिणामते" "अपक्षीयते" विनश्यति" ये छः स्टेज हैं। इनको पार करनेके बाद षड् ऋतुओंको पास करनेवाला सूर्य है। सचमुच वेदांतके द्यौ (आकाशमें चमका करता है। यह तो अपूर्वता ही है। परन्तु हम उसके अधिकारी किस रूपमें हैं। अभी मेरे सामने एक सुयोग्य महापुरुषने बताया था। अरे ! वेदांत कोई साधारण चीज़ नहीं है भैया वेदांत तो उद्गीथकी उपासना है। "ओमित्येकाक्षरमुद्गीथमुपासीत्" गीतको गीतके रूपमें ला सकोगे, तो हर चीज़, हर डिफिकल्टी, हर परेशानी, हर चीज़के अन्दर अपने आपको रख सकते हो—तो तुम्हारे लिए वेदांतका सच्चा स्वरूप प्राप्त हो जायगा।

हमें एक महापुरुषने बताया कि मनको मारो—"मैं तो उन सन्तोंका दास, जिन्होंने मनको मार लिया" संस्कृतमें 'मार' शब्द कामदेवको भी कहते हैं। "मदनो मन्मथो मारः, कामो हि मीन-केतनः" हमने मनको मारा है—कि "मार" ने हमें मारा है। याद रखो ! वेदांत हमें बताता है कि संसारमें कुछ छोड़नेकी वस्तु नहीं, और न कुछ पकड़नेकी जरूरत है। हजारों फाइलोंका निर्णय देनेवाला जज आकर अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है। उसके पास लाखों-करोड़ोंके मुकदमे आते हैं। उसको न किसीसे लेना है और न किसीको देना है। लेकिन करोड़ों व्यक्ति सारे उसके इशारेकी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तरफ देखते हैं। उसकी कलमकी नोक पर गुनाह हो जाते हैं कि वह क्या करता है। वेदान्त कहता है—ओ! इन्सान तू अपने आसनका अधिकारी बन। अपने पदका अधिकारी बन। अपनी जगह अपने स्टैन्डर्डको प्राप्त कर।

स्व-स्वरूपानुसन्धानकी कोटिमें आनेका प्रयत्न कर। अपना जो पद उस पर बैठनेकी कोशिश कर! दुनियाँकी दौलत तेरे चरणों-में आ जायगी। जज आकर जब कुर्सी पर बैठता है मुवक्किल (वादी-प्रतिवादी) आ जाते हैं, वकील आ जाते हैं। वकीलोंको आना पड़ता है। कलम घसीटनेवाले कितने पेशकार आ जाते हैं। फाइलोंके बन्डलके बन्डल आ जाते हैं। वह बैठा कुर्सी पर न्याय-निर्णय देता जाता है। न किसीसे लेना, न किसीको देना। तो जीवनको हम इस रूपमें ला सकेंगे। सुख और दुःखकी घाटियाँ आती हैं। हर तरहकी परेशानियाँ आती हैं। महात्माओंके पास हम सीखकर जाते हैं। सारी बातें सीखते हैं। "तरति शोकमात्म-वित्" ये सारी बातें सीखते हैं, सुनते हैं। परन्तु यदि घरकी परि-स्थितियां आती हैं, गेटसे निकलते ही तार मिलता है। सचमुच उस वक्त हम अपने आप घबड़ा उठते हैं कि अब क्या होगा? यह क्या हुआ? इस प्रकारकी स्थितियोंसे यदि आप विचलित नहीं हुए तो समझलो कि "श्रुतं मे गोपाय" की कोटिमें आप आ चुके। चलनीके अन्दरसे लाखों मन आटा निकल जाता है, परन्तु चलनी (चालनी) के हिस्सोंमें क्या बचता है? तो वेदान्त "सुश्रुत" है। मानसिक चिकित्साका एक अपूर्व ग्रंथ माना जाता है

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

और उस ग्रन्थकी भेदक ग्रन्थियोंके नाश करनेके लिये आवश्यकता है। उस ग्रन्थके स्वाध्याय करनेकी आवश्यकता है। स्वाध्याय शब्दही बतलाता है कि जिस चीजके ऊपर तुम्हारा अधिकार बन सके "स्वस्य अध्ययनं इति स्वाध्यायः" जगत्की किताबें पढ़नेकी अपेक्षा जगत्की किताबें हैं अपने सीनेमें उसके जाइज बात जो--जो दुनियाकी किताबोंमें लिखी हुई बातें हैं। इन्सान तेरे स्वयंके अन्तर्गतही सब आ जाती हैं।

दुनियाकी मेडिशन है। दुनियाकी अलमारियाँ भरी पड़ी हैं। सब कुछ है। परंतु तेरे लिये क्या है। अगर जीवनमें स्व-स्वरूपानुसंधानकी तरफ चल सकते हैं तो हम कहेंगे कि सचमुच हमारा यह "वेदान्त-सम्मेलन" एक अपूर्व वस्तु देकर जा रहा है। जो जीवनके अन्दर वर्षभरमें लिये नहीं। मैं कहता हूँ कि जो इसका जितना अधिकारी बन सके अपने जीवनका कल्याण कर सकता है।

सुननेवालो! महापुरुषोंने और सुनानेवाले महापुरुषोंने इन चीजोंको आपसे बताया। आत्मा-परमात्मा-जीव-प्रकृति-ईश्वर, ये क्या चीज़ें हैं। ये तो भाई! वेदांतकी प्रक्रिया (प्रणाली) के अंतर्गत आती हैं। "पाशबद्धो भवेज्जीवः, पाशमुक्तः सदा शिवः।" ये तन्त्रकी व्याख्याओंमें प्रकरण आते हैं। जैसे कि पञ्चदशीकारने कहा है--

अविद्यावशगस्त्वन्यस्तद्वैचित्र्यादनेकधा ।

सा कारणशरीरं स्यात्प्राज्ञस्तत्राभिमानवान् ॥

पञ्च० तत्त्ववि० १७।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह वेदांतकी प्रक्रिया बताई है। अंतःकरणावच्छिन्नं चैतन्यं जीवः, मायावच्छिन्नं चैतन्यं परमेश्वरः। इन सब चीज़ोंका मनन करना है सुनना एक प्रकारका भोजन है। उसको पचानेकी भी हमें शक्ति चाहिए। गाय भी घास खाती है। लेकिन खाती है एक घंटा तो उसका रोमन्थ (जुगाली) करती है चार घंटे। अर्थात् चार घंटेमें पचाती है। वेदांत-संमेलनसे जो टानिक ले जाते हैं, क्या वर्ष-भरकी खुराक ले जाते हैं? और इस वर्ष-भर कोई एक्सपरिमेंटके लिये आपको तीन सौ साठ दिनका समय मिलता है। उस जीवनके अन्दर सचमुच "वेदांत-सम्मेलन" याद आता है। घरकी कोई परिस्थिति है या कोर्टकी कोई परिस्थिति है, नौकरकी कोई परिस्थिति है या अपने घरके वातावरणकी कोई परिस्थिति है – तो आप उस समय आपसकी यह भावना है—"न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः" तो कहना होगा कि हम वेदांतके शिखर पर पहुँच गये। मनको मारना एक ही शब्द कहूँगा, भागवत्के अन्दर भगवान् श्रीकृष्णका कालियामर्दनका आख्यान वह हमें इशारा देता है कि जगत्का सच्चा वेदांती, जगत्के अन्दर रहकर सबसे बड़ा कार्य करनेवाला, कार्यको कराते हुए भी वेदांती बननेवाला, क्रिया कोटि-में आकर वेदांतको अपनानेवाला गीता जैसे ज्ञानकी निधिको देनेवाला वेदांती भगवान् श्रीकृष्ण, लेकिन रूप पहले मुरलीका नाम शुरू करता है। कहीं मुरली बजाता है, पर बजाता है किसके ऊपर? मुरलीका तार और सुर-संधान वह संगीत शुरू कहाँ पर किया गया था। याद रखो महाभारतमें तो पाञ्चजन्य अध्वान

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

किया गया था। बजाया गया था। परन्तु कालियानागके ऊपर बैठकर सचमुच भगवान्ने मुरली बजाई थी। शरीरके भीतर जीवनके अन्दर चित्तकी अनेक स्थितियाँ आती हैं। चित्तके अनेक रूप आते हैं—"कामः संकल्पो विचिकित्सा श्रद्धाऽश्रद्धा धृतिऽधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतसर्वं मन एव" बृ० १-५-३।

ये सब मनके अन्दर आते हैं। पर इस अनन्तताको सचमुच इन परिच्छेदोंके भेदोंको अभेदमें पर्यवसित कर देना, इन अनन्तताओंका नाश करके अनन्तकी व्याख्या प्राप्त करना इसके लिए हमें बताया है कि मनकी आवश्यकता है। मनके मारनेकी आवश्यकता है और मारकर उसे महान् बनानेकी आवश्यकता है। सोना है, खरा है, कीमती है। पर, पहनोगे तो बात दूसरी है। यदि खाओगे तो पेट फट जायेगा। याद रखो! पर सोनेको मारकरके और युक्तिसे स्वर्णभस्म बनाकर प्रयोग करोगे तो वह एक टानिक बन जाती है। पुष्टिदायक वस्तु बन जाती है।

वेदान्त हमें बताता है कि आप संसारसे बाहर नहीं जा सकते। पर, संसारको अपने अन्दर लानेकी कोशिश करो। इन्सान दुनियाके प्रचार-प्रसारको मत रोक तू अपने विचारोंको नियन्त्रित करनेकी कोशिश कर। "अथातो ब्रह्मजिज्ञासा" ये शब्द ही हमें बताते हैं कि ब्रह्मका अस्तित्व है और उसमें त्रिकालाबाध्यत्व है। जिस प्रकार हमारे स्वामी अमरभारतीजीने बताया कि दृश्यमान के लिए अगर अस्तित्वकी स्वीकृति माननी पड़ती है तो इसी प्रकारसे चर्मचक्षुओंके द्वारा नहीं। परन्तु मर्मदृष्टिके द्वारा प्रतीय-

Arya Vijay Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मानवस्तु या अनुभूयमान जो है, उनकी सत्ताके लिए ऐसा नहीं कह सकते कि वह नहीं है। आपामर प्राणी, मूर्खसे लेकर विद्वान् तक दुनिया के बड़े-बड़े लोग जो हैं, वे सब इसकी सत्ताको स्वीकार करते हैं। जैसे कि कहा गया है कि—

इयमात्मा परानन्दः परप्रेमास्पदं यतः।
मानभूवं हि भूयासमिति प्रेमात्मनीक्षते ॥

हरेक पशुपालन करनेवाला ग्वाला, वह भी यह कहता है कि मेरा अस्तित्व है। तब उस अस्तिताके अन्दर उसने जो अपना स्वरूप प्रकट किया है वह शास्त्र कहता है यह नहीं है। अपने आवरणोंको दूर करते हुए पञ्चकोश विवेचन प्रणालीके द्वारा तुम अपने आत्मस्वरूपका परिचय प्राप्तकरो। हम संसारके अस्तित्वका लोप नहीं कर सकते और न लोप करनेकी आवश्यकता ही है। संसार किसीको बड़ा नहीं है। सूर संसारमें रहा है। तुलसी संसार में रहा है। भगवान् श्रीशङ्कराचार्य अपनी अनुभूतिका संबल (रास्तेका भोजन, साधन आदि जिसके भरोसे कोई काम किया जाय) लेकर अपनी कूची (रास्ते) का संबल लेकर एक बद्रीनाथ-केदारनाथसे लेकर कन्याकुमारी तक भ्रमण ही करते रहे। परन्तु भ्रमणकी भी एक शैली है।

दूधमें मक्खन है। तरीकेसे मन्थन द्वारा पदा किया जाता है। फिर आप इसे लस्सीमें फेंको, चाहे पानीमें फेंको। परंतु फिर नहीं मिल सकता। जीवनके अन्दर अपना ढर्रा बदलनेकी बात है। अपनी धारा बदलनेकी बात है। वेदान्त तुम्हें यह नहीं बताता कि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तुम दुनिया छोड़कर चले जाओ। वेदान्त बताता है कि अपने विचारोंको केन्द्रित करनेकी कोशिश करो। आज दुनियाके अन्दर स्रष्टा बननेकी बीमारी लगी हुई है। हरचीजके लिए अपने आपको स्रष्टा बनाते हो। इसको छोड़कर इन्सान द्रष्टा बननेकी कोशिश करे। "साक्षी चेता: केवलो निर्गुणश्च।" अगर यह बन सकेगा, तो कहना ही होगा, कि तुम्हें सच्ची शान्ति प्राप्त होगई।

मिथिलाके अन्दर आग लग रही है। ख्याल करना वेदान्तका ज्ञाता, बापके वेदान्तको धिक्कारता हुआ, बापके वेदान्तकी हँसी उड़ाता हुआ वहाँ पहुँचता है। भगवान् वेदव्यासने कहा—शुक जाओ! लेकिन तुम्हारे वेदान्तका जो तुम्हें ज्ञान है, इस ज्ञानके ऊपर जाओ। किसी गुरुकी मुद्रा (मुहर) लगवा आओ। ऐसे किसी महापुरुषकी, जो धौले कपड़ेके अन्दर सन्त हो। उसके पास जाकर देख कि तेरा वेदान्त किस प्रैक्टिकलके रूपमें है। यह घटना सत्य है। विचारणीय है। हमें इशारा दे रही है, संसारकी अनेक प्रकारकी परिस्थितियोंके अन्दर रहते हुए संसारकी अनेक उपाधियोंके अन्दर रहते हुए जो सदा सचमुच शान्तागार बन सकता है, तो कहना होगा कि वेदांत उसी सिद्धांतको बतलाता है। चौबीस अवतार लेनेवाले विष्णुको हम ब्रह्म कहते हैं। "वेवेष्टि विश्वमिति विष्णु:" उसकी व्याख्या विद्वान् लोग इस प्रकार किया करते हैं। पर वह ब्रह्म, वह विष्णु, वह परमात्मा अनेक उपाधियों के साथ रहते हुए भी, लेकिन अपने आप स्वयं निरूपाधिक माना जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इस चीज़को, इस सनातन सत्य सिद्धान्तको समझनेके लिए वेदव्यासने अपने पुत्र शुकदेवको राजा जनकके पास भेजा था। जनक महात्मा शुकदेवकी लम्बी-लम्बी व्याख्याएँ और वेदान्तकी अपूर्व चर्चाएँ सुनता है और सुननेके बाद एक अपूर्व घटना घटती है कि मिथिला नगरीमें आग लग जाती है। लगनेके बाद अग्नि जलते-जलते "ड्योढ़ी" (दरवाज़े) तक आजाती है। शुकदेव किसी चीज़को देखता है और देखनेके बाद थोड़ा बाहर जाना चाहता है। राजा जनक पूछते हैं—ऋषिराज कहाँ पधारे ? राजन्! मालूम नहीं, मिथिलामें आग लग रही है और मेरा दण्ड-कमंडलु बाहर दरवाज़े पर पड़ा हुआ है, लेने जा रहा हूँ। धन्य हो वेद-व्यास ! जिन्होंने वेदोंका व्यास किया है। मेरे पास शुकको भेजने की क्या आवश्यकता थी। इशारेमें समझाया। विद्वान् लोगोंकी व्याख्याएँ किसी सीमा तक हुआ करती हैं। स्पष्ट वावदूकता (बहुभाषिता) का परिचय नहीं दिया करते। जनकने एक ही वाक्यमें कहा कि—

> अन्तवत्तु हि मे वित्तं यन्मे नास्ति हि किंचन।
> मिथिलायां प्रदग्धायां न मे दह्यति किंचन॥

तात्पर्य क्या कि संसारमें रहते हुए संसारकी हरएक परिस्थिति का मुकाबला करते रहो और अपने आपको असङ्ग रखते रहो। तभी हम अपनी भूमिका पर आरूढ रह सकते हैं। चित्तवृत्तिकी भूमिकाओं पर अधिकार प्राप्तकर सकते हैं। संसार बनता है। बनेगा, बिगड़ता है और बिगड़ेगा। फिर बनेगा फिर बिगड़ेगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह क्रम तो चलता ही रहता है। "वेदान्त-सम्मेलन" इस पवित्र अध्वरके अन्दर यह यज्ञ है। पर याद रखो। गंगा स्नानके साथ-साथ मानसी गङ्गाका स्नान भी करनेके लिए आये हो। कुछ यहाँसे लेनेके लिए आये हो। कड़वी तूम्बी बनकर अगर गङ्गाकी यात्रा करनेके लिए आये हो तो "वेदान्त-सम्मेलन" की अमृतमय पवित्र वस्तु भी आपको आनन्द नहीं दे सकती।

इसलिये अपनी आत्माका प्रक्षालन करना है। शोधन करना है। आत्मशोधन नहीं, बल्कि मन शोधन करना है। आत्मा तो सदा ही स्नात और शुद्ध है। वेदान्त-सम्मेलनके इस पवित्र आयोजनमें जिसकी अध्यक्षता श्रीस्वामीजी बीमार होते हुए भी कर रहे हैं। इसका एक-एक कण यानी ज्ञानका एक-एक कण चुनेंगे और चुनकर अपने जीवनको सत्य संकल्प और सत्य-सनातन बना सकते हैं। इतना कहते हुए मैं अपने वक्तव्यको यहीं पर समाप्त करता हूँ।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

आचार्य नरहरि भट्ट (कनखल)

विहंगमावलोकन

"पूर्ण–ज्ञान–प्रवाह–परिमल"

सम्प्रति विश्वके विश्व-दार्शनिकोंकी दृष्टिमें—पूर्ण-आनन्द,—पूर्ण-सुख, पूर्ण-शान्तिका केन्द्र स्थल भारतीय-संस्कृति है। जिसका मूलाधार वेद-वेदांत है। जिसमें ज्ञान-विज्ञानका निरन्तर निर्मल-प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। अतः गौरव-सौरभसे सुरभित एवं अपनी महनीय महत्ताके कारण यही शास्त्रीय सु-संस्कार—संस्कृत—संस्कृति विश्वमें "कल्याणमय" "आनन्दमय" "शान्तिमय" सन्देश प्रदान कर सकती है, ऐसा निश्चित निश्चय है।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥
॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

परमादरणीय, तपःपूतः, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, महात्मवृन्द! वेद-वेदान्त-अध्ययन-अध्यापन-रतगण, विद्वन्मण्डल!!

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आत्मज्ञानके परम अभिलाषुक, साधनसम्पत्सम्पन्न, शुद्ध-सत्त्वसाधक, सद्गृहस्थनिकर !!!

गार्गी एवं मैत्रेयीके समान ज्ञानके उत्कट जिज्ञासु-माताओ और बहिनो !!!!

आजका महान् पवित्र दिन है। जिसको मनानेके लिये देश-देशान्तरसे सपरिवार किसी पुण्य विशेषसे प्रेरित होकर आप यहाँ आये हैं। देशविशेष, कालविशेष और स्थान-विशेषके शुभदर्शनसे भी मानवके अन्तःकरणमें एक महान् अपूर्व उत्पन्न होता है। वह अपूर्व, अपूर्वान्तरका जनक होता हुआ पुण्यविशेषका आधायक होता है।

उत्तराखण्डकी यह पवित्र भूमि "देव-भूमि" कहाती है। जिस भूमि पर पैर रखनेसे ही शान्तिका संचार समस्त शरीरमें होने लगता है। पर्वत-मालाओंसे आच्छादित तपःप्रधान भूमि, उसकी उपत्यका, अधित्यका, दरी, गह्वर, मठायतन, मन्दिर एवं वारि-प्रवाहके उपकंठमें समासीन-समाधिस्थ साधु, महात्मा, योगाङ्गा-नुष्ठानतत्परयोगी, तपोनिष्ठ-तपस्वी, वीत-राग, समदर्शी, आत्मा-राम, वेद-वेदान्त-पारङ्गम-ब्रह्मवेत्ता इस समय भी दृष्टिपथ पर अवतरित होते हैं।

सुरनिम्नगाका सुशीतल, सुस्वादु, सुमधुर, सुरम्य, स्वच्छ अमृतोपम निर्मल वारि-धारासे तटप्रान्त निखिलजन-मन-रञ्जनका अनुपम, चित्ताकर्षक साधन बना हुआ है। इसका नाम 'त्रिपथगा' भी है लिखा है—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

क्षितौ तारयते मर्त्यान्नागांस्तारयतेऽप्यधः ।
दिवि तारयते देवांस्तेन "त्रिपथगा" स्मृता ॥

यह गंगाजी पृथ्वी लोकमें मनुष्योंको तार देती है। पातालमें रहनेवाले कद्रूसे उत्पन्न कश्यपके वंशज जीवोंको भी तार देती है और स्वर्गस्थ देवोंका भी कल्याण करनेवाली है। कहाँ तक प्रशंसा-की जाए। इसके साक्षात् दर्शन-स्नानसे मनुष्यके कई जन्मोंके कठोर कल्मष भी धुल जाते हैं। लिखा है—

गंगा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥

प्रत्यक्ष दर्शन-स्नानका तो महत् फल है ही पर सैकड़ों योजन दूरसे भी जो श्रद्धापूर्वक स्नान-समयमें गंगा-गंगा—इस प्रकार शब्दोच्चारण करता है, वह सर्व पापोंसे मुक्त होकर विष्णुलोकको प्राप्त कर लेता है।

आप बड़े धन्यभाग्य हैं। साक्षात् दर्शन-स्नानसे तो अपूर्व पुण्य प्राप्त किया ही है। दूसरा महत्तम गंगा-स्नानका दृष्ट फल यह है कि—वेद-वेदान्तपारग महात्माओंके साक्षात् दर्शन एवं उनके सुन्दर, मनोहर, अध्यात्मज्ञानसे परीत प्रवचनोंको श्रवण करनेका कल्याणप्रद यह शुभ-अवसर सम्प्राप्त हो रहा है। ऐसा स्वर्णावसर भी बड़े ही भाग्यसे समुपलब्ध होता है। अस्तु। अब मैं आपके सम्मुख—"विश्व शान्तिमें भारतीय संस्कृतिका महत्त्व" इस विषयमें अपने समुचित-शास्त्रीय विचार रखना चाहता हूँ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आज संसारके समस्त दार्शनिक भारतीय संस्कृतिकी अनुगामिता अङ्गीकार करते हैं—इन सब बातोंको विशदरूपसे अधस्तन संदर्भसे अच्छी प्रकार समझ सकेंगे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विश्व-शांतिमें भारतीय संस्कृतिका महत्त्व

सा हित्य, सरोवर-सरसिज-सरिस, सरस सहृदय बन्धुओ !

१—संस्कृतशब्द-विमर्श

भारतीय संस्कृति शब्दके श्रवणमात्रसे ही सरस-सचेत मानव-हृदयमें एक अलौकिक प्रकारके मानसिक शान्तिका प्रवाह प्रवाहित होने लगता है। इसका एकमात्र कारण यही है कि, शब्द अर्थके प्रकाशक तथा वाचक होते हैं। इस विषयमें मीमांसकोंकी यह सम्मति है—"शब्दार्थयोर्नित्यः सम्बन्धः" मीमांसक शब्द और मर्थके सम्बन्धको नित्य कथन करते हैं। "शब्दप्रत्यक्षानन्तर-मर्थबोधस्य सर्वानुभवसिद्धत्वात्" प्रथम शब्दका व्यक्तीकरण पश्चात् अर्थका अवबोध होता है। यह सर्वानुभवसिद्ध सिद्धान्त है। धर्म-अर्थ-काम-मोक्षाख्य पुरुषार्थरूप सम्पत्ति भी शब्दार्थ विज्ञानके अधीन माना है और शब्दार्थका विज्ञान भी शक्तिज्ञान-के अधीन कहा गया है। यह निर्विवादसिद्धान्त सर्व-सम्मत है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बिना सम्बन्धके शब्द अर्थका ज्ञान नहीं करा सकता, किन्तु सम्बन्ध विशेषके द्वारा ही अवबोध करा सकता है—जैसे—धूम और वह्निका साहचर्य्य व्याप्ति सम्बन्ध प्रसिद्ध है। अतः हम धूमको देखकर अनुमानके द्वारा अग्निका ज्ञानकर सकते हैं। फलतः यह आया कि शब्द एवं अर्थका कोई विशेष सम्बन्ध है, जिसके द्वारा शब्द अर्थका अवबोध करवाता है, इसीका नाम शक्ति है। शक्तिरूप सम्बन्धको कुछ दार्शनिकोंने तादात्म्य माना है। तादात्म्य सम्बन्ध द्वारा ही शब्द अर्थका ज्ञान करवा सकता है। यही कारण है कि 'गुड़' शब्दका उच्चारण करते ही मुखमें पानी आने लगता है। कहनेका अभिप्राय यह है कि शब्द और अर्थका तादात्म्य होनेसे शब्द अर्थका व्यक्तीकरण करवाता है तथा अर्थमें उसके गुण व धर्म्म विद्यमान होते ही हैं। अतः उसका अन्तःकरण पर प्रभाव पड़ना सर्वथा सर्वदा संगत ही है। यही कारण है कि, भारतीय संस्कृति शब्दके उच्चारण करते ही भारतीय संस्कृति पदार्थकी उपस्थिति होती है तथा उस भारतीय संस्कृति पदार्थका स्मरण होते ही भारतीय संस्कृति पदार्थमें मानसिक शान्तिकी जनकता होनेसे प्रत्येक भावुक-सचेत पुरुषको एक विलक्षण शक्तिका अनुभव होता है। वह शक्तिरूप सम्बन्ध भी दो प्रकारका है। एक रूढ़ि और दूसरा व्युत्पत्तिलभ्य। जिन शब्दोंका व्युत्पत्तिलभ्य अर्थके साथ सम्बन्ध नहीं होता वहां पर वह शब्द रूढ़ि द्वारा ही उस अर्थका ज्ञान करवाता है—जैसे घट शब्द "कम्बुग्रीवादिमान्' घड़े अर्थको। परन्तु भारतीय संस्कृति

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शब्दमें यह बात नहीं है। इसमें उस शब्दकी व्युत्पत्ति ही भारतीय संस्कृति शब्दके अर्थको उसमें निहित रखती है। अब हमें सर्व-प्रथम यह विचार करना है कि, वह कौनसी व्युत्पत्ति है जो कि भारतीय संस्कृति शब्दके अर्थको उसमें अन्तःस्यूत किये हुए है, तथा उसीके द्वारा भारतीय संस्कृति शब्दका वास्तविक अर्थ भी स्वतः मालूम करना है अतः "सम" उपसर्गपूर्वक "कृ" धातुसे भूषण अर्थमें 'सुट्' आगमपूर्वक क्तिन् प्रत्यय होनेसे "संस्कृति" शब्द निष्पन्न होता है तथा 'भारत' शब्दसे 'भारते भवाः' इस अर्थमें शैषिक 'छ' प्रत्यय और 'ईय' आदेश करनेसे 'भारतीय' शब्द निष्पन्न होता है, पुनः दोनों शब्दोंका कर्मधारय समास करने पर-"भारतीया चासौ संस्कृतिः"—'भारतीय-संस्कृतिः' तथा षष्ठी समास द्वारा इस प्रकार कर सकते हैं—भारते भवाः जनाः भारतीयाः तेषां संस्कृतिः—"भारतीय संस्कृतिः" अर्थात् वैदिक सनातन धर्म पर आधारित रहनेवाली लौकिक-पारलौकिक सर्वाभ्युदय कारिणी-पुरातनतमा आर्य्य परम्परा विश्वकल्याणकारिणी भारतीय संस्कृति। इसीका दूसरा अर्थ "परिशुद्ध-व्यवहार" यही इसका फलितार्थ है। यह भारतीय व्यवहार सर्वत्र परिस्फुट दीख पड़ता है जैसे—सर्वत्र विश्वमें चार पुरुषार्थ मन्तव्य हैं, "धर्म-अर्थ-काम तथा मोक्ष" इन सब साध्योंको साधनेमें भारतीय संस्कृतिही परम साधन है। विना साधनके साध्य (उद्देश्य) वस्तुकी सिद्धि नहीं हो सकती, यह निर्विवाद सर्वसम्मत समीचीन सिद्धान्त है। इस वसुमती वसुन्धरामें प्रत्येक मानव संस्कार-संस्कृत बुद्धिके अनुरूप

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ही साधन सामग्रीको अपनाकर साध्य वस्तुकी सिद्धिमें अहर्निश व्यापृत देखनेमें आता है। संस्कार-वैचित्र्यसे बुद्धि-वैचित्र्य और बुद्धि-वैचित्र्यसे आदान-प्रदान-व्यवहार-वैचित्र्य, यह निसर्गसिद्ध है। आस्तिक एवं धार्मिक व्यक्ति धर्म-कर्मको प्रधान मानकर दान धर्मादिको अपनाता है। अर्थलिप्सु अर्थोपार्जनही सुख-शान्तिका साधन समझता है। काम-परायण पुरुष कामासक्त होकर उसीकी पुष्टि करता है और मुमुक्षु मोक्षका अर्थी बनकर तदनुकूल समस्त सामग्रीका संकलन करता है। ये पुरुषार्थ चतुष्टय हैं। इनसे अतिरिक्त और कोई पुरुषार्थ दृष्टिगोचर नहीं है। प्रथम कहा गया है कि, संसारमें प्रत्येक मानव रुचि-वैचित्र्यवशात् किसी-न-किसी पुरुषार्थको अपनाकर सुख-शान्तिका अनिशं अनुभव करता है। ये पुरुषार्थ प्रत्येक राष्ट्रकी अपनी संस्कृतिकी विशेषताके परिचायक हैं।

२—भारतीय संस्कृतिका आधार

वह सुसंस्कृत-चित्ताकर्षक प्रासादभवन अधिक सुदृढ एवं चिरस्थायी रह सकता है, जिसके निर्माता निर्माण-निष्णात, सुदूरदर्शी एवं सुशिक्षित हों। ठीक इसी प्रकार वह राष्ट्र चिरजीवी, समुज्ज्वल, समादरणीय एवं वन्दनीय होता है; जिसकी सनातन-सर्वाङ्गीण सुन्दर सुसंस्कृत संस्कृति सुरक्षित होती है। प्रत्येक राष्ट्रकी अपनी संस्कृति पृथक्, उसके धर्म-ग्रंथ, रीति-नीति और मौलिक सिद्धान्त भी पृथक् होते हैं। धर्म-ग्रंथोंके आधार पर संस्कृतिका निर्माण और संस्कृतिके निर्माणसे सभ्यता-आचार-विचार, बोल-चाल, वेश-भूषा, रहन-सहन, भक्ष्याभक्ष्य, धर्मनीति,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

राजनीति, कूटनीति, प्रजाधर्म, गुरु-शिष्यधर्म, नर-नारीधर्म, अतिथिधर्म, वर्णव्यवस्था, ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-वानप्रस्थ-संन्यास आश्रमचतुष्टय आदिके धर्म आधारित रहते हैं।

आज संसारके लोगोंकी विचारधारा प्रत्येक क्षणमें परिवर्त्तित दृष्टिगोचर होती है। तर्क एवं विज्ञान प्रधान प्रत्येक राष्ट्रके समुन्नति-की मीमांसा पद-पदमें की जा रही है। राष्ट्रके कर्णधार वैज्ञानिक गवेषणा द्वारा अपने राष्ट्रकी संस्कृतिको बदल देनेमें समुद्यत हैं। तर्क एवं युक्तिप्रधान कृत्स्न राष्ट्र अभ्यस्त उत्पथ मार्गको विभ्रष्ट कर सर्वजनप्रिय राजमार्गका निर्माण करना चाहता है और धर्म-प्राण राष्ट्रका प्रत्येक जन यह कहता है—"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय"—हम असन्मार्गके पथिक न बनें अपितु सत्य सनातन वैदिक मार्गका अन्वेषण करें। आपातरमणीय-अज्ञानावृत मार्गके पथिक न होकर, दिव्य आलोककी ओर बढ़ें। जो सनातन अनादि वैदिक सुसंस्कृत संस्कृति, वेद जिसका आधारभूत है और जहाँ सच्चारित्र्य एवं चरित्र-निर्माणकी ही मुख्य शिक्षा-दीक्षा दी जाती है। जिसमें वितण्डावाद-जल्पवाद-मिथ्या-वाद आभासवाद-हिंसावाद-भौतिकवाद और फ्यॉशनपरस्तीवादकी गन्ध भी नहीं है।

जिनके उपजीव्य धर्म-ग्रंथोंमें मिथ्यावाद-हिंसावाद-अनीश्वर-वाद-क्षणिकवाद-अहंकारवाद-ममकारवाद-काम-क्रोध-लोभ-मोह परिवर्द्धक अभिनव कल्पित-भौतिक फ्यॉशनपरस्तीवादको महत्त्व दिया गया हो और उन पर आधारित रहनेवाली असंस्कृत

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

संस्कृतियोंसे शान्तिवाद-साम्यवाद-एकात्मवाद और आध्यात्मिक-वादकी आशा करनी मानों आकाशमें अट्टालिका निर्माण करना, गम्भीरगगनमें कुसुमके गमले रखना, पाषाणप्रचुर प्रांतमें प्राणीके लिये खाद्यको उपजाना, ऊषर-असम अवनिमें शीतल-निर्मल नीर-के सरिताकी अनघड़ भ्रान्ति-संभिन्न कल्पना करनी है। जो भौतिकवाद वैज्ञानिक परिच्छदको धारणकर ऍटमबम, उद्जनबम एवं मृत्युकिरण निर्माण द्वारा परराष्ट्रको स्वराष्ट्र बनाना चाहता है। परसम्पत्तिको अपनी बनाना चाहता है। उपमर्दोपमर्दक भावाकलित काम-क्रोध-लोभकी दूषित भावनासे अभिभूत हो दूसरे-के भव्य भवनको भस्मीभूत कर अपने सद्मको सुसज्जित सुसम्पत्-सम्पन्न करनेकी भावनावाला राष्ट्र और उनकी संस्कृति यदि विपुल विश्वमें शान्तिका साम्राज्य एवं साम्यवादकी सद्भावना रखता है—तो वह अर्वाक्रूक् राष्ट्र अपने आपको वञ्चित करता है और "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:" त्यागभावसे ऐश्वर्यका उपभोग करें। "मा गृध:कस्यस्विद्धनं" किसीकी सम्पत्तिको देखकर मत ललचाओ। "वसुधैव कुटुम्बकं" समस्त संसार ही मेरा अपना परिवार है। "सर्वे भवन्तु सुखिन:" समस्त प्राणी सुखी हो जायँ। "समाना हृदयानि व:" हमारे मानसिक भाव समान हों। "संगच्छध्वं संवद-ध्वम्" हम मिलकर चलें और हमारी बोली-भाषा एक हो। "स्वस्ति पन्थामनुचरेम" हम कल्याणमार्गके पथिक बनें। "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे" हम सब परस्पर मित्रकी दृष्टिसे देखें। "सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु" सब दिशाएँ अथवा दिशावर्त्ती सब जीव-जन्तु

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हमारे मित्र बन जाएँ इत्यादि सारगर्भित वैदिक एवं व्यापक संस्कृतिकी सद्भावनासे सर्वथा विरुद्ध है।

अर्वाचीन समयमें विश्वमें संस्कृतियोंकी बहुलता है परन्तु विशेषरूपसे पांच ही संस्कृतियां व्यापकरूपसे स्थित हैं। इनके अपने सिद्धान्त-सभ्यता-रीति-नीति, बोली-भाषा, परिच्छद (पोषाक) रहन-सहन, आचार-विचार विभिन्न एवं व्यापकरूपसे विद्यमान हैं। भारतीय संस्कृति, पाश्चात्य संस्कृति, बौद्ध संस्कृति, इस्लाम संस्कृति और यूनानी संस्कृति जिसको हम पाश्चात्य संस्कृतिके अन्तर्भूत कर सकते हैं। इनसे अतिरिक्त जैन और सिक्ख संस्कृति भी भव्य भारतके एक देशमें व्याप्य एवं संभिन्न रूपसे स्थित है। क्योंकि इसके बहुत-से सिद्धान्त हमसे मिलते-जुलते हैं। अब संक्षेपसे निर्दिष्ट संस्कृतियोंका परिचय, उनके संस्थापक एवं प्रमुख दार्शनिकोंका दिग्दर्शन किया जाता है।

१—भारतीय संस्कृति

यह वैदिक संस्कृति विश्वविख्यात है। इसका आध्यात्मिकवाद सर्वजनीन और प्रशंसार्ह है। इसमें ये दार्शनिक सार्वभौम समस्त संसारमें उच्च आदर्श रखते हुए अपनी संस्कृतिके अलंकृति रूप हैं। औपनिषत्क-वामदेव, प्रवाहण, जाबालि, उद्दालक-आरुणि, मनु, याज्ञवल्क्य, कपिल, पतञ्जलि, गौतम, कणाद, जैमिनि, बादरायण और आचार्य शंकर।

२—पाश्चात्य संस्कृति

यह ईसाई संस्कृति कहलाती है। इसके प्रवर्त्तक ईसामसीह

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

थे। आप बाईबिल धर्मग्रन्थके प्रणेता एवं अच्छे दार्शनिक थे। आपका यह सिद्धान्त था कि, कोई एक गाल पर चाँटा मारे तो उसके सामने दूसरा भी गाल सम्मुख कर देना चाहिए। आज विश्वमें इनकी संस्कृति व्यापकरूपसे देखनेमें आती है। इसके सम्बन्धमें एक जनश्रुति सुप्रसिद्ध है कि इनके राज्यमें सूर्यका अस्त नहीं होता है। पाश्चात्य विश्वविख्यात दार्शनिक ये हैं— भौतिकवादी हाप्सटौलेण्ड, विज्ञानवादी स्पिनोजा, साम्यवादी जान लॉक बुद्धिवादी स्कार्थ, विज्ञानवादी वर्कलेकाण्ट, तृष्णावादी शोपनहर, भौतिकवादी कार्लमार्क्स, सन्देहवादी हिजूम, विज्ञानवादी हीगेल, द्वैतवादी विलियम जेम्स, मानवतावादी श्रोशस, विकासवादी चार्ल्स डार्विन, आदर्शवादी देकार्त्ते, परमाणुवादी लाइवमिट्स, एवं राजतन्त्रवादी फिक्टे ये अपने समयके अच्छे दार्शनिक हुए हैं।

३—बौद्ध संस्कृति

यह बौद्ध संस्कृति भी विश्वमें व्यापक रूपसे स्थित है। इसके प्रवर्त्तक भगवान् गौतम बुद्ध हैं। इनके चार प्रधान शिष्य हुए। बाह्यार्थ प्रत्यक्षवादी वैभाषिक, बाह्यार्थानुमेयवादी सौत्रान्तिक, विज्ञानवादी योगाचार, और शून्यवादी माध्यमिक। इनका अहिंसावाद विश्व-विख्यात है। इसमें—वर्द्धमान, धर्मकीर्ति, महावीर, नागार्जुन, वसुबन्धु असंग, स्थिरमति, दिङ्नाग, धर्मपाल, भावविवेक, बुद्धपालित, चन्द्रकीर्त्ति, मैत्रेयनाथ ये दार्शनिक प्रसिद्ध हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

४—यूनानी संस्कृति

यह यूनान राष्ट्रकी संस्कृति है। किसी समय इनकी अति उत्कर्षता थी, परन्तु अर्वाचीन समयमें इनका परिगणन पाश्चात्य लोगोंके साथ ही किया जाता है। इसमें—थैलीज अनैक्सिमैन्डर, एनैक्सिमैनीज, पीथागोरस, हेराक्लिटस, डीमोक्रीटस, यथार्थवादी सुकरात, परमाणुवादी अनाक्सागोरस, बुद्धिवादी अफलातून, वस्तुवादी अरस्तू, भौतिकवादी एपिकुरस, जैनो, अगस्तीन आदि महादार्शनिक सुविख्यात हैं।

५—इस्लाम संस्कृति

इस्लाम संस्कृतिके संस्थापक मुहम्मद साहब हैं। इनको कहा गया है। ये कुरानशरीफके रचयिता हैं। अधिकतर इनकी संस्कृति अरब, इरान, तुर्क, अफगानस्तान और भारतका पश्चिमी भाग है। इसमें—नज्जाम, अशअरी, इब्जूमैमून, फाराबी, सीना, गजाली, इब्नरोश्द ये अच्छे दार्शनिक हुए हैं।

ये दिङ्मात्र विभिन्न संस्कृतियोंके संस्थापक एवं दार्शनिकोंका समाससे परिचय है। हमें यहां पर अन्य संस्कृतियोंके दोषोद्भावन नहीं करना है अपितु हमें तो भारतीय वैदिक अनादि व्यापक संस्कृतिकी विशेषताकी मीमांसा करनी है। विदग्धवर आचार्य भट्टोजी दीक्षितके शब्दोंमें इतना कहना ही आवश्यक होगा—"स्वरूप व्याक्रियैव पराक्रिया" सर्वापेक्षया विशेष आदरणीय सनातन वैदिक संस्कृतिका अंश लेकर ही अन्य संस्कृतियां

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उज्जीवित हैं और प्रत्येक संस्कृतिका उत्पत्तिस्थान होनेके कारण इस संस्कृतिकी उत्कृष्टता विपुल विश्वमें विख्यात है। संसारका प्रत्येक मानव भव्यभारतके संस्कृतिकी महनीयता पर द्रवीभूत हो भूरि-भूरि प्रशंसाकर अपनी संस्कृतिकी अनुगामिता अङ्गीकार करता है। इतिवृत्तके पर्यालोचनसे भी यह बात परिपुष्ट होती है कि, भारतकी संस्कृति कितनी समुज्ज्वल सर्वतोभद्र, सर्वाङ्गपूर्ण सारगर्भित, अटल, अक्षुण्ण, प्रभावोत्पादक, मर्यादित, मनोरंजक सर्वजनीन एवं सर्व-जनसाधारणचित्ताकर्षक है। इस बातका साक्षी हमारा वाङ्मय है—

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

पाश्चात्य दार्शनिकोंका विचार भारतियोंके प्रति निम्न प्रकारसे है—

जर्म्मनके प्रधान दार्शनिक "शोपनहर" भारतीय संस्कृतिके आधारभूत वेद-वेदान्त ग्रन्थोंके सम्बन्धमें अपनी सम्मति इस प्रकार प्रदान करते हैं—"संसारमें आदर्श संस्कृति भारतीय संस्कृति है। इसके उपजीव्य वेदों और उपनिषदोंसे संसारको सच्ची शान्ति मिल सकती है। इसका अध्यात्मवाद सर्वोपरि है।"

अमेरिकाके प्रौढ दार्शनिक "विलड्यूरन्ट" का कहना है कि—"भारत हमारी जातिकी मातृभूमि कभी रही थी। संस्कृत हमारे दर्शनशास्त्रकी मूल जननी है। इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अरबियन लोगोंने भारतसे ही प्रथम गणित सीखा, फिर उनसे यूरोपियन सीखे। ज्योतिषशास्त्र भी यहींसे प्रसारित हुआ। बुद्धके द्वारा जो धर्ममत क्रिश्च्यानिटिमें है वह भी हमें मिला और ग्राम-पञ्चायतके द्वारा स्वायत्त शासन और प्रजातन्त्र भी भारत ही जगत् को दिया।"

इङ्गलैंडके महान् दार्शनिक एवं वेद-वेत्ता "मेक्समूलर" भारतीय संस्कृतिके विषयमें घोषणा करते हैं कि-"संसारमें सबसे आश्चर्य-जनक कोई भाषा है तो वह संस्कृतभाषा है। इसका संस्कृत व्याकरण जितना पुष्ट है, इतना पुष्ट और किसी भाषाका व्याकरण नहीं है। भारतीय दार्शनिकोंका ज्ञान चरमसीमा तक पहुँचा है। इसके आध्यात्मिकवादके मुकाविलेमें दुनियाका कोई ज्ञान सामना नहीं कर सकता। हमारे यूरोपमें "हेराक्लेटस" "प्लेटो" "कान्ट" "हीगेल" ये तत्त्वचिन्तक, महामहिम अच्छे दार्शनिक हुए, पर किसीकी भी हिम्मत नहीं हुई ऐसा सौध (भव्य-भवन) निर्माण करनेकी, जैसा कि भारतीय दार्शनिकोंने तत्त्वनिर्णयकर दुनियाको लुभा लिया है।"

प्रो० "विल्सन" महादार्शनिक संस्कृतके विषयमें अपने विचार इस प्रकारसे व्यक्त करते हैं—"संस्कृत भाषा और भारतकी नित्यता सदा अविभाज्य है" इसी बातको अपने पद्यमें बताते हैं—

"यावद् भारतवर्षं स्याद् यावद्विन्ध्यहिमाचलम्।
यावद् गङ्गा च गोदा च तावदेव हि संस्कृतम्॥"

उन्हींका कहना है कि—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"अमृतं मधुरं सम्यक्, संस्कृतं हि ततोऽधिकम्"
और कहते हैं—

"यह भाषा संगीत-सी सुमधुर है। इसकी समता दुनियाकी कोई भाषा नहीं कर सकती। संस्कृतमें दर्शन ग्रन्थ महान् हैं। सब गौरव इसीको प्राप्त है।"

जर्म्मनके प्रो० पालड्योसन कीयल यूनिवर्सिटीके दर्शनके प्राध्यापकने एक भारतीय दार्शनिकसे वार्त्तालापमें पूछा कि—"आपकी संस्कृत भाषा कैसी है?" तब भारतीय दर्शनवेत्ताने कहा कि—"संस्कृत तो मृतभाषा है।" तब प्रो० पालड्योसनने कहा—आप भारतीय होकर संस्कृतके विषयमें ऐसा कहते हैं। हमारे विचारसे मनुष्यमात्रको ज्ञानका प्रकाश इसी संस्कृत भाषासे प्राप्त हुआ है और होता रहेगा। संसारमें उच्चतम दर्शनका ज्ञान इस भाषाके अतिरिक्त किसी भाषासे नहीं प्राप्त हो सकता है।" इन्होंने सर्वप्रथम भारतीय दर्शनका जर्म्मनी भाषामें अनुवाद किया।

विलियम जोन्स—ये कलकत्ता हाईकोर्टके जज रह चुके हैं। इनका कहना है—"संस्कृत भाषाका गठन अत्यन्त आश्चर्यजनक है। संस्कृत भाषाके अध्ययनसे दृष्टि अनन्तताकी ओर जाती है। इसका साहित्य इतना पुष्ट और बृहद् है कि दीर्घ आयु भी इसके लिए पर्याप्त नहीं है।"

फ्रान्सके सोरवोन यूनिवर्सिटीके दर्शनके प्रो० ल्यूसरेयो अपने विचार इस प्रकार व्यक्त करते हैं कि—"पाश्चिमात्य भारतीयोंसे जो प्रेम करते हैं। उसका मूलकारण केवल भारतकी संस्कृतिके

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लिए और यह संस्कृति, संस्कृत भाषामें निहित है। संस्कृत और भारतकी संस्कृति सदा अविभाज्य है। चाहे राजनीतिज्ञोंका कितना ही भेदमूलक बकवास होता रहे। यह कोई महत्त्व नहीं रखता" इस प्रकारसे भारतीय संस्कृत भाषा, उसके दर्शन और उसके आधार पर रहनेवाली संस्कृतिके सम्बन्धमें संसारके विभिन्न भागोंके प्रौढ दार्शनिकोंकी निष्पक्ष सच्ची धारणा है।

यूनान देशके सम्राट् सिकन्दर जिस समय धर्मप्राण भारतमें आनेके लिए समुद्यत हुए, उस समय यथार्थवादी सुकरात अपने शिष्य सिकन्दरसे कहते हैं—

सिकन्दर से कहा सुकरात ने जब हिन्द में जाना।
हमारे वास्ते भारत से एक सौगात ले आना॥
बड़े मुश्किल से आयेगा वो गंगाजल भी ले आना।
जिसे पीकर के ऋषिओं ने गहरे तत्त्व को जाना॥
भारत में जब जाना ले आना कृष्ण की गीता।
शहनशाह भूल मत जाना कहानी राम और सीता॥
सुना जाता है भारत में हज़ारों हैं ऋषि-ज्ञानी।
वहाँ से एक ज्ञानी गुरु भी ले आना॥
वहाँ के बांस की वंसी एक वह भी ले आना।
बजाकर हम भी देखेंगे कि कैसा सुर है मस्ताना॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

३—भारतीय संस्कृतिकी विशेषताएँ

भारत परम आस्तिक देश है। यहाँ के आदिम निवासी आर्य तथा हिन्दु शब्दसे सम्बोधित किये जाते हैं। इस नाम-रूपात्मक समस्त संसारका रचयिता एक अनादि ईश्वर है। वह व्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सच्चिदानन्दरूप है। सूर्य-चन्द्र-ग्रह नक्षत्रादि उसी ईश्वरका प्रपञ्च है। चार वेद भी ईश्वरीय ज्ञान है। ऐसी सुदृढ आस्था है। भारतकी मूल संस्कृति आर्य संस्कृति है। इसके मूल धर्मग्रन्थ अपौरुषेय चार वेद हैं। इनमें मन्त्रोंकी संख्या एक लक्षय है। चारों वेदोंमें तीन विषय वर्णित हैं—ज्ञान-उपासना और कर्म। अस्सी हज़ार मन्त्रोंमें कर्मकाण्ड, १६ हज़ार मन्त्रोंमें उपासनाकाण्ड और चार हज़ार मन्त्रोंमें ज्ञानकाण्ड। यही वेदान्त है। वेदान्तमें प्रस्थानत्रय सम्मिलित हैं। श्रौत प्रस्थान 'उपनिषद्' दार्शनिक प्रस्थान 'ब्रह्मसूत्र' और स्मार्त प्रस्थान 'भगवद्गीता' है। प्रस्थानत्रय पर अद्वैतमतमार्तण्ड भगवत्पादाद्य शङ्कराचार्यका भाष्य समुपलब्ध है।

यह त्रिमुनि वेदान्त अद्वैतशास्त्र कहा जाता है। "त्रीश्वरमद्वैत-शास्त्रम्" यह वचन शास्त्रमें आता है। यद्यपि "वेद" का अंशभूत "ज्ञानकाण्ड" वेदान्त है तथापि वेदान्तमें प्रथम "उपज्ञा" इन्हीं आचार्य्योंको सम्प्राप्त है, जिस प्रकार श्लोक रचनामें महर्षि वाल्मीकिजीका ज्ञान "प्रथम" कहा जाता है। इनके लिये यह वचन भी शास्त्रमें उपलब्ध है "हरिहरचतुराननावतारीभूत बादरायणशङ्करसुरेश्वर रूपमद्वैतशास्त्रं गीयते" आचार्य्य बादरायण

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भगवान् विष्णुके अवतार, आचार्य्य शङ्कर साक्षात् भूतभावन भगवान् शङ्करके अवतार और आचार्य्य सुरेश्वर चतुरानन (ब्रह्मा) के अवतार माने जाते हैं। इनसे सन्दब्ध शास्त्र ही "अद्वैत" शास्त्र कहा जाता है, इसलिये "त्रीश्वरमद्वैतशास्त्रम" कहा है। इनके बनाए हुए सूत्र-भाष्य आदि को "पंचग्रन्थी" के नाम से भी कथन करते हैं। इसके दो भेद हैं—श्रौत आकर पंचग्रन्थी और दार्शनिक आकर पंचग्रन्थी।

१—श्रौत······पंचग्रन्थी—१. बृहदारण्यक २. शाङ्कर भाष्य ३. आनन्दगिरी व्याख्या ४. बृहदारण्यक वार्त्तिक ५. आनन्द-गिरि व्याख्या।

२—दार्शनिक······पंचग्रन्थी—१. भगवान् व्यासके सूत्र २. आद्य शाङ्करभाष्य ३. वाचस्पतिकृत भामती ४. कल्पतरु टीका—अमलानन्द कृत ५. कल्पतरु पर परिमल टीका—पण्डित प्रकाण्ड अप्पय्यदीक्षितकृत। इस प्रकारसे श्रौत और दार्शनिक आकर ग्रन्थ अद्वैत शाङ्कर सम्प्रदायमें सुप्रसिद्ध हैं।

"आकर" शब्दका अर्थ "ज्ञाननिधि" का है। अर्थात् सूत्र-भाष्य-व्याख्या आदिमें पूर्ण अद्वैत ज्ञान निहित है। अतः इनकी आकर "आख्या" है। इन सबका निष्ठ्यूत सिद्धान्त "जीवो ब्रह्मैव केवलं नापरः"—केवल एक चिन्मात्रवस्तु ब्रह्म ही सत्य है, तदति-रिक्त सब मिथ्या एवं अज्ञान-कल्पित हैं। इस प्रकार अद्वैतमतका प्रतिपादन किया गया है। षड्दर्शन, अप्रतिम, अलौकिक, अभ्रांत, ज्ञान-सम्पत्सम्पन्न, मन्त्रद्रष्टा, तपोधन ऋषियोंने छह दर्शन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रणयनकर मानवके लिए मुक्तिका साधनद्वार उद्घाटन कर दिया है। इनका चरम विषय धर्म-ज्ञान प्राप्ति द्वारा निःश्रेयसकी सिद्धि है। २७ स्मृतियाँ, १८ पुराण, रामायण और महाभारत आदि वेद-मूलक संस्कृतिके आधारभूत ग्रन्थ बहुमूल्य रत्न हैं। जिनमें रोचक, भयानक और अर्थवादको लेकर कथनोपकथन एवं आख्यायिका-रूपसे आवश्यकीय अङ्गोंपर विचार किया गया है और धर्म-अर्थ काम और मोक्ष-प्राप्तिके साधनोंके प्रदर्शनमें ही इनका पर्यवसान होता है। इनका भी चरम लक्ष्य भक्ति एवं ज्ञान द्वारा परात्पर प्रभुका साक्षात्कार ही है।

त्रिकालदर्शी साक्षात्कृतधर्मा ऋषि-प्रणीत दर्शन शास्त्र एवं धर्मग्रन्थोंमें लौकिक और पारलौकिक विषयका सूक्ष्म विवेचनात्मक विचार द्वारा अनुज्ञा-परिहारका परिष्कृत प्रकार, नित्य-नैमित्तिक काम्य, निषिद्ध, कर्म-धर्म एवं सूक्ष्म-स्थूल, सम्यग्-असम्यक् समस्त समस्याओंका समीचीन समाधान किया गया और दर्शाया गया है कि भावनारूप संस्कारसे आकलित जनिमत् जीव संस्कारोंका एक पुतला है। सुकृत-दुष्कृत कर्मोंसे संस्कार बनते हैं और संस्कारों-से तदाकार वृत्तियाँ बनती हैं। इस प्रकारसे अनादि चक्र चलता रहता है। कहा है—"कर्मबीजं संस्कारः" संस्कार ही कर्मका बीज है। सुसंस्कृत संस्कारोंसे अन्तःकरण शुद्ध होता है। इसलिये शास्त्रमें कहा गया है—"यस्यैते अष्टाचत्त्वारिंशत् संस्कारा भवन्ति स ब्रह्मणः सायुज्यं सलोकतां प्राप्नोति" इससे जन्म-जन्मान्तरवाद-की नीव भी परिपुष्ट होती है। अवदात संस्कारोंसे जन्म-जन्मान्तर,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कल्प-कल्पान्तरकी बातका स्मरण हो आता है। इसीसे लोक-परः लोक भी अनुमान एवं आगम द्वारा सिद्ध हो जाते हैं। योगभाष्य-में जैगीषव्य और आवट्यके संवादसे भी निश्चय होता है—जैसे देखिये—"भगवतो जैगीषव्यस्य संस्कारसाक्षात्करणात् दशसु महा-सर्गेषु जन्मपरिणामक्रममनुपश्यतो विवेकजं ज्ञानं प्रादुरभवत्, अथ भगवानावट्यस्तनुधरस्तमुवाच" "दशसु महासर्गेषु भव्यत्त्वादनभि-भूतबुद्धिसत्त्वेन त्वया नरकतिर्यक् गर्भसम्भवं दुःखं सम्पश्यता देवमनुष्येषु पुनः पुनरुत्पद्यमानेन सुखदुःखयोः किमधिकमुपलब्ध-मिति ?" भगवन्तमावट्यं जैगीषव्य उवाच "दशसु महासर्गेषु भव्य-त्वादनभिभूतबुद्धिसत्त्वेन मया नरकतिर्यग्भवं दुःखं सम्पश्यता देवमनुष्येषु पुनःपुनरुत्पद्यमानेन यत्किञ्चिदनुभूतं तत्सर्वं दुःखमेव प्रत्यवैमि"।

इत्यादि ग्रन्थ सन्दर्भसे संस्कारों और जन्मान्तरकी परम्परा, सृष्टिकी अनादिता, वेदकी नित्यता, आवागमनका नैरन्तर्य, जन्मान्तरवाद, परलोकवाद आदिके परमार्थताकी निर्विचिकित्सित सिद्धि होती है। प्रबल प्रमाण श्रुतिसे भी स्पष्ट होता है—"सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः" "समाननामरूपत्त्वात्" इस ब्रह्मसूत्र-भाष्य-भामतीमें स्पष्ट किया गया है। यही भारतीय संस्कृतिकी असाधारण विशेषता है जो अन्य संस्कृतियों एवं दर्शनोंमें देखनेमें नहीं आती। अतः इसकी महनीयता लोक-विश्रुत है।

पाश्चात्यवाद जन्म-जन्मांतरवादका अपनोदक है। यही कारण

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है कि वे आध्यात्मिकवादसे वहुत परे हैं और कूपमण्डूककी भाँति भौतिकवादको ही ज्ञान-विज्ञानकी पराकाष्ठाकी घोषणा करते हैं। भारतीय दर्शनोंके मनोरम शास्त्र प्रातः कमनीय वेलासे आरम्भकर शयन समय पर्यन्त नियमित कार्य-क्रम, वर्णाश्रमविधि-निषेध-शृङ्खला, उपासना, ज्ञान-कर्म, शुद्धाशुद्ध, भक्ष्याभक्ष्य, स्पृश्यास्पृश्य, आचार-विचार, कर्त्तव्याकर्त्तव्य, पञ्चकोष, लोकव्यवहार, परलोक-विज्ञान, आवागमन-अवगति, जन्मान्तरवाद, सगुण-निर्गुण-मीमांसा, आध्यात्मिक-आधिभौतिक-आधिदैविक-विमर्श, आद्यो-पान्त सृष्टिक्रमविन्यास, युग-युगांतर-महायुग, मन्वन्तर उनका सावधिक परिमाण-परिच्छेद, हठयोग-मन्त्रयोग-राजयोग-लययोग-भक्तियोग-शारीरिक चिकित्सा-विज्ञान, गांधर्ववेदमें सङ्गीत-विज्ञान, नारी शिक्षा-दीक्षा, मर्यादित विवाहपद्धति, स्त्रीजातिके महान् महत्त्वकी चारुचर्चा वैदिक संस्कृतिकी ही एक विशिष्ट विशेषता है। भारतीय संस्कृतिमें नारीको जगदम्बाका प्रतीक कहकर समादरकी दृष्टिसे देखा गया है, जैसे—देखिये—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" सर्वाङ्ग सुन्दर आर्य संस्कृतिका आधारभूत समस्त वाङ्मय स्थूल प्राणीसे आरम्भकर सूक्ष्मातिसूक्ष्म पिपीलिका पर्यन्त जीवोंके उत्पत्तिसे लेकर आमरणपर्यन्त उनकी समस्त अवस्था, स्वरूप एवं व्यवहार और गतिके वोध करानेमें ही पर्य-वसित होता है।

४—भारतीय संस्कृतिके सिद्धान्त

संसारमें वही संस्कृति चिरस्थायी एवं चिरजीवित रह सकती

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है, जिसका साहित्य सर्वाङ्गपूर्ण एवं सुन्दर जिसके सिद्धांत अटल-अविचल, सर्वजनप्रिय एवं उदात्त हों। वैदिक संस्कृतिमें यही एक महान् वैशिष्ट्य विद्यमान है जो इतर संस्कतियोंमें देखनेमें नहीं आता।

यह संस्कृति अपनी विशिष्टताके कारण संसारमें विलसित हो रही है। जिसकी रीति-नीति, न्यायप्रियता, सत्यवादिता, धर्म-निष्ठता, परोपकारप्रियता, अहिंसावादिता इसके अपने स्वाभाविक गुण-धर्म हैं। जहाँ पर "सत्यं शिवं सुन्दरम्" "सत्यं वद" एवं धर्मं चर" को प्रधानता दी जाती हो, "मा गृधः कस्य स्विद्धनम्" किसीके धनको देखकर मत ललचाओ। "न स सखा यो न ददाति सख्ये" वह सखा ही क्या जो अपने मित्रकी सहायता नहीं करता। "भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम" हम अपने कानोंसे सदा मङ्गल-मय शब्द ही श्रवण करें। "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे" हम सब आपसमें मित्रकी दृष्टिसे निहारें। "तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु" मेरा मन उत्तम सङ्कल्पोंवाला हो। "मा नो द्विक्षत कश्चन" कोई भी हमसे द्वेष न करे। "मधुमती वाचमुदेयम् " हम सदा मीठी वाणी बोलें। ये सब आर्य संस्कृतिकी महती विशेषताएँ हैं। जिसके आधार पर भारतीय संस्कृति उज्जीवित है। भारतीय संस्कृतिमें हिंसाकी सर्वथा निन्दाकी गई है—"मा हिंस्यात् सर्वा भूतानि" किसी भी जीव-जन्तुकी मन-वाणी एवं वचनसे भी हिंसा नहीं करनी चाहिए और सबके प्रति अवदात्त एवं उद्दाम दृष्टिको ही विशेषता दी गई है। "शुनि चैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इतना ही नहीं जहाँ पर "वसुधैव कुटुम्बकम्" स्वराष्ट्रमें ही नहीं अपितु विपुल विश्वमें बन्धुत्त्वकी सद्भावना उद्घोषितकी जाती है। क्या वहाँ शान्तिको आवाहन करनेकी कोई आवश्यकता है? स्वर्णमय घटमणिक एवं मञ्जिकापात्र गांगेय निर्मल नीरसे परिपूर्ण हो तो पुनः उसको पूर्ण करनेकी आवश्यकता होगी? नहीं, कदापि नहीं।

"सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन" "वासुदेवमयं जगद्" "ईशावास्यमिदं सर्वम्" "तमेव विदित्वाति मृत्युमेति" की उच्चतम दृष्टि सनातन संस्कृतिका अनुत्तम आदर्श है। भारतीय संस्कृतिका प्रत्येक मानव स्वार्थ सिद्धिकी अपेक्षा परोपकारप्रियताको अधिक महत्त्व देता है। "परोपकाराय सतां विभूतयः" और "आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति" "स पश्यति" यह है भारतीय संस्कृतिकी असाधारण असाधारणता। वृद्धोंका वचन है—

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्॥
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

जो संस्कृति, पद्यके पूर्वार्द्धसे घटित है वहाँ शान्तिका साम्राज्य कदापि नहीं हो सकता। विश्वबन्धुत्त्वकी सद्भावनासे वह राष्ट्र सदा दूर है और काम-क्रोधकी तुच्छ भावनासे भावित राष्ट्र, राष्ट्रोंमें एकात्मवादका प्रसार नहीं कर सकता। जहां पर अहंकार, ममकारकी दूषित भावनाओंसे अन्तःकरण कलुषित है, वहाँ पापवासनाका प्राबल्य होता है, क्योंकि काम-क्रोध-लोभ पापका मूल है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्' की सच्ची भावना कहीं देखनेमें आती है तो वह एकमात्र भारतीय संस्कृति ही है। पद्यके उत्तरार्द्धका अर्थ चरितार्थ होता है तो वह केवल विश्वविख्यात भारतीय संस्कृति ही है। इसी कारणसे भारतीय संस्कृतिकी महानता है। अतः मान्यता है। इसलिये ही वह विश्वमें शान्तिका मूलकारण बन सकती है।

५—उपसंहार

भारतीय संस्कृतिका मूलाधार वैदिक वाङ्मय है। जिसके आधार पर सनातन सुसंस्कृत संस्कृति उज्जीवित है। जिसके सर्वाङ्गीण सुन्दर सिद्धान्त सर्वजनप्रिय-मनोनीत-चित्तद्रावक, लोक-परलोक एवं जन्मान्तरवादके उपोद्वलक हैं। जिस मकानकी नींवमें लोहे-पाषाण-चूना-सिमिंटकी पुट नहीं दी गई हो, उस मकानकी भित्तिएँ क्योंकर सुदृढ हो सकती हैं और उन भित्तिओंके व्यपाश्रयसे खड़ा हुआ मकान क्या बहुत काल तक स्थायी हो सकता है ? जहाँ पर ईश्वरीय सत्ता,ईश्वरीय न्याय कर्मफलानुसार लोक-परलोक-अनुज्ञा-परिहार एवं गुण-कर्म स्वभावानुसार सुचारु व्यवस्थाको महत्त्व नहीं दिया जाता है। जहाँ पर अध्यात्मवादका व्युदासकर भौतिकवादके ही गीत गाये जाते हैं। जहाँ पर एक महाशक्ति दूसरी शक्तिके संहारके उपायको विचार करनेमें व्यापृत हो। जहाँ पर दूसरेके संघर्षमें हाथ वँटानेकी कूटनीतिको महत्त्व दिया जाता हो। जहाँ पर छीना-झपटी और अबन्धुत्त्वकी कुत्सित भावना जागृत की जाती हो। जहाँ पर 'सन्तोषादनुत्तमः सुखलाभः' के प्रतिलोम व्य-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वहारको आद्दित किया जाता हो। जहाँ अहिंसावाद एवं एकात्मवादकी गन्ध नहीं। जहाँ पर सदाचारनिष्ठता-सत्यभाषिता-सत्यकारिताको नान्तरीयक नहीं समझा जाता। जहाँ पर भारतीय संस्कृतिमें स्त्री ज़ातिको जगदम्बाका प्रतीक माना जाता है। वहाँ पर नारीको विषय-भोगकी एक मनोज्ञ वस्तु घोषितकी जाती है। जहाँ पर त्यागशीलताको ईश्वरीय आदेश मानकर क्रियान्वित किया जाता है। वहाँ पर हँसकर उपेक्षा करना भूषण माना जाता है। नीतिसम्राट् महामन्त्री पण्डितप्रकाण्ड वृद्ध चाणक्यके प्रौढ पाण्डित्यसे कौन परिचित नहीं है। उनकी त्यागवृत्तिका स्मारक यह पद्यबन्ध क्या अल्प महत्त्व रखता है। देखिये—

उपलशकलमेतद्भेदकं गोमयानाम्।
वटुभिरुपहृतानां बर्हिणां स्तोम एषः॥
शरणमपि समिद्भिः शुष्यमाणाभिराभि—।
विंनमित पटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम्॥

भारतीय संस्कृतिमें समुत्पन्न तथा परिपोषित नीतिसम्राट् वर्त्तमान प्रधानमन्त्री श्रीजवाहरलालको त्यागमूर्तिका एक देदीप्यमान प्रतीक मानकर वृद्ध चाणक्यकी उपमा दें तो मेरे विचारसे कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। एकात्मवादका परिपोषक हमारी संस्कृति संसारकी विभिन्न संस्कृतियोंका एकमात्र जन्मस्थान है। एकात्मवाद इस संस्कृतिमें इतना ओत-प्रोत हो रहा है कि बलात् निरसन करना चाहें तो भी निकल नहीं सकता। इस अवसर पर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एकात्मवादके प्रतीक लोकप्रिय राष्ट्रपिता महामना महात्मा गांधी-जी का नाम उल्लेख करें तो कोई अकाण्ड ताण्डव नहीं होगा। इस धर्मप्राण राष्ट्रका प्रत्येक मानव अपनी संस्कृतिकी रक्षाके लिये प्राणोंका बलिदान करना भी असमञ्जस नहीं समझता और वह निश्चयरूपसे जानता है कि 'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः' धर्मकी रक्षा निमित्त गुरुगोविन्दसिंहके दोनों धर्मप्राण बालक दिवालमें चुन दिये गये तथा बन्दा बैरागीने भी रक्षार्थ अपने आपको स्वाहा कर दिया। ये आर्य संस्कृतिके सुसंस्कारसम्पन्न अलङ्करणभूत ज्वलन्त दृष्टान्त संसारके इतिहासमें सुप्रसिद्ध हैं।

प्रत्येक राष्ट्रकी संस्कृतिका उत्थान उसकी अपनी रीति-नीति पर अवलंबित है। परोपकारता, उदारता, संतोष, त्यागशीलता, चारित्र्य-चारुता और एकात्मता उसकी मूल भित्ति है। संस्कार-सौष्ठवसे वैयक्तिक विचार-नैर्मल्य, विचार-नैर्मल्यसे सच्चारित्र्य, सच्चारित्र्यसे चरित्र-निर्माण पुनः व्यक्ति समुदायका निर्माण और व्यक्ति समुदाय-से देश और राष्ट्रका निर्माण होता है। अन्तः करणकी अवदातता सर्वत्र सर्वदा अपेक्षित है। राष्ट्रका उत्थान और पतन वैयक्तिक चरित्र-चारुता पर अवलम्बित है। चारित्र्य-दौष्ठवसे राष्ट्रका निर्माण कदापि नहीं हो सकता। ईश्वरीय सत्ता, ईश्वरीय न्याय और गुण-कर्मानुसार लोक-परलोक व्यवस्था पर आस्था रखने-वाला राष्ट्र सुख-शान्तिमय गम्भीर पयोधिमें उन्मज्जन-निमज्जन करता है। भौतिकवादसे राष्ट्रको क्षणिक सुखकी उपलब्धि अवश्य हो सकती है और क्षणिक सात्विक शान्तिका जनक अवश्य हो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सकता है परन्तु हन्त ! निरतिशय शान्ति प्रदान करनेवाला आध्यात्मिकवाद सर्वोपरि है। जब तक इसको नहीं अपनाया जायगा तब तक संसारमें पूर्ण आनन्द एवं सुख-शान्तिका साम्राज्य नहीं हो सकता है।

वेद कहता है 'नाल्पे सुखमस्ति' अल्पभूतोंसे होनेवाला सुख चिरस्थायी कैसे हो सकता है ? 'यदल्पं तदार्तम्' क्षणिक सुखप्रद वस्तु दुःखरूप होती है। यदि आज भौतिकवादसे राष्ट्र सुखी होता तो क्यों भारतीय राष्ट्रके आध्यात्मिक-पारमार्थिक सुखकी कामना पाश्चात्य जगत् करता। "अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्" आध्यात्मिकज्ञानमें ही सतत् स्थिति एवं तत्त्वज्ञानके अर्थरूप परात्पर परमात्माका नित्य-निरन्तर मनन ही निःशेष सुख-शान्तिका मूलाधार है। "यो वै भूमा तत्सुखम्" जो सबसे महान् तथा पूर्ण है वही सब सुख-शान्तिका केन्द्रस्थल है। अत एव इसी बृहद् वस्तुके प्राप्तिका अध्यवसाय करना आवश्यक है। "एकस्मिन् विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति" जिस एक चिन्मात्र आत्मवस्तुके ज्ञानके करनेसे संसारके समस्त जड़-चेतन, स्थूल-सूक्ष्म, आन्तर-बाह्य पदार्थोंका साक्षात्कार हो जाता है, उसी तत्त्ववस्तुकी गवेषणा करनी चाहिए। अतः प्रत्येक मानवका कर्तव्य है कि वह "भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्यः" उस बृहद् सुख-शान्तिके पुञ्जीभूत परात्पर सच्चिदानन्दरूप ब्रह्म (भूमा) के जाननेका प्रचुर प्रयास करे क्योंकि 'तरति शोकमात्मवित्' आत्मसाक्षात्कारकर्ता समस्त दुःखोंसे मुक्त होकर "स्वाराज्यमधिगच्छति" "शांतिमत्य-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

न्तमेति" सुख-शान्तिरूप-अमन्दानन्दराशि "निर्दोषं समं ब्रह्म" एवंविध प्रभुके दिव्य एवं अलौकिक सिंहासन पर समासीन हो सकता है। अतः हम गौरवके साथ कह सकते हैं कि विश्वमें यदि सच्ची शान्ति हो सकती है तो एकमात्र महत्त्वान्वित भारतीय सुसंस्कृतिके अनुकरणसे ही हो सकती है। "नान्यःपन्था विद्यतेऽयनाय" इससे अतिरिक्त अन्य कोई भी मार्ग नहीं है और तभी तो 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातुसे भूषण अर्थमें "सुट्" आगमपूर्वक 'क्तिन' प्रत्ययसे निष्पादित "संस्कृति" वर्णावृन्द विरचित पदार्थके सार्थकताकी निष्पत्ति होगी। यही लोक-वेद-विश्रुत पूर्ण शांतिप्रद, उदात्त एवं उद्दाम भारतीय संस्कृति और उसकी विशेष विशेषताएँ हैं।

❀ इतिशम् ❀

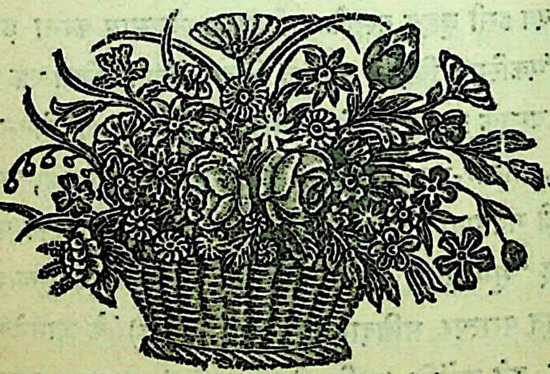

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

अखिल भारतीय षष्ठ वेदान्त-सम्मेलनके अन्तर्गत गीता-सम्मेलनके आयोजक

श्रीमान् १०८ स्वामी पूर्णानन्दजी महाराज महामण्डलेश्वर श्रीकृष्ण निवास आश्रम—कनखल (हरिद्वार)

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सम्माननीय राज्यपाल महोदय। तथा महात्मवृन्द ! अन्य भगवद्भक्त सद्गृहस्थ ! स्नेहवती माताएँ तथा बहिनें !

महान् सौभाग्यका समय है। इस पवित्र जाह्नवीके उपकण्ठमें बैठकर बड़े मनोयोगसे वेदान्तके पवित्र विचारोंको श्रवणकर रहे हैं। सम्मेलनका कार्य कई दिनोंसे लगातार चल रहा है। आज वेदान्त-सम्मेलनके अन्तर्गत "गीता-सम्मेलनका" आयोजन किया गया है। मेरेसे पूर्व वक्ताओंने आपके सम्मुख गीताके विषयमें अपने सुन्दर विचारोंको उपस्थित किया है। आजके हमारे प्रधान अतिथि पंजाबके राज्यपाल महोदय आपके सम्मुख समुपस्थित

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हैं। ये भी आपके सामने अपने मनोहर विचार गीताके सम्बन्धमें रखेंगे और आप श्रवण करेंगे।

मैं भी प्रस्तुत गीताके विषयमें आपके सामने अपने विचार रखना चाहता हूँ।

बन्धुओ! अभी-अभी आप हमारे महामण्डलेश्वरजी महाराजके मुखारविन्दसे सुन रहे थे कि, "भगवद्गीता क्या चीज़ है?" यह भगवान्का गाया हुआ गीत है। अतः इसे गीता कहते हैं। इसमें समस्त वेदोंका सार संग्रहीत है। इसका निबन्धन सरल-सुन्दर शब्दोंमें किया गया है कि साधारण मनुष्य भी थोड़े अभ्याससे गीताके सूक्ष्म रहस्यको समझ सकता है। गीता एक ऐसा रहस्यमय ग्रन्थ है जिसमें सभी लौकिक एवं पारलौकिक विषयका सुन्दर विचार उपलब्ध होता है। अतः इसको सर्वशास्त्रमयी कहा है।

भारते सर्व वेदार्थों भारतार्थश्च कृत्स्नशः।
गीतायामस्ति तेनेयं सर्वशास्त्रमयी मता॥

मानवमात्रकेलिए गीता एक प्रमुख ग्रन्थ है। इसका निरन्तर चिन्तन करनेसे गोपनीय रहस्योंका उद्घाटन होता है। मेरा तो गीताके विषयमें यह निश्चित विचार है कि वास्तविक सुख-शांति की प्राप्ति एवं मोक्ष प्राप्तिका साधनद्वार यह गीता ही है। हमारे प्रस्थानत्रयमें गीता स्मार्त प्रस्थान माना गया है। गीताशास्त्रका परम प्रयोजन निःश्रेयस है "परं निःश्रेयसं गीताशास्त्रस्योक्तं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रयोजनम्" गीतामें समस्त सात सौ श्लोक हैं और अठारह अध्यायोंमें विभाजित है। छह-छह अध्यायोंके तीन त्रिक बना कर तीन काण्डमें विभक्त किया है। शास्त्रमें आया है।

कर्मोपास्तिस्तथा ज्ञानमिति काण्डत्रयं क्रमात्।
तद्रूपाष्टादशाध्यायैर्गीता काण्डत्रयात्मिका ॥

अर्थात् कहनेका अभिप्राय यह है कि, कर्मकाण्ड, उपासना-काण्ड और ज्ञानकाण्डका वर्णन इस भगवान्‌के गाये हुए गीतामें मिलता है। प्रत्येक काण्डमें प्रत्येक विषयको निरूपण किस प्रकार किया, अधस्तन श्लोकोंसे कथन करते हैं।

तत्र तु प्रथमे काण्डे कर्मतत्त्यागवर्त्मना।
त्वं पदार्थो विशुद्धात्मा सोपपत्तिर्निरूप्यते।

आदिके छह अध्याओंमें निष्काम कर्मयोगके महत्त्वका विवेचन कर "त्वम्" पदार्थका उपपत्तिके सहित प्रतिपादन किया।

द्वितीये भगवद्भक्तिनिष्ठावर्णनवर्त्मना।
भगवान् परमानन्दस्तत्पदार्थोऽवधार्यते ॥

मध्यके छह अध्यायोंमें भगवद्भक्तिनिष्ठाका उल्लेख करते हुए 'तत्' पदार्थका निरूपण विशदरूपसे किया।

तृतीये तु तयोरैक्यं वाक्यार्थो वर्ण्यते स्फुटम्।
एवमन्यत्र काण्डानां सम्बन्धोऽस्ति परस्परम् ॥

CC-0. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अन्तिमके छह अध्यायोंमें 'तित्' एवं 'त्वम्' पदार्थके ऐक्य द्वारा एक सच्चिदानन्द ब्रह्मका प्रतिपादन किया, इस प्रकारसे गीतामें वर्णित तीन काण्डोंका सुविशद वर्णन कर भगवान्की गायी हुई गीता एक गीत है यह दर्शाया। बन्धुओ! आपको मालूम होना चाहिये कि, गीतासे भी आनन्द आता है और गायनसे भी आनन्दका अनुभव होता है। जैसे कि उपनिषदोंके बीचमें बतलाया है कि चक्रवर्ती राजा हो, निरोग शरीर हो, युवावस्था हो और किसी प्रकार शरीरमें कष्ट न हो, बस—मानवसुखका यहां पर अवसान है। इससे ऊपर संसारके बीचमें और कोई सुख नहीं है। परन्तु इस मानवसुखकी अपेक्षा सौगुणा सुख गन्धर्व योनिमें होता है। इन दो शब्दोंका भाव मेरा यह है कि गीतासे भी और संगीत से भी आनन्द आता है तो हम आगे बढ़कर लक्षणावृत्तिसे इस शब्दका अर्थ आनन्द कर सकते हैं। "गीत" याने "आनन्द" तो वह आनन्द दो प्रकारका है—जैसे भगवान्का स्वरूप शास्त्रोंमें दो प्रकारका बतलाया है। "द्वे रूपे वासुदेवस्य" एक साकार और दूसरा निराकार। निराकार रूप वस्तुओंके बीचमें विद्यमान है "अस्ति भाति प्रियं रूपं, नाम चेदंशपंचकम्। आद्यं त्रयं ब्रह्मरूपं जगद्रूपं ततो द्वयम्॥" परन्तु भगवान्का, मैंने आपको गीत शब्दका अर्थ लक्षणावृत्तिसे बतलाया परन्तु किसका आनन्द? तो पीछे शब्द जोड़ दिया भगवत् याने भगवद्गीता अर्थात् भगवान्का आनन्द। निराकारका आनन्द सर्वत्र है। पर साकार आनन्द कौन है? वह है आपके सामने विराजमान

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"श्रीमद्भगवद्गीता" यदि आप आनन्दको प्राप्त करना चाहते हैं तो भगवद्गीताको अपनाओ। यदि अर्जुनको आनन्दकी प्राप्ति हुई तो भगवद्गीताके द्वारा हुई। प्रश्न होता है कि क्यों नहीं भगवान् ने उस समय और उपदेश दिया? जिस समय अर्जुन मोहित हो चुका, किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो चुका, तब अर्जुनने कहा कि—

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां
त्वां प्रपन्नम् ॥गी० २-७॥

उस समय भगवान्ने विचार किया कि इस समय और औषधि काम न देगी। इस समय वह चीज़ अर्जुनको प्रदान करूँ जो जल्दीसे जल्दी आनन्दको प्राप्त करा दे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हम वैदिक हैं। परन्तु यह भी है कि थोड़ेसे शब्दोंमें सुनना चाहो तो मैं आपको बताता हूँ—गीतामें वेदकी अपेक्षा सार होनेके कारण जल्दी आनन्द प्राप्त करवा सकती है। इसका कारण क्या है? इसका अभिप्राय यह है कि समस्त शास्त्रोंकी उत्पत्ति वेदोंसे हुई। वेदोंका उद्भव ब्रह्माजीके मुखकमलसे हुआ, ब्रह्माजीकी उत्पत्ति भगवान् विष्णुके नाभिकमलसे हुई। इस प्रकार शास्त्रों और भगवान्के मध्यमें बहुत व्यवधान पड़ गया है। परन्तु गीता तो स्वयं भगवान् विष्णुके मुखकमलसे प्रकट हुई। अतः "गीता" को सभी शास्त्रोंसे बढ़कर कहा गया है। महाभारतके अन्तर्गत भीष्मपर्वमें भगवान् वेदव्यासजी लिखते हैं—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रसंग्रहैः ।।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता ।।

बन्धुओ ! इस श्लोकका यह अभिप्राय है कि—अन्य शास्त्रों के पठन-पाठनकी कोई आवश्यकता नहीं। कोई ज़रूरत नहीं। कल्याणकी कामना करने वालोंके लिये चाहिये कि गीताका ही भली प्रकारसे श्रवण-कीर्तन, पठन-पाठन, मनन-चिन्तन करना चाहिए। क्योंकि यह स्वयं विष्णुभगवान्के मुखपद्मसे निःसृत हुई। इसलिये भगवान्ने विचार किया कि जल्दीसे जल्दी अर्जुन को आनन्द प्राप्त करवा सकती है तो वह है एक—गीता—। परंतु बन्धुओ ! प्रथम आपको यह विचार करना पड़ेगा कि अर्जुनको दुःख याने 'विषाद' क्यों हुआ ? आनन्दका अभाव क्यों हुआ ? जिस समय हम इस विषयको विचार करने लगेंगे तो उस समय हम इस सिद्धान्त पर पहुँचेंगे कि "अतस्मिंस्तद्बुद्धिः" होनेके कारण अर्जुनको दुःख हुआ। भाव क्या है ? अर्जुन पंच भौतिक शरीरको ही आत्मा मान बैठा और शरीरको आत्मा मानकर कहता है कि हम मर जायेंगे, खत्म हो जायेंगे। इसलिए हम लड़ाई नहीं करेंगे। "न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह" जिस समय यह हुआ तो भगवान्ने विचार किया कि "अतस्मिंस्तद्बुद्धिः" होनेके कारण अर्जुनको विक्षेप हो गया। स्थूल देह (शरीर) को आत्मा मानलिया। चार्वाक याने देह-आत्मवादीके सिद्धान्तको अपना लिया। तो भगवान्ने अर्जुन के प्रति कहा—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ओह ! अर्जुन, जिसको तू आत्मा मानकर बैठ गया है, यह तो कपड़ा है। कोट-पतलून है।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ॥
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥
॥ गी० २-२२ ॥

जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रोंको छोड़कर नवीन वस्त्रोंको धारण कर लेता है, उसी प्रकार यह जीव पुराने शरीरको छोड़कर नूतन शरीरको धारणकर लेता है। वस्त्रके बदलनेसे शरीर नहीं बदलता। इसी प्रकार शरीरके बदलनेसे आत्मा नहीं बदलता है। परन्तु वह क्या मान बैठा ? बन्धुओ ! प्रसङ्गवश दो शब्द कहना आवश्यक समझता हूँ कि यहाँ पर कई सज्जन कहते हैं कि— "वासांसि जीर्णानि यथा विहाय" इस श्लोकमें पुराने वस्त्रोंको छोड़कर नये वस्त्रोंको धारण करते हैं तो यह दृष्टान्त सत् नहीं है, विषम है। क्योंकि पुराने वस्त्रोंको छोड़कर नवीन वस्त्रोंको धारण करना इसी प्रकार पुराने शरीरको छोड़कर नवीन शरीरोंको धारण करता है यह भगवान्का कहना, यह भगवान्की उक्ति व्यभिचारिणी है व्यापक नहीं है। क्योंकि संसारके बीचमें देखा जाता है कि आज ही जन्म हुआ और आजही मर गया अथवा साल, दो साल-चार सालका होकर मर गया। यहाँ पुराने शरीरोंका जो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दृष्टान्त दिया गया है वहाँ कहना चाहिये था कि शरीरोंको छोड़कर, एक कपड़ेको छोड़कर जैसे दूसरा कपड़ा धारण कर लेता है। इसी प्रकार यह जीवात्मा एक शरीरको छोड़कर, दूसरा नवीन धारण कर लेता है। दूसरी बात यह है कि "जीर्णानि" शब्द जो दिया है वह सब जगह नहीं घटता है क्योंकि बच्चे भी मर जाते हैं और कोई बच्चे तो गर्भके भीतर मरकर पैदा होते हैं। अर्थात् मरे हुए जन्म लेते हैं। इसलिये यह दृष्टान्त विषम है। परन्तु नहीं। बन्धुओ! भगवान्‌का दिया हुआ दृष्टान्त विषय नहीं है। आप कहेंगे क्यों नहीं है? तो आप एक दृष्टान्तके द्वारा समझो कि क्यों विषम नहीं है—

एक दूकानदार है। उस दूकानदारने जबसे अपनी दूकान खोली है, बीस वर्ष हो गये। दैवयोग से वह कपड़ेका एक थान पड़ा रह गया। कोई ग्राहक उसे लेने नहीं आया। उसे दश वर्ष पड़े हो गये। कल्पना कीजिये कि कुछ वर्षों के बाद जब वह ग्राहक आता है और आकर पूछता है कि अमुक नम्बरका थान है? दूकानदार ने कहा—हाँ! जब छब्बीस नम्बर का थान निकालता है और उसका भाव आठ आना गज बताता है तो दूकानवालेसे ग्राहक सात आना गज कहता है। दूकानदार कहता है—नहीं दूँगा। इतनेमें ग्राहक साढ़े सात आना कहकर चल देता है। अब दूकानदार विचार करता है कि—इतने वर्ष हो गये इस थान को मेरे पास पड़े हुए। एक तो इस थान की कीमतके रुपये का ब्याज पर ब्याज बढ़ रहा है और दूसरी बात यह है कि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह थान पुराना हो चुका है। इस कपड़े की शक्ति खत्म हो चुकी है। चलो जो मिलता है, वह ठीक है। चलो ले जाओ। साढ़े सात आने ही दो। मेरे कहने का भाव क्या है। कपड़ा देखनेमें नवीन दिखाई देता है और ग्राहक उसे नवीन ही समझता है। पर बन्धुओ! दूकानदार पुराना ही समझता है। बस ठीक इसी प्रकार से हम समझते हैं कि शरीर दो वर्ष का है। ग्राहककी जगह पर हम समझते हैं कि चार वर्षका है—नवीन है। परन्तु भगवानरूपी दूकानदार समझता है कि यह शरीर पुराना हो चुका है। यहाँ पुरानेका मतलब वर्ष नहीं। पुरानेका मतलब है जिस कर्मसे, जिस प्रारब्धसे यह शरीर मिला है। अब उस कर्मका, उस प्रारब्धका फल (भोग) समाप्त हो चुका है। इसीका अर्थ पुराना है। तो कहनेका भाव क्या—कि मैं लम्बा प्रसंग न ले जाते हुए यही बताने जा रहा हूं कि भगवान् ने कहा—अर्जुन! जिस शरीर के बीच तेरी इतनी आसक्ति है। जिसको तूने आत्मा मान रखा है। यह शरीर आत्मा नहीं। यह तो दृश्य है। क्षेत्र है और आत्मा क्षेत्रज्ञ तू है। इसलिये इस शरीर को छोड़कर तू मेरी शरणमें आ जा। गीता में भगवान् कहते हैं—

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥

यहाँ सर्वधर्मान् का अर्थ है—"अनात्मधर्मान् परित्यज्य" अनात्मा याने इन्द्रियादि के धर्मोंको छोड़कर एकत्वभावसे मेरी शरणमें आ जा। यदि तू एकत्वभावसे मेरी शरणमें आ जायगा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तो मैं तेरे सब पापोंको नष्ट कर दूँगा। पाप शब्द उपलक्षण है। तमाम पाप और पुण्य दोनोंसे मुक्त कर दूँगा। तो बन्धुओ! मेरे कहनेका अभिप्राय क्या था। जब अर्जुनको उपदेश दिया। उस उपदेशसे "अतस्मिंस्तद्बुद्धिः" की निवृत्ति हुई और आत्मतत्त्वमें स्थिति हुई, तब जाकर अर्जुनको अपने स्वरूपकी प्राप्ति हुई। इस प्रकार गीता भगवती एक आनन्दकी मूर्ति है। यह जीव आनन्दकी मूर्तिको तभी प्राप्त कर सकता है जब सही रूपमें अपने आत्मतत्त्व को जान लेगा। इतने शब्दोंके साथ मैं अपने वक्तव्यको समाप्त करता हूं।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् नरहरि विष्णु गाडगिल महोदय
राज्यपाल (पंजाब-सरकार)

पूज्य साधुवृन्द ! उपस्थित माता और भाइयो !

आज मैं अपना अहोभाग्य समझता हूँ, ब्रह्मनिष्ठ एवं तपोनिष्ठ-वीतराग महात्माओंके मध्यमें बैठकर। यहाँ बैठे हुए सद्-गृहस्थ भी अति पुण्यवान् हैं। जो लगातार कई दिनोंसे सन्तोंके मुखारविन्दसे अमृतमय-कल्याणकारक वचन श्रवण कर रहे हैं। मानों ज्ञान-गङ्गामें अवगाहन कर अपने आपको पवित्र कर रहे हैं। इतना उत्कृष्ट ज्ञान-भोजन प्राप्तकर पुनः आप कुछ मेरे मुखसे श्रवण करनेकी अभिलाषा रखते हैं। इसका यह अभिप्राय है कि आप बढ़िया मिष्टान्न खानेके बाद नमकीन पकौड़ोंके खानेकी इच्छा करते हैं। ठीक है। कभी-कभी ऐसा भी होता है। अभिज्ञान शाकुन्तलमें यह लोकोक्ति आती है। "खर्जूर भक्षणोनोद्वेजितस्य तिन्तिड्यां मनश्चलति" जब गुलाबजामुन-कलाकन्द-बालुशाई आदि खानेसे मन भर जाता है तब नमकीन स्वादिष्ट-चरपरि इमलीके अवलेहकी ओर दृष्टि पड़ती है। तद्वत्-अस्तु।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

महात्माओं की आज्ञाका शिरोधार्य कर मैं भी कुछ कहना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

मुझे यहाँ आये दो-ढाई घण्टे हो गये हैं। सन्तोंके अमृतमय प्रवचन श्रवणकर मेरा मन अत्यन्त प्रसन्न हो रहा है। और यह मन करता है कि सदा यहाँ बैठकर सुनता ही रहूँ। मैं इनकी प्रतिभाका किस मुखसे स्तुति करूँ। वर्णन करूँ। असाधारण बुद्धिका नाम प्रतिभा है। "नवनवोन्मेषशालिनी बुद्धिः प्रतिभा" इत्युच्यते" इस प्रकार कोशमें लिखा है।

प्रस्तुत प्रसङ्ग गीताके विषयमें कुछ और भी कहा जाय तो मेरे विचारसे सुनकर किसीको अजीर्ण नहीं होगा। क्योंकि गीता ज्ञानका महासमुद्र है। जितना विचारो उतना ही इसमेंसे तत्त्व निकलता है। अभी-अभी आप लोगोंके सम्मुख गीताके विषयमें चार-पाँच प्रवचन हुए। प्रायः गीताका संक्षेपसे सम्पूर्ण तात्पय आ गया है। मैं तो ऐसा समझता हूँ कि तात्पर्यके लिये उपक्रम-उपसंहार देखा जाता है। मैं अधिक जाननेका तो दावा नहीं रखता हूँ और न बिलकुल न जाननेका भी दावा नहीं रखता हूँ। लेकिन इतना समझता हूँ कि गीताके व्याख्यानका क्या प्रयोजन है? गीता हमारे हिन्दू संस्कृतिका उपादेय ग्रन्थ है। प्रस्थानत्रयमें गीता भी एक प्रमुख स्मार्त प्रस्थान ग्रन्थ है। गीताके आदिमें प्रमुखपात्रोंका निर्देश किया गया है। वस्तुतः गीताके विशेष विषयका आरम्भ द्वितीय अध्यायके ग्यारहवें श्लोक "अशोच्यानन्व शोचस्त्वं" से आरम्भ होता है। गीताका प्रयोजन अर्जुन जो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

परिग्रही बना हुआ, लड़ना नहीं चाहता था। जिन्होंने युद्धक्षेत्रमें हज़ारोंको मुक्ति दी। वह अकेला ही रहा। यदि उसको कोई भीरु कहे तो मैं समझता हूँ कि बड़ा अपमान है। इतना होते हुए भी द्रोणाचार्य जैसे गुरुओंने उसको शास्त्रविद्या पढ़ाई और महाभारत-में अपना असीम पराक्रम दिखाया। यदि मनुष्य ऐसा कहे कि मैं युद्ध नहीं करता हूँ और जो सामने खड़े हैं उनको मार करके रक्तरंजित राज्यको भोगना नहीं चाहता हूँ जो कुरुक्षेत्र भूमि थी मैं तो समझता हूँ कि वह तो गीताकी व्याख्यानभूमि थी। निरपेक्षकाल निरपेक्ष सदाके लिये एकमार्ग दर्शन है। प्रत्येक व्यक्तिकेलिये है चाहे वह व्यक्ति किसी भी धर्मका या मज़हबका क्यों न हो। कुरुक्षेत्र तो हमारे दिलमें है। जब कर्म क्या है? अकर्म क्या है? "कवयोऽप्यत्र मोहिताः" तो विद्वानोंको भी नहीं समझमें आता कि कर्म क्या है? अकर्म क्या है? तो इतर जीवों-के लिये क्या कहना है? जैसे हमें शब्दका अर्थ मालूम नहीं होता है तो हम डिक्शनेरी या कोशके पास जाते हैं कि इसका अर्थ क्या है और जैसे हमारे उपनिषदोंमें विद्यार्थियोंकेलिये बताया है कि यदि वे धर्म चिकित्सा वा कर्मचिकित्सा वा इसका कुछ संशय हो जाय कि धर्म क्या है? और अधर्म क्या है? कर्म क्या है? अकर्म क्या है? "ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः, युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामा स्युः। यथा ते तत्र वर्तेरन् तथा तत्र वर्तेथाः। इत्यादि। इस प्रकारसे अपने कर्त्तव्यके निर्णय करनेमें किसी प्रकार-की शङ्का हो तब उत्तम एवं स्निग्ध स्वभाववाले धर्म-कर्ममें तत्पर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ब्राह्मण हों उनके समीप जाकर उनसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। तो हम ये मानते हैं कि ऐसा कुछ सम्भ्रम हो जाता है। पिछले डेढ़ वर्षोंमें मुझे बहुत-से ऐसे प्रसङ्ग आये तो मेरे मनमें शङ्का उत्पन्न हुई कि क्या उन्हें व्यक्तिगत दृष्टिकोणसे देखूं। या समाज के शासनके दृष्टिकोणसे देखूं मानलीजिये थोड़ी देरके लिए किसी कारणसे एक व्यक्तिको फाँसीकी सज़ा हुई और एकको नहीं हुई तो जिसके फाँसीकी सज़ा हुई उसके रिश्तेदार आकर कहते हैं कि हमने क्या गुनाह किया ? तो उन्होंने किया होगा। लेकिन उसे सज़ा हुई है। उनको तो फाँसीकी सज़ा नहीं हुई है। आप मनमें सोचिये कि इस हालतमें क्या कर्त्तव्य है ? क्या कर्त्तव्य नहीं है ? तो गीतामें बताया है कि कर्त्तव्यका क्या स्वरूप है। व्यक्तिगत कर्त्तव्य और व्यक्तिका समाजगत कर्त्तव्य क्या है ? यह शिक्षा हमें गीतासे भलीभाँति प्राप्त होती है। दोनों सेनाओंके आमने-सामने उपस्थित हो जाने पर मेरा व्यक्तिगत कर्त्तव्य है कि इस समयमें हिंसा करूँ नहीं तो मेरी अपने व्यक्तिगत कर्त्तव्यसे च्युति होगी। लेकिन समाजगत कर्त्तव्य जिसका पालन करना मेरा श्रेष्ठ कर्म है। उसे अवश्य पूरा करना होगा। कहनेका अभिप्राय यह है कि सम्भ्रम करनेवाले अनेक प्रसङ्ग आते हैं और यही सम्भ्रम प्रसङ्ग अर्जुनके बीच भी आया और उसे बिलकुल यथार्थरूपसे गीतामें विषादयोगके नामसे कहा गया है। तो यह है उपक्रम। अर्जुनने कहा मैं नहीं लड़ूंगा और रथसे उतर नीचे आ गया अपने गाण्डीव धनुषको नीचे रख दिया

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जैसे अभी आपको बताया गया और जब मैं अठारहों अध्यायों-को देखता हूं तो अर्जुनने कहा कि मेरा मोह अब खत्म हो गया और तुम्हारी आज्ञा का पालन करूँगा। गीताके अठारहवें अध्यायमें अर्जुनने कहा—

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥

जो तुमने पहिले कहा था और मैंने नहीं माना। अब मैं कह रहा हूं कि मेरा जो मोह था वह ज्ञानके द्वारा नष्ट हो गया और मेरा कर्त्तव्य क्या है इसका भी साक्षात्कार हो गया है। इसी विषयको मैं आगे कहूंगा तो यह समझना चाहिये कि गीताका तात्पर्य ज्ञानकी अपेक्षा कर्मयोगमें अधिक है। लेकिन ज्ञानयोगकी चर्चा नहीं है या भक्तियोग या उपासनायोगकी चर्चा नहीं है यह मैं नहीं मानता हूं। क्योंकि व्याख्या करनेवालोंके भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण हैं। गीता पर व्याख्याकारोंके अलग-अलग मत हैं। लोकमान्य तिलकजीने सर्व निष्कर्ष निकाला कि गीता स्वयं सार-वस्तु है। वह वेदान्त और उपनिषदोंका सार-तत्त्व है। जैसे कहा है—

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः ।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥

उन्होंने उपनिषद्रूपी गौका दुग्ध निकाला। फिर चर्चा हुई कि दुग्ध से भी कुछ निकाला जाय। तो लोकमान्य तिलकने

Adv. Vinit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उसका सार निकाला कि "ज्ञानयुक्त भक्तिप्रधान कर्मयोग समन्वय" किया जो कर्मयोग है। वह स्वतः होता ही जाता है। कोई समझ करके कार्य करता है और कोई न समझके कार्य करता है। उन दोनों में भेद जरूर हो जाता है। यदि ज्ञान और कर्म इन दोनों का समन्वय हो जाय तो कर्तव्यकी कीमत और अधिक बढ़ जाती है। उसमें और सुगन्धि आ जाती है। हाँ एक बात और है जैसे मैं समझता हूँ कि हमारे पास कोई आदमी आता है। मैं एक चवन्नी या दुवन्नी फेंक कर देता हूँ। वह क्रिया हो गई। वह उसे उठा कर चला जाता है। लेकिन उस क्रियामें कुछ कौशल नहीं। कुछ सौभाग्य नहीं। लेकिन जब मैं उसके पास विनीत भावसे जाता हूं और कहता हूं कि इसे ले लो और मुझे कृतार्थ करो। अब यहाँ पर ध्यानपूर्वक देखा जाय तो क्रिया समानरूपसे है। उसमें कोई फर्क नहीं आया। लेकिन पहले की क्रियामें और दूसरी वारकी क्रियामें दोनों क्रियात्त्वरूपसे समान होते हुए भी, उसके अध्यात्मतत्त्वमें वहुत भिन्नता आ जाती है। एकमें अच्छा फल है और एकमें नहीं। तो कहने का अभिप्राय यह है कि ज्ञान हो और ज्ञानके साथ भक्ति हो तो और भी समुचित है। हमारे शास्त्रों में उपासना भी वताई गई। हमारे एक बड़े ज्ञानी सन्त रामदासजीने कहा है कि जब मनुष्य संकटमें आ गिरता है तो उसे कुछ सूझता नही। वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है। क्या करूँ ? क्या न करूँ ? कहाँ जाएँ ? कहाँ न जाएँ ? ऐसा संकल्प-विकल्प होता है। तो उन्होंने कहा है कि उपासना—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उपासना—उपासना—जो हमारा आदर्श उसको समझो और उसका अनुसरण करो। प्रमाद करने से सावधान रहो अपने आदर्श को मत भूलो। चाणक्यने कहा है कि "सब कुछ जाय; बुद्धि न जाय" याद रखो कहीं बुद्धि चली गई तो हम कुछ नहीं रह जाएँगे। जैसे अन्य जानवरों की क्रिया है वैसी हमारी भी है। मनुष्य में बुद्धि ही विशेष वस्तु है जो पशु से व्यावर्त्तन करता है। तो ऊपर से प्रसंग स्मरण कीजियेगा। अर्जुनने मान लिया, ऐसा नहीं, अज्ञानसे माना ऐसा नहीं। जैसे कि एक छोटा-सा उदाहरण देता हूँ। उससे स्पष्ट हो जायगा।

एक पलटनमें एक सिपाही रहता है, हम उसके पास, पहुँच कर कहते हैं कि गोली चलाओ। उनको पता नहीं क्यों लड़ाई हो रही है, तो एक जर्मन सिपाही छुपते-छुपते अंग्रेज पलटन पर हमला करनेके लिये जाता है और वहाँ एक जर्मन को देखता है कि यह भी जर्मन और मैं भी जर्मन हूं तो लड़ाई किसलिये ? यह जंग किस लिये ? वह उससे पूछता है कि तू कौन है ? तब वह कहता है—सिपाही हूं। तो तू सिपाही और मैं भी सिपाही तो भाई जंग किसलिये हो रहा है ? तब उत्तर मिलता है—मालूम नहीं किसलिये हो रहा है ? तो यह अज्ञान है। यदि इन्हें ज्ञान हो कि हम आदर्श के लिये मर रहे हैं तो आप समझलें उसकी क्रिया में विशेषरूप आ जाता है। जब तक जीवन है तब तक कर्तव्य करना है क्षणमात्र के लिये कर्मके बिना नहीं रह सकता है। करना ही कर्म है तो अच्छा ही कर्म क्यों न करें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भगवती गीता यही बताती है कि जो कर्म करना है उसमें कौशल आप लाएँगे तो वहीं कर्मयोग हो जायगा। सबसे सुन्दर और सरल व्याख्या यही है। जो कुछ कर्म करें उसमें कौशल (एफीशिएन्सी) निपुणता लाएँ। कौशल तभी आता है जब हमारा मन कार्यसे समन्वित होता है। यही गीताका दिव्य-अमर सन्देश है जैसे कि हमारे विनोवा भावेने कहा है कि—

वेद-वेदान्तसूत्राणि "विनुना" सारमुद्रितम् ।
ब्रह्मसत्यं जगत्स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम् ।।

महावाक्य तो इस प्रकार है—कि "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, ब्रह्म जीवैव नापरः" विनोवा-भावेने एक मोड़ दिया कि—"वेद-वेदान्तसूत्राणाम्" किं सारं ? सार क्या है ? "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या" नहीं है। "जगत् "स्फूर्तिः" कहा है कि हमें वहां कुछ प्रयोग करना है और वह प्रयोग सत्य शोधनकेलिए जीवनका हेतु है। "जीवनं सत्यशोधनम्"

शंकराचार्यजीकी कथा आती है कि एक दिन वे गलीसे जा रहे थे कि रास्तेमें उन्हें एक हाथी मिला। उन्होंने उसे देखकर पलायन करना शुरू किया। उनके शिष्योंमेंसे एक ऐसे शिष्य थे जो विनय सम्पन्न कम थे। उन्होंने ऐसा कहा कि, महाराज! यह जो हस्ती है। वह एक माया है। तो वे बोले कि—"पलायनमपि माया" भागना भी तो माया है। यह तो तर्ककी दृष्टिसे ठीक हो गया। परन्तु उच्च आदर्शको आचरणमें लाना श्रेष्ठ माना जाता है। अन्यथा हम तो सभी चर्चा करते हैं और आजकल

Arun Vikit Chauhan Collection Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तो प्राय: सभी वेदान्तकी चर्चा करते हैं। परन्तु क्रियान्वित नहीं करते। "ज्ञानं भार: क्रियां विना" क्रियाके विना ज्ञान भाररूप होता है। पहिले वेदान्तविद्या सन्त-महात्माओंकी सम्पत्ति थी। अब ऐसा युग आ गया है कि सब अपनेको ऊँचा समझते हैं। कोई नीचा नहीं समझता। नाक-कान-देहादिकी दृष्टिसे तो सभी समान हैं। लेकिन जीवनकेलिए देह ही सब कुछ नहीं है। निश्रेयस् और प्रेयस् दोनोंकी प्राप्तिकेलिए कोई भी ऐसा धर्म नहीं जो हमारे वेदान्तके सामने खड़ा हो सके।

यह अध्यात्म विद्या और इसका प्रपंच अठारहों अध्यायोंमें कहा है। वही सार है। हमारे स्वामीजीने सारोंका भी सार आपको बताया कि—"धर्म मम" "धर्म मम" तो अब यह हुआ कि मैं आपका अधिक समय न लेता हुआ यहीं समाप्त करता हूँ। अन्तमें एक शब्द अवश्य कहना चाहता हूँ। यहां आकर मुझे अति प्रसन्नता हुई। इस "षष्ठ वेदान्त-सम्मेलन" के आयोजक पूज्य स्वामीजी महाराजका तथा आप सब भद्रपुरुषोंका आभार मानता हूँ।

॥ हरि: ॐ तत्सत् ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् सेठ गोविन्ददासजी (लोकसभा सदस्य)

परम पूज्य साधुवृन्द ! बहिनो तथा भाइयो।

जिस गद्दी पर हमारे इतने बड़े-बड़े महात्मा विराजमान हैं। यहाँ उनके बीच मुझे लाकर बैठाया। परन्तु मुझे बड़ा संकोच होता है। किन्तु आज्ञाको शिरोधार्य न करना एक धृष्टता होगी। इसलिये यहाँ आकर मैं बैठ गया। उसके बाद मेरे सम्बन्धमें आपसे बहुत-सी बातें कही गईं। उन बातोंको सुनकर मुझे महाभारतके वनपर्वका एक इतिहास याद आता है। उस प्रसंगमें महाराज युधिष्ठिरने यह कहा कि यदि किसीको सबसे बड़ा दण्ड देना हो तो उसके मुखपर उसकी प्रशंसा करदी जाए और वह बीचमें न बोले इसका बन्धन भी लगा दिया जाय। मैं यह तो नहीं कहूँगा कि मुझे दण्ड देनेकेलिये ये बातें कहीं गई हैं। परन्तु एक आशीर्वादके रूपमें उन बातोंको मान लेता हूँ। उसकेलिये एक रूखा-सूखा धन्यवाद भी दे देता हूँ।

जब तक हमारा देश स्वतन्त्र नहीं हुआ था, तब तक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्वतन्त्रता प्राप्त करना हमारा एक आपद्धर्म था। मैं इतने पूज्य महात्माओंके सामने कोई धर्मकी व्याख्या करनेकी धृष्टता नहीं कर सकता। परन्तु हमारे यहां धर्मके दो प्रकार हैं। एक उस समयका धर्म जबकि देशकी साधारण अवस्था रहती है। उस समय साधारण धर्मोंका प्रचलन रहता है। एक कभी असाधारण अवस्था रहती है। तब आपद्धर्मका समय आ जाता है। उस समय साधारण धर्म कुछ समयके लिये रुक जाता है, और आपद्धर्मके अनुसार चलना पड़ता है। देशकी स्वतन्त्रताके समय एक असाधारण समय था। यह वह समय था आपद्धर्मका, परन्तु स्वतन्त्रताके बाद यह समय साधारण धर्मका है। इस समय हम देखते हैं दो कार्य देशमें प्रधानतासे हो रहे हैं। दोनों कार्यों-का निर्माणसे सम्बन्ध है। यह देश हमें दो सौ वर्षोंकी पराधीनता के बाद एक खण्डहरके रूपमें मिला। न पूरा अन्न और न पूरा कपड़ा। न अन्य जरूरियात की चीज मिलीं। दूसरी ओर अशिक्षा थी। निर्माणका कार्य शुरू हुआ। गरीबोंके सबसे सबसे पहिले आधिभौतिक चीजोंके निर्माणकी ओर ध्यान देना आवश्यक था। यह कृषि प्रधान देश है। बड़ी-बड़ी नहरें बनाई जा रही हैं। बड़े-बड़े उद्योग-धन्धे आरम्भ किये गये और किये जा रहे हैं। उस क्षेत्रमें घूसखोरी, भ्रष्टाचार, दुनिया भरके सामाजिक पापोंके रहते हुए भी कुछ दूर तक सफलता भी मिली। लेकिन एक दूसरा भी निर्माण है जो उससे भी महत्त्वपूर्ण निर्माण है वह निर्माण है—नैतिक निर्माण—नैतिक निर्माणमें अब तक हमारी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करीब-करीब वही अवस्था है जो उस समय थी। जब स्वतन्त्रताके पश्चात् हमने निर्माणके कार्यको आरम्भ किया था।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ उन संस्कारोंके कारण या थोड़ा पढ़ लिखकर अपने विचार बनाए। उन विचारोंके आधारपर इस देशका निर्माण हो ही नहीं सकता। यदि वह निर्माण धर्म-की बुनियाद पर न किया जाय। हमारे इस विधानने हमारे इस देशको धर्म निरपेक्ष राज्य बनाया है। धर्म निरपेक्ष राज्य बुरी चीज नहीं। यह देश सदा ही धर्मनिरपेक्ष रहा है। देखो वेद-वेदान्त-ईश्वरवादी धर्मोंका विकाश (विकास) हुआ। दूसरी ओर चार्वाकके सदृश अनीश्वरवादी भी पैदा हुए। हमारे देशमें ही जैनियोंका धर्म चला। वह भी अनीश्वरवादी धर्म है। गौतम-बुद्धका धर्म चला। वह भी निरीश्वरवादी धर्म है और हमारी धार्मिक-संस्कृति इतनी उदार है, सहिष्णु है कि जैनियोंके भी आदि तीर्थंकर ऋषभदेवजीको और गौतमबुद्धको भगवान्का अवतार मान लिया। तो धर्मनिरपेक्षता तो देशकी आध्यात्मिक वस्तु है। परन्तु आजकल उस धर्म निरपेक्षताके विभिन्न अर्थ किये जाते हैं और उसका एक अर्थ यह भी है। यह राज्य अधर्म राज्य है। यह व्याख्या तो ठीक नहीं है पर अनेक नेताओंका आचरण इस प्रकारका अवश्य है जिससे विवश होकर हमें यह कहना पड़ता है कि इस धर्मका संस्कृतिवाले देशमें धर्मका वह स्थान नहीं हो पा रहा है जो स्वाधीनताके पश्चात् तत्काल हो जाना चाहिये था और मेरा यह निश्चित मत है,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जब तक इस देशकी नई पीढ़ीका निर्माण धार्मिक बुनियाद पर नहीं होगा तब तक यह भ्रष्टाचार, घूसखोरी और अनैतिकताका अन्त होनेवाला नहीं है।

मुझे बड़ा हर्ष होता है आपके इस सम्मेलनको देखकर और यहाँ आकर। आज तक हज़ारों वर्ष बीत गये परन्तु जो बात हमारे ऋषि-मुनियोंने वेद और वेदान्तमें कह गये उसके आगे आजके कोई भी विचारक नहीं जा सके। हमने—हमारे ऋषिओंने, हमारे अवतारोंने, हमारे सन्तोंने और हमारे भक्तोंने एक बातकी खोज करली थी कि यह निखिल सृष्टि एक ही तत्त्व है। उस तत्त्वको उन्होंने चैतन्य माना। उसे ब्रह्मका नाम दिया। आजके बड़े से बड़े वैज्ञानिक भी इस खोजसे आगे नहीं जा पाये। यह समस्त सृष्टि एक ही तत्त्व है। यह आज भी बड़े-से बड़े वैज्ञानिक भी मानते हैं। अन्तर इतना ही है—हम उस तत्त्वको चैतन्य मानते हैं और वह उसे जड़ मानते हैं एवं उसके अनेकों नाम देते हैं। जो कुछ भी हो, यह समस्त जगत्, यह समस्त सृष्टि एक ही तत्त्व है। इसमें किसीका मत-भेद नहीं है। हजारों वर्षों पहिले हमारे ऋषि-महर्षियोंने तत्त्ववेत्ताओंने एवं सन्तोंने वह खोज की थी। उसके आगे खोज आज तक नहीं जा पाई। उसीको हम सत्य मानते हैं। गांधीजीने बताया सत्य यही तत्त्व था। इसके बाद अहिंसा अपने आप आ जाती है। मैं वही हूँ जो आप हैं। आप वही हैं जो मैं हूँ और समस्त सृष्टि वही है जो आप और मैं। तब आदमी अपनी तो हिंसा नहीं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करता, तव अन्य आदमी की हिंसा कैसे कर सकता है ? क्योंकि एकत्वकी भावनासे ओत-प्रोत है। "एकत्वमनुपश्यतः" हमारे वेद-वेदान्तकी यह सबसे बड़ी खोज है। और आज केवल हमारे देशका ही नहीं परन्तु विश्वका कल्याण जब तक इस खोजके अनुसार बर्ताव नहीं होता तब तक शान्ति होनेवाली नहीं है।

मैं दुनियाके करीब सब देशोंमें घूमा हुआ आदमी हूँ। इस समय तमाम दुनियाके देश दो गुटोंमें बंट गये हैं। एक का नेतृत्व अमेरिका करता है और दूसरेका नेतृत्व रूस करता है। दोनों बातें तो शान्तिकी करते हैं और अन्दर ही अन्दर तयारी लड़ाईकी करते हैं। कभी आज तक यह बात नहीं हुई। बात एक की जाय तयारी ठीक उसके विपरीत दिशामें हो। यह—इस कालकी एक अद्भुतलीला है। उस समय कुछ कर सकता है तो हमारा वेदान्तकर सकता है। हमारे देशकी उन्नति यदि कोई कर सकता है तो वेद और वेदान्तकर सकते हैं। आज हमारे देशकी क्या अवस्था है, आप देखें। किसी नई पीढ़ीके व्यक्तिका किसी बात पर विश्वास ही नहीं है।

जैसी अविश्वासी पीढ़ी इस समय निर्मित हो रही है, शायद हमारे देशमें कभी नहीं निर्मित हुई होगी। विज्ञानकी किसी बात पर भी चाहे उसे समझनेका उनका ज्ञान हो जिस Aprator instrument उस बातकी की गई हो उस Instrument Aprator को स्वयं काम न ला सके जब कोई वैज्ञानिक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अपनी खोजके ऊपर यह कह देता है कि मैंने अमुक-अमुक खोज की है तब हमारी नई पीढ़ीको तुरन्त विश्वास हो जाता है। मेरी समझमें नहीं आता, यदि बिना स्वयं खोज किये और बिना उस Aparator या उस Instrument इस्तेमाल किये किसी दूसरेकी खोज पर वे नई पीढ़ी वाले विश्वास कर लेते हैं। आखिर हमारे ऋषि-मुनि-तत्त्ववेत्ता-सन्त-महात्मा और भक्त मिथ्यावादी तो नहीं थे। उन्होंने जिस ईश्वरकी खोजकी थी वह एक खास तरहका Aparator था। वह खास तरहका Instrument था जो आधिभौतिक Aparator (ऐंपरेटरों) से बहुत बड़ी चीज़ थी। उसका आत्मासे सम्बन्ध था। अन्तःकरणसे सम्बन्ध था तो उस (ऐंपरेटर) के द्वारा उस इन्स्ट्रूमेंटके द्वारा हमारे महर्षिओंने, तत्त्व-वेत्ताओंने जो खोजकी थी, जिस तत्त्वका साक्षात्कार किया था उस पर आज भी पीढ़ीका विश्वास नहीं होता जबतक हमारे वेद और वेदान्तकी खोजी हुई हैं उन पर हमारी नई पीढ़ीका विश्वास नहीं होगा तबतक देशका कल्याण होनेवाला नहीं हैं। स्वराज्य हो गया बड़ी बात हुई। उससे पूर्व आपद्धर्म था। देशको स्वतन्त्र करना सबका कर्त्तव्य था परन्तु अब साधारण धर्मका समय आया है। उस साधारण धर्मके समयमें वेद और वेदान्तका सर्वोपरि स्थान है। मैं चाहता हूं कि हमारी सरकार धर्मनिरपेक्ष होते हुए भी इन बातोंको समझनेका प्रयत्न करे।

हमने इस देशमें प्रजातन्त्रकी स्थापनाकी है। प्रजातन्त्रमें इन सब विचारोंका प्रसार किया जाय तथा देशमें इस प्रकारके वायु-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मण्डलको पैदा करें। देशमें वेद और वेदान्तकी स्थापना होकर नई पीढ़ीका निर्माण हो।

मुझे यहाँ बुलाकर इन थोड़े-से शब्दोंका कहनेका जो अवसर दिया गया है, उसके लिये मैं आयोजक महोदयका एवं सञ्चालक महानुभावका हृदयसे धन्यवाद करते हुए अपने वक्तव्यको यहीं समाप्त करता हूं।

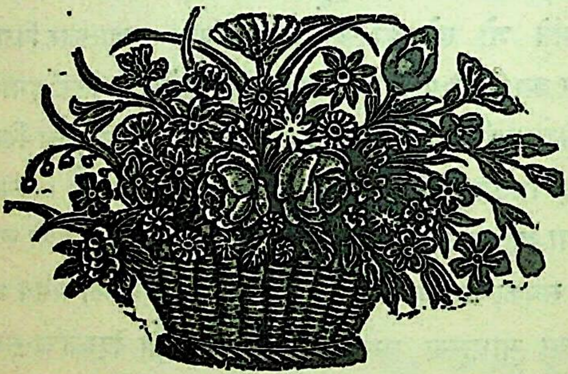

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् स्वामी प्रेमपुरीजी महाराज वेदान्ताचार्य (वृन्दावन)

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

माननीय आचार्यचरण ! महात्मवृन्द ! तथा प्रिय-बन्धुओ ! आप लगातार कई दिनोंसे ज्ञान-गंगामें पवित्र स्नानकर रहे हैं। मैं भी अपने विचार आपके सम्मुख रखना चाहता हूँ। प्रत्येक मानवके अन्दर दो प्रकारके विचार होते हैं। कुछ सुलझे हुए विचार और कुछ उलझे हुए विचार। उलझे विचार हमें बहिर्मुखताकी ओर लेजाते हैं और सुलझे हुए विचार तत्त्वनिर्णयकी ओर प्रेरित करते हैं। "वेदान्त-सम्मेलन" आदिसे हमें सुलझे हुए विचारोंकी उपलब्धि होती है अर्थात् ज्ञानकी प्राप्ति होती है जिसके लिये भगवान्ने बताया है— "अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः" अज्ञानने हमारे ज्ञानको आवृतकर रखा है। ढक लिया है। जिसके कारण सभी लोग मोहित होजाते हैं। इन्हीं उलझे हुए विचारोंने ज्ञानको ढक रखा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। तो कहते हैं कि सुलझे हुए विचारोंके द्वारा सबको ज्ञानी बनाओ। ज्ञानी होनेसे क्या होगा? एक दिन की बात है कि दो मित्र गंगास्नान कर रहे थे। शायद यहाँ "वेदान्त-सम्मेलन" से कुछ सुनकर गये होंगे। एक आग्रह कर रहा था कि, आओ और नहाओ। दूसरा कहता था। बस-बस मुझे ठण्डी लग रही है तो दूसरा कहता है कि अरे! तुम भी मिट्टीके माधव ही निकले हो। कल ही तो सुना रहे थे कि शरीर और आत्मा जुदा-जुदा है। ठण्डी तो शरीरको लगेगी। तुम तो आत्मा हो और आत्मा को थोड़ी ठण्डी लगती है? ठण्डे जलमें कभी ठण्डी लगती ही नहीं। ये तो सुलझे हुए विचार हैं। शरीर और आत्मा दोनों अभिन्न-से हो रहे हैं और अभिन्नताके कारण जिस चीजके लिये प्रयत्नशील हो रहे हैं वह चीज़ मानों हाथ नहीं आ रही है। है हाथ पर पहिले से। प्राप्तकी ही प्राप्ति बतलाई है। कोई नई चीज आपकी झोलीमें नहीं डालनी है। प्राप्तवस्तुकी ही प्राप्ति करनी है। लेकिन अभी विचार उलझे हुए हैं। इस शरीरको ही मानो आत्मा समझ रखा है।

इस प्रकारके "वेदान्त-सम्मेलन" जो किये जाते हैं। ये वेदान्त-सम्मेलन क्या करते हैं? ये धीरे-धीरे अज्ञानको दूर करते हैं। आजकलका समय बड़ा विचित्र है। "समय एव करोति बलाबलम्" समयकी बलिहारी है—जैसे और समय हैं ऐसे यह भी समय है। अभी-अभी राजधानी दिल्लीमें एक सम्मेलन हुआ था उसमें चीनके प्रधान मंत्री चाऊ एनलाई मयदलबलके पधारे थे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

और यहाँ प्रधानमंत्री और अन्य सभी मंत्री तीन दिन तक समस्याको सुलझाते रहे। लेकिन अन्तमें चीन कहता है एवरेस्ट हमारा है। भारत कहता है 'एवरेस्ट' हमारा है और नेपाल कहता है 'एवरेस्ट' हमारा है। तो ये उलझे हुए विचार हैं। ये समस्याओंको उलझानेवाले विचार हैं। जिनसे समस्याएँ सुलझती नहीं। बल्कि और उलझ जाती हैं। तो यह "वेदान्त-सम्मेलन" की अपनी कुछ विशेषता है। इसमें विचारोंको सुलझाया जाता है। उलझाया नहीं जाता है। यहाँ पर सुलझे हुए विचार क्या हैं? "आत्मा अनात्माका विवेचन" यही यहाँ पर सुलझे हुए विचार हैं। कुछ भी करते समय हमारा स्वरूप हमारे सामने रहे। यहाँ सुलझे विचार हैं। जबसे सृष्टिकी उत्पत्ति हुई तबसे एक अज्ञान हम भी लिये बैठे हैं। अब यह प्रश्न होता है कि आप कौन हैं? तो आप इस मिट्टीके पुतलेको आगे कर देते हैं, जो अपने अन्दर विशेषता हैं उसे आप भूल जाते है जो इसके अन्दर विराजमान है सबका अधिष्ठानस्वरूप है उसको मानो भूल जाते हैं। देह क्या है? अनित्य है। आप इसे भूल जाते हैं। नित्य मान लेते हैं। शरीर जड़ है परन्तु आप इसे भूलसे चेतन मान लेते हैं। शरीर तो दुःखरूप है परन्तु भ्रान्तिके कारण आप सुखरूप मानने लग जाते हैं। वह आत्मा क्या है? नित्य है उसे भूलकर अपनेको दुःखरूप समझने लगते हैं। उसको जड़ मानते हैं। आंख, कान, नाक, आदि शरीर संघात यानी यहाँ इसका सच्चा स्वरूप है। वह आत्मा सुखस्वरूप है उसे आप

CC-0. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बिल्कुल भूल जाते हैं। ये उनके हुए विचार, कहाँसे आ गये। जिस शरीरको अनित्य समझना था, उस नित्य समझ लिया और जिसे नित्य समझना था उस आत्माको अनित्य समझ लिया है। ये बातें हमें उलझानेवाली हैं। क्योंकि हरेक बात में हमारी दृष्टि शरीर पर जाती है और आत्माको भूल जाते हैं। इन्हीं बातोंको सुलझाना है। किस प्रकारसे सुलझाया जाय ?

अपने जीवनमें जब हम अपने विचारोंको लेकर कार्यक्षेत्रमें उतरते हैं तो इन्हें सुलझाना होता है। वेदान्त घोषणा करता है कि आत्मा एक है "एकत्वमनुपश्यतः" उस एकको ही देखता है। एक को ही जानता है। "सूत्रे मणिगणा इव" ये मणियां सारी उसमें पिरोई हुई हैं। वह सबमें सूत्ररूपसे अनुस्यूत हैं। वेदान्त कहता है कि तुमसे भिन्न कुछ भी नहीं है। तुम लड़ किस-से रहे हो। झगड़ा ही तो घरको नरक बनाता है। क्योंकि आपके पास एक ऐसा अमूल्य रत्न है जो सच्चिदानन्दस्वरूप है। यदि उस आत्मरूप रत्नकी ओर आपकी दृष्टि हो गई तो संसारके सारे व्यवहार झूठ मालूम पड़ने लगेंगे। वह व्यवहारिक सुझाव क्या है ? इस पर एक साधारण दृष्टान्त आपके सम्मुख उपस्थित करता हूँ।

एक सज्जन थे। उनका एक नवयुवक, अच्छा पढ़ा-लिखा लड़का अमेरिकामें रहता था। माता-पिता उसके भारतमें थे। माता-पिताने सोचा कि इस लड़केकी शादी कर दी जाय। लड़के-को वहाँसे बुलाया गया। पिताका आमन्त्रण सुन लड़का तुरन्त

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चला आया। पासमें ही एक अच्छे कुलीन परिवारकी एक सुन्दर रूपवती कन्याके साथ लड़केकी शादी कर दी। शादी होनेके पश्चात् घरमें पदार्पण किये। वहूको दो-चार ही दिन हुए थे कि लड़केको फिर कार्यवश वहाँसे लौटना पड़ा। साथमें अपनी धर्म-पत्नीको लेकर जब वह चलनेके लिये तैयार हुआ तो उसकी माताने आकर कहा—बेटा! मैं बहुत दिनसे इन्तजार कर रही थी कि मेरे घरमें "वहू आयेगी" "बहू आयेगी" लेकिन तू अभी साथमें लेकर चला। तुम्हें सारे जीवन वह सुख देगी। चार दिन मेरे पास भी रहने दो। मैं भी उसका सुख देख लूं। पुत्र, आज्ञा-कारी था। माताकी आज्ञाको शिरोधार्यकर अकेला वहूको छोड़कर वापिस चला गया। नई-नई वहू घरमें आई थी। रूपवती और सुडौल, न छोटी न ज्यादा बड़ी, न मोटी और न ज्यादा पतली, देखनेमें सुन्दर थी।

सास गांव-भरमें, मुहल्ले-मुहल्लेमें कहा करती थी कि मेरी बहू तो हीरा है। रत्न है। ऐसी कहीं भी नहीं होगी। मेरी बड़ी सेवा करती है। रात-दिन मेरी आज्ञाका पालन करती है। मेरे पैर दबाती है। रोटी ताजी-ताजी खिलाती है। कपड़े धोती है। मानो उसने मेरे ऊपर सारा जीवन न्योछावर कर दिया है। इस प्रकार वह घर-घरमें कहा करती थी। लेकिन कुदरत क्या चक्कर नहीं खिलाती। अकस्मात उस लड़कीको माता निकली और उसमें उसकी एक आँख चली गई और सारा शरीर जो पहिले सोनेकी तरह चमकता था वह काला पड़ गया। पहिले जो वहू हीरा थी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वही अब कंकड़ बन जाती है, जो पहिले सुर-सुन्दरियोंको उपहास करती थी, अब वह भूत-प्रेतनियोंको उपहास करने लगी। अर्थात् सोनेसे मिट्टी बन गई। "मानुष-मानुष तें अन्तरा कोई हीरा कोई कंकरा" अब उसकी सास उसकी निन्दा करने लगी कि मेरा बेटा इसके साथ कैसे रहेगा? कैसे इसे सभा-सोसाइटियोंमें ले जायगा? कैसे इसे घूमने-फिरनेके लिये साथ ले जायगा? लोग मेरे बेटेकी हँसी उड़ाएँगे। मैं तो अपने बेटेकी शादी दूसरी करूँगी, मेरे घरमें क्या कमी है। दूसरी अच्छी बहू लाऊँगी। इस प्रकारसे निन्दाकर बेचारी बहूको (मायके) माता-पिताके घर भेज देती है और लड़केको वहाँसे बुलाती है और वह गुप-चुप उसकी शादीका प्रयत्न करती है। लड़केने आते ही कहा कि मेरी धर्मपत्नी कहाँ है? और वह स्वयं अपनी ससुराल चला गया। वहाँ भी उन्होंने सोचा कि हमारे दामादके दुःख न हो। इसलिये लड़की सामने नहीं लायी गई। इधर-उधरसे लड़केने उसको देखा तो उसके कोमल हृदय पर एक चोट लगी, एक गहरी चोट लगी और वह विचलित हो उठा। लेकिन कुछ समझकर सोचने लगा कि यह संसार परिवर्तनशील है और यह शरीर अनित्य है, नाशवान् है। दुःखरूप है। इसीके कारण तुमने सारी उलझने अपने गलेमें डाल रखी हैं, तो उसने वेदान्त सुन रखा था और तुरन्त उसकी दृष्टि आत्मा पर पड़ जाती है। देखता है कि आत्माकी तो कोई आंख कानी नहीं है और आत्मा पर कोई काले निशान नहीं हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह सारी सुन्दरता इस शरीरकी है। आत्मा तो वैसाका-वैसा ही पवित्र है और उससे अधिक उस लड़कीकी आत्मा खिल उठी। वह अपने पतिके चरणोंमें पड़कर बोली—मुझे नहीं छोड़ना। मैं तुम्हारे चरणोंकी धूलमें पड़ी रहूँगी और आप अपना कुछ और इन्तज़ाम कर लेना। उस बहूकी कितनी पवित्र आत्मा थी। वह कहती है कि मेरा धर्म नहीं बिगाड़ना। बस उसकी आत्मा कितनी शुद्ध और निर्लेप है। उसका कुछ नहीं बिगड़ा, बिगड़ा तो इस शरीरका है। वह तो सोने-चांदीसे अब कंकड़का हो गया है। लेकिन आत्मा तो वही हीरा है। वही रत्न है। वह लड़का हाथ पकड़कर कहता है कि जो भक्ति-श्रद्धा और प्रेम मेरा तेरे पर पहले था वही आज भी तेरे ऊपर है। उससे अधिक और भी बढ़ गया है। मान लीजिये थोड़ी देरके लिये मैं बीमार हो जाता और मेरी आंख फूट जाती या कुछ और हो जाता तो तू मुझे छोड़कर कहीं और जा सकती थी। बस शरीर और आत्माका यहाँ निर्णय हो गया। वेदान्तके ज्ञानने उन दोनोंकी बिगड़ती हुई बात सम्भाली। दो घंटेके अन्दर घर-भरमें सुख और आनन्द छा गया। लोग आश्चर्यमें पड़ गये कि यह क्या हुआ? लोग सोचते-सोचते ही रह गये। ये हैं सुलझे हुए विचार। जब आप घर जाएँगे तो इन चीज़ोंका ध्यान देंगे, तो समस्त पारिवारिक समस्याएँ सुलझ जाएँगी। शरीर ही हमें सब कुछ दिखाई देता है काला-गोरा-मोटा-पतला-लङ्गड़ा। लेकिन वेदान्त-सम्मेलन-में सुने हुए ज्ञानका बिन्दु आपके हृदयमें अटक कर रह गया, तो

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वह आपको सदाके लिये दृष्टिको निर्मल करेगा और सदाके लिये यह ख्याल रहेगा कि मैं शरीर नहीं हूँ। मैं शुद्ध सच्चिदानन्द-निर्लेप हूँ। मेरे घरमें कोई लड़ाई नहीं। झंझट नहीं। सदा उसका चेहरा आनन्दसे परिपूर्ण रहेगा और कहेगा कि यह वेदान्त-सम्मेलन हर साल किसी-न-किसी तरह होता रहे। जिसमें हमें सुलझे हुए विचार मिलते रहें। इतना कहते हुए मैं अपने वक्तव्य-को समाप्त करता हूँ।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

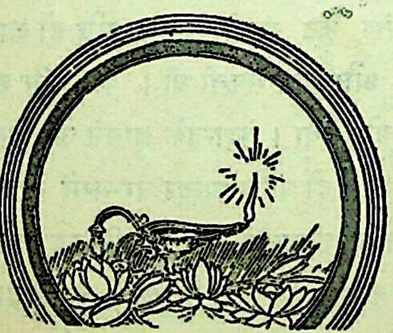

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीस्वामी त्रिवेणीपुरीजी महाराज, संन्यास-आश्रम-कनखल

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ।।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

समादरणीय महात्मवृन्द ! विद्वन्मण्डली ! सद्गृहस्थ ! माताएँ तथा बहिनें ।

आप भागीरथीके तटपर आकर कई दिनोंसे लगातार वेदान्त-का श्रवण कर रहे हैं। महापुरुषोंने आपको यह बताया कि मानव-का कल्याण एकमात्र वेदान्तके श्रवण, मनन आदि द्वारा ही हो सकता है। यह विषय बड़े महत्त्वका एवं गम्भीर होनेके कारण मैं भी आपको इसी विषयमें कुछ अपने सुलझे हुए विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

सज्जनों ! यह मनुष्यदेह बड़े ही पुण्योंसे प्राप्त हुआ है। इस पवित्र जीवनको प्राप्तकर कुछ विचारसे कार्य नहीं किया तो अन्त-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

में पछताना ही पड़ेगा। समस्त वेद-वेदान्त तथा दर्शनोंके अध्ययनसे यही "मालूम होता है कि संसारमें दो आवश्यक पदार्थ हैं। एक "भोग" और दूसरा "मोक्ष"। इन्हींके सम्यक् प्रसाधनमें जीव अनादिकालसे लगा हुआ है।

भोगसे संसारान्त: पाती समग्र सुख-सामग्रीके संकलनद्वारा सुखकी परम्परामें पड़कर जन्म-मरणरूप आवागमनके दु:खमिश्रित क्षणिक सुखका अनुभव करता है और इसी सुखलवको प्राप्तकर लखचौरासीके घेरेसे उन्मुक्त नहीं हो पाता। मरने-जीनेके फेरमें ही पड़ा-पड़ा दु:खबहुल संसारके ही स्वप्न देखा करता है। सुखका अनुभव होता भी है तो बहुत अल्प। संसारके भोगपदार्थोंमें स्थायिता न होनेसे तज्जन्य सुख भी स्थायी नहीं होते। इन भोग पदार्थोंके परिणाममें दु:खही दु:ख देखनेमें आते हैं। मानलो—आपके पास लाखों-करोड़ोंकी सम्पत्ति है, आप बड़े धनी हैं—तो क्या आप सुखी हो जायेंगे? आज, आप देखिये—संसारमें एकसे एक धनसे धनी हैं। पर उनसे पूछा जाए कि कहो भाई! आप पूर्ण सुखी हैं? तत्काल उत्तर मिलेगा कि नहीं, पूर्णरूपसे हम सुखी नहीं हैं। आप विचार दृष्टिसे देखिये तो आपको पद-पदमें अनुभव होगा कि संसारके भोगोंमें पड़कर कोई भी सुखी हुआ, न होगा। ये संसारके भोगपदार्थ जीवको कदापि सुखी नहीं कर सकते। सुख तो आन्तरिक वस्तु है। बाह्यपदार्थोंसे जो सुखकी कल्पना करता है। यही मोह है। इसीको अज्ञान कहते हैं। "अनात्मनि आत्मप्रत्ययो मोह:" इससे विपरीत ज्ञान है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"आत्मनि आत्मप्रत्ययो विवेको ज्ञानम्" परन्तु जीव बाह्य पदार्थोंमें इतना आसक्त हो जाता है कि तत्त्ववस्तुका विवेक नहीं कर पाता, इन पदार्थोंमें सुख स्वल्प हैं और दुःख अधिक हैं। परन्तु मायाका आकर्षण ऐसा है मनुष्य उलझनमें पड़ जाता है फिर वहाँसे सुलझना मुश्किल हो जाता है। देखिये किसी कविने कस्तूरी मृगकी उपमा देकर जीवके अज्ञानताका चित्र खींचा है—

नाभिस्थितं परिमलं हि यथा कुरङ्गोऽ–,
ज्ञात्वानिशं भ्रमति बालतृणानि जिघ्रन्।
स्वानन्दरूपमविबुध्य तथैव मूढाः,
ह्यापातरम्य विषयेषु मुधा भ्रमन्ति॥

एक कस्तूरीमृग होता है। आप सभी जानते हैं। कस्तूरीमृग उसको कहते हैं, जिसकी नाभिसे कस्तूरी निकलती है और जो बहुधा शीतप्रचुर प्रदेशमें रहता है। कस्तूरी बहुमूल्य और सुगन्धित द्रव्य है। इसकी उत्कट मादक सुगन्धिसे मनुष्य प्रमुग्ध हो जाता है। बहुत उपयोगी-पौष्टिकवस्तु है। वैद्यलोग रासायनिक पदार्थों में इसका उपयोग बहुत करते हैं। यह मृगकी नाभिमें होती है। पर बड़े आश्चर्यकी बात है कि इसका ज्ञान उसको नहीं हो पाता। कोमल-कोमल तृणोंको भक्षण करते हुए हमेशा इधर-उधर भटकता फिरता है। उसके पास बहुमूल्य कस्तूरी है पर इसका उसको परिपरिज्ञान न होनेसे उसकी सुगन्धसे वञ्चित रहता है। इसी प्रकार मूढ मनुष्य नित्यशुद्ध-बुद्ध-मुक्तस्वरूप, परमानन्दरूप चिन्मात्रवस्तु जो अपना आप है। कण्ठगत चामीकरकी तरह

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नहीं जान पाते। भौतिक-क्षणिक विषय-सुखोंमें ही लवलीन होकर भटकते रहते हैं। कितनी भारी अज्ञानता है। ऐसे ही लोगोंके लिये श्रुति कहती है —

"अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते"

जो सांसारिक विषयवासनासंयुक्त होकर ज्योतिष्टोमादि कर्म-धर्ममें अनन्यचित्त हो लगे रहते हैं वे अन्धकारयुक्त अहङ्कार-ममकाररूप संसारार्णवमें ही उन्मज्जन-निमज्जन करते रहते हैं। उनके लिए आवागमनके चक्करसे मुक्त होना ही कठिन होजाता है। श्रुति कहती है—"मृत्योः स मृत्युमाप्नोति" वे मृत्युसे मृत्युको प्राप्त करते हैं और "दुःखमेवापियन्ति" दुःखकी परंपरामें ही पड़े सड़ते रहते हैं। ये सांसारिक भोगोंकी महिमा है। जिसको विवेकी-विचारशील-ज्ञानवान् नहीं चाहते। वे चाहते हैं। शाश्वत-सुख और शान्ति।

दूसरा पदार्थ है मोक्ष। "मोचनं मुक्तिर्मोक्षः, संसारपाशेभ्यः आत्मनः पृथग्भावः" दुःखमय संसारके बन्धनसे सदाके लिए छूट जाना ही जीवमात्रका मोक्ष है।

मोक्ष पदार्थ ऐसा है, जहाँ पर दुःखकी गन्ध भी नहीं है। ऐसे ही निरतिशय सुखकी अभिलाषा सभी प्राणी करते हैं। न्यायदर्शन-कार गौतम लिखते हैं— "बाधनालक्षणं दुःखम्" स्वतन्त्रताका न होना और विकल्पका होना दुःख कहलाता है अर्थात् मनको जिस वस्तुकी इच्छाहो, उसके न मिलनेका नाम दुःख है। यह संसार दुःखसे भरा पड़ा है। अतः दुःखरूप है। आगे सूत्रमें आचार्य

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गौतम लिखते हैं—"तदत्यन्त विमोक्षोऽपवर्गः" उस संसाररूप दुःखकी परम्परासे सदाके लिए छूट जाना ही अपवर्ग, अर्थात् "भावेभ्योऽपवर्जनं—अपवर्गः" याने जहाँ पर पवर्ग न हो। उसीको मोक्ष कहते हैं। पवर्ग क्या वस्तु है? लिखा है—

यतोऽन्यस्मिन् पतनं फलाशा,
न बन्धो न चापि भयं न मृत्युः।
पवर्गहीनं पदमीक्षितं वै ततोऽ-,
पवर्गो निगदितो मुनीन्द्रैः॥

संसारमें पवर्गघटित अर्थ देखा जाता है। पुण्य-अपुण्यसे संयुक्त होकर ही मनुष्य संसारमें आता है। पुण्य-पापके अनुसार ही सुख-दुःखका अनुभव करता है। जीवको सदा शुभाशुभ फलकी भी आशा लगी रहती है। लोकमें ऐसे आकर्षक मायावी पदार्थ हैं उनके स्नेहपाशमें निबद्ध होकर वहाँसे फिर निकलना कठिन हो जाता है। सांसारिक बन्धनमें पड़कर ही मनुष्य लखचौरासीके चक्करमें पड़ जाता है। बन्धनमें पड़ा हुआ ही भयसे सदा भयभीत होकर जन्म-मृत्युके पाशसे जकड़ा जाता है। नाना प्रकारकी कठिन यातनाओंको सहते हुए आवागमनके चक्करमें पड़े रहना ही पवर्ग है। उससे विपरीत "अपवर्ग" "मोक्ष" है, वह सुखरूप है। वहाँ शान्ति है। दुःखका लेश नहीं। सदा आनन्द है। उसी पदकी कामना प्राणी किया करते हैं।

संसारमें कोई मनुष्य दुःख नहीं चाहता। हरेक मनुष्य सुख चाहता है और सुख प्राप्तिके लिये ही प्रयत्न करता है। वह सुख

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कैसे प्राप्त हो सकता है, यही आप समझनेके लिये यहाँ पर आये हुए हैं। लगातार कई दिनोंसे महात्मजन आप लोगोंको वेदान्त के द्वारा समझा रहे हैं कि आत्मा वह ब्रह्म सत्-चित्-आनन्दरूप है। जब तक मनुष्य उसको नहीं समझता तब तक वास्तविक शान्तिका अनुभव कदापि नहीं कर सकता। अतः वेदका शिरोभाग वेदान्तप्रतिपाद्य आत्माको समझना प्रत्येक मानवका परम कर्त्तव्य है। मनुष्यके इस पवित्र जीवनकी सफलता भी तभी है।

केनोपनिषद्में लिखा है—"इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः"

यह मनुष्य जीवन अति पुण्यसे प्राप्त हुआ है। इस मानव देहको प्राप्तकर उस आत्माको न जाना तो पुनः संसार दुःखका ही अनुभव करना पड़ेगा। उसको जाननेका अभिप्राय आत्म-साक्षात्कार है, क्योंकि साक्षात्कारके बिना जन्म-मरणके चक्करसे जीव कदापि मुक्त नहीं हो सकता। साक्षात्कारके लिये ही आंतर-बाह्य साधनोंकी आवश्यकता होती है। परम साधन ज्ञान है। ज्ञानके विषयमें गीतामें लिखा है—"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्र-मिह विद्यते" अत्यन्त पवित्र वस्तु ज्ञान है। इससे अतिरिक्त लोक-में और कोई पवित्र वस्तु नहीं है, क्योंकि उस सूक्ष्म आत्माका साक्षात्कार ज्ञानसे ही होता है। स्थूल साधन-साध्य वह आत्मा नहीं है। उपनिषदोंमें सूक्ष्म आत्माका स्वरूप इस प्रकार बताया है—"अणोरणीयान्महतो महीयान्" "सर्वगतं सुसूक्ष्मम्" "यदणु-भ्योऽणु" "तदेतदक्षरं ब्रह्म" "स बाह्याभ्यन्तरो ह्यजः" "आत्मै-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वेदं सर्वम्" "एको देवः सर्वभूतेषु गूढः" ईशावास्यमिदं सर्वम्" "शुक्रमकायम्" "तद्दूरे तद्वन्तिके" "तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति" वह आत्मा जिसको जाननेका प्रयत्न आप सभी करते हैं और दुःखसे निकलकर निरतिशय सुखका अनुभव करना चाहते हैं—वह अणुसे भी अणु और महान्से भी महान् है। सर्ववस्तुमें सूक्ष्मरूपसे परिव्याप्त है। क्योंकि वह अत्यन्त सूक्ष्म है। स्थूल पदार्थोंका साक्षात्कार इन्द्रियोंसे होता है। आत्मा ऐसा नहीं है। वह अक्षर कभी उसका नाश नहीं होता। वह बृहद् है इसलिये आत्माको "भूमा" कहा है। वह बाहर-भीतर साक्षी होकर बैठा है। यह जितना भी दृश्यवर्ग है उसीके कारण प्रतीत हो रहा है। वही एक सर्वका साक्षी भूत-प्राणियोंमें स्थित है। यह समस्त ब्रह्माण्डगोलक उसीसे व्याप्त है। वह शुक्र दीप्तिमान् और अकाय याने लिङ्गशरीरसे रहित है। वह अज्ञानियोंसे तो अत्यन्त दूर है और ज्ञानियोंके अत्यन्त समीप रहता है क्योंकि साक्षीरूप है। वही ज्ञातव्य है। उसीके जाननेकी इच्छा करनी चाहिये। वही बृहद् ब्रह्म है। इससे अतिरिक्त और कोई वस्तु ज्ञातव्य नहीं है।

वेदान्तमें आत्माके सूक्ष्म स्वरूपका इस प्रकार कथन किया है। अतः वह स्थूल कर्मकाण्ड आदिसे साध्य नहीं है। वह तो एकमात्र सूक्ष्म पवित्र ज्ञानसे ही साक्षात्कर्त्तव्य है। अब यह विचारना है कि वह पवित्र ज्ञान कहाँ ? कैसे प्राप्त हो सकता है ?

ज्ञान तो ऐसा पदार्थ है नहीं, जो बाज़ारके किसी दूकानमें बिकता हो या हलवाईके पास मिले या डाकघरमें प्राप्त होता हो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बहुतसे भाई अपना रुपया-पैसा खज़ानोंमें जमा रखते हैं, जब ज़रूरत पड़ती है तो वहाँसे ले आते हैं। ज्ञान ऐसी वस्तु नहीं है, जो खज़ानोंसे मिले। न यह वस्तु धनके समान स्थूल है। साकार-वस्तु स्थूल होती है और वही इन्द्रियोंका विषय बनती है। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं और पाँच कर्मेन्द्रियाँ। श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण ये ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। श्रोत्रका विषय शब्द, त्वक्का विषय स्पर्श, चक्षुका विषय रूप, जिह्वाका विषय रस और घ्राणका विषय गंध। इसी प्रकार पाँच कर्मेन्द्रियाँ—वाक्, पाणि, पाद, शिश्न और गुदा है। वाक्का विषय वचन बोलना, पाणिका विषय आदान-प्रदान करना, पादका विषय गमन-आगमन, शिश्नका आनन्द और गुदाका विसर्ग है। ये सब स्थूल पदार्थोंको ही विषय करते हैं। कठोपनिषत्में लिखा है—"पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्पश्यति नान्तरात्मन्" स्वयंभू भगवान्‌ने समस्त इन्द्रियोंको बाहरकी ओर जानेवाली ही बनाया है, अतः मनुष्य इन्द्रियोंके द्वारा प्रायः बहिर्भूत पदार्थोंको ही देखता है। अन्तरात्माको नहीं देख पाता। यद्यपि वह आत्मा (ब्रह्म) स्वरूपभूत—स्वसंवेद्य है तथापि बुद्धिमान्द्यके कारण सभी नहीं समझ सकते। कोई विरला ही उस अन्तरात्माको देखता है। श्रुति अपने आप कहती है—"कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्त्वमिच्छन्" कोई भाग्यशाली, कुशाग्रबुद्धि मनुष्य ही अमर पदको पानेकी अभिलाषा करके चक्षु-श्रोत्रादि इन्द्रियोंको लौकिक विषयोंकी ओरसे लौटाकर स्व-स्वरूपभूत आत्माका साक्षात्कार करता है। कहनेका

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भाव यह है कि स्थूल इन्द्रियोंसे सूक्ष्म आत्मा देखा नहीं जाता अपितु सूक्ष्म-परिशुद्ध बुद्धिसे ही अन्तरात्माका साक्षात्कार होता है। मन-बुद्धि ये आन्तर करण हैं। वेदान्तशास्त्रमें अन्तः करणसे चारका ग्रहण होता है। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार। मनका धर्म है सङ्कल्प—विकल्प करना, बुद्धिका विषय वस्तुका निश्चय करना, चित्तका स्वभाव है चिन्तन और अहंकारसे अभिमानात्मिका वृत्ति उदित होती है। कहीं मन-बुद्धिके ग्रहणसे ही चारोंका संग्रह हो जाता है। अतः, मन-बुद्धिका ही उल्लेख होता है। मन दो प्रकारका है। शुद्ध और अशुद्ध। शुद्ध मनसे ही आत्मतत्त्वका ग्रहण होता है। क्योंकि आत्मा-ब्रह्म अत्यन्त परिशुद्ध है—श्रुति कहती है—"शुद्धमपापविद्धम्" ब्रह्म पापसे कलुषित कभी नहीं होता।

सज्जनों! अब यह मालूम हो गया कि ज्ञान अत्यन्त पवित्र वस्तु है। आत्मतत्त्व भी सूक्ष्म है। स्थूल इन्द्रियोंका विषय नहीं यह भी सिद्ध हो गया है। वह पवित्र सूक्ष्म ज्ञान ही प्राप्त करना है। जिस आत्मज्ञानकी आप जिज्ञासा रखते हैं वह ज्ञान आपको वेदके शिरोभाग वेदान्तसे ही प्राप्त हो सकता है और वह वेदान्तका ज्ञान वीत-राग, ब्रह्मनिष्ठ, महापुरुषोंसे ही मिल सकता है। पवित्र वस्तु अशुद्ध अधिकरणमें नहीं मिल सकती। शुद्ध अधिकरणमें ही उपलब्ध होती है। इसलिए श्रुतिमें कहा है—"तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्" उस आत्मतत्त्वका ज्ञान उपलब्ध करनेके लिये हाथ में समिधा लेकर श्रद्धा एवं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विनयावनत हो ऐसे सद्‌गुरुके चरण-शरणमें जाना चाहिए, जो वेद-वेदान्तके विपुल सूक्ष्म रहस्यको भलीभाँति जानते-समझते हों और जिनकी परब्रह्म परमात्मामें पूर्णनिष्ठा हो। ऐसे महापुरुषोंके पास ही पूर्ण आत्मज्ञान समुपलब्ध हो सकता है। ज्ञान सम्प्राप्त करनेके लिये ही आप सब यहाँ पर समुपस्थित हुए हैं। गीतामें भगवान् ने कहा है—"ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति" आत्मज्ञानका परम जिज्ञासु ज्ञान प्राप्तकर उत्कृष्ट शान्ति को शीघ्र प्राप्तकर प्रसन्न होता है। ज्ञानके बिना जीवका कल्याण कदापि नहीं हो सकता। ज्ञानसे ही समस्त अज्ञानकी निवृत्ति सम्भव है। गीतामें भगवान्‌ने कहा है—"सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यषि" जिस प्रकारसे प्रकाशसे अन्धकारकी निवृत्ति हो जाती है, उसी प्रकार अज्ञानजन्य समस्त पापकी निवृत्ति ज्ञानसे हो जाती है। ज्ञान ही मोक्षका मूल कारण है मोक्ष श्रुति भी यही प्रतिपादन करती है—"ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" बिना ज्ञानके जीवकी मुक्ति सम्भव नहीं है और इस जन्म-मरणात्मक अनादि भव-परम्परासे मुक्त होनेका एकमात्र कारण ज्ञानरूप-चिन्मात्रवस्तु आत्मा, वेदान्तप्रतिपाद्य पदार्थ भूमा ब्रह्म है। कैवल्य श्रुति भी यही कहती है—"ज्ञात्वा तं मृत्युमत्येति नान्यः पन्था विमुक्तये"

सज्जनो! अब मेरा समय समाप्त हो रहा है। मैं अपने वक्तव्यको यहीं समाप्त करता हूँ।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्ति॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् स्वामी सत्यानन्दजी महाराज सरस्वती

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

परम श्रद्धेय महामण्डलेश्वरजी महाराज ! तथा यतिवृन्द ! एवं विद्वन्मण्डली !

आज बड़े सौभाग्यकी बात है कि पवित्र गंगाघाटके ऊपर आज नवीन धारा यानी ज्ञानमय धारा बह रही है। जिस ज्ञानकी धारामें स्नान करते हुए यह जीव परम शान्तिको प्राप्तकर सकता है। प्रत्येक जीवके अन्तःकरणमें चिरकालसे यह आशा बनी हुई है कि मैं कब उस चिर शान्तिको प्राप्त कर सकूंगा।

ब्रह्मासे लेकर कीट-पतंग, उत्तम, मध्यम एवं कनिष्ठ सभी योनियाँ यह चाहती हैं कि हम नित्य-शाश्वत सुखका अनुभव करें, जो कभी भी हमसे पृथक् न हो। हमारा लक्ष्य मुक्ति नहीं है। हमारा लक्ष्य अपवर्ग नहीं है। हमारा लक्ष्य मोक्ष नहीं है। केवल हमारा लक्ष्य यही है कि हम निरन्तर सुखी बने रहें और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कभी भी दुःखका अनुभव न हो। फिर यह क्यों कहा जाता है—मुक्तिसे ऐसा होगा। मोक्ष होने पर ऐसा होगा। तात्पर्य यह है कि यह हमारी अभिलाषा अनन्त जन्मोंसे बनी रही और मन इस चीज़ को ढूँढता रहा। कभी फूलोंके, कभी फलोंके आस्वादन में, पानकरनेमें, सोनेमें, जागनेमें अनेक प्रकारके जन्म-जन्मान्तरोंमें इसको ढूँढ़ते-ढूँढ़ते थक गया। अभीतक उसकी तृप्ति नहीं हुई है। कारण कि कोई वस्तु अभीतक प्राप्त नहीं हुई है, जिसको यह चाहता है। यदि इसकी इच्छा पूरी हो जाती तो ये शान्ति को प्राप्त हो जाता। लेकिन वह वस्तु इसको प्राप्त नहीं हुई। जिसकी इसे चाह थी।

जिस प्रकार एक भ्रमर एक फूलसे दूसरे फूल पर जाता है। जब वह एक फूलसे तृप्त नहीं होता है तो दूसरे पर जाकर बैठता है। ठीक इसी प्रकार हमारा मन निरन्तर विक्षिप्त और चंचल रहता है और जब किसी महापुरुषके पास जाकर प्रार्थना करते हैं कि महाराज हमारा मन स्थिर नहीं होता। बड़ा चंचल है। याद रखिये चंचल मन क्यों हुआ? आखिर ये चाहता क्या है? वैद्य-का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि रोगीके रोगको ठीक समझ ले और फिर उसके अनुसार औषध देवे। अगर रोगीके रोगको ठीक नहीं समझ पाया और उसके अनुसार औषध नहीं दी तो वह कभी रोगमुक्त नहीं हो सकता है। यदि हम मनकी चंचलताको मनके रोगको सही रूपमें जान लेंगे और ये मन हमारा चाहता क्या है? आखिर हम निर्णय कर लेंगे तो उसको अवश्य औषध

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मिल सकती है। पहिले हम निर्णय नहीं कर पाते तभी तो हमारी इस प्रकार भटक है। खाने-पीनेमें सुख मिलेगा। घूमने-फिरनेमें सुख मिलेगा और अनेक प्रकारके आडम्बरमें सुख मिलेगा। यदि हम सुख चाहते हैं तो बाह्य आडम्बरोंमें कभी शान्ति या सुख नहीं मिला और न मिलेगा। हमारी दौड़ उसी प्रकार है जिस प्रकार मरुस्थलके अन्दर भौंरेकी दौड़ हुआ करती है। इस प्रकार जन्म-जन्मसे हमारे मनमें संस्कार बैठे हैं। वे किस प्रकार संस्कार हमारे अन्दर आये। जिस प्रकार हम लोगोंको देखते हैं कि उनका बड़ा सुन्दर शरीर है बड़ी-बड़ी उनके पास कारें, मोटरें हैं। बड़े-बड़े मकान हैं। पहिननेके लिये सुन्दर-सुन्दर वस्त्र-आभूषण आदि हैं। खान-पान, रहन-सहन बहुत अच्छा है। इसलिये वे बड़े सुखी होंगे। ऐसा हम देखते हैं और हमारेमें लालसा होती है कि ऐसा अगर हमारे पास हो जाए तो हम भी सुखी हो जाएँगे, हमारे मनमें यह लालसा सदा बनी रहती है। हम भी सुखी हो जाएँगे। ऐसा करते-करते हमारे अनेकों जन्म व्यतीत हो गये। स्वर्गलोकके देवता भी इसी बात से तृप्त नहीं हुए। इससे यही सिद्ध होता है कि संसारके जितने पदार्थ हैं। वे नाशवान् क्षणभंगुर हैं। परिवर्त्तनशील हैं। इन पर हमारा मन क्यों ठहर जाता है और फिर वहां अशान्त-विक्षिप्त हो उठता है। वह आनन्द और सुख नहीं है। जिस प्रकार मरुस्थलके अन्दर प्यासा भृङ्ग दूरसे देखता है कि वहाँ जल होगा। वहाँ जाने पर देखता है कि आगे जल होगा। यहाँ पर नहीं है। फिर आगे दौड़ता है

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

फिर वहाँ पर देखता है आगे होगा। तो फिर आगेकी ओर दौड़ता है। इस प्रकार दौड़ते-दौड़ते जल तो कहीं मिलता नहीं अन्तमें उसका प्राणान्त हो जाता है। इसी प्रकार हमारे मनकी भी दौड़ है कि इसीमें सुख मिलता है। इसीमें सुख मिलता है। बहुत दिनोंसे संस्कार पड़े हुए हैं। अनादि कालसे ये संस्कार आये। उनके अनुसार यह प्रवृत्त होता रहा। अन्तमें मर गया और दौड़ लगाता रहा, भृङ्गके समान ही। परन्तु वह वस्तु उसे अभीतक प्राप्त नहीं हुई। क्योंकि वह निरन्तर विक्षिप्त रहता है और जत्म-जन्मान्तरमें जाता है। इस जन्ममें हमारी इच्छा पूरी नहीं हुई तो दूसरे जन्ममें शायद पूरी हो सकती है। इस प्रकार जन्म-जन्मान्तर की इच्छा रखता हुआ फिर जन्मान्तरमें जाता है। लेकिन इसके मनकी लालसा अभी तक शान्त नहीं हुई। क्योंकि निरन्तर यही चाहता है कि मैं ऐसे सुखको प्राप्त करूँ जो हमसे कभी जुदा न हो और जहाँ जाय वहां मिले। जिस अवस्थामें जाएँ वहां उस अवस्थामें मिले। जिस योनिमें जाएँ उस योनिमें मिले। चाहे बाल्यावस्था हो। चाहे युवावस्था हो। चाहे वृद्धावस्था हो। चाहे दीन-दुःखी कंगाल हो। चाहे धनपति हों। किसी भी अवस्थामें हों। किसी भी देशमें हों। मैं निरन्तर एक सुखका अनुभव करता हूं। लेकिन केवल हम ही नहीं चाहते। बल्कि विश्वके सभी प्राणी चाहते हैं ब्रह्मलोकसे लेकर कीट-पंतग पर्यन्त सभीकी यही मांग है।

यह वेदान्त-सम्मेलन भारतीय लोगोंकेलिये केवल संदेश नहीं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देता है, यह विश्वके प्राणीमात्रकेलिये शान्तिका सन्देश पहुँचाता है। यदि आप शान्ति चाहते हैं तो ऐटमबमों, उद्जनबमों, हाइड्रोजनबमोंसे कभी शान्तिकी प्राप्ति नहीं होगी। जब भी होगी, तब आध्यात्मिक ज्ञानसे होगी। क्योंकि हमारे मनमें एक भूल बैठ गई है। अज्ञानकी भूल बैठी है और अनादि कालसे अज्ञान हमारे आत्मस्वरूप आनन्दको छिपाये बैठा है। इसलिये हम उस आनन्दका ठीक अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। यदि आप चाहते हैं तो आत्माका साक्षात्कार करो। ब्रह्मका साक्षात्कार करो। ऐसा क्यों कहा जाता है ? "आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कदाचनेति" आत्माका स्वरूप आनन्द है। ब्रह्मका स्वरूप आनन्द है। यदि हम आनन्दको चाहते हैं। शान्तिको चाहते हैं और दुःखको कभी नहीं चाहते तो वास्तवमें हमारा आत्मा ही आनन्द स्वरूप है। यदि अपने आत्माका साक्षात्कार हो जायगा तो फिर दुःख कभी हमारे पास नहीं आ सकता है। यह वेदान्तसे सिद्ध हो सकता है। वेदान्तका तात्पर्य क्या है ? इसको भी समझ लेना चाहिये। "वेदान्तो हि वेदस्य निर्णयः-इति वेदान्तः" अर्थात् वेदका जो निर्णय है वही वेदान्त है। वेदका निर्णय उपासनामें नहीं है। क्योंकि फल अनित्य नाशवान् है। इसलिये उसका फल भी नाशवान् क्षणिक है। उपासनाका फल भी नाशवान् हो जाता है। हम तो ऐसा सुख चाहते हैं जिसका कभी भी नाश न हो। तो वह कर्म और उपासनासे नहीं प्राप्त हो सकता है। इसलिये वेदका तात्पर्य है अखण्डानन्दको प्राप्त करना।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आत्मा तो आनन्द स्वरूप है "आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः। आत्मा वा अरे श्रोतव्यः। आत्मा वा अरे मन्तव्यः। आत्मा वा अरे निदिध्यासितव्यः। याज्ञवल्क्य महर्षि कहते हैं कि हे मैत्रेयि! सुनो—यदि संसार-चक्करसे छूटना चाहती हो तो मेरी बात समझ लो। मैं कहता हूं तुम्हें। कि जब तक तुम अपनी आत्माका साक्षात्कार नहीं कर लोगी, तब तक निरतिशय आनन्द जिसको तुम चाहती हो, वह प्राप्त नहीं होगा। इसलिए उसका दर्शन कैसे हो, तो उसका श्रवण करो आत्माका स्वरूप क्या है? 'सत्' 'चित्' 'आनन्द' सच्चिदानन्द परमात्मा निरन्तर है। जहाँ-तहाँ सर्वत्र है। मनमें जो अज्ञानकी भूल बैठी है। वह अज्ञान निवृत्त हो जायगा और अब हमें ज्ञान हो जायगा। जिस प्रकार रज्जुमें सर्पका भ्रम हो जाता है और यदि ज्ञान हो जाता है कि सर्प नहीं रज्जु है, तो वह भूल निकल जाती है और हमारा मन निर्भय हो जाता है। "आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्। न बिभेति कदाचनेति" "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" "नेह नानास्ति किंचन" व्यवहारमें भले ही हमारा द्वैत रहे। परन्तु परमार्थमें एक अखण्ड आत्माका जब हम अनुभव कर लेंगे तो हमारा द्वैतभ्रम भी शनैः-शनैः शिथिल होता जायगा। जो हम योग करते हैं। समाधी लगाते हैं, उसका मतलब है मनको एकाग्र करो और उसको जानो। योग-समाधी आदि आत्म-साक्षात्कारके प्रति विशेष साधन हैं। जिस प्रकार कर्म-उपासना साधन हैं। उसी प्रकार योग-समाधी भी साधन हैं। जब समाधी द्वारा आत्माका निर्णय कर लेगा "द्वितीयाद्वै भयं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भवति" तब वह निश्चित और निर्भीक हो जायगा। अद्वैत-भावना जागृत हो जायगी द्वितीयका भाव सदा लिये विनष्ट हो जायगा तब हम अपनेसे कभी भी नहीं डरेंगे। देखिये यह श्रुति जगाकर सावधान करती है—"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत, क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।" उठो! जागो! इसका मतलब क्या? अभी हम सोये हैं क्या? आंखें खुली हैं तो भी सोये हुए हैं। जिस प्रकार स्वप्न अवस्थामें अपनेको जगा हुआ समझते हैं। कभी अनुभव नहीं होता है कि हम सोये हुए हैं। लेकिन उस स्वप्नमें अपनेको जागा समझते हुए भी और जब जागृत अवस्थामें आते हैं तो देखते हैं कि वह स्वप्न भी मिथ्या है। इसी प्रकार श्रुति भगवती कहती है कि, एक जन्म नहीं, अनेक जन्मसे अज्ञानकी निद्रामें सोये हो, सैकड़ों नहीं लाखों जन्म बीत गये। इसलिये उठो! जागो! जागकरके फिर कहीं नहीं सो जाना।

"प्राप्य वरान्निबोधत" तत्त्ववेत्ताओंकी शरणमें जाओ और उनसे प्रश्न करो कि "अहं कुतः आयातः" मैं कौन हूँ और कहांसे आया हूँ? शास्त्र यही बतलाता है कि तुम अपने आपकी पहचान करो। तुम्हें कहीं जाने-आनेकी ज़रूरत नहीं है। "एकमेवाद्वितीयम्" यह निश्चय करना है। महात्मा लोग क्या कहते हैं कि—"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" अर्थात् ज्ञानके समान पवित्र कोई वस्तु नहीं है। इसलिये ज्ञानसेही हमारे मनकी भूख मिटेगी।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तो हम जानते हैं कि मैं आनन्द स्वरूप हूँ। अखण्ड आत्मा हूँ। जिसकी रात-दिन तलाश करता रहा। अनेक जन्मोंसे ढूंढता रहा, वह तो अपने आपही था। कोई बाहरकी वस्तु नहीं थी। इस प्रकारका ज्ञान हो जाता है, तब जीवकी मुक्ति होती है। इतना कहकर मैं अपने वक्तव्यको समाप्त करता हूँ।

॥ हरिः ॐ तत्सत् ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् स्वामी गणेशानन्दजी महाराज वेदान्ताचार्य
श्रीकृष्णनिवास आश्रम-कनखल (हरिद्वार)

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा,
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः, शं नो विष्णुरुरुक्रमः,
नमो ब्रह्मणे, नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि,
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि,
सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु,
अवतु माम्, अवतु वक्तारम् ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

पूज्य आचार्यचरण ! एवं श्रद्धेय साधुमण्डली ! माताओ ! तथा बहिनो !

आज बड़े ही सौभाग्यका पुण्य अवसर है कि हम सब इस 'वेदान्त-सम्मेलन' में उपस्थित हुए हैं। यह छठा वेदान्त-सम्मेलन है। इसमें दूर-दूरसे सन्त-महात्मा-महामण्लेश्वर पधारे हैं। आप उनके मनोहर उपदेशात्मक प्रवचन क्रमशः श्रवण करेंगे। अब मैं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आपके सम्मुख वेदान्तके विषयमें कुछ अपने विचार रखना चाहता हूँ।

इस विशाल उपवनके अन्दर, शीतल, स्वच्छ, मधुर जलसे पूरित एक तालाब है। जिसमें हवाके झकोरोंसे सैकड़ों तरंगें निश्चितरूपसे उठती हैं और वे तरंगें हवाके शान्त होने पर उसीमें विलीन होजाती हैं, अर्थात् हवाके शान्त होने पर वे तरंगें जलके रूपमें आजाती हैं। इसीको उपनिषद्में कहा है—"यदेवाम्बु तरङ्गत्वे सौम्यत्येऽपि तदेव तत्" अर्थात् जो जल तरङ्गके अन्दर है, वही जल शान्त अवस्थामें है। इसी दृष्टान्तके अनुसार यहाँ पर कार्य-कारणका विचार करना है। वेदान्तग्रन्थोंमें सर्वत्र यह दर्शाया गया है कि—"कार्योपाधिरयं जीवः" "कारणोपाधिरीश्वरः" अर्थात् का -उपाधिवाला जीव है और कारण-उपाधिवाला ईश्वर कहा गया है। इनमें सबसे पहिले हमें कार्य क्या है यह समझना होगा, क्योंकि कार्यसे ही कारणका ज्ञान हो सकता है। वह कारणरूप ब्रह्म क्या है ? यह आप थोड़ा समझ लें।

जिसके विषयमें शास्त्र कहता है—"यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति। यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्मेति ॥" अर्थात् सभी भूतप्राणी जिनसे उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न होकर जिनके सहयोगसे, बल प्राप्तकर ये सब जीते हैं अर्थात् सब प्रकारकी क्रिया करनेमें समर्थ होते हैं और अन्तमें (महाप्रलयके समय) जिनमें विलीन हो जाते हैं। उनको जानने की इच्छा कर। वे ही ब्रह्म हैं। शास्त्र आपको बताते हैं कि ब्रह्मसे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भिन्न संसारमें कुछ भी नहीं है। ब्रह्महीं सबका मूलकारण है। अब यह भी जानना चाहिये कि वह कैसा कारण है? क्या वह उपादान कारण है? अथवा अभिन्ननिमित्तोपादानकारण है? इस विषयमें विभिन्न दार्शनिकोंकी विभिन्न उट्टङ्कनायें हैं। परन्तु हमें अर्थान्तरमें न जाकर वेदान्तकी दृष्टिसे विचार करना है। वेदान्तकी दृष्टिसे ब्रह्म अभिन्ननिमित्तोपादानकारण स्वीकार किया गया है। उस एक ब्रह्मको जान लेने पर हम सारे संसारको जान सकते हैं। वही सबका एक केन्द्रस्थल है। छान्दोग्य उपनिषद्के छठे अध्यायमें श्वेतकेतुके पूछने पर पिताने उत्तर दिया—

"यथा सोम्यैकेन मृत्पिण्डेन,
सर्वं मृण्मयं विज्ञातं स्याद्वाचा-
रम्भणं विकारो नामधेयं,
मृत्तिकेत्येव सत्यम् ॥"

अर्थात् जिस प्रकार एक मिट्टीके पिण्डके द्वारा सम्पूर्ण मिट्टीसे बने हुए छोटे-बड़े पदार्थोंका ज्ञान हो जाता है कि विकार केवल आश्रयभूत नाममात्र हैं, सत्य तो केवल एक मिट्टी ही है। मिट्टीसे बने हुए पदार्थोंकी मिट्टीसे कोई अतिरिक्त सत्ता नहीं है। यह जो घटादि नाम है वह तो केवल वाणीका विकारमात्र है।

जिस प्रकारसे 'घट' कार्यका कारण मिट्टी है उसी प्रकारसे समस्त जगत्कार्यका कारण ब्रह्म है। उस ब्रह्मसे भिन्न कुछ भी नहीं है। उसी ब्रह्मसे पाँच भूतोंकी उत्पत्ति तैत्तिरीयश्रुति बताती है—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः संभूतः। आकाशाद् वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अभ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नात्पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नमयः ॥

इस प्रकारसे सृष्टिका क्रम बतलाया गया है और सृष्टिके विनाशकालमें अपने-अपने तत्त्वोंमें मिलते हुए अन्तमें उस परमात्मा जो सबका कारण है तथा मूलभूत है उसके अन्दर विलीन हो जाते हैं। इस प्रकारसे कार्य-कारणकी अभिन्नता बताई है। कारण जो मूलतत्त्व है उससे कार्य जुदा नहीं है। इससे ब्रह्मकी सर्वव्यापकताका ज्ञान होता है। जो कुछ आप संसारके अन्दर देखते हैं वह ब्रह्मसे भिन्न नहीं है। ईशावास्योपनिषद्में कहा है—"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्" ब्रह्म-ईश्वरसे ही समस्त संसार व्याप्त है, तो फिर ब्रह्मका कार्य जो जीव है वह ईश्वरसे भिन्न कैसे हो सकता है। जिस प्रकारसे "स्वर्णाज्जायमानस्य स्वर्णं सुनिश्चितम्" अर्थात् स्वर्णसे बने हुए कटक-कुण्डलादि आभूषण स्वर्णसे भिन्न नहीं हैं। इसी प्रकार ब्रह्म-ईश्वरसे बनी हुई वस्तु वह ब्रह्मसे भिन्न कैसे हो सकती है? तो मैं आपको कह रहा था कि जीव और ब्रह्मका कोई भेद नहीं है यहाँ पर मैं आपके सामने एक तर्क उपस्थित करना चाहता हूँ। क्योंकि लोग बहुधा तर्क पसन्द करते हैं। जो लोग श्रुति पर विश्वास नहीं करते हैं। उनके लिए तर्क ही उपयुक्त हो सकता है।

जैसे वटबीज आपने देखा है। कितना छोटा होता है और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उस बीजसे जब अंकुर निकलता है और फिर वृक्षकेरूपमें प्रकट होता है, जब वह पूर्णरूपसे विकसित हो जाता है तब वह आस-पासकी ज़मीनको घेर लेता है। इसप्रकार उस वृक्षकी लकड़ी और पत्तेको आप तोलने लग जायँ तो वह सैकड़ों मन नहीं बल्कि हज़ारों मन लकड़ी-पत्ते होंगे। अब आप सोचिये कि वह वटबीज इतने तौलका पहिले था। तो कहना होगा कि नहीं। फिर कहासे इतना वज़न वृक्षमें आ गया। तो यह आप समझ लें कि पाँच-तत्त्वोंको लेकर व्यापक पृथिवीके तत्त्व लेकर व्यापक जल के तत्त्वको लेकर रसादि तत्-तत् गुण तत्-तत् तेजादि व्यापक भूतोंसे आये हैं।

अब उस वटवृक्षको काटकर अग्निमें जलादेने पर जलका तत्त्व जलमें, पृथिवीका तत्त्व पृथिवीमें, तेजका तत्त्व तेजमें, वायुका तत्त्व वायुमें और आकाशका तत्त्व आकाशमें क्रमशः विलीन हो जाता है। अर्थात् अपने-अपने तत्त्वमें विलीन होजाता है। हाइड्रोजन नाइट्रोजन बनकर जल और वायुका भाग जलमें मिल गया। जलका भाग जलमें मिल जायगा। अग्निका भाग अग्नि में मिल जायगा। पृथिवीका भाग पृथिवीमें मिल जायगा और वायुका स्पर्श भाग तीव्रगति वायुमें मिल जायगा। तत्-तत् गुण तत्-तत् व्यापक भूतोंमें मिल जायेंगे।

यहाँ कहनेका अभिप्राय यह है कि वटवृक्षके अन्दर वस्तुएँ कहाँसे आईं तो बतलाते हैं कि वे गुण अपने-अपने तत्त्वोंसे आये और फिर अपने-अपने व्यापक तत्त्वोंमें जाकर विलीन हो गये। इसी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रकारसे आप कल्पना कीजिये कि जैसे एक बच्चा उत्पन्न होता है तो उसके निर्माणमें पाँचों व्यापक महाभूतोंसे पाँचों गुण आए और छठी वस्तु जो चेतनता है वह कहाँसे आई तो बतलाते हैं कि वह भी तो जो व्यापक चेतन पदार्थ है वहींसे आयगी। यदि आप कहें कि पाँचों तत्त्वोंके मिलानेसे छठी वस्तु चेतना स्वतः आगई तो ऐसा नहीं। यह ठीक नहीं है। क्योंकि यह सिद्धान्त दार्शनिकों की कसौटी पर चोखा (खरा) नहीं उतरता है। इसलिए भगवान्ने गीतामें कहा है—

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥

॥ गी० २-१६॥

अर्थात् असत्से सत्की उत्पत्ति नहीं और सत्से असत्की उत्पत्ति नहीं। इस प्रकार यह मानना होगा कि बच्चेके अन्दर भी जो चेतनता आई है वह भी कोई व्यापक चेतन पदार्थसे आई है। वही ब्रह्म है। इस प्रकार सिद्ध होता है कि जीव ब्रह्मसे भिन्न नहीं है। केवल उपाधियोंको लेकर वह भिन्न-सा प्रतीत होता है और उपाधियोंको परित्याग कर देनेसे ब्रह्म एक शेष रहजाता है। वही सबका प्राप्तव्य पदार्थ है। मेरा समय भी समाप्त हो गया है। अतः मैं अपने वक्तव्यको यहीं समाप्त करता हूँ।

—हरिः ॐ तत्सत्—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

ब्रह्मचारी स्वामी विद्यानन्दजी महाराज
वेदान्त-दर्शनाचार्य्य, दिल्ली

माननीय आचार्य्यचरण! उपस्थित महात्मवन्द तथा भक्तिमती देविओ!

बड़े सौभाग्यकी बात है कि आज कई वर्षोंके बाद इस पवित्र आश्रममें आनेका अवसर मिला और आने पर यहाँ केवल गंगास्नानमात्र करके मुझे वापिस होना पड़ता, तो वह अदृष्टमात्र ही होता, जिसे उधारमाल कहते हैं। पर इस वेदान्त-सम्मेलनके सु-अवसर पर ही मैं यहां आया। जिस वेदान्त-सम्मेलनका फल अदृष्टमात्र ही नहीं है। किन्तु दृष्ट फल भी है। जिसे नकद्माल भी कहते हैं। दो प्रकारके माल होते हैं। एक उधारमाल होता है और दूसरा नकद्माल। जिसका दृष्टफल होता है, उसे नकद्-माल कहते हैं। जिसका फल अदृष्ट होता है अर्थात् कालान्तरमें जाकर सुख प्राप्त होता है, ऐसा फल अदृष्टफल कहलाता है। उसे लौकिक भाषामें उधारमाल भी कहते हैं। तो वेदान्त-सम्मेलनसे जो आपको फल प्राप्त होगा, वह फल अदृष्ट जन्ममात्र ही नहीं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हो सकता। किन्तु शास्त्रकारोंने कहा कि—"सम्भवति दृष्टफलकत्वे अदृष्टफलकल्पना अन्याय्यत्वात्" यदि दृष्टफल सम्भव हो, तो वहां अदृष्ट फलकी कल्पना नहीं करनी चाहिये। तो वेदान्त-सम्मेलनसे आज हमें कौन-कौनसी चीज़ लेकर जाना है। इस बात पर हम कुछ क्षणमें महाराजजीकी आज्ञानुसार अपने विचार प्रकट करेंगे। कृपया आप लोग सावधान होकर सुनें।

वेदान्त हमें बतलाता है कि जिस चीजको हम अनादिकालसे ढूंढ रहे हैं— बहुत कालसे खोजते चले आ रहे हैं। उस अखण्ड आनन्दकी खोजमें तुम्हारी प्रवृत्ति आज तक चली आ रही है। वह अखण्डानन्द तुम्हारा अपना आप है। वह आपका स्वरूप है। अपनी चीज़ है। वह किसी अन्य देशमें नहीं रहता है। वह सबका अपना स्वरूप है। जिसे मुनिओंने कहा है "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" "प्रज्ञानं ब्रह्म" इत्यादि श्रुतिओंने कहा है कि वह ब्रह्म सबकी अपनी चीज़ है। वह तुम्हारी ही वस्तु है। वह ज़र्रे-ज़र्रेमें, अणु-अणुमें व्याप्त है। एक सुईके अग्रभाग बराबर भी ऐसा स्थान नहीं है कि वहां पर वह तत्त्व विद्यमान न हो। बाहर है। भीतर है। ऊपर है। नीचे है। सर्वत्र सर्वदा विद्यमान है। लेकिन हम ब्रह्मज्ञानहीन हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण क्या है? इसका मुख्य कारण यही है कि हम भूलमें पड़ गये और वह भूल आज ही नहीं है किन्तु वह अनादिकालसे भूल पड़ी है। इस अनादिकालकी भूलका सुधार वेदान्त-सम्मेलनमें गुरु-मुखसे महावाक्यके द्वारा ही हो सकता है और कोई दूसरा उपाय

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नहीं हैं। अनादिकालकी भूल है कि जिसे अविद्या या अज्ञान कहते हैं। उस भूलको हमें सुधारना है। भाइयो! वह सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा-परब्रह्म सर्वत्र विराजमान है। फिर भी हम दीन-हीन हैं। स्वरूपभूत परमात्माके होते हुए भी आनन्दकी अन्यत्र कल्पनाकर रहे हैं। इसका एकमात्र अज्ञानही मूलकारण है। उस अज्ञानकी निवृत्ति किस प्रकारसे हो सकती है? इस बातको समझानेकेलिये वेदान्त-सम्मेलनका आयोजन इस पवित्र स्थान पर प्रतिवर्ष होता है। जिससे कि यह जीव भूला हुआ अपने स्वरूपको प्राप्त करले। यदि कहें कि किस प्रकार प्राप्त हो सकता है। ब्रह्मके अखण्ड आनन्दको कैसे प्राप्तकर सकेंगे। इसलिये मैं आपके सामने एक छोटा-सा दृष्टान्त उद्धृत करता हूं। जिससे आप सरलतापूर्वक समझ जाएँगे।

एक समयकी बात है आप जैसे जिज्ञासुओंने गुरुदेवके पास जाकर इसी जिज्ञासाको लेकर प्रश्न किया कि, गुरुदेव! वेदान्त-सम्मेलनादिओंमें मैं सुनता हूँ कि वह अखण्डानन्द आत्मा जिसकी खोज अनादिकालसे लेकर आजतक चली आ रही है। वह कहां पर है? बतलाइये कि वह सर्वत्र व्यापक-परिपूर्ण ऐसा तो वेदान्त-सम्मेलनमें सुना वह हमें किसप्रकार प्राप्त हो सकता है। शिष्यकी इस जिज्ञासाको पुष्ट करनेके बाद गुरुने कहा—कि इस प्रश्नका उत्तर मैं तुम्हें नहीं दूँगा। किन्तु इस प्रश्नका उत्तर अमुक स्थान (जलाशय) में रहनेवाली एक मछली वह तुम्हें उत्तर देगी। ऐसा गुरुने शिष्यको बतलाया, वह शिष्य इस जिज्ञासाको

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लेकर उस मछलीके पास गया और जाकर मछलीसे कहता है कि यह बताइये कि वह अखण्डानन्द ब्रह्म है परमानन्दस्वरूप जो आत्मा वह मुझे किसप्रकार प्राप्त हो सकता है। इस प्रश्नको सुनकर मछली उत्तर देती है कि महात्मन्! मैं बतलाऊँगी पीछे, पहिले आप यह बतलाइये कि, मैं तीन दिनसे पानीकी खोजमें हूँ। मुझे आप पानी बतलाइये। जिससे मेरी पिपासा बुझ जाए। जब मेरी प्यास बुझ जायगी, शान्त हो जायगी; तब मैं इसका उत्तर दूँगी। महात्मा वह जिज्ञासु जो थे वह कहने लगे कि अरी-पागल! क्या तू बक रही है जिस चीज़को तू खोज रही है उसीमें तू घूम रही है। मछली कहती है कि वह जल है यदि कहीं होता, तो मैं तीन दिनसे प्यासी क्यों रहती? इसलिये मुझे तीन दिनसे तो जलके दर्शन हुए ही नहीं हैं, जिससे मैं अपनी प्यासको बुझा सकूं। महात्माने कहा – जलतो तुम्हारे नीचे-ऊपर, अगल-बगलमें चारों ओर विद्यमान है। जहाँ देखो वहीं जल है। फिर भी जलकी खोजकर रही हो. मछलीने कहा कि जल है तो हमारी प्यास क्यों नहीं जाती। किस प्रकारसे हमारी प्यास बुझ सकती है। इसका उत्तर आप दीजिये, तब मैं आपके प्रश्नका उत्तर दूँगी। उन्होंने कहा बात तो ठीक है। तुम्हारे चारों ओर जल है। परन्तु तब तक तुम्हारे मुखमें जल नहीं जा सकता जब तक तुम पलटा नहीं खाओगी। मछली जलमें रहते हुए भी जब तक पलटा न खाए तब तक उसके मुखमें जल नहीं जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अब आप ध्यान दीजिये कि मछलीसे जिज्ञासुने जब ऐसा कहा कि ज़रा तू पलट जा, तो तुझे पता चल जाएगा कि जल यहाँ है या नहीं" मछली कहती है जैसे तुम हमें शिक्षा देनेको चले हो, यही उत्तर तो तुम्हारे प्रश्नका भी है। जो तुम पूछनेके लिये यहाँ आये हो कि वह अखण्डानन्द ब्रह्म कहाँ है? वह अखण्डानन्द तो तुम्हारे ऊपर-नीचे, बगलमें सर्वत्र है। उसकी प्राप्ति क्यों नहीं होती है तो उत्तर यह है कि जैसे तुम हमें पलटने के लिये कहते हो। उसी प्रकार तुम्हें भी भोगोंसे पलटना होगा। तुम जो बहिर्मुख हो उससे अन्तर्मुख होना पड़ेगा। यदि तुम अन्तर्मुख हो जाओगे तो तुम्हें अखण्डानन्दका अनुभव होने लगेगा। जैसे पलटनेमें मेरे मुखमें जल जाता है वैसे ही तुम्हें विषयोंसे मुखमोड़कर अपने स्वरूपकी ओर लगोगे तो तुम्हें भी उस आनन्दका अनुभव होने लग जायगा। इसलिये आनन्दका अनुभव करनेके लिये कहीं बाहर जानेकी ज़रूरत नहीं है। किन्तु बाह्य पदार्थोंसे मुख मोड़कर अन्तर्मुख होना पड़ेगा। बाह्य पादर्थ अनित्य और नाशवान् हैं। इस प्रकार समझ अन्तरात्मामें अपने मनको लगा दो। जैसे कि मुण्डकोपनिषद् में बताया है—

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो
निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन ।
तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः
श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सारा संसार अनित्य है। क्योंकि कर्मजन्य होनेसे, कर्मजन्य फल अनित्य होता है ऐसा समझकर इससे निर्वेद-वैराग्यको प्राप्त हो जाए। क्योंकि वह नित्य जो मोक्ष है, वह कभी भी अनित्य पदार्थोंसे नहीं हो सकता। इसलिये "तद्विज्ञानार्थं गुरुमेवाभिगच्छेत्..." इसे जाननेके लिये हाथमें समिधा भेंटा लेकर गुरुके पास जावे। जो ब्रह्मनिष्ठ गुरु हैं जिनकी ब्रह्ममें पूर्ण निष्ठा है, ऐसे गुरुओंके पास जावें। जिनसे उसको वह तत्त्व प्राप्त हो सकता है। इस श्रुति वाक्यके अनुसार सब भोगसामग्रीको न्यौछावर कर देवे और परमात्माका ध्यान करे। तभी उसे आनन्दकी अनुभूति होगी। अन्यथा ब्रह्मा भी उसे प्राप्त नहीं करा सकता है। इसलिये अब अधिक न कहते हुए अपने वक्तव्यको यहीं समाप्त करता हूँ।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् स्वामी विज्ञानानन्दजी महाराज
श्रीकृष्ण निवास आश्रम-कनखल

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-।
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः॥
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥१॥
यं शैवाः समुपासते 'शिव' इति 'ब्रह्मेति' वेदान्तिनो।
बौद्धा 'बुद्ध' इति प्रमाणपटवः 'कर्त्तेति' नैयायिकाः॥
'अर्हन्नि' त्यथजैनशासनरताः 'कर्मेति' मीमांसकाः।
सोऽयं नो विदधातु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥२॥
अपारसंसारसमुद्रमध्ये संमज्जतो मे शरणं किमस्ति।
गुरो! कृपालो! कृपया वदैतद्विश्वेशपादाम्बुज दीर्घनौका॥३॥

परमपूज्य आचार्यचरण! एवं अभिवन्दनीय महात्मवृन्द! तथा समुपस्थित आत्मीय बन्धुओ!

इस वर्ष भी गत वर्षकी भांति यहाँ पर वेदान्त-सम्मेलन मनाया जा रहा है। दूर-दूर देशोंसे आप जानते हैं कि महात्म-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वृन्द जहाँ कि विशेष आध्यात्मिक आयोजन होता है वहीं पर उपस्थित हो जाते हैं। देखिये आपके सामने एक-से-एक ऋषि, वेदज्ञ, शास्त्रतत्त्ववेत्ता और अनुभवशील महापुरुष विद्यमान हैं। उनके द्वारा आप वेदान्तके तथ्योंको सुना और सुनेंगे। यह जो आयोजन बड़े समारोहके साथ चल रहा है इसमें पूज्यपाद महामण्डलेश्वरजी महाराजकी अनुज्ञासे कुछ दो शब्द वेदान्तके विषयमें आपके समक्ष प्रस्तुत करूँगा। मैं आशा करता हूँ कि आप सब दत्तचित्त होकर श्रवण करेंगे और लाभ उठाएँगे। मुझे बहुत कम समय मिला है। तथापि कुछ आवश्यक बात बताकर दिए हुए समयके अन्दर ही मैं अपने भाषणको समाप्त करूँगा।

वेद ईश्वरीय वाणी है। उसका Ultimatum अन्तिम तथ्य या रहस्य उसको वेदान्त कहते हैं। ईश्वरवाणीके द्वारा जो कुछ प्रतिपाद्य विषय है वह आपके सम्मुख उपस्थित किया जायगा। हमें सबसे पहिले यह जाननेकी आवश्यकता है, कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिक्षण, पग-पगमें, डग-डगमें क्या चाहता है? क्या उत्कण्ठा है? क्या Willingness भावना है? किस ओर उसकी Propensity प्रवृत्ति है? क्या अभिरुचि Trend है? सबसे पहिले हमें यह जानना नितान्त आवश्यक है कि हम हर समय किस वस्तुकी अभिलाषा रखते हैं। किस बातके लिये हम सदा-सर्वदा लालायित रहते हैं। रहेंगे। रहते थे। यदि आप यह जानना चाहते हैं तो वह यह है कि प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वह कैसा सुख चाहता है जो Perpetual delight नित्य हो। शाश्वत हो। वास्तवमें वह सुख रहता कहाँ है? किस प्रकारसे है? आप जानते हैं, कि जो व्यक्ति जिस चीज़की Enquisition जिज्ञासा रखता है वह उसकी उमङ्ग है। उत्कण्ठा है। उसके लिए वह चीज़ वास्तवमें सर्वथा सत्य है और उसे वह अवश्य मिलेगी Accomplished होगी। आज नहीं। कल नहीं। दश दिनमें। बीस दिनमें नहीं। वर्ष में। दो वर्षमें नहीं। एक जन्म नहीं, दो जन्ममें नहीं। पचीसों जन्ममें ज़रूर मिलेगी। यदि वह पहिचान ले कि हमारा गन्तव्य स्थान क्या है? और किस तरह कहाँ पहुँचना है?

मनुष्य क्या नहीं प्राप्त कर सकता है? कौनसी वस्तु अप्राप्य है। दुर्लभ है। सब कुछ पुरुषार्थसे मनुष्य प्राप्त कर सकता है। परमात्माकी शक्ति इसके अन्दर संनिहित है। विद्यमान है और परमात्मा इस शरीरके अन्दर स्थित है किन्तु उसे न समझना थोड़ेसे शब्दोंमें कह दूँ कि जो केवल समझनेकी चाह रखते हैं जब उसे Imperceptibly परोक्षरूपसे समझेंगे, तब बादमें अपने आपमें समझनेकी स्थिति बन जायगी। तो यहाँ हम यही देखते हैं कि जिनके मस्तिष्क सांसारिक कल्पनाओंसे विकलित होकर Tumultuous चंचल बुद्धिवाले बने हुए हैं। कान जिनके सांसारिक अनेक चर्चाओंको सुनकर निराश हो चुके हैं। आंखें देखते-देखते तिल-मिला उठी हैं। काम करते-करते हाथोंमें फफोले पड़ गये हैं। पैर चलते-चलते थकित हो गये हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उनके लिये वास्तविक परिश्रान्तिका स्थान वह क्या है। सत्संग-की अटल छत्रछायामें उपस्थित होकर उस वेदके अन्तिम तथ्य मानों रहस्यको सुन सकता है। किन्तु जिज्ञासा होनी चाहिये।

आप जानते हैं कि परमात्माने सृष्टि रचनाकी है। किससेकी है? दो वस्तुओंसे Animate & Inanimate की है। वास्तवमें तो एकही पदार्थ परमात्मा अनन्त शक्तिमान् Eternal potent है। उसने अपनी अनन्तशक्ति मायाके द्वारा ससारको बनाया है। यह ससार द्वन्द्वमय Dudled है। पर याद रखिये। प्रकृति और पुरुष दोनोंके संसगसे सृष्टिकी रचना हुई है। जड़ और चेतन इन दोनोंसे। क्योंकि एकसे कोई काय नहीं हो सकता है। जड़ तो जड़ हैं ही चेतन भी जड़वत् ही है। जड़ और चेतन दोनोंके संसगसे क्रियाशीलता होती है। आप जानते हैं कि शरीर से आत्मा निकल जाती है तो शरीर शव बन जाता है। अर्थात 'शिव' शब्दमेंसे इकाररूप चेतन शक्ति खत्म हो जानेसे शिव शब्दका 'शव' बन जाता है। शरीरके बिना आत्माकी पृथक कोई सत्ता नहीं दिखाई देती है। इसलिये जड़ पदार्थ भी होना चाहिए। जिसमें एकरस आत्मा अनुस्यूत एवं ओत-प्रोत है। All Pervading है, तो हमें द्वन्द्व समझना है। उपाधियोंको समझना है Attribution क्या क्या है कि वास्तवमें द्वन्द्व क्या है? यह मानव अपने अन्दर होने वाले द्वन्द्वको समझे बग़ैर उन्नत नहीं हो सकता। तो सत्संगमें उपस्थित होकर व्यक्ति उस शक्तिको, उस प्रतिभाको Genius जागृत करे। प्रतिभाको जागृत

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करनेका एक अपूर्व साधन सत्संग है। सत्संगकी यही महिमा है। इस वेदान्त-सम्मेलनमें उपस्थित होकर हमें यही सीखना है। यही प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिये। जड़-चेतन-शरीर और आत्मा-देही और देह, पर याद रखिये! क्षीर और नीरका विवेक Discrimination करोगे तब आपको उस तथ्यका पूर्णरूपसे ज्ञान और क्रमशः धीरे-धीरे साक्षात्कार भी होजायगा। मैं अपने शब्दोंमें नहीं, श्रुति भगवती वेदका अन्तिम तथ्य क्या है? उपनिषद् अपौरुषेय ईश्वरीय वाक्य हैं। न हमारे शब्द हैं और न हमारा उपदेश है। आप जानते हैं कि माइक्रोफोन बोल रहा है। पर यदि वक्ता न बोले तो उसकी क्या शक्ति है कि वह बोल सके। ध्वनि या शब्द प्रसारित कर सके। तो वेद ईश्वरीय वाक्य है।

हम पहिले उपाधियोंको समझें कि कौन-कौनसी उपाधियाँ इस शरीरके अन्दर लगी हुई हैं। एक नहीं, दो नहीं, लाखों। गिनती तो नहीं की जा सकती, किन्तु जो मुख्य-मुख्य उपाधियाँ हैं उनको आपके सामने उपस्थित करूँगा। जब हम अपने देश भारतवर्षको छोड़कर विदेशोंमें जाते हैं, तो कहते हैं कि हम भारतीय हैं। हम भारत निवासी हैं। यह भी एक उपाधी है और उसके साथ-साथ प्रान्तीयताकी उपाधी भी रहती है। मैं गुजरात प्रान्तका, मारवाड़ प्रान्तका, बङ्गाल प्रान्तका रहनेवाला हूँ। प्रांतीयताकी उपाधीके साथ-साथ जिलेकी उपाधी भी लगी है कि मैं मेरठ जिलेका हूँ, सहारनपुर जिलेका हूँ। जिलेके साथ-साथ शहरकी उपाधी भी लगी है। मैं दिल्लीका हूँ। बनारसका हूँ। शहर-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

के साथ-साथ मुहल्लेकी उपाधी लगी है कि मैं अमुक-अमुक मुहल्लेका हूँ। मुहल्लेके साथ-साथ सामाजिक उपाधियाँ लगी हैं कि मैं अमुक समाजसे परिपालित हूँ। यदि कोई व्यक्ति कांग्रेसी है तो वह अपनेको कांग्रेसका नेता समझता है अथवा किसी और समाजका है। आश्रमकी दृष्टिसे मैं संन्यासी हूँ, गृहस्थ हूँ, ब्रह्मचारी हूँ। ये सब उपाधियाँ हैं। उपाधियाँ झगड़े-टण्टे Adoes हैं। इनको तो आप दूर कर सकते हैं।

यदि आपको भूख लगी है तो जब तक आप भोजन नहीं करेंगे तब तक आपकी क्षुधाकी निवृत्ति नहीं होगी। दूसरेके भोजन करनेसे हमारी भूख नहीं मिटेगी। तात्पर्य यह है कि मैं आपको द्वन्द्व बतला रहा था कि ईश्वरीय अपौरुषेव वाक्य क्या हैं—"नैव स्त्री न पुमानेष: न चैवायं नपुंसकः" यद् यच्छरीरमाधत्ते तेन तेन स युज्यते ॥" उपाधि ज़रा ख्याल कीजिये कि द्वन्द्वकी बात बतला रहा हूँ। भेद-भेदको ही तो दूर करता है। भेद वास्तवमें क्या ? जो वास्तविक तथ्यकी वस्तु है न स्त्री न पुरुष है। किन्तु हमें यह देखना है कि प्रातःकाल होते ही स्वाध्याय सन्ध्योपासना करना तो दूर रहा। करोड़ों कोश दूर रहा। सन्ध्योपासना कैसी होती है इसका भी ज्ञान नहीं ? किन्तु क्या—"चुरटमुखः चाय आचमने विनियोगः, पेपरबाजी चले नित्यं सर्वपापविनाशकम् ॥" वहाँ पर तत्त्वज्ञानकार्य सम्पादन तो हो ही नहीं सकता और बहुतसे व्यक्तियोंको तो शरीरकी सजावट Cosmatics अङ्गराग इतनी प्रिय है कि अपने आप वैसे तो यह शरीर अनेक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उपाधियोंसे विभूषित है ही, क्योंकि स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीरादि अनेक उपाधियाँ तो हैं ही; फिरभी साथमें सजावट शृङ्गार, चटक-मटक इतनी करते हैं कि देखने वालोंको चलते-फिरते, बोलते-चालते कार्टून ही नजर आते हैं। पर आगेका ख्याल नहीं कि इसकी आगे क्या दशा होगी।

शरीर छूटनेके बाद यदि आप मरुस्थलमें ऊँट बन गये, अफ्रीकाके घने जंगलोंमें जाकर शेर बन गये, प्रशान्त महासागरमें जाकर कहीं मछली बन गये और चक्रौताके जंगलकी कहीं वृक्षयोनी प्राप्त हो गई तो बतलाइये आपकी सत्ता, नाम, गौरव कहाँ चला गया, सब मिट्टीमें मिल गया। जिस शान-शौकतके साथ, नज़ाकतसे इठलाती हुई चालमें चलते हैं और अभिनयके साथ वार्तालाप करते हैं तो बताइये वह शरीर पचासवर्ष बाद निकल गया तो आपका वैभव-विभूति-ऐश्वर्य कहां रहा। एक सेकण्डमें मृत्युने छीन लिया। वह तो वास्तवमें कल्पना है जैसे-की चित्रपट पर देखते हैं तो हिलता दिखाई देता है। परन्तु वहाँ पर श्वेत पटके अतिरिक्त कुछ नहीं है। तो मैं आपसे कह रहा था कि यदि आप इस तथ्यको समझना चाहते हैं तो जगद्गुरु-शंकराचार्यके शब्दोंमें विज्ञानके द्वारा ही समझ सकते हैं।

अहं ब्रह्मेति विज्ञानात् कल्पकोटिशतार्जितम्।
संचितं विलयं याति प्रबोधात्स्वप्नकर्मवत्॥

अर्थात् आत्मविज्ञानसे आज इस रहस्यको समझ लीजिये और सदाकेलिये शान्त हो जाइये कि 'मैं ब्रह्म हूँ' कर्मोंके बन्धनसे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मुक्त होना चाहते हैं तो आप जानते हैं कि आपसे ऊँचे स्वर्गादि लोकोंके जो देवता हैं वे भी कर्मोंके बन्धनमें बंधे हुए हैं। संसारमें कोई ऐसा जीव नहीं जो कर्मसे रहित हो। अनिच्छित होनेपर भी कर्म मनुष्यको बांधते हैं। यदि आप बन्धनसे मुक्त होना चाहते हैं तो उसका उपाय यही है। जो मैं आपको बतला रहा हूँ कि आप अपने आपको 'सद्घन' 'चिद्घन' और 'आनन्दघन' ब्रह्मस्वरूप समझिये जब यह निष्ठा Fidelity आपकी हो जायगी और परिपक्व अवस्थामें पहुंच जाएँगे, तो कर्म इस तरह जल जाएँगे जैसे प्रलयकालके समुद्रमें वडवानल उत्पन्न होकर प्रशान्त महासागर जैसेको जलाकर खाक बना देता है। इसी तरह ज्ञानाग्नि भी कर्मोंको जलाकर भस्म कर देती है। जैसेकि कहा है—

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥

गी० ४।३७

गीताका यह वाक्य है हम अपने वास्तविक स्वरूपको पहिचानें, उसको समझें और उसको प्राप्त करें। यही हमारा परम कर्त्तव्य है। यही हमारा मुख्य लक्ष्य है। इतना कहते हुए अपने वक्तव्यको यहीं समाप्त करता हूँ।

हरिः ॐ तत्सत्

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीस्वामी सोमेश्वरानन्दजी योगिराज
श्रीकृष्ण निवास आश्रम—कनखल (हरिद्वार)

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षु वैं शरणमहं प्रपद्ये ॥

समादरणीय परम श्रद्धेय अध्यक्ष महोदय ! प्रातः स्मरणीय यतिवृन्द ! जनताजनार्दनके रूपमें उपस्थित स्नेहवती माता-बहिनें एवं बन्धुओ !

आज परम पवित्र भगवती भागीरथीके पुनीत-तटपर निवृत्त-मार्ग प्रदर्शक परमपावन श्रीकृष्ण निवास आश्रममें षष्ठ अखिल भारतीय वेदान्त-सम्मेलनका आयोजन परम श्रद्धेय श्रोत्रिय ब्रह्म-निष्ठ परमगुरु महामण्डलेश्वर श्री १०८ श्रीस्वामी पूर्णानन्दजी महाराजकी अध्यक्षतामें गत सम्मेलनोंकी तरह बड़े समारोहके साथ मनाया जा रहा है ।

इस महोत्सवमें भारतके कोने-कोनेसे बड़े-बड़े श्रेष्ठ, तपस्वी, विद्वान् वीतराग, तितिक्षु, महापुरुष एवं श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ महा-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मण्डलेश्वर पधारे हुए हैं। मुमुक्षुओ! आप सब उनके तत्त्व-साक्षात्कारक प्रवचनों द्वारा यथार्थ ब्रह्मानन्दके आनन्दको प्राप्तकर रहे हैं। यह बड़े ही पुण्योंका फल है।

बन्धुओ! वेदान्त-सिद्धान्तका मुख्य लक्ष्य अपने-आपको अर्थात् निजस्वरूपके समझानेमें ही निहित है। अपनी सत्ताकी अनुभूतिमें ही वेदान्तके सिद्धान्तकी सफलता है। आत्मसाक्षात्कार कर लेनेके पश्चात् साधक मुमुक्षुको कल्याणार्थ कुछ भी कार्य करना शेष नहीं रह जाता है। शास्त्रमें आया है "विहितं विपुलं तेन येन साक्षात्कृतं ब्रह्म" वेदान्त-सिद्धान्तके अतिरिक्त धार्मिक जगत्में ऐसा कोई भी सिद्धान्त नहीं है जो कि हाथ उठाकर यह घोषणा करे कि "मैं अब कृतकृत्य हो गया हूँ" मुझे अब कुछ भी करना शेष नहीं रह गया है। कुछ एक स्थूलदर्शी प्राणी भौतिक विज्ञानवादके प्रत्यक्ष प्रयोगोंको देखकर कहने लगते हैं कि तत्क्षण फल देनेवाला सबसे बड़ा सिद्धान्त यही है उनका कहना भी किसी अंश तक ठीक ही है। मूर्त पदार्थोंके सम्मिश्रणका फल सामने अवश्य मूर्तरूपमेंही आएगा। भौतिक पदार्थोंकी प्रयोग-सिद्धि तत्क्षण प्रत्यक्ष फल देती है। परन्तु भौतिक प्रयोगशालाओं-के सिद्धहस्त प्रयोक्ताओंको आन्तरिक शान्ति नहीं मिलती। क्योंकि उन्हें प्राचीन एवं वर्त्तमान आविष्कारोंकी प्रतियोगितामें उतरना पड़ता है। आजके वैज्ञानिक अपनेको द्वापर (महाभारतकालीन) वैज्ञानिकोंसे पीछे मान रहे हैं। इसके अतिरिक्त भौतिक पदार्थोंकी परिसमाप्ति अध्यात्मवादमें है। इस प्राणीको वास्तविक सुख-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शान्ति तभी प्राप्त हो सकेगी जब यह अपने सच्चिदानन्द स्वरूपको यथार्थरूपसे बोध करेगा ।

व्यापक आत्मतत्त्वकी झलक देखनेकेलिए वेदान्त सिद्धान्तही दिव्य दृष्टि देगा। केवल वेदान्तसिद्धान्तके अनुभवी आचार्यों द्वारा उसे समझना पड़ेगा। अर्जुनके शोक-मोहका निवारण करनेकेलिये भगवान् श्रीकृष्णने आचार्यरूप-से उसे दिव्य दृष्टि दी। भगवान्ने कहा है—

न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ।

अर्थात् तू अपने इन चर्म चक्षुओंसे मेरे विराट् स्वरूपको नहीं देख सकता है। मैं तुझे दिव्य दृष्टि देता हूँ। उससे तू मेरी ईश्वरीय योगशक्तिको देख। यहाँ पर भगवान्ने कौनसी दिव्य दृष्टिके विषयमें बतलाया और वह दिव्य दृष्टि क्या किसी मन्त्र-तन्त्रके द्वारा दी थी। अथवा अष्टाङ्ग योगके द्वारा या अपनी शक्तिके द्वारा वह दिव्य दृष्टि दी थी। जिससे उसे अखण्ड एकरस आत्म-तत्त्वका ज्ञान हो गया था और उसके शोक-मोहका निवारण हो गया था। भगवान्ने कहा है—"ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते" गी० १०।१०

अर्थात् मैं उनको वह बुद्धिरूप योग देता हूँ जिससे वह मेरेको प्राप्त होते हैं। यहां पर दिव्य दृष्टिका तात्पर्य आत्माकार बुद्धिसे है। दिव्य दृष्टिका दाता अद्वैतवादका प्रतिपादक वेदान्त सिद्धान्त ही सिद्ध हुआ। अपने आपको समझनेकेलिए याने मैं कौन हूँ ?

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

क्या मैं लम्बा-चौड़ा, काला-गोरा, साढ़े तीन हाथका शरीर हूँ। या इन्द्री-मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार हूं। अथवा जाग्रत-स्वप्न सुषुप्ति-में रहनेवाला केवल प्राण ही मैं हूँ। नहीं ? नहीं ? तू यह नहीं है। तू इस सारे प्रपंचका स्वामी है। प्राण-इन्द्रिय-अन्तःकरणकी सारी क्रियाओंका साक्षी है। प्रपंचके झमेलेमें फंसकर प्रपंचाकार वृत्ति बन गई है। स्वयंको जाननेकेलिये इस नाम-रूपात्मक जगत्से अपनी वृत्ति कुछ ऊपर उठा और अपनेको अधिष्ठान-चैतन्य अर्थात् कूटस्थके रूपमें देख। तू किसीस भिन्न नहीं और तेरेसे कोई भिन्न नहीं। पदार्थाकारवृत्तिस तू अल्पज्ञ और आत्मा-कारवृत्तिसे तू सर्वज्ञ है। वेदान्तका सिद्धान्त हमें अल्पज्ञता-से उठाकर सवज्ञतामें पहुंचा देता है। वेदान्तका सिद्धान्त है—"उदारचरितानान्तु वसुधव कुटुम्बकम्" वेदान्ती समदर्शी होता है। आत्मज्ञानीकेलिये वसुन्धराके समस्त प्राणी सम्बन्धी है। वह सबमें एकताको देखता है। मैं भिन्न हूँ। वह भिन्न है। ऐसी भेद बुद्धि नष्ट हो जाती है। भेदकी भावना सदाके लिये निवत्त हो जाती है। इस विराट् जगत्को सच्चिदानन्द स्वरूपस निर्णय करते हुए वेदान्तने बतलाया है—

अस्ति भाति प्रियं रूपं नाम चेत्यंशपञ्चकम् ।
आद्यं त्रयं ब्रह्मरूपं जगद्रूपं ततो द्वयम् ॥

अर्थात् विराट् जगत्के सारे पदाथ अस्ति, भाति, प्रिय एवं नाम रूपसे पांच अंशोंवाले हैं। परन्तु आदिके तीन अस्ति, भाति,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रिय ब्रह्म अंशीके प्रदर्शक हैं। अन्तके दो नाम और रूप जगत् प्रपंचके प्रपंचक हैं। 'अस्ति' अर्थात् है। वह सत्तावान् 'सत्' रूप है। 'भाति' अर्थात् भासता है 'चित्' रूप है। 'प्रियं' अर्थात् प्यारा-आनन्द स्वरूप है। तथा पदार्थोंका नाम-रूप भी है। गन्ने (ईख) के दृष्टान्तसे समझिये। गन्ना है। यह है—पना गन्नेके अस्तित्वका बोधक है। अर्थात् जो अस्तित्व है वह 'सत्' है। गन्नेमें 'भाति' अंश गन्ना भासता है—प्रतीत होता है। दिखलाई देता है। यह भाति अंश चित्‌रूप है। क्योंकि प्रतीतिका कराना चेतनका धर्म है। गन्नेमें प्रिय अंश गन्ना सबको प्रिय लगता है। यह प्रियपना आनन्दका बोधक है। गन्ना-नामरूपात्मक एक पदार्थ है। अंशीकी सत्ताको लेकर जीव गन्नेका दृष्टा बनता है। शेष दो अंश नाम और रूप अध्यस्त जगत्‌के बोधक हैं। गन्ने में देखिये—गन्नेका नाम भी है और रूप भी है। यहां नाम और रूप दोनों परिवर्तनशील हैं। उपर्युक्त अस्ति, भाति, प्रिय तीनों अंश एकरस हैं। जसे गन्नको पेरकर (कोल्हूमें दबाकर) रस बना दिया जाय तो उपर्युक्त तीनों अंश गन्नेकी तरह रसमें भी घटित हो जात हैं। जसे अस्तिपना रस है, भातिपना–रस भासता है। प्रियपना–रसप्रिय लगता है। अब रससे गुड़ और गुड़से चीनी, फिर चीनीसे मिठाइयों तक चले जाइये। यह तीनों अंश ज्योंके त्यों बराबर घटते चले जाएँगे। पदार्थके परिवर्तनका प्रभाव नाम-रूपपर पड़ेगा। यह सिद्धान्त है कि नाम और रूपका ही परिवर्त्तन होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पदार्थोंमें ब्रह्मके उपर्युक्त लक्षण हर प्रकारसे घटित हो जाते हैं। जैसे - अस्ति प्रत्येक प्राणी अपना अस्तित्व अर्थात् जीवन चाहता है। भाति—अर्थात् प्रतीति यानी ज्ञान। हर प्राणीको ज्ञान भी चाहिये। प्रिय अर्थात् आनन्द हर प्राणीको आनन्द भी चाहिये। जीवन, ज्ञान एवं आनन्द प्राणीमात्रकी माँग है। इसके विपरीत मरण, अज्ञान और दुःखसे प्राणीमात्रको भय पैदा होजाता है। यह प्राणी परमार्थतः स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप है। इसलिये अपने लक्षणवाले तीनों अंशोंको ही चाहता है। जगत्के पदार्थोंको अपने स्वरूप लक्षणसे देखा जाय तो तीन कालमें भी दुःखप्रद नहीं है। मायिक दृष्टिसे दुःखदायी है। गोस्वामीजीने कहा है—

चौ० नाम रूप दोउ ईश उपाधी, अकथ अनादि सुसामुझ साधी।

नाम और रूप यह दोनों अंश ईशकी उपाधि अर्थात् मायाके बोधक हैं। तथा अकथ-अनादि ईश-परब्रह्म विवेकियों द्वारा साध्य है अर्थात् विवेक बुद्धिवाले ही उसे प्राप्तकर सकते हैं। विवेकिओं के लिये परमात्मा अस्ति-भाति-प्रियरूपसे या सत्-चित्-आनन्द-रूपसे सर्वत्र व्यापक है।

इस अपने स्वरूपकी प्राप्तिमें ही नर जीवनकी सफलता है। अपना स्वरूप स्वयं आनन्दमय है। एक समय नारद मुनिने सनत्कुमारसे यह प्रश्न किया था। भगवन्! आपके पास सुख-के साधन-पदार्थ नहीं हैं, फिर भी आपकी आनन्दमुद्रा अनन्त सुखकी द्योतिका प्रतीत हो रही है। मेरे पास पदार्थरूपसे सारे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

साधन उपस्थित हैं, फिर भी अखण्ड आनन्दकी प्राप्ति नहीं हो रही है। पुनः सनत्कुमारने कहा—"यो वै भूमा तत्सुखं, नाल्पे सुखमस्ति" अर्थात् जो व्यापक-पूर्ण ब्रह्म है वही सुख स्वरूप है। अल्पज्ञताके अन्दर सुख नहीं है। ब्रह्म सर्वत्र परिपूर्ण है। पदार्थों का मायिकरूप तुच्छ एवं क्षणिक है। दृष्टान्तके रूपमें शरीर पर ही घटाइये। जैसे—यदि अपना शरीर अंग-उपांगसे परिपूर्ण है तो सुखदायी है। यदि किसी अंग-उपांगकी त्रुटि हो तो इसे अपूर्ण माना जाता है। जैसे किसी प्राणीका शरीर हृष्ट-पुष्ट हो। संसारके सारे वैभव प्राप्त हों। केवल नेत्र अथवा किसी अन्य इन्द्रीकी कमी रह जाय तब तो अपना शरीर ही दुःखरूप प्रतीत होने लगता है। बुद्धिकी कमीसे मनुष्य पागल हो जाता है। अथवा प्राण आदिकी कोई भी त्रुटि दुःखरूप खटकनेवाली बन जाती है। सनातनधर्मने तो खंडित मूर्तिकी पूजाका भी निषेध किया है। इसका तात्पर्य यही है कि ब्रह्म सर्व देशी परिपूर्ण है। पूर्ण बननेके लिये परिपूर्णकी शरणमें जाना पड़ेगा। गीताका अधिकारी अर्जुन अल्पज्ञताके भावको लेकर विषादमें फंस गया। नाना प्रकारसे विलाप करने लग गया। भगवान् सोचने लगे वेदान्त-सिद्धान्तके अनुयायी एक सच्चे वीर योद्धामें ऐसी कमी क्यों ? क्या कभी सूर्य अन्धेरेमें छिपाया जा सकता है ! क्या कभी सुमेरु पर्वत राईके नीचे दबाया जा सकता है ! क्या कभी आकाश को समेटकर महासागरमें डुबाया जा सकता है। जब यह असम्भव है तो एक अद्वैतवादीके अन्दर महाप्रलयमें भी शोक-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मोहकी उत्पत्ति असम्भव है। भगवान्‌ने अर्जुनकी अल्पज्ञताको दूर करनेकेलिये उसके शोक-मोहको निवारण करनेकेलिये प्राणी-मात्रमें अजरत्व, अमरत्वकी झलकसे जगमगाता हुआ वेदान्तका सिद्धान्त समझाया शंकासमाधानपूर्वक अध्यात्मवादका यथार्थ बोध करवाया। तब अर्जुन विषादकी जवनिकाको उठाकर निर्भयताके साथ बोला—

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव॥

गी० १८।७३

किसी हिन्दीके कविने कहा है—

भूला है अज्ञानसे अपना आत्मरूप।
ताहीकौ पुनिजानिबो ज्ञान कहत कवि भूप॥

बस इस वेदान्त-सम्मेलनका यही लक्ष्य है। वेदान्त-सिद्धान्त-के अध्ययन-श्रवण-मनन द्वारा अपने सच्चिदानन्दस्वरूपको प्राप्त करिये।

न योगेन न सांख्येन कर्मणा नो न विद्यया।
ब्रह्मात्मैकत्वबोधेन मोक्षः सिद्ध्यति नान्यथा॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् स्वामी ओङ्कारानन्दजी महाराज

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै,
वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं,
मुमुक्षु वैं शरणमहं प्रपद्ये ॥

सुमादरणीय अध्यक्ष महोदय ? एवं भगवत्प्रेमी सज्जनवृन्द ! तथा भक्तिमती देवियो ।

आज बड़े हर्षका अवसर है कि इस 'अखिल भारतीय वेदांत सम्मेलन' में उपस्थित होकर आपके सम्मुख अपने विचार प्रकट करने का शुभ अवसर प्राप्त हो रहा है ।

वेदान्त-सम्मेलन क्या है ? इस विषय पर अनेक बड़े-बड़े वक्ताओंने कई दिनोंसे प्रकाश डाला है । सम्भव है कि भली-भांति आप इससे परिचित हो चुके होंगे । वेदान्त वस्तुतः किस समय और किस प्रकार किस वस्तुका प्रतिपादन करता है । इसे सामान्यरीतिसे इसका संक्षिप्तरूपसे आशय समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है प्रत्येक प्राणी यह जानता है कि जब तक अपने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अभीष्ट फलकी प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक उसके मनको शान्ति नहीं मिलती है और तब तक यह मन चञ्चल ही बना रहता है। उसकी माँग सर्वथा बनी रहती है। जीवोंकी स्वाभाविक माँग क्या ? इस बातको सर्वसाधारण लोग जानते ही हैं। वह है एक सुख। नित्य सुख प्राप्त होता रहे इसकी आकांक्षा प्राणीमात्रको बनी रहती है। सुखसे तात्पर्य यह नहीं कि जो सामान्यतया "सुष्ठु खानि इन्द्रियाणि यस्मिन् तत्सुखम्" अर्थात् अवस्था विशेषमें जिस स्थितिमें इन्द्रियोंकी अनुकूलता होती है। यद्यपि उसका नाम भी सुख कहा जाता है। उस सुखके आकांक्षी भी हैं। परन्तु उस सुखसे नित्य सुखकी सम्भावना नहीं की जा सकती है। इन्द्रियोंके विषय समय-समय पर उपलब्ध नहीं होते और होते भी हैं तो व्यक्ति उसके द्वारा तृप्त नहीं होते हैं। कृत-कृत्य नहीं होते हैं। उनकी अनादि कालसे लगनेवाली भूख और प्यास है। उसकी निवृत्ति नहीं होती है। मनमाने विषयोंका भोग किया।

एक तो मनमाने विषय मिलते नहीं। कदाचित् मिल भी जाएँ तो उन भोगोंके पश्चात् तृप्ति नहीं होती। क्षोभ होता है। अशान्ति होती है। ग्लानि होती है। एक विषयके बाद दूसरे विषयकी आकांक्षा जागृत होती है। विषयको देखकर अपने आप को कृतकृत्य करना चाहता है। सुन्दर-से-सुन्दर दृश्य देखना चाहता है। अनेक प्रकारके नाटक-सिनेमा इत्यादि देखता है। फिर भी तृप्ति नहीं होती है। अनेक प्रकारके मधुर गान आदि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्रवण करता है, फिर भी कर्ण-देवता तृप्त नहीं होते हैं। इसी प्रकार जिह्वासे अनेक प्रकारके फलादियोंका रसादि आस्वादन करता है पर तृप्ति नहीं होती। प्रतिक्षण और दूसरे अन्य विषयों की आकांक्षा यानी इच्छा बढ़ती जाती है और यह इच्छा आजसे ही नहीं, किन्तु अनादिकालसे जीवोंकी इसी प्रकार विषयों के प्रति भूख बनी रहती है। तृप्ति नहीं होती है। इसीसे यह जिज्ञासा होती है।

हमारे यहाँके बड़े-बड़े मनीषियोंने महापुरुष-ऋषि-मुनियोंने बड़े-बड़े वीतराग महात्माओंने अपनी साधनाओंके द्वारा कोई ऐसी भी वस्तु निश्चित् की होगी। ऐसे पदार्थोंकी खोज की होगी, जहाँ पर नित्य सुख हो। जिसको प्राप्तकर दूसरी ओर दृष्टिपात न करना पड़े। जिसमें वियोगकी कोई कल्पना न हो ऐसा नित्य सुख और उसके साथ-साथ इससे भी बढ़कर अन्य किसी सुखपर हमें लालायित न होना पड़े। इसलिए कोई निरतिशय सुख भी होना चाहिये और जिसपर सर्व साधारणका अधिकार भी होना चाहिये। नित्यसुख भी हो। निरतिशय भी हो। किन्तु उसपर यदि अधिकार न हो तो उससे मानवको कोई लाभ नहीं हो सकता है। जिसे हम सरलतासे भी प्राप्त करलें, ऐसा सुख क्या है? निःसन्देह महापुरुषोंने इसकी शोध (खोज) की और वह शोध आपके सामने 'वेदान्त-सम्मेलन' के रूपमें प्रत्यक्ष प्रस्तुत है।

वेदान्त कोई नवीन वस्तु नहीं है। वेदान्त-दर्शन छह दर्शनों

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

में प्रसिद्ध एक दर्शन माना जाता है। छह शास्त्र कहें चाहे छह दर्शन कहें। एक ही बात है। शास्त्रमें दर्शनकी परिभाषा निम्न प्रकारसे की है—"दृश्यते वस्तुस्वरूपमनेनेति दर्शनम्" जिसके द्वारा वस्तुका याथात्म्यज्ञान हो, दृशन हो, उसे 'दर्शन' कहते हैं। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और छठा वेदान्तदर्शन प्रसिद्ध हैं। इन दर्शनोंमें अनादि कालसे जिसकी धारा अक्षुण्ण-रूपमें अभी भी धरातलपर विद्यमान है। अनेक प्रकारसे कर्मके रूपमें, उपासनाके रूपमें, और ज्ञानके रूपमें संक्षेपमें कहा जा सकता है कि तीन प्रकारसे वढ़ती ही रही और बढ़ती जायगी। कर्मकी भी आवश्यकता है और उपासनाकी भी आवश्यकता है। क्यों उसकी आवश्कता है? तो जीव स्वाभाविक जैसेकि भगवान् श्रीकृष्ण गीतामें उपदेश दे रहे हैं—

नहि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यक कृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥

॥गी० ३-५॥

कोई भी जीव बिना कर्म किये एक क्षणभर भी नहीं रह सकता। कर्म उसे करने ही पड़ते हैं। कर्मोंकी परम्परा सामान्यतया शारीरिक कर्म वाचिक कर्म, और मानसिक कर्मसे यहां तात्पर्य सामान्यतः नहीं प्रतिपादन कर रहे हैं किन्तु शास्त्रीय जो कर्म हैं, जिन कर्मोंके द्वारा हम उस सुखकेलिए प्रयास करते हैं। उसका प्रतिपादन भी मीमांसाशास्त्र करता है। यज्ञादि कर्मोंके द्वारा, धर्मके द्वारा, तपस्याके द्वारा और दानादिके द्वारा अनेक प्रकारसे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सत्कर्मोंके द्वारा सुखकी बात कही गई। परन्तु वह सुख सीमित सिद्ध हुआ। वह भोगमय ही सिद्ध हुआ। जिसे स्वर्ग कहा जाता है। मीमांसकोंका साध्य वही अन्त तक बना रहता है। स्वर्गसे बढ़कर कोई वस्तु उन्होंने सुखकेलिये प्रतिपादन नहीं की। परन्तु वह स्वर्ग परोक्ष है। सर्वसाधारणकेलिये प्रत्यक्ष नहीं। वर्त्तमान शरीरमें रहते हुए हमें यहां उसकी उपलब्धि यह भी संभव नहीं। अत एव शरीरान्त होनेपर उस यज्ञादि कर्मसे होनेवाले अदृश्य धर्म-पुण्य उसके बल परही ईश्वर प्राप्तकर सकते हैं। तात्पर्य यह है कि इस जीवनमें, वर्त्तमानमें उस सुखकी उपलब्धि नहीं की जा सकती। कर्म भी हमारे लिये पूर्णतया मानवके माँगकी पूर्तिकर देता है यह बात ऋषि-मुनियोंने सिद्धकी कि नहीं हो स : गी।

सांख्य भी उपासनाका वर्णन करता है। योग भी उपासना-का वर्णन करता है। परन्तु उसके द्वारा भी वह उपासना, वेदो-पासना अथवा निर्गुण निराकार या सगुण साकारोपासनामें अनेक प्रकारके भेद हैं। इन पर विशेष विचार न करके सांख्यने प्रकृति-पुरुष दोनोंको नित्य बतला करके और सब प्रकारसे यद्यपि सेश्वर और निरीश्वर सांख्यके नामसे दो प्रकारके सांख्यके भेद कहे जाते हैं। सेश्वर सांख्यमें ईश्वर चर्चाकी है। ईश्वर आराधना, उपासना बतलाई गई। उसके अनुग्रह से चित्तकी शुद्धि-एकाग्रता इत्यादि की प्राप्ति होती है। समाधीकी सिद्धि होती है। जीव किसी न किसी अंशमें कृतकृत्य हो जाता है। परन्तु यथार्थमें उससे इस नित्य सुखकी सम्भावना नहीं कर सकते हैं। हमें नित्य

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सुख प्राप्त ही हो जाय, यह बात उसके द्वारा भी नहीं होती है। अन्तमें वेदान्तका ज्ञान कि यह ज्ञान ऐसा प्रत्यक्ष ज्ञान है जिससे कि व्यक्ति यहाँ पर ही मुक्त हो जाता है। यहां ही नित्य वस्तु यानी सुखकी प्राप्ति हो जाती है। अन्य कोई दर्शन, अन्य कोई पुराण, अन्य कोई शास्त्र इसप्रकार नहीं जो जीवनमुक्तिकी सिद्धि करते हों। वेदान्तका लक्ष्य क्या है? वेदान्तसे होनेवाला जो तत्त्वज्ञान या वेदान्त स्वयं तत्त्वज्ञानमय उपनिषद् आदि उसके द्वारा होनेवाला फल क्या है? उसके लाभ क्या? तो ज्ञानके द्वारा एकमात्र मोक्षही बतलाया गया है। मुक्तिही बतलाई गयी है। वह भक्ति शास्त्रमें मोक्ष अनेक प्रकारसे वर्णित किया गया है "सामीप्य मुक्ति" "सारूप्य मुक्ति" "सालोक्य मुक्ति" "सायुज्य-मुक्ति" इत्यादि मुक्ति मोक्षके नामसे ही बतलाई गई है। अपने इष्टकी उपासनाके अनुसार उन-उन लोकोंकी प्राप्ति करना आदिके रूपमें ये मुक्तियाँ हैं। परन्तु उन मुक्तियोंसे भी जीवन मुक्तिकी सिद्धि नहीं होती है। जीते जी मुक्त हो जायँ, यहाँ ही जीव की मांग पूरी हो जाय, यहां ही कृतकृत्य हो जाय, यहाँ ही अपने जीवनको सफल करले। नित्य मुक्ति एक परमात्मा प्राप्त हो जाय, यह एकमात्र वेदान्त ही बतलाता है। उसकी प्राप्ति कैसे हो? इसके ऊपर वक्ताओंने प्रकाश डाला और डालेंगे। इसलिये कहनेका अभिप्राय यह है कि वेदान्तही बता सकता है। स्वामी रामतीर्थके शब्दोंमें "नकद सौदा" यही है। यहीं उसका प्रत्यक्ष फल मिलता है। जिस उक्तिको लेकर जैसे कि पहिले चार प्रकार-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

के भेद बतलाये। किसीने मोक्ष कहा, किसीने अपवर्ग कहा। उस अपवर्गकी संक्षिप्त परिभाषा कर हम अपने वक्तव्यको समाप्त करेंगे।

सभी व्यक्ति मोक्षके आकांक्षी हैं। अपवर्गका तात्पर्य क्या है? मोक्षका तात्पर्य क्या है? इस पर शास्त्रकार बतलाते हैं।

यतोऽन्यस्मिन् पतनं फलाशा न बन्धनं चापि भयं न मृत्युः।
पवर्गहीनं पदमीक्षितं वै ततोऽपवर्गो निगदितो मुनीन्द्रैः॥

जिसमें पवर्ग नहीं हैं 'पवर्गो न विद्यते यस्मिन् सोऽपवर्गः पवर्गसे मतलब—प-फ-ब-भ-म—ये जिसमें न हों उसका नाम अपवर्ग है। अपवर्गका तात्पर्य यह है कि 'प' से तात्पर्य पतनं' जहां जाकर पतन यानी गिरना न हो। गिरनेकी सम्भावना नहीं। पतन नहीं। 'फ' फलाकांक्षा जहां कोई फलेच्छा न हो। 'ब' से बन्धन नहीं हो। 'भ' से भय नहीं हो जहाँ। 'म' से मृत्युकी कोई शंका जहाँ न हो। इसप्रकार पतनसे हीन। फलाकांक्षासे रहित, बन्धनसे रहित, भयसे निर्मुक्त, मरणादिसे सर्वथा रहित होनेवाला जो पद है वह है 'अपवर्ग' वह अपवर्ग अथवा मोक्ष वेदान्तका सार है और इसीप्रकार सम्मेलनके द्वारा अधिकारी भेदसे सब बातोंको समझकर उसे प्राप्त करनेकी चेष्टा करनी चाहिये। इतनाही कहकर मैं अपने वक्तव्यको समाप्त करता हूं।

—हरिः ॐ तत्सत्—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज
वेदान्ताचार्य्य, बम्बई

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै।
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षु वैं शरणमहं प्रपद्ये॥

परम श्रद्धेय मण्लेश्वरजी महाराज तथा अन्य महात्मवृन्द! एवं सज्जनो! माता और देवियो!

बड़े हर्षका दिवस है कि हम लोग इस पवित्र क्षेत्रमें बैठकर वैशाखी स्नानके उपलक्ष्यके साथ-साथ गंगा-स्नान तो करते ही हैं और सत्संग द्वारा ज्ञान-स्नान भी करते हैं। क्योंकि दोनोंकी आवश्यकता पड़ती है। बाह्य शुद्धिकी भी अपेक्षा और आन्तरिक शुद्धिकी भी अपेक्षा है। प्रथम हम लोग भगवती भागीरथीमें गोता लगाते हैं। आचमन करते हैं। उसके द्वारा शारीरिक शुद्धि हो जाती है। जन्म-जन्मान्तरोंके पाप-संताप मिट जाते हैं। यहाँ तक लिखा है कि जो गंगामें स्नान करता है उसे मुक्ति तो मिलती है और जो घर पर बैठे गंगाका स्मरण करते हैं, पवित्र हृदय से

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नामोच्चारण करते हैं वे भी पापों से मुक्त हो जाते हैं जैसे कि शास्त्रोंमें बताया है—

> गंगा गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि ।
> मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ।।

कहते हैं एक-दो, दस-बीस कोशकी दूरी पर नहीं, सैकड़ों कोशोंकी दूरी पर यदि आप बैठे हैं और किसी कारणवशात् नहीं आ सकते हैं तो घर पर बैठे-बैठे 'गंगा गंगेति ब्रूयात्' गंगा-गंगा इस प्रकार नाम याद करते हुए स्नान करते हैं तो वे सभी पापोंसे छूट जाते हैं, यह गंगाजीकी महिमा है, जो सभी पापोंसे छुड़ा देती है। आप लोग सभी गंगामें स्नान करते हैं तो शारीरिक शुद्धि हो गई और बहुतसे पाप-संताप भी नष्ट हो जाते हैं। अब रही आन्तरिक शुद्धि क्योंकि भीतर में आवरण भी तो बैठा हुआ है। उस आत्मा के ऊपर, उस ब्रह्मके ऊपर, एक पर्दा ढंका हुआ है, जिसके कारण हम उस परमात्माको नहीं जानते और नहीं देखते हैं तो उस परमात्माका ज्ञान उस आत्माका साक्षात्कार कैसे हो ? और उसके कौन-कौनसे उपाय, कौन-कौनसे साधन हैं ? तो कहना होगा कि यही सर्वश्रेष्ठ साधन है कि आप लोग इस पंडालमें बैठकर सत्संग द्वारा—ज्ञान-चर्चा सुन रहे हैं। इसीके द्वारा वह अज्ञानरूपी आवरण हटता है और स्वस्वरूप आत्मा उसका साक्षात्कार होता है। जब तक प्राणी उस आत्म-तत्त्वको नहीं जानता है तब तक दुःखोंसे छुटकारा पाना मुश्किल है। यहां

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तक कि आप सब कुछ दुनियांमें कर चुके हैं। किन्तु अपने आपको नहीं समझा नहीं जाना तो ये बाहरके जितने ज्ञान हैं सब व्यर्थ हो जाते हैं। कहनेका तात्पर्य क्या है कि इस पवित्र तीर्थमें आकर जान जाओगे। आप लोग गंगामें स्नान करते हैं और करना चाहिये। यही इस संक्रांतिके मेलेका उद्देश्य माना जाता है। ठीक है, यदि गंगाका स्नान ही केवल करके घर चल दिये। मंदिरोंमें दर्शन आदि और महात्माओंका सत्संग आदि नहीं किये तो क्या कल्याण नहीं होगा? कल्याण तो अवश्य ही होगा। किन्तु जो वस्तु सत्संगसे प्राप्त हो सकती है वह अन्यत्र और अन्य साधनोंसे कठिनतासे साध्य है अर्थात् अलभ्य एवं अप्राप्य है। केवल स्नानका इतना महत्त्व नहीं है जितना कि महात्माओंके दर्शन-पूजन-सत्संग आदिका महत्त्व है तो ऐसे वेदान्त-सम्मेलनोंमें जाकर ज्ञानकी पवित्र बातें सुननी चाहिये। यहाँ पर आपके सामने बड़े-बड़े विद्वान् और महापुरुष अपने दिव्य-पवित्रतम उपदेश करेंगे। भाषण देंगे। ऐसा नहीं समझना चाहिये कि हम लोग पढ़े लिखे नहीं हैं इसलिये हम लोगोंको उस आत्मतत्त्व का साक्षात्कार कैसे होगा? ऐसी सम्भावना भी नहीं करनी चाहिये। क्योंकि शास्त्र कहता है कि "आत्मा वा अरे श्रोतव्यः" उस आत्माका श्रवण करना चाहिये। "आत्मा वा अरे पठितव्यः" नहीं तो ऐसा क्यों नहीं कह दिया कि आत्मा को पढ़ना चाहिये कि पढ़ो ऐसा शास्त्र नहीं कहता है। किन्तु शास्त्र तो कहता है कि आत्माका श्रवण करना चाहिये। श्रवणके

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

द्वारा ही आत्मतत्त्वका साक्षात्कार होता है। अन्यथा कोई ऐसा साधन नहीं जिससे आत्माका साक्षात्कार किया जाए।

बाह्य किसी साधनसे इस चीज़को प्राप्त भी नहीं कर सकता है। प्रथमसे ही उसका साक्षात्कार है। श्रुति भगवती कहती है कि "यत्साक्षादपरोक्षंब्रह्म" विचार दृष्टिसे देखा जाए तो यदि कोई प्रत्यक्ष वस्तु है तो केवल एक आत्मा ही है। परमात्मा ही है। ये संसारकी जितनी भी चीज़ें हैं। जितनी वस्तुएँ हैं। ये सब परोक्ष ही मानी जाती हैं। जब हम बाहरके घट-पट-मठादि-ओंको देखते हैं तो यही मानते हैं कि ये प्रत्यक्ष हो रहे हैं। लेकिन ये परोक्षही माने जाते हैं। इन पदार्थोंका प्रत्यक्ष कब होता है जब इन्द्रियोंके द्वारा, मनके द्वारा विषयोंका साक्षात सम्बन्ध होता है तब प्रत्यक्ष होता है। जब तक घट-पट-आदिओं-का इन्द्रियोंके साथ सम्बन्ध नहीं होता तब तक किसी वस्तुका प्रत्यक्ष सम्भव नहीं है। मानलीजिये थोड़ी देरकेलिये कि हम अपने नेत्र बन्द कर लेते हैं। थोड़ी देरकेलिये तो सामने पड़े हुए घट-पट-आदियोंका प्रत्यक्ष नहीं होता है। इसलिये वे परोक्ष माने जाते हैं। आत्माके विषयमें ऐसी बात नहीं है। आत्माको तो आँख बन्द करके भी देख सकते हैं। जान सकते हैं। क्योंकि वह अत्यन्त समीप है और अत्यन्त समीप होनेके कारण, अत्यन्त सूक्ष्म होनेके कारण आपके पास आँख भी न हो तो भी उसको जान सकते हैं और दूसरी बात यह है कि बाह्य पदार्थोंको जाननेकेलिये मन आदि इन्द्रियोंकी अपेक्षा होती है तो इन सब

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

युक्तियोंके द्वारा यही बात सिद्ध होती है कि आत्माही अत्यन्त समीपमें है और उसीका साक्षात्कार करना है। आसमानमें कोई हमारा भगवान् नही बैठा हुआ है। किन्तु भगवान् तो सबके हृदयमें संनिहित है। विराजमान है। जैसे कि भगवान्ने गीतामें कहा है—

अहमात्मा गुडाकेश: सर्वभूताशयस्थित: ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥
गी० १०।२०

भगवान् कहते हैं कि वह परमात्मा सब भूतोंके हृदयमें विराजमान है। आत्मरूपसे सबके अन्दर विराजमान है। तो कहनेका तात्पर्य क्या है कि उसका भी श्रवण अवश्य करना चाहिये। श्रवणके द्वाराही उसका साक्षात्कार होता है। क्योंकि ऐसा क्रम बताया है कि "श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य:" अर्थात् प्रथम श्रवण उसके बाद मनन और फिर निदिध्यासन यानी ध्यान करना चाहिये। तब फिर आत्मतत्त्वका साक्षात्कार होता है। उसीको जानना है। उसीको समझना है। आज जानों, चाहे कल जानो, चाहे एक जन्ममें, चाहे दो जन्मोंमें और चाहे सैकड़ों जन्मोंमें जानों। लेकिन जानना जरूरी है। यहीं पर आना पड़ेगा और यही सच्चा मार्ग है। दूसरा मार्ग नहीं है।

यह वस्तु आप लोगोंको इन महात्माओंके सत्संगसे उपलब्ध

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हो सकती है । इस समय आप लोगोंको सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ है कि आप ज्ञानका श्रवण करते हैं और अपने जीवन-को कृतकृत्य करते हैं । इस समय और भी बड़े-बड़े महापुरुष यहाँ मंच पर पधारे हुए हैं वे अपने अमृतमय वचन आपको श्रवण कराएँगे । इतना कहकर मैं अपने वक्तव्यको समाप्त करता हूँ ।

हरिः ॐ तत्सत्

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रवचन

श्रीमान् स्वामी ईश्वरानन्दजी महाराज
शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश (हिमालय)

यं शैवाः समुपासते 'शिव' इति 'ब्रह्मेति' वेदान्तिनो,
बौद्धाः 'बुद्ध' इति प्रमाणपटवः 'कर्त्तेति' नैयायिकाः।
'अर्हन्नित्यथ' जैनशासनरताः 'कर्मेति' मीमांसकाः,
सोऽयं नो विदधातु वांच्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ॥

परम पूज्य महात्मवृन्द! एवं माता और भाईकेरूपमें विराजमान मेरी आत्माओ!

वेदान्त वह दर्शन है, जो हमें आत्माका दर्शन कराता है। इस दर्शनके अभ्याससे आप शाहोंके शाहंशाह, सम्राटोंके सम्राट् बन सकते हैं। यह वही पवित्र दर्शन है जिसका प्रचार स्वामी रामतीर्थ-ने और स्वामी विवेकानन्दजीने विदेशोंमें जाकर इसका अमर-सन्देश दिया था पूज्य स्वामी पूर्णानन्दजी महाराज भी आज इस हरिद्वारमें इस वेदान्त दर्शनका पवित्र सन्देश दे रहे हैं और तीस वर्ष पहिलेसे स्वामी शिवानन्दजी महाराज, ऋषिकेश

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

(हिमालय) से इसका दिव्य सन्देश-सत्साहित्य द्वारा प्रसारित कर रहे हैं।

अब मैं आपके सम्मुख यह बताना चाहता हूँ कि वेदान्त हमें क्या शिक्षा देता है? वेदान्त हमारे सामने तीन वस्तुएँ उपस्थित करता है। पहिली वस्तु वह है मनुष्य विज्ञ। वह अपने असली सच्चिदानन्दस्वरूप- क्षण भरके लिये अज्ञानवशात् नीचे गिर गया है। लेकिन उसकी आत्मा पर जो अज्ञानका पर्दा पड़ गया है वह चिर कालके लिये नहीं है। वह अल्प समयके लिये है। वह तुरन्त ही हट जायगा जब सत् गुरुकी शरणमें जाकर अपने आपको समर्पण कर देगा। दूसरी वस्तु वेदान्त सदा मानव को एकताकी शिक्षा देता है। तीसरी बात वेदान्त यह सिखलाता है कि मिथ्या आरोपित संसारको दूर करना होगा। संसार अनादि है तथा ब्रह्म ही इसका उत्पत्ति स्थान तथा लय स्थान भी ब्रह्म ही है। इस बातका पता भी वेदान्तसे ही लगता है। इसी दर्शनके अभ्याससे—कैथोलिक, प्रोटेस्टेन्ट, जैन, पारसी, सनातनी, बुद्धिस्ट, हिन्दु और मुसलमान आदि एक जगह बैठ सकते हैं। और कन्धे से कन्धा मिलाकर चल सकते हैं। जर्मन देशका एक सबसे बड़ा दार्शनिक शोपेनहावर कहता है कि "हम जन्मसे तो ईसाई हैं पर हमारी आत्मा प्रभुसे प्यार करनेकेलिये, प्रभुसे मिलने केलिये तड़फ रही है। हमारी सच्ची धारणा यह है कि सच्ची शांति वेदान्त जो उपनिषद् ग्रन्थ रत्न हैं उन्हींसे प्राप्त हो सकती है। "कोई दुनियाका दर्शन प्रभुकी-प्राप्ति नहीं करा सकता जब हम

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वेदान्त दर्शनका अध्ययन-मनन करते हैं तो मालूम होता है कि हम उस उपनिषद्गम्य आत्माको पालेंगे। तो कहनेका आशय यह है कि बाहरके देशोंमें भी आज वेदान्तका अत्यन्त आदर है। विदेशोंमें जो वेदान्तका प्रसार हुआ है वह भारतवर्षसे ही हुआ है। ब्रह्मविद्याका मूल स्रोत पुण्यभूमि भारतभूमि है। प्रश्न होता है कि वेदान्त हमें क्या सिखलाता है ? तो वेदान्त हमें सिखलाता है कि एक ही आत्मा जो समान रूपसे सबके हार्दाकाशमें विद्यमान है। चाहे वह चींटीकी आत्मा हो, चाहे वह हस्तीकी आत्मा हो, चाहे ग़रीबकी हो और चाहे अमीर की आत्मा हो। सबमें आत्मा समानरूपसे विराजमान है। इस विषयमें एक छोटी-सी कहानी आपके सम्मुख रखता हूँ—

एक संत थे। वे अपने आश्रममें निवास करते थे और जो उनके दरवाजे पर आता था उनसे वे तीन प्रश्न पूछा करते थे—कि तुम कौन हो ? तो उसके उत्तरमें सभी कहते थे कि—मैं अमुक हूँ और अमुक स्थानसे आया हूँ। तो वे फिर प्रश्न करते थे कि यहाँ क्यों आये हो ? तुम्हारा यहाँ आनेका मतलब क्या है ? तो जवाब मिलता था कि सैर-सपाटेके लिये आया हूँ। फिर सन्त प्रश्न करते थे कि तुम्हारे जीवनका लक्ष्य क्या है ? तो इसके उत्तरमें उत्तरदाता यही कहता था कि सांसारिक भोगोंको भोगना, अच्छी-अच्छी वस्तुओंका संग्रह करना यह उत्तर जो भी आनेवाला व्यक्ति था वह उनको दिया करता था।

एक दिन एक वेदान्ती वहाँ आये और जब इन तीनों सवालों

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

को उसने सुना तो पहले सवालके जवाबमें उसने कहा कि "मैं कौन हूँ" यही जाननेके लिये तो आपके पास आया हूँ यदि मेरे जीवनका लक्ष्य क्या है यही जानता तो आपके पास आता ही क्यों ? इसको आप ही बताइये कि मेरा लक्ष्य क्या है और मुझे क्या प्राप्त करना है इसका भी मुझे ज्ञान नहीं है। इसीको जाननेके लिये आपके पास आया हूं। महात्माने कहा तू सच्चा वेदान्ती है. तू सच्चा जिज्ञासु है। तू मेरे पास बैठ मैं तुझे सब बताऊँगा। तो आत्माकी महत्ताको एक वेदान्त ही बतलाता है। वेदान्त बतलाता है कि मनसहित इन्द्रियोंको वशमें करो। अपनी इच्छाओंको जलाओ। ये सारी इच्छाएँ ही अनर्थका कारण हैं। ॐ का ध्यान करो। ओङ्कारके अन्तर्गत सब कुछ है। सत्-चित् आनन्द, जाग्रत स्वप्न-सुषुप्ति, कारण, सूक्ष्म, स्थूलशरीर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी ये सब ॐ कारके अन्तर्गत आ जाते हैं। इसलिये ओङ्करका ध्यान करो। क्योंकि संसारमें जितने रूप हैं सब नश्वर हैं। क्षणभंगुर हैं और एक सत्ता है ओङ्कार जो हमेशा कायम रहनेवाला है। ओङ्कारकी संक्षिप्तमें व्याख्या यह है कि "ॐ" यह इसका शब्दस्वरूप है—ओङ्कारके ऊपरका भाग है सत्। बीचका भाग 'चित्' और नीचेका भाग है 'आनन्द' ये तीनों मिलकर हुआ 'सच्चिदानन्द' उसको प्राप्त करनेके लिये हम संसारमें आये हैं और जो बिन्दु है वह है 'जीवात्मा' जो अर्द्धचन्द्र पर निवास करता है। अर्द्धचन्द्र है मायाका रूप। पूर्णचन्द्र इसलिये नहीं दिया कि यदि पूर्णचन्द्र देते तो इसकी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

निवृत्ति सम्भव थी अर्थात् इसका निवारण नहीं हो सकता था। परन्तु जब जीव सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्माको जान लेता है तब वह अपने स्वरूपको प्राप्त कर लेता है और वहाँ पर मायाका अन्त हो जाता है। इसलिये मायाको सत् नहीं कहा जा सकता है क्योंकि उसका अन्त होता है। जब जीव अपने आपको जान जाता है तो मायासे सदाके लिये तर जाता है और उसमें जो शून्य (जीरो) यानी बिन्दु है वह सूचित करता है कि परमात्मा सर्वशक्तिमान् है, अनन्त है। उसका कभी अन्त नहीं होनेवाला है। क्योंकि गोल वस्तुका कभी अन्त नहीं होता है। इसलिये ओङ्कारका ध्यान करना चाहिये। ओङ्कारमें ही समस्त देवताओं-का निवास है। ओङ्कार ही संसारमें सार है। यहाँ तक कि संक्षेप-से ओङ्कारके स्वरूपकी व्याख्या हुई। यह माण्डूक्योपनिषत्में इसका अच्छा विस्तार किया है।

वेदान्तके चार महावाक्य हैं। "तत्त्वमसि" "अयमात्मा ब्रह्म" "प्रज्ञानं ब्रह्म" "अहं ब्रह्मास्मि" ये चार महावाक्य हैं। यदि इनके ऊपर सद्गुरुके आदेशानुसार ध्यान लगाते हैं तो हम कुछ जान जाते हैं।

हमारे जीवनका वास्तविक लक्ष्य आत्मसाक्षात्कार है। उसकी प्राप्तिके अनेकों मार्ग हैं। उदाहरणके रूपमें ऐसा समझ सकते हैं। जैसे एक रुपया है चाहे उसे दो अठन्नी कहो, चाहे उसे चार चवन्नी कहो, चाहे आठ दुअन्नी कहो, और चाहे सोलह इकन्नी कहो, पर है एक ही रुपया। जो अठन्नी-चवन्नीसे भिन्न

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भासता है परन्तु उससे भिन्न नहीं है। उसी एक रुपयेके अन्दर सबका समावेश हो जाता है। ठीक इसी प्रकार परमात्मा एक ही है और उसके अनेकों नाम हैं। अपने-अपने भाषाके शब्दोंमें उसको व्यवहार करते हैं। परन्तु सबका लक्ष्यभूत एक ही परमात्मा है। यह बात केवल एक वेदान्त ही बताता है। यदि आप आत्मा-का दर्शन करना चाहते हैं तो उपर्युक्त महावाक्योंका सद्गुरुके आदेशानुसार श्रवण-मनन-ध्यान करो। इससे कठिनमार्ग भी सरल हो जायगा। वेदान्त दुरुह विषय है। इसका समझना भी कठिन है और इसके जाननेवाले भी विरलेही होते हैं। जब सद् गुरुकी अपार अनुकम्पा होती है तो तब कहीं वेदान्तका ज्ञान प्राप्त होता है। इसकेलिये सबसे प्रथम साधन शास्त्रोंमें सत्संग बताया हैं। सत्संगसे मल-विक्षेप-आवरणकी निवृत्ति होती है पश्चात् अन्तःकरणकी परिशुद्धि होती है। अन्तःकरणके शुद्ध होनेपर अज्ञानकी निवृत्ति पुनः ज्ञानकी निर्मल गंगा बहने लगती है। वेदान्तकासार ज्ञान है। गीतामें भगवान् कहते हैं—"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" ज्ञानके समान कोई पवित्र वस्तु नहीं है और ज्ञानके बिना आत्मसाक्षात्कार भी नहीं हो सकता। वेदान्त कहता है "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" "क्षुरस्यधारा निशिता दुरत्यया दुर्गंपथस्तत्कवयोवदन्ति" उठो! जागो! यह अध्यात्म मार्ग पैने छुरेकी धार है। गुरुकी शरणमें जाओ। गुरु तुम्हें बताएगा कि तुम कौन हो? कहाँसे आये हो? और तुम्हें कहां जाना है? तुम्हारा वास्तविकस्वरूप क्या

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। उपनिषद्में श्वेतकेतुको उसका पिता उद्दालक उपदेश करता है कि—श्वेत केतो! तुम वही हो जो उपनिषद् कहता है। 'तत्त्वमसि' तुम वही हो। तो वहां पर उसका पिता गुरुका पाठ अदा करता है और श्वेतकेतु शिष्यका पाठ अदा करता है। जब-जब उद्दालक आरुणि कहता है कि 'तत्त्वमसि' तो श्वेतकेतु कहता है "अहं ब्रह्मास्मि" फिर गुरु कहेगा—'तत्त्वमसि' तो तुम्हें कहना होगा 'अहं ब्रह्मास्मि' इसके साथ-साथ तुम्हें 'अहं' पदका विश्लेषण करना होगा। क्योंकि हम कौन हैं? कहांसे आये? जब तक इसका पता नहीं चलेगा तब तक 'अहं ब्रह्मास्मि' से कुछ नहीं बनेगा। एक बच्चा भी। 'अहं ब्रह्मास्मि' कहता है लेकिन उसका कोई महत्व नहीं। इसलिये 'अहं' का पता ज़रूर लगाना होगा। वेदान्त सार्वभौम दर्शन है। 'युनिवर्सलरिलिजन' है। उसकी जन्मभूमि भारतवर्ष है। यहींसे इसका प्रसार सारे भारतवर्ष में हुआ है। उसका यहां सम्मेलन हो रहा है। श्रीमान् पूज्य स्वामी पूर्णानन्दजी महाराजने हमें आमन्त्रण दिया। हम यहां पर आये। हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। जिन्होंने इस ज्ञानयज्ञमें आहुति प्रदान करनेका सु-अवसर दिया। इसकेलिये मैं उनका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हुआ अपने भाषणको यहीं समाप्त करता हूँ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"श्रीकृष्ण चरितामृत"

अर्थात्

ब्रह्मलीन श्री १००८ श्रीस्वामी कृष्णानन्दजी महाराज-
का जीवन-चरित्र

"अध्यात्म-प्रसाद" दो भागोंमें छप चुका है

वैशाखीके शुभावसर पर श्रीकृष्ण निवासाश्रम कनखल (हरिद्वार) में प्रतिवर्ष "अखिल भारतीय वेदान्त-सम्मेलन" होता है।

सम्मेलनमें पधारनेवाले अनेक तत्त्ववेत्ता महापुरुषोंके प्रवचन पुस्तक द्वारा प्रकाशित किए जाते हैं। पुस्तकका नाम "अध्यात्म-प्रसाद" है। अध्यात्म-प्रसाद दो भागोंमें प्रकाशित हो चुका है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida